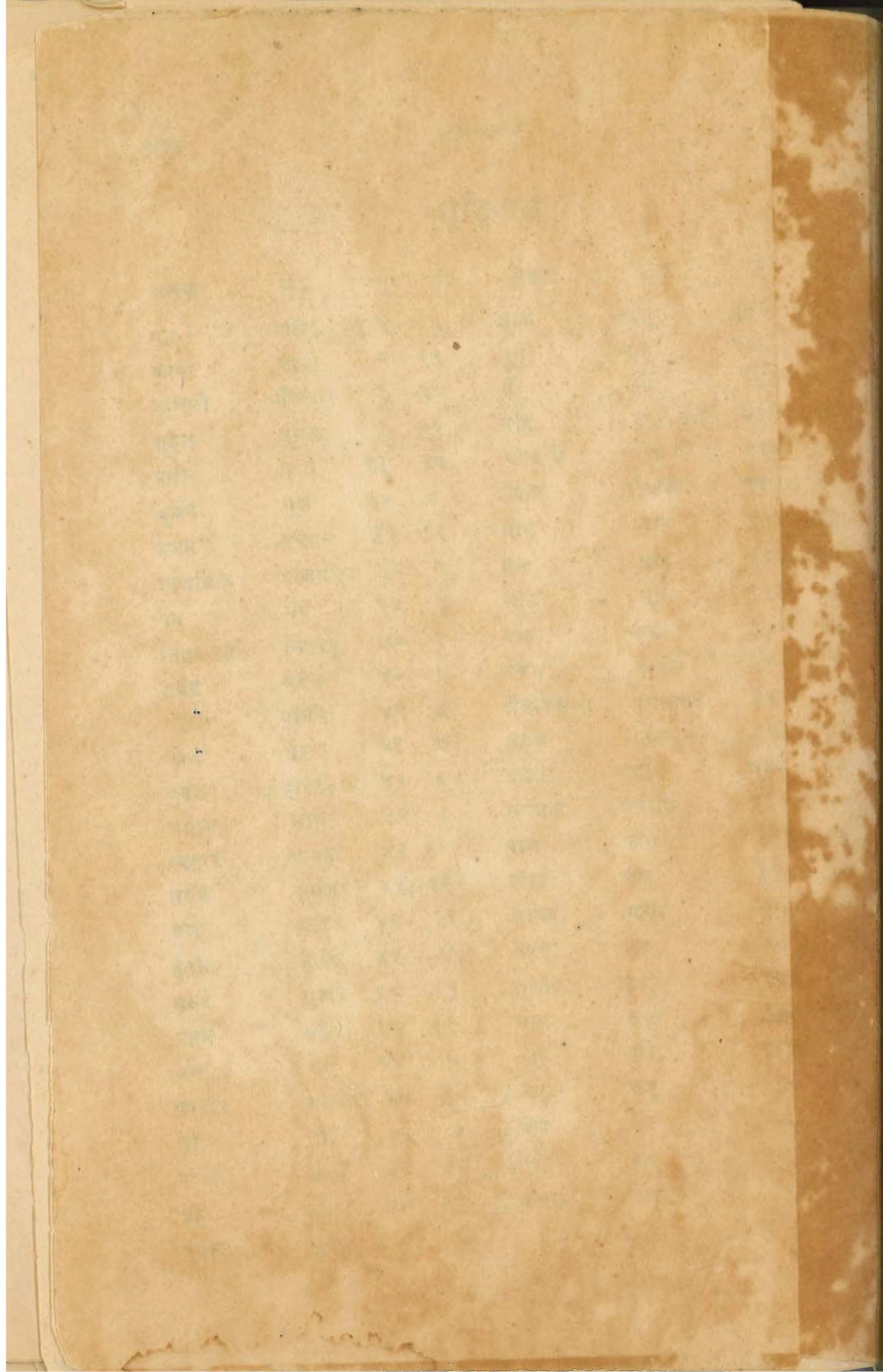




सीता-शील

खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन'



सीता-शील

(मैथिली पद्य)

रचयिता

श्री खड्ग वल्लभ दास "स्वजन"

ग्राम—इमादपट्टी

(झंझारपुर)

प्रकाशक

श्री विद्याजुन प्रकाशन

सिन्धुआटोली, गुलजारबाग

पटना—७

सर्वाधिकार सुरक्षित

छवि-छवि

(१५५ लिपि)

जखन छलनि नर-नारि-चरित में
सुन्दरता एवं उत्कर्ष ।
तखन विश्व मे उच्च बनल छल
सब तरहें ई भारतवर्ष ॥

— स्वजन

प्राक्कथन

बहुत दिन पूर्वक बात थीक। एक दिन संध्या समय हम अपना गाम-इमादपट्टीक (झंझारपुर सब-डिवीजन) पोखरि के मोहार पर छऽ-सात संगीक संग बैसल हास्य-बिनोद मे मग्न रही, तखने हमर पितिऔत स्व० लाल भाइ ओहि ठाम पहुँच गेलाह आ हमरा सभक सम्मुख एक पीपर केँ मोटगर शोर पर बैसि हमरा सभक गप्प केँ कान पाथिकऽ सुनऽ लगलाह आ हमरा सभकेँ गप्पक आनन्द-लहर मे चुभकैत देखि ओहो लहरक आनन्द लेमय लगलाह। बीच मे ओ किछु नहि टोकलनि। जखन समाज-सुधारक प्रसंग पर बात चलल आ चलैत-चलैत ओहि ठाम जाकऽ रुकि गेल, जाहि ठाम ई प्रश्न ऊठल जे हम सभ सुधार करऽ चाही तखन ने ? बस ओही ठाम लाल भाइ केँ अवसर भेट गेलनि आ बाजि उठलाह—हौ, तौ सभ तौ व्यर्थ मे ई सुधारक बात करैत जाइछऽ। ई नहि देखैत जाइ छऽ जे समाजक शत-प्रति-शत युवक-युवती आ तोहूँ सभ अपन धार्मिक पुस्तक नहि पढ़ि अन्यान्य पुस्तक जेना—सस्ता उपन्यास, लौटरी-परिणाम, सिनेमाक अभद्र गीत आदि सतत् पढ़ैत रहैत छऽ। कहऽ तखन नीक विचार अर्थात् समाज-सुधारक रुचि हृदय मे कोना उपजतऽ। शिक्षा-प्रद धार्मिक पुस्तक नहि पढ़ने नीक आचार-व्यवहार कोना बनतऽ, नीक आचार-विचार नहि भेने समाज-सुधारक लेल कार्य करबाक प्रेरणा कतय सँ भेटतह। तोहूँ सभ एहि बात केँ छुझऽ आ समाजक कार्य करबाक लेल तत्पर होइत जाह तखन ने। सभ तौ विद्वाने छऽ, कियो बी० ए०, कियो एम० ए० कियो डाक्टर, कियो इंजिनियर, कियो वकील तौ कियो प्रोफेसर। हम तौ कहैत छिअऽ जे जौ तौ सभ की सम्पूर्ण समाजक लोक रामायण-महाभारत-गीता-उपनिषद इत्यादि धर्मग्रन्थक अध्ययन करथि, सूनथि एवं समझि-बूझि कऽ आचरण मे उतारथि तौ समाज-सुधार अपने-आपे भऽ जेतैक। ई तौ अनुभव-गम्य बात थिक।

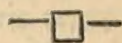
लाल भाइक ई उपदेशप्रद एवं उत्साहवर्द्धक बात सुनि ओहि ठामक उपस्थित लोकक संग युवकवर्ग बहुत प्रभावित भेलाह। हूँ-एक युवक जे साहित्यिक छलाह, बाजि उठलाह आइ सँ हम धर्मग्रन्थक नीक तरहे अध्ययन कय ओहि मे सँ सूक्तिक संग्रह कऽ प्रकाशित करब। बस, ओही ठाम हमहूँ प्रतिज्ञाबद्ध भऽ गेलहुँ जे रामायण मे वर्णित जगत-जननी जानकीक आदर्श-चरित्रक वर्णन अपन मातृभाषा मैथिली मे पद्य-रचना कय पुस्तक-प्रकाशित कराबी।

यद्यपि पद्य-रचना करकयोग्यता नहि, तथापि मात्सर्यमयि मा मैथिलीक
असीम अनुकम्पा सँ उत्साह प्राप्त भेल आ हुँनक प्रेरणा सँ रचना प्रारम्भ
भऽ गेल ।

नारी चरित्रक सन्दर्भ मे विविध ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि । ओहि ग्रन्थ-
माला केँ अध्ययन कयला पर सब सँ उत्कृष्ट आदर्श-चरित्र श्री जानकी केँ जीवन मे
पाओल जाइछ । किन्तु ओहि सद्ग्रन्थ सभक गूढ़ भाव एवं कठिन शब्दक
कारण सामान्यजन केँ आशाजनक लाभ नहि भेटैत छैन्ह । तँ हम मिथिलाक बोल-चाल
भाषा मे मैथिलीक पद्य-रचना कैल अछि । एहि मे कथा-वस्तु तौ पूर्व प्रकाशित प्रसिद्ध
सद्ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा तुलसीकृत रामचरित मानस सँ
लेल गेल अछि । केवल मैथिली-पद्यानुवाद भेल अछि । कतहुँ-कतहुँ अपना हृदय मे
माता मैथिलीक प्रति जे श्रद्धा-पूर्ण भाव उत्पन्न होइत गेल आ उपदेशप्रद वृत्ति पडल
से एवं अन्यान्य सद्ग्रन्थ मे सँ सूक्तिक एहि मे समावेश कऽ देल अछि ।

आब श्रद्धेय पाठक-वृन्द सँ प्रार्थना जे एकरा सस्नेह स्वीकार कय सभकियो
अपनावधि, पढ़थि आ दोसरो केँ सुनावथि तौ हम अपना केँ धन्य बूझब ।

—स्वजन





श्री खड्ग वल्लभ दास “स्वजन” रचित “सीता-शील” नीक लागल । राम कथा पर अनेक काव्य रहितहुँ एहि पुस्तकक अपन महत्त्व अछि, मुख्यरूपे भाषाक सरलता आ सीताक मर्मस्पर्शी चरित-चित्रण प्रशंसनीय । “स्वजन” कवि सँ अधिक भक्त छथि आ कोनो भक्त केँ “सीता-शील” नीक लगबे करतैक ।

दिनांक ३० अप्रील, १९८६

दीनानाथ झा

सम्पादक

इंडियन नेशन, पटना

— ❁ —

“सीता-शील” पुस्तक केँ प्रकाशित होइत अत्यन्त आनन्दक अनुभव भऽ रहल अछि । आनन्दक संगहि गौरव केँ अनुभूति सेहो ओहि सँ थोड़ नहि । जग-जननी सीता माय केँ प्रति लिखल ई पुस्तक पढ़िकऽ मोन अति प्रसन्न भेल । पूज्य बाबाजी केँ हृदय मे सीताक प्रति अपार स्नेह एवं अपूर्व भक्ति छैन्ह । ताहि सँ प्रेरित भऽ ओ ‘सीता-शील’क रचना अपना मातृभाषा मैथिली मे कैलनि अछि । अपन मातृभाषाक मिठास सँ भरल ई रचना भेल अछि । पद्यक सरलता, सरसता आ मधुरता अति प्रशंसनीय अछि । विश्वास अछि “सीता-शील” रचना पढ़िकऽ नारीगण अपन चारित्रिक गरिमा केँ नीक तरहें जानि जयतीह एवं अपना मे जे कोनो अवगुण होयतनि तकरा हँटबैक अवश्य प्रयत्न करतीह ।

दिनांक ८ मई १९८६

कुमारी आरती झा,

बी० एस-सी० ।

श्री खड्ग वल्लभ दास "स्वजन" द्वारा रचित "सीता-शील" नामक पद्य-रचना देखवाक अवसर भेल । मिथिला भाषा मे सीता-विषयक अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । यथा—चन्दा झा-कृत 'मिथिला भाषा रामायण', लाल दास-कृत 'रमेश्वर-चरित मिथिला भाषा रामायण', सीताराम झा क 'अम्ब-चरित', श्री वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'क 'सीतायन' आदि । एतेक ग्रन्थ लिखल रहलहुँ प्रस्तुत ग्रन्थक विशेष उपादेयता अछि । पहिल तँ ई जे पूर्वक रचना सर्वसाधारणक विशेष बोधगम्य नहि रहलाक कारणे ओतेक प्रचारित नहि अछि । दोसर विषय ई जे प्रस्तुत पोथी पूर्णतः 'सीताक चरित्र' पर आधारित अछि, एहि ग्रन्थक प्रारम्भे श्री जानकीक जन्म सँ होइत अछि तथा सीता सँ सम्बन्धित घटनाक्रमक वर्णन एहि मे भेल अछि । एहि मे सीता-जन्म सँ पाताल-प्रवेशक ५३ गोटा प्रसङ्गक सरल-सहज-सुन्दर वर्णन प्रस्तुत कएल गेल अछि । तेसर विषय एहि पुस्तक द्वारा कवि साधारणो व्यक्ति के ओहि उदात्त चरित्र सँ परिचय कराए नैतिकता एवं शालीनताक पाठ दए रहल छथि । लोकक चारित्रिक उत्थानहि सँ समाजक एवं देशक उत्थान भए सकैछ । सम्प्रति लोक आधुनिक चाकचिक्यक जाल मे फँसल अपन संस्कृति एवं सभ्यता सँ हँटल जाए रहल अछि । मानवीय मूल्यक अवमूल्यन भए गेल अछि । लोक अपन आदर्श चरित्र सँ अनभिज्ञ भए रहल अछि । बिना सांस्कृतिक उत्थाने आन प्रगति अकार्यक भए जाएत ।

श्री 'स्वजन' जी सुलभ 'हरिगीतिका' छन्द मे सम्पूर्ण ग्रन्थके रचना कएलन्हि अछि । एहि ग्रन्थ मे काव्यक चमत्कार सँ बेशी एक सहृदय भक्त-हृदयक उद्गार अछि । एकर भाषा प्राञ्जल रहितहुँ कतहुँ क्लिष्ट नहि अछि । आशा अछि ई पोथी अपना उद्देश्य मे पूर्ण सफल होएत ।

पटना,
जूड़ शीतल
सन १३६३ (१९८६)

श्री आनन्द मिश्र
एम० ए० (अर्थशास्त्र, मैथिली एवं हिन्दी)
डी० लिट, भू० पू० विश्वविद्यालय
प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्ष,
पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

शुभ कामना

स्वसूक्तानां पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां ।

कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुणः ॥

कोनो पात्र केँ प्रमुख बनएबा मे कविक कोन दोष ? दोष तँ होइछ पात्रक गुणराशिक । वस्तुतः जीवनमूल्यक स्थापना किंवा कोनो आदर्शक संस्थापना करबाक हेतु उदात्त चरित्रक गाथा मर्यादाक एहन दृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि, जाहि सँ चरित आ धर्म पर्यायवाची बनि जाइछ ।

भारतीय वाङ्मय मे वैदिक साहित्य सँ अद्यपर्यन्त रामकाव्यक प्राधान्य रहल अछि । यद्यपि मैथिली साहित्य मे कृष्णकाव्य सुकुमार भावना केँ बोधगम्य करएबाक हेतु अप्रतिहत रहल अछि, मुदा चारित्रिक आदर्श केँ प्रतिष्ठापित करबाक हेतु समाज केँ कर्तव्य-मार्ग पर आरुढ़ करबाक हेतु रामकाव्यक अवतारणा स्वाभाविके अछि । परिणामतः कवीश्वर चन्दाज्ञाक 'मिथिला भाषा रामायण' अत्यधिक लोकप्रिय भेल, मुदा एकरा बाद लगले कविवर लालदासक 'रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण'क प्रणयन कए ई प्रमाणित कए देल जे रामक लोकोत्तर महिमाक कारण अछि हुनक रमेश्वरत्व अर्थात् लक्ष्मी (सीता) क स्वामित्व । एतय ई कहब अप्रासंगिक नहि होएत जे कविवर शक्तिस्वरूपा सीताक प्रधानता दए काव्य-रचना कएल । ओना एहि प्रकारक शक्ति कीर्तन केँ अभिनव वस्तु नहि कहल जाएत, कारण दुर्गा सप्तशतीक "स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु" क आलोक मे शंकराचार्यक ई उद्घोष—

"कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं,

भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटी फलमिदम्"

सर्वं विदित अछि । सर्वत्र 'आधारभूता जगतस्त्वमेका' सिद्ध-प्रसिद्ध अछि आओर तँ लालदास लिखलैन्ह—

मूलप्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीतारूप प्रधान ।

तनिक नाम जपि पाब नर, दुहु लोकक कल्याण ॥ वस्तुतः आद्या-शक्तिस्वरूपा जगज्जननी जानकी (सीता) क बिना राम अनोन-विसनोन,

सुन्न-छुछुन्न (ए राम !) भए जाइत छथि तेँ एहि मे कोनो संशय नहि रहि जाइछ—

सीता नामक अमित प्रभाव, चतुर्वर्ग फल जापक पाब ।

जीवन्मुक्त थिकथि जन सैह, सीताराधन तत्पर जेह ॥

ऐह कारण अछि जे कविवर सीताराम झाक 'अम्ब-चरित', बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'क 'सीतायन', काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क 'राधा-विरह' आदि कतिपय ग्रन्थ मे शक्तिक महत्ता केँ मुक्तकंठ सँ स्वीकार कयल गेल अछि ।

भारतीय संस्कृतिक एहि पृष्ठभूमि मे परम आदरणीय श्री खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' जी द्वारा विरचित 'सीता-शील' क महत्व आओर अधिक भए जाइछ । अपन ऐतिह्यक अभिज्ञता भविष्यक मार्ग केँ प्रशस्त करैत छैक । भारतीय ललनाक उच्चादर्शक प्रतीक सीताक चरितगाथा ककरो लेल आकर्षणक वस्तु भए सकैत अछि । तेँ श्री 'स्वजन' जी लिखैत छथि—

“अछि भेल अभिलाषा परम नारीगणक हित किछु लिखी ।

पावन चरित्रक पद्य-पुष्पक हार गाँथव किछु सिखी ॥

आदर्श पुरुषक प्रेमिका केँ चरित शुभ लीखैत छी ।

उपदेश नारी-लेल “सीता-शील” मध्य पबैत छी ॥

यथार्थतः मर्यादा पुरुषोत्तमक सती-साध्वी पति-परायणा-शीलक प्रतिमूर्ति प्रातः स्मरणीया सीताक चरित्र-शक्तिक महत्ता केँ द्योतित करैत तिमिराच्छन्न वातावरण मे प्रकाश-स्तम्भक कार्य करैत अछि । भक्तिक वर्णन मे जे तीन गोटा वस्तु प्रधान रहैत अछि—ध्यान, माहात्म्य-लोला आ आत्म-निवेदन ताहि तीनूक विलक्षण सन्निवेश एतए कएल गेल अछि । एहि ग्रन्थक उपस्थापन-शैली, भाषाक विन्यास एवं भावक अभिव्यञ्जना सर्वथा स्तुत्य रहबाक कारणेँ एकरा एक स्वतन्त्र काव्यात्मक स्वरूप प्रदान करैत अछि । एतावता प्रस्तुत ग्रन्थ मात्र भक्त-समुदायेक लेल नहि, अपितु काव्य-रस-लुब्ध सुधी-वृन्दोक हेतु एक विशिष्ट निधि मानल जाएत । हमर की सामर्थ्य अछि जे एहि प्रकाश-

पुञ्ज पर प्रकाश देबाक चेष्टा करब । हँ, एतबा धरि पूर्ण विश्वास अछि जे तत्त्वान्वेषीगण एहि सँ चरम तत्त्वक परिचय अवश्ये पाबि सकैत छथि ।

भावानुवाद रहितहुँ ग्रन्थक मौलिकता अक्षुण्ण अछि । कारण एक तँ मैथिली (सीता) क कथा, सेहो मैथिली मे लिखल जएबाक कारणेँ सोन मे सुगन्धिक कार्य कएलक अछि । वर्तमान युग केँ गद्य-युग अवश्य कहल जाइछ, मुदा एकर भाषा, शैली आ भाव-गाम्भीर्य एतेक सरल, सरस आ सुबोधगम्य अछि जे ई अपन स्थान विशेषरूप सँ सुरक्षित करा लेलक अछि । एहि ग्रन्थक सब सँ पैघ विशेषता मानल जाएत जे मिथिलाक एहन लोक जकरा मात्र मैथिली पढ़बाक ज्ञान छैक अत्यधिक लाभान्वित होएत ।

मैथिली मे एहि प्रकारक ग्रन्थक प्रकाशन सँ महत्त्वपूर्ण कार्य भेल अछि । एतदर्थ श्री “स्वजन” जीक हार्दिक अभिनन्दन करैत एहि अमूल्य रचनाक अधिकाधिक प्रचार प्रसारक हेतु अपन शुभ कामना अर्पित करैत छी । इत्यलम् ।

डा० देवेन्द्र झा

दिनांक २८ अप्रील, १९८६

अध्यक्ष, मैथिली-विभाग,

बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।

— ० —

एहि “सीता-शील” क चर्चा किछु दिन पूर्व हम सुनने छलहुँ । प्रबल उत्कंठा छल जे एकरा कने पढ़ी । संयोग वशात् हमर एक घनिष्ट मित्र क माध्यम सँ ई प्राप्त भेल । रचनाकारक प्रारम्भिक विनय-युक्त पद्य पर दृष्टि पड़ितहि पढ़बाक उत्सुकता भेल । एके-दू बैसक मे “सीता-शील” केँ आद्योपांत पढ़ि गेलहुँ । एहि पाठ्यान्तर मे कतेकों बेर आँखि सँ नोर बहल अछि, कतेकों बेर रोमांचित भए उठलहुँ अछि, कतेकों बेर देवत्वक परिवेश मे आत्मा केँ विचरण करैत पौलहुँ ।

अद्य पर्यन्त अनेकों काव्य ग्रन्थक पाठ कैलहुँ । सभमे उत्कृष्ट भाव-व्यञ्जना एवं गम्भीरता पाबि अत्यन्त आनन्द प्राप्त भेल अछि, मुदा

“सीता-शील” क भाषा, गम्भीर भाव एवं शैलीक अनुपम प्रभाव तथा चमत्कारपूर्ण प्रवाह सँ मुग्ध भऽ कहए पड़ल अछि अहा ! एतेक सरल सुलभ भाषा ! एहन प्रवाह ! एकोक्षण पढ़बा मे उचाट नहि बुझना गेल । लागल जे “सीता-शील” मे जगज्जननी जानकी केवल चरित्रक प्रधानते मात्र नहि, अपितु मिथिला-शीलक यथार्थ वर्णन अछि । श्रद्धेय कवि “स्वजन” जी तँ “सीता-शील” के मिथिला-शीलक बीजगणितीय प्रतीक बनौलन्हि अछि । एखनहुँ (बीसम शताब्दीक अंतिम दशकक चौकठि पर) हमरा लोकनिक गृहलक्ष्मी, हमरा लोकनिक बेटी, हमरा लोकनिक संस्कृति मे धैर्य, त्याग, सहिष्णुता, सच्चरित्रता एवं बुद्धिक समन्वय पर आधारित ताहि शीलक प्रतिविम्बन देखल जा सकैछ । कवि एहि महान सत्यक उद्घाटन करबा मे सफल रहलाह अछि । रामक सँग मुनिवर विश्वामित्र क मुँह सँ कहबाओल—

“अपना परिश्रम सँ उपार्जित वस्तु भोगब उचित छी ।

ई धारणा मिथिला-समाजक देखि हम अति मुदित छी ॥”

कतेक पैघ आदर्श उपस्थित करैत अछि । आजुक पराश्रिताक अभिशापक विरुद्ध ?

“नहि देखि रहलहुँ एकटा अपवित्र अपरोजक कियो ।

सभ छथि सुशील-पवित्र-वितपनि डोम-हलखोरक धियो ॥”

धन्य छथि, महान छथि “सीता-शील” क रचयिता जे आदर्श पुरुष राम एवं आदर्श मुनिवर विश्वामित्र क मुँह सँ मिथिला क ई प्रशंसा करबा सकैत छथि । डोम हलखोरक धियाक प्रति कविक ई सम्मान ! समताक ई सम्बेदना !

एक साधारण पाठकक हैसियत सँ हम इएह कहि सकैत छी जे प्रत्येक सम्य-शिक्षित मिथिलांचला परिवार मे “सीता-शील” क एक प्रति अवश्य रहए तथा प्रत्येक एहन परिवार मे एहि काव्यक गान हो, एहि सँ अधिक रचनात्मक बौद्धिक सेवा मिथिल-सांस्कृतिक अखन हमरा नहि देखवा मे अबैछ ।

डा० श्री देवनारायण मल्लिक

दिनांक २६ अप्रील, १९८६

राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष तथा

समाज-विज्ञानक सकायाध्यक्ष,

बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।

“सीता-शील” मैथिली-भाषा मे एक अद्वितीय प्रसून भऽ प्रस्फुटित भेल अछि, जकर सुमधुर सौरभ सँ समस्त मैथिली-भाषा सुवासित होएत एवं एकर पाठकगण नैसर्गिक आनन्द उठौताह । ‘सीता-शील’ करोड़ो मैथिली भाषा-भाषी एवं साहित्यानुरागी लोकनिक तृषित कण्ठ केँ अप्यायित करैत रहत । एहि पुस्तक मे प्रयुक्त भाषा, भाव, शैली, छन्द, मात्रा आदिक अभूतपूर्व संगम भेल अछि जाहि सँ ग्रन्थक गरिमा उच्चतम शिखर पर आबि गेलैक अछि ।

‘सीता-शील’ काव्य ग्रन्थकेँ रचि श्री खड्ग वल्लभ दास ‘स्वजन’ जी मिथिला एवं मैथिली केँ प्रशंसनीय सेवा कयलन्हि अछि । जगत-जननी सीता मिथिलाक आराध्य देवी थिकीह । संगहि ओ मिथिलाक प्रतीक छथि । प्रत्येक मैथिल हुनका अप्पन बुझैछ एवं हुनक श्रद्धाभाव सँ पूजा-अर्चना करैछ । समस्त विश्व मे मिथिलाक नाम उजागर करबा मे एवं ओकरा हेतु अजस्र यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करबाक सर्वोपरि श्रेय सीताजी केँ छन्हि । हुनक यशोगान जतेक कएल जाए से थोड़ थोक । ‘विधु’ जीक ‘सीतायन’ क उपरान्त ‘स्वजन’ जीक ‘सीता-शील’ पाबि मैथिल-समाज कृत्स्न-कृत्य छथि । ‘स्वजन’ जी एहि काव्य मे मिथिला-वर्णन मे अपन विलक्षण प्रतिभा एवं सीताक प्रति अपन भक्तिभाव प्रदर्शित कयलन्हि अछि । पंडित लालदास जी द्वारा रचित ‘रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण’ मे सीताक सर्वश्रेष्ठ भूमिका दर्शाओल गेल अछि, ओही क्रम मे ‘सीतायन’ एवं ‘सीता-शील’क रचना भेल अछि ।

विश्वास अछि जे ‘सीता-शील’क घर-घर मे प्रचार होएत एवं एकर काव्य-सरोवर मे अवगाहन कऽ मैथिल ललना लोकनि अपन शील-स्वभाव केँ स्वच्छ, सुन्दर एवं मधुर बनौती ।

जय मिथिला ! जय मैथिली !!

दिनांक २ मई, १९८६

श्री जटाशंकर दास

उपाध्यक्ष,

मैथिली साहित्य-संस्थान, पटना ।

जग-जननी सीता के प्रति पूज्य बाबू जी के हृदय में अपूर्व भक्ति छैन्ह । नेन्तो-भुटका के मध्य जखन ओ भगवान राम आ माँ सीता के चर्चा करैत छथि तँ भाव-विभोर भऽ उठैत छथि । एहि प्रकारक भाव-विभोरता सँ प्रेरित भऽ “सीता-शील”क रचना अपन मातृभाषा मैथिली में कैलनि अछि ।

पाण्डुलिपि के रूप में सम्पूर्ण ‘सीता-शील’ पढ़बाक हमरा अवसर भेटल । अपन मातृभाषाक मिठासक सँगे भावक सरसता आओर शैलीक प्रवाह सँ हम अतिशय प्रभावित भेलहुँ । तखने मनमें अभिलाषा भेल जौ ई पुस्तक प्रकाशित कैल जाय आओर मिथिलाक नारीगण एकरा आदि सँ अन्त धरि पढ़ि जाथि तँ हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ओ नारीक चरित-गरिमा सँ झूमि उठतीह ।

तँ हम सतत् बाबूजी पर आग्रह पूर्वक जोर देलियनि जे पुस्तक शीघ्र प्रकाशित कैल जाय । अन्ततः हमर ई अभिलाषा पूर्ण भऽ गेल ।

आशा अछि जे मिथिलाक नारीवृन्द एहि पुस्तक के ध्यान सँ अवश्य पढ़तीह आ माँ सीताक आचरण सँ शिक्षा-ग्रहण कऽ अपना चरित्र के आदर्शमय बनौतीह ।

दिनांक ४ मई, १९८६

विद्या कुमारी

प्राचार्या

आनन्द-मार्ग, स्पेशल एकेडमी,

गुलजारबाग, पटना-७

समर्पण

जिनक परम श्रद्धा एवम् अनन्य भक्ति,
परम पिता परमात्माक साक्षात् स्वरूप
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रक
अर्द्धाङ्गिनी श्री जगज्जननी जानकीक
चरणाम्बुजक प्रति अहर्निश
बनल रहैत छैन्ह,
ओहि श्रद्धेय भक्तक
पाणि-पङ्कज मे
प्रस्तुत पुस्तक
स स म्मा न
समर्पित
अछि ।

—स्वजन

उपहार

श्रीमान्/श्रीमती.....

.....क

कर-कमल में सादर/सस्नेह भेंट

प्रार्थना

गणपति-वीणापाणि के, प्रथम सभक्ति प्रणाम ।
 पुनि गिरिजा-सँग शम्भु के, सुमिरि सुखद शुभ नाम ॥
 इष्टदेव सिय-राम के, चरण-कमल कय ध्यान ।
 सुमिरि व्यास-वाल्मीकि-पद, काव्य-सुकलानिधान ॥
 अनुपम श्री सीता-चरित, अछि आदर्श महान ।
 मिथिला-भाषा-पद्य मे कयल मातु-गुण गान ॥
 तैं हे देवी-देव - गण, अपने सभ सुखधाम ।
 करी कृपा कय पूर्ण ई, "स्वजन"क शुभ मन काम ॥

प्रकाशक के आह्लाद एवं आशा

"सीता-शील" के प्रकाशित करैत अत्यन्त आनन्दक अनुभव कऽ रहल छी । मिथिलाक बाटिका मे भारतीय संस्कृति के एक सुन्दरतम पुष्प के रूप मे प्रस्फुटित भेल छलीह—सीता !

जखन-जखन स्मृति-पट पर हुनक अनुपम सरलता, सादगी, सेवा एवं सहिष्णुताक स्मरण होइत अछि तखन-तखन हृदय स्वतः तरल रूपेँ आलोड़ित भऽ जाइत अछि तथा आह्लाद मे मुँह सँ सहजहि मुखरित होइत अछि—माँ ! विश्वस्य जननी !

"सीता-शील" के माध्यम सँ करुणामयी माँ के चरित्रगाथा गाओल गेल अछि अपन मातृभाषा मैथिली मे । पद्यक सरलता, सरसता, मधुरता आ प्रवाह प्रशंसनीय अछि जे कवि श्री खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' क हृदय मे माय के प्रति यें छल-छल भरल भक्ति-कलश के प्रतीक अछि ।

आशा अछि, भोगवाद सँ ग्रसित नैतिकता के एहि संक्रमण काल मे 'सीता-शील' स्तुति के अनुप्राणित कऽ पथ-प्रदर्शित करत तथा पुरुषवर्ग के चक्षु उन्मिलित करैत प्रसुप्त क्षमताक दर्शन करा देत ।

श्री विद्याजुन प्रकाशन

पटना-७

अर्जुन नारायण चौधरी

२१-३-१९८६

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
श्री जानकी-जन्म	१	जटायु-उद्धार	१०६
मिथिला-दर्शन	६	सुग्रीव-संग मित्रता	११०
पुष्प-वाटिका	१०	हनुमानके समुद्र-लंघन	११४
धनुष-यज्ञ	१७	हनुमान के विभीषण से भेंट	११८
परशुराम के लक्ष्मण से वार्ता	२१	सीता-रावण-विवाद	१२२
शुभ विवाह	२४	सीता-विलाप	१३५
श्री वैदेहीक विदाइ	२५	त्रिजटाक सान्त्वना	१३७
मंथराक-मंत्रणा	३५	हनुमान के सीताक संग वार्ता	१४३
वन चलबाक लेल सीताक आग्रह	४१	अशोक वाटिका-विश्वंस	१५९
सासुगणक-आदेश	४६	हनुमान के रावण से भेंट	१६१
वन-गमन	५१	लंका से वापस	१६६
वन-प्रवेश	५३	लंका पर चढ़ाई	१७०
केवट-संवाद	५६	रावण-बध	१७२
भारद्वाज मुनि से भेंट	५८	राम-सीता-मिलन	१७८
वाल्मीकि से भेंट	५९	सीताक संग-रामके वार्ता	१८०
अत्रि-अनुसूया से भेंट	६२	अग्नि-परीक्षा	१८३
सीताक सन्देश-निवारण	६६	अवध-वास	१८६
अगस्त्य से भेंट	६८	रामक-दरवार	१८६
जटायु से भेंट	६९	सीता-वनवास	१८४
पंचवटी मे निवास	७०	लवकुशक जन्म	२०६
सूर्पणखा से भेंट	७३	“ रामायण-गान	२१०
खर-दूषण-बध	७७	सीता-शपथ एवं पृथ्वी-प्रवेश	२१६
मारीच-बध	८०	मैथिलानिक कथन	२२०
सीता-रावण संवाद	८६	समदाउन	२२१
रावणके-सीताक फटकार	८८	बिनु माता के पक्ष द्वारा शिव-प्रति श्रद्धार्पण	२२२
सीता-हरण	९१	ईश्वर नाम से चमत्कार	२२३
अशोक वाटिका मे सीता	९६	शुद्धि-पत्र	२२४
राम के अन्देशा	९८		
रामक विलाप	१००		

सीता-शील

विनय

गणनाथ ! प्रथम सुपूज्य भेलहुँ नाम जपि जिनकर अहाँ !
गुग-गावि जिनकर भक्तवर नारद भेला ज्ञानी महा ॥

छथि बनल शिव केँ आदि युग सँ पूज्य परमाराध्य जे ।
भऽ जाथि ज्ञानी-भवत-सज्जन केँ विनय सँ साध्य जे ॥

गुरुवर वशिष्ठ छलाह परिचित अधिक जिनक स्वभाव सँ ।
श्री परशुरामक गर्व भेलनि चूगं जिनक प्रभाव सँ ॥

जे कैल निज आचार सँ आनन्द श्री अवधेश केँ ।
जे शिव-धनुष केँ भंग कऽ कैलनि मुदित मिथिलेश केँ ॥

वापक वचन केँ मानि वन मे वरष चौदह बसल जे ।
किछु केकयो केँ क्रोध-मिश्रित कटु वचन नहि कहल जे ॥

नर-प्रवर रघुवर वीर धनुधर जानकी-वर राम से ।
आदर्श-मर्यादा-पुरुष उर मे बसथि सुखधाम से ॥

प्रेरक बनथि श्री राम, गणपति ! अछि अहाँ सँ प्रार्थना ।
रचना सकल जन-मन-पसन्दक हो 'स्वजन' केँ कामना ॥

अछि भेल अभिलाषा परम नारीगणक हित किछु लिखी ।
पावन चरित्रक पद्य-पुष्पक हार गाँथव किछु सिखी ॥

आदर्श पुरुषक प्रेमिका केँ चरित शुभ लीखैत छी ।
उद्देश नारी-जेल "सीता-शील" मध्य पबैत छी ॥

अछि धारणा सीताक प्रति उर-मध्य श्रद्धा-भक्ति जे ।
पद-रचि प्रकट कऽ रहल छी अछि योग्यता आ शक्ति जे ॥

ई जौं पढ़थि सभ व्यक्ति "सीता-शील" चित्त पवित्र सँ ।
प्रढ़ि नारि-नर आचार सीखथि जानकीक चरित्र सँ ॥

तौं सफल अपन प्रयत्न बूझब ई लगौने आश छी ।
मैथिल तथा मिथिलाक सेवा-हेतु प्रथम प्रयास छी ॥

यद्यपि विविध सद्ग्रन्थ मे आदर्श-नारो गुण-कथा ।
वर्णित बहुत सुन्दर-जकाँ भऽ गेल अछि अनुपम तथा ॥

अछि गूढ़ अति गम्भीर भाव ह काव्य-कला-विचार सँ ।
विद्वान-वर्गक रचित सब वर्णन बहुत विस्तार सँ ॥
सामान्य-जन केँ ओ सुग्रन्थक अर्थ समझऽ पड़नि जेँ ।
स्पष्ट सुन्दर भाव समझै मे कठिनता होनि तैँ ॥

से जानि रचलहुँ मधुर भाषा मैथिली केँ पद्य मे ।
लागत पढ़े मे पढ़ि रहल छी जाहि तरहें गद्य मे ॥
नहि योग्यता अछि कविक हमरा पद्य-रचना करब की ?
विद्वान-वर्गक बीच बाजल करब तौँ हम बनब की ??

दुसबे करथि क्यो जननि-गुण-वर्णन करक प्रयास केँ ।
हँसबे करथि क्यो कवि अधिक त्रुटि देखि काव्य-विलास केँ ॥
तैँ हम सुश्रद्धा-भक्ति केँ उर मे दबौने रहब की ?
सद्भाव उपजल माँक प्रति से प्रकट हम नहि करब की ??

अछि किन्तु आशा प्रबल एकरा ध्यान सँ पढ़ताह जौँ ।
“स्वजन”क हृदय मे भाव श्रद्धा-भक्ति केँ पोताह तौँ ॥

शिशुवास अछि मिथिलाक पावन पवन-पानि-प्रभाव सँ ।
करता छमा निश्चय दया अह सरलताक स्वभाव सँ ॥

आग्रह हमर विशेष प्रियवर सुजन पाठक-बृन्द सँ ।
पढ़ि जाथि कृपया आदि सँ धरि अन्त सभ निश्चिन्त सँ ॥
श्री माँक कृपा-प्रसाद सँ प्रस्तुत अखन भऽ गेल ई ।
चुनि-चुनि सुगम शुभ शब्द-सुमनक हार निर्मित भेल ई ॥

कैलहुँ कतहुँ प्रयोग नहि अपशब्द “सीता-शील” मे ।
नहि कैल वर्णन कतहुँ कठिन कुवाक्य आ अश्लील मे ॥
मात्रा अठाइस पाँति प्रति लघु-गुरु चरण केँ अन्त मे ।
सुन्दर श्रवण-सुखकर मधुर हरिगीतिका केँ छन्द मे ॥

श्री जानकी-जन्म

श्री चन्द्रकुल के आदि मे 'निमि' नाम के राजा भेला ।
धर्मिष्ठ नर मे श्रेष्ठ ओ गुणवान-वलशाली छला ॥

तिनकर सुपुत्र छलाह 'मिथि' जे पूर्ण सद्गुण-ग्राम सँ ।
ई तीरभुक्तक नाम मिथिला पड़ल हिनके नाम सँ ॥

'मिथि' के सुपुत्र प्रसिद्ध जानी 'जनक' नृप शशि-अंग मे ।
सब नृप 'जनक' कहबैथ हिनके नाम पर ऐ वंश मे ॥

तँसम पिढ़ी मे भेल छथि सीता-पिता 'विदेह' ई ।
रखलनि ने कहियो स्वजन-तन-धन सँ विशेष सनेह ई ॥

मिथिलेश जनक विदेह अति जानी परम सब भूप मे ।
धर्मिष्ठ नरवर जानके अवतार नृपतिक रूप मे ॥

मिथिलाक जन-गण छल प्रसन्न विदेह के सुप्रबन्ध सँ ।
सुन्दर व्यवस्था शासनक छल योग्य मंत्री-बृन्द सँ ॥

विश्वक रचयिता के छलनि लाला करक विचार मे ।
तखने दुखी कऽ देल जल-बिनु जीव के संसार मे ॥

इच्छा जखन जे होनि प्रभुके सँह होइछ सृष्टि मे ।
भऽ गेल बहुतों वर्ष काल विलम्ब वारिक वृष्टि मे ॥

दुष्काल मिथिला मे पड़ल छल भेल नहि वर्षा कती ।
जड़ि गेल जतबा खेत-बोच जजात उपजल छल जतौ ॥

चिन्तित जकाँ बैसल छला नृप सचिव-वर्गक बीच मे ।
सोचै छला जनता मरत तौ पड़ब पापक कीच मे ॥

जे क्यो गुणी-ज्योतिष छला पंडित विदेहक राज मे ।
कृषि-ज्ञान जिनका छलनि बृद्ध-गृहस्थ सकल समाज मे ॥

सबके बजाकऽ जनक कहलनि ठाढ़ भऽ दरबार मे ।
"दुष्काल होयत कोन तरहें दूर सभक विचार मे ॥

सब मिलि विचारि बताउ अखने कैल जायत काज से ।
सधि गेल सभटा भरल छल भरडार मध्य अनाज जे ॥

मंत्री, प्रमुख, विद्वान, बान्धव, कहल श्री मिथिलेश सँ ।

“नहि होउ चिन्ताकुल नृपति ! उद्विग्न नहि दुख क्लेश सँ ॥

जो कऽ सकी तौ झट करू मिथिलेश ! एक उपाय ई ।

बनिकऽ अहाँ हरवाह जोतू खेत कृषि-व्यवसाय ई ॥

किछुओ बिलम्ब कदापि नहि करबाक अछि शुभ काज मे ।

राज्यक प्रजा-हित काज मे नहि पड़ कनियों लाज मे ॥

ई सुनि वचन विचार कैलनि जनक आपद्धर्म ई ।

करबाक अछि हमरा अखन समयानुकूलक कर्म ई ॥

आदेश भेटल जनक दिशि सँ कर्मचारी वर्ग केँ ।

अनबाक ले दूढ़तर सुभग ‘हर’ एक तखने स्वर्ण केँ ॥

भऽ गेल प्रस्तुत वरद-पालो जनक चलला खेत केँ ॥

शुभ मंत्र होमय उच्चारित लागल सँगे-सँग वेद केँ ॥

मिथिलेश उर मे ध्यान कऽ गुरु इष्ट केँ आदेश लऽ ।

लागनि पकड़लनि की तखन घन सघन-गर्जन गेल भऽ ॥

जलपूर्ण वारिद घेरि आयल सकल दिशि आकाश मे ॥

हर्षित भेला नृप जे पड़ल अखने छलाह निराश मे ॥

किछु फाड़ मे ठेकल जनक रुकलाह विस्मित भऽ कने ।

छल पात्र फूटल मे सुकन्या एक सुन्दरतम भने ॥

पाठक ! कने ई बूझिली कन्या काना ऐ ठाम मे ।

आयल कतय सँ भूमि तर मे कखन तिरहुत ग्राम मे ॥

पहुँचल छला विदेह जोतय लेल जाहि सुभूमि केँ ।

छल ताहि तर मे रक्त राखल ऋषि-तपस्वी-मूनि केँ ॥

तन-पाचि कऽ शोणित सभक राजस्व-कर केँ रूप मे ।

ले छल दशानन डाँटि कऽ बनि निर्दयी सब भूप मे ॥

विचरंत नित्य रहैत छल धन-बुद्धि-बल-अभिमान सँ ।

आकाशवाणी एक दिन सुनलक स्वयं निज कान सँ ॥

“रे लंकपति ! ई रक्त हेतौ प्राण-घातक सुनि ले ।

तौ पाप-अर्जन कऽ रहल छै फल तकर अनुमानि ले” ॥

ई वाक्य सुनि चौकल बहुत लागल विचारय हृदय मे ।
 किछु युक्ति सोचि विचारिली द्रुति करब अखनहि समय मे ।
 ई देखि स्थिति रावणक सोचलि तखन मन्दोदरी ।
 दी केँ कि की जल-धार मे एकरा बहा दी किछु करी ॥
 बस दूर गंगा-पार मिथिला-माटितर पाताल मे ।
 जाकऽ अखन दी गाड़ि गलि-पचिजेत किछुए काल मे ॥
 ई सोचि जाकय गाड़ि आयल एक कोनो पात्र मे ।
 ओ रक्त विधि-अनुकूल बदलल बालिका केँ गात्र मे ॥
 सानन्द तकरा कोड़ लऽ राजा जनक अति स्नेह मे ।
 उल्लैत अति आनन्द सँ अयलाह अपना गेह मे ॥
 बरिसल बहुत वारिद पटल सब खेत-थल परिपूर्ण सँ ।
 जयकार लागल तखन होमय जनकपुर सम्पूर्ण सँ ॥
 मानू प्रकृति अवतरित भेली जानकी केँ रूप मे ।
 तँ पवन सुरभित मंद सुखप्रद ताप सूर्यक धूप मे ॥
 नभ छल अहा ! निपल अधिक मधुमास-सन छल मधुरिमा ।
 उत्फुल्लता उत्कल जकाँ प्रातः उषा-सन अरुणिमा ॥
 जन-मन परम प्रसन्न छल पृथ्वी प्रफुल्लित भऽ गेली ।
 भऽ गेल कष्ट समाप्त भेली प्रकट जखने मिथिली ॥
 आदर्श नारी-चरित-धारण कऽ प्रकट भूगर्भ सँ ।
 अथवा कहू मिथिलेश-गृह मिथिलेश्वरी केँ गर्भ सँ ॥
 कहबथि सुनयना-आत्मजा यद्यपि छलीह अयोनिजा ।
 अथवा कहू प्रत्यक्ष लक्ष्मी स्वरुचि सँ छथि भूमिजा ॥
 किनको कहब छनि अवतरित भेलीह दुर्गा-भगवती ।
 सौंदर्य मे रति सँ ने कम एको रती सीता सती ॥
 हर-फाड़ सँ कोड़ल सुयल केँ सीत नाम धरेत छी ।
 तँ सीत सँ प्रकटित भेली सीता सुनाम भजेत छी ॥
 मिथिला मनोहर भूमि महि मे बूझि अति महिमामयी ।
 श्री जानकी भेली प्रकट जन-हित समुद कइनामयी ॥

शोभाक वर्णन करब की ? जलनिधि मे ओस मिलैब छी ।
 अथवा अधर निज चाटि कं तृष्णा महान मिटैब छी ॥
 हिनका गुणक वर्णन करत के ? पूर्णरूपे सृष्टि मे ।
 क्यो नारि श्री सीता-सदृश नहि पाबि रहलहुं दृष्टि मे ॥
 चरितावली सीताक जौ अति ध्यानसं पढ़ि-सूनि ली ।
 मानय पढ़त महि-मध्य मानवताक मूरति मैथिली ॥
 तैं बिनय करबनि जोड़िकर मिथिलाक नारी वृन्द सं ॥
 नित पढ़ति "सीता-शील" के बैसथि जखन स्वच्छन्द सं ॥
 जतवा सुलक्षण नारि मे चाही छलनि से सीय मे ।
 मानय पढ़त निर्मल छलनि बुधि-वल पुनयना-धोय मे ॥
 मन हैत "सीता-शील" पढ़ि आदर्श नारी हम बनी ।
 पति-सामु-ससुरक सेविका बनि गुणवती निजके गनी ॥
 सत्शास्त्र नारी लेल शिक्षाप्रद सुपोथी नित पढ़ी ।
 सीताक नेहर देखि आबी शीघ्रतम सीतामढ़ी ॥
 सीताक पावन अवतरण भेलनि तकर किछु हेतु छै ।
 सीता-चरित तौ भव जलधि के पार करक सुसेतु छै ॥
 जौ पढ़थि ललनागण लगन सं सतत "सीता-शील" के ।
 बैसल समय बितबैथ नहि मारैत माथक ढोल के ॥
 आचार संग विचार बनबथि जनक-नन्दिनि सिय जकाँ ।
 पुरुषो सकल व्यवहार सीखथि करथि सीता-पिय-जकाँ ॥
 तौ अछि अटल विश्वास मिथिला रहत नहि कम स्वर्ग सं ।
 प्रतिदिन प्रशंसा-पत्र होयत प्राप्त जग-जनवर्ग सं ॥
 की ? नारिके छै धर्म-गुण सभटा बतौलनि जानकी ।
 धीरज धरी दुख मे कोना कऽ से सिखौती आन की ॥
 की हेतु करी विवाद ककरा संग कोन प्रकार सं ।
 सीता जनैत छलीह सभटा अपन उच्च विचार सं ॥
 मन मे उठनि इच्छा अशुभ तौ देखि झट तकरा दबा ।
 जानथि सिया मन-रोग के की ? ह्वैछ समयोचित दवा ॥

सीता-चरित आदर्शमय उपदेशप्रद सब रीति सँ ।
सभ काज समयोचित करथि नारी-सुधर्मक नीति सँ ॥

सेवक-टहलनी सभ रहथि सन्तुष्ट सिय-वर्त्ताव सँ ।
ममता-रहित योगी जनक लऽ कोड़ चूमथि चाव सँ ॥

कलनोने कैलनि शब्द उच्चारण कोनो अश्लील केँ ।
कतबो विपति पड़लनि तदपि तजलनि ने सीता-शील केँ ॥

बुदरुक जे कानथि वस्तु किछुओ लेल कोनो नारि केँ ।
मारथि ने डाँटथि अपितु ब्रौंसथि दऽ मधुर परतारि केँ ॥

दुसबाक अवसर देथि नहि किनको अपन व्यवहार सँ ।
पाबथि प्रशंसा सर्वदा सुसमाज आ परिवार सँ ॥

नित करथि श्रद्धा-भक्ति संग प्रणाम निज सँ श्रेष्ठ केँ ।
आज्ञा सतत मानथि रहथि जे वयस मे कुलजेठ केँ ॥

गृह-कार्य अपना योग्य भरि माताक शुभ आदेश लऽ ।
हर्षित-हृदय सँ करथि सब चिक्कन जकाँ सुविशेष कऽ ॥

नहि अन्य पुरुषक संग कलनो रहथि नहि एकान्त मे ।
बैसथि सखी-संग शौच-मज्जन करथि नियत स्थान मे ॥

अनुचित कोनो जौ काज देखथि चुप कदापि ने रहथि ई ।
डाँटथि-दबारथि नहि बुझाबथि मधुर रूपेँ कहथि ई ॥

कलनो उदाश-निराश बैसलि व्यर्थ नहि देखल कियो ।
अलसाथि नहि अग्राथि नहि नृप जनक केँ भऽ कऽ धियो ॥

सदिखन सुनयना रहथि हर्षित देखि सिय-व्यवहार केँ ।
लऽ आनि देथि दुलार सँ नित वस्तु विविध प्रकार केँ ॥

सिखबथि गृहस्थाश्रमक समटा लूरि एवं रीति केँ ।
परिवार-प्रेमक पाठ पढ़बथि स्वजन-परिजन-प्रीति केँ ॥

मिथिला-दर्शन

एवम्प्रकारेँ दिवस-मास अनेक वर्ष समाप्त भऽ ।

आयल समय यौवन-अवस्था जखन सियकेँ प्राप्त भऽ ॥

राखल बहुत दिन सँ जनक-गृह शिव-धनुष छल एकटा ।

ओ छल कते भारी छला ज्ञाता विशेष विदेहटा ॥

सीता बढारथि धनुष-तर सहजहि उठाकऽ हाथ सँ ।

से देखि कहलनि मा सुनयना प्रेमयुत निज नाथ सँ ॥

“हे नाथ ! हम देखल बढारति सीय केँ आगार मे ।

सहजे उठा कऽ राखि देलनि धनुष एक किनार मे ॥

ई सुनि बजला जनक ‘सिय सँ अधिक जे नर शक्ति मे ।

सामर्थ तोड़क धनुष केँ छनि जाहि सज्जन व्यक्ति मे ॥

निश्चय हमर अछि वेह नर बनताह सीता-पति कियो ।

स्वीकारती पति-रूपमे तिनकेँ सुनयना केँ धियो ॥”

भऽ गेल घोषित धनुष-यज्ञ-महोत्सवक सब देश मे ।

लगलाह आबय यज्ञ-थलपर भूपवीरक वेष मे ॥

सबकेँ सुनौलनि प्रण जनक “जे शिव-धनुषकेँ तोड़ता ।

से जानकी केँ पाणि गहि सम्बन्ध बड़का जोड़ता” ॥

ताही समय मे राम-लछुमन संग विश्वामित्र केँ ।

रक्षा करैत छाहाह दूनु भाइ यज्ञ पवित्र केँ ॥

सम्पन्न भेले छलनि यज्ञक कार्य सब तत्काल मे ।

अयलनि निमंत्रण-पत्र मिथिला सँ लिखित रंग लाल मे ॥

सीता-स्वयंवर-सन सुखद सम्बाद पढ़ि हर्षित भेला ।

तीनू सुजन लऽ शिष्य-गणकेँ जनकपुर पहुँचै गेला ॥

पहुँचैत मिथिला-भूमि पर अतिशय प्रसन्न छलाह ओ ।

मिथिलाक वेभव देखि अनुपम मुग्ध भऽ बजलाह ओ ॥

“हिम धवल पर्वत-पुञ्ज-तलमे बसल मिथिला प्रान्त ई ।

सम्पूर्ण विश्वक देश एवं प्रान्त सँ शुभ शान्त ई ॥

कोशी बलानक धार कमला गंडकी धेपुरा तथा ।
नित बहथि मिथिला-मध्य जिनकर छनि सुखद अद्भुत कथा ॥

तिरहुतक तुलना मे कोनो नहि देश-प्रान्त पबैत छी ।
मिथिला-सदृश सौन्दर्य हम संसार मे न सुनैत छी ॥

अपना परिश्रम सँ उपाजित वस्तु-भोगब उचित छी ।
ई धारणा मिथिला-समाजक देखि हम अति मुदित छी ॥

किछु भिन्नता देखैत छी नहि प्रजा-राजा-सदन मे ।
मिथिलाक महिला-पुरुषके छनि अति मधुरता वचन मे ॥

मुँह पर सदैव प्रमन्नता झलकैत हम देखैत छी ।
किछु वस्तु कोनो लेल नहि झगड़ा करैत सुनैत छी ॥

नहि देखि रहलहुँ एकटा अपवित्र अपरोजक कियो ।
सब छथि सुशील-पवित्र-वितपनि डोम हलखोरक धियो ॥

तँ जानकी नैहर बनौलनि एहन सुन्दर भूमि के ।
मनह्वैछ नहि वन जाइ पुनि मिथिला नगर सँ घूमि के ॥

मिथिला-प्रशंसा सूनि मुँह सँ बहुत विश्वामित्र के ।
नहि रहल गेननि बालानक स्वभाव सँ सोमित्र के ॥

भेलनि लखन के लालसा देखी जनकपुर नगर के ।
भय छनि मुदा रघुवरक अरु संकोच बड़ मुनि-प्रवरके ॥

तँ कहथि नहि मुँह सँ मुदा बजवाक क्रम बनबथि अहा !
अनुजक हृदय के भाव-ज्ञाता राम तौ छथिये महा ॥

कहलनि मुनीश्वर सँ "कृपा कऽ नाथ ! जौ आदेश दी ।
जनकक नगरमे घूमि बूझो लोक-भाषा-भेष की" ?

मुनिवर मुदित मन सँ कहल "घूमू नगर आनन्द सँ ।
हे राम ! सभके दृग सफल कऽ आउ निज मुख-चन्द सँ" ॥

मुनिकेर आज्ञा पाबि दूनु भाइ गेला नगर मे ।
लगला बहय मिथिलाक अति शोभा-समुद्रक लहर मे ॥

नर-नारि-गण नगरक निकलि बाहर भेला निज भवन सँ ।
सुकुमार युगल कुमार के दर्शन करक हित नयन सँ ॥

श्री राम के लखि रूप पल नहि खसनि किनको आँखि के ।
सब ठाढ़ भऽ निश्चल रहथि पक्षी जेना बिनु पाँखि के ॥

सब कहथि नहि देखल एहन सुन्दर पुरुष संसार मे ।
मन हँछ लीतहुँ राखि दूनु मूर्ति हृदयागार मे ॥

मनहर सुखद दर्शन अखन भऽ रहल अछि संयोग सँ ।
मुनितहुँ कने आलाप करितथि विहँसि मैथिल लोग सँ ॥”

बाजथि कियो शिव-धनुष के ई तोड़ि तड़फड़ देखि जौ ।
सीता कुमारी के अपन पत्नी बना ई लेथि तौ ॥

शोभा तखन बढ़ि जैत चौगुन एहि मिथिला-धाम के ।
दुलहिन सिया के बनल लखि दुलहा बनल श्री राम के ॥

रचलनि विधाता युगल जोड़ी बहुत सोचि-बिचारि कऽ ।
वरश्याम लै अति गोरि कनियाँ रचल कला सुधारि कऽ ॥

बजली कियो “दूटब धनुष ई एहि राजकुमार सँ ।
अछि अति असम्भव ऐ प्रकारक युवक नर सुकुमार सँ ॥

भारो बहुत दृढ़तम बनल अछि शम्भुकेर ~~ब~~ सुचाप ई ।
दूटब कठिनतम छेक नर सँ हम कहै छी साँच ई ॥

सुकुमार छथि ई अछि कठोर पिनाक गिरिजा-नाथ के ।
देखैत नहि छी ? हिनक कोमल चरण दूनु हाथ के” ॥

दोसर सखी देलनि उचित उत्तर छली बुधियारि जे ।
अति तर्कयुत उत्तर छलनि बनलीह सभक गियारि से ॥

हिनकर कहब अद्भुत छलनि “देखैत केवल छोट छी ।
नहि किन्तु हिनका तुल्य तिरहुत मध्य एको गोट छी ॥

छथि शक्ति-शीलक सिन्धु सुख-सौन्दर्य के भण्डार ई ।
सखि ! शीलवन्ती सीय सुन्दरि-योग्य वर सुकुमार ई ॥

तरली अहल्या जिनक पद-पंकज-रजक स्पर्श सँ ॥
मन मूदित कौशिक मुनिक कलनि निज चरित आदर्श सँ ।

मुनि-यज्ञ-रक्षण मे बहुत हतलनि निशाचर वर्ग के ।
कतवेर वर्षीलनि सुमन सुर-बालिकागण स्वर्ग के ॥

से व्यक्ति सखि ! शिव-धनुष सहजहि तोड़ि नहि सकता कियै ?
आबहुँ बताउ विचारि कऽ सन्देह सभकेँ अछि कियै ?

कैलनि समर्थन सभ मुदित भऽ ओहि सखि सुबात केँ ।
मुसकैत सँग विहँसैत छथि जहिना सुमन जलजात केँ ॥
ओ दृश्य सुन्दर छल केहन से करब वर्णन अखन की ?
नहि देखि सकलहुँ दृश्य ओ लिपिवद्ध होयत तखन की ?
आनन्द दै आनन्द ल घुमलाह अति आनन्द सँ ।
श्री राम-लछुमन छथि अहा ! मुसकैत दूनु मन्द सँ ॥
कऽ सकल महिला-पुरुष केँ मोहित मनोहर रूप सँ ।
अबलाह गुरु लग जे छला पूजित अनेकोँ भूप सँ ॥
कैलनि प्रणाम विनीत मन सँ गुरु चरण केँ छबि कऽ ।
कहलनि सकल वृत्तान्त देखल-सुनल जे जे घूमि कऽ ॥
मुनिवर सहर्ष मनेह दऽ आशीष सिर केँ चूमि केँ ।
लगला सराह्य "धन्य अछि सौभाग्य मिथिला भूमि केँ ॥
कैलहुँ अहाँ हे राम ! जीवन-सफल नगरक लोक केँ ।
विश्वास अछि धनु-भंग कऽ हरबनि विदेहक शोक केँ ॥
अहँ थाकि गेले हैब घुमलहुँ जनकपुर-बाजार मे ।
नित कार्य सँ झट निपटि करु विश्राम सयनागार मे ॥
आजा गुरुक स्वीकार कऽ कैलनि यथोचित कार्य केँ ।
भोजन स्वरुचि सँ कऽ दुनु आदेश सँ आचार्य केँ ।
गुरु-चरण जाँतब शयन सँ पहिने बुझथि अनिवायं केँ ।
कत्तंव्य सब कैलनि नियम छल जे तखनका आर्य केँ ॥
निशिगत जखन भऽ गेल तजलनि सेज प्रातःकाल मे ।
शौचादि कऽ स्नान कैलनि जनक नगरक ताल मे ॥
आदेश लऽ गुरु सँ तखन चललाह पुष्पक वाग मे ।
छल जतय कुसुम सरोज विकसित विविध सुभग तराग मे ॥
सुन्दर सुअवसर ई विधाता पूर्वं सँ रचने छला ।
लखु प्रेमिका-प्रेमी दुनु केँ कोन विधि देलनि मिला ॥
माता सुनयना देलि आज्ञा स्नेह सँ श्री सीय केँ ।
"पूजा करै लै जाउ सिय ! हिमवान नृपतिक धीय केँ ॥

पुष्प-वाटिका

ई चन्द्रवंशक चलि रहल अछि पूर्व सँ सुन्दर प्रथा ।

शुभ कार्य के पहिने करी गौरीक पूजा विधि यथा ॥

तैं हमर प्रिय बेटी ! अही गिरिजाक पूजा नेम सैं ।

जाकय करू गौरीक मठ मे अखन श्रद्धा-प्रेम सैं ॥

ओ शैलजा - मन्दिर बनल छल पुष्पवागक मध्य मे ।

सुन्दर सरोवर स्वच्छ जल सैं पूर्ण छल सानिध्य मे ।

श्री जानकी जननीक आज्ञा पाबि अयली वाग मे ।

दश-पाँच संगिनि-संग कऽ गावथि मनोहर राग मे ॥

कैलनि सिया स्नान सब सखि-संग सुभग तडाग मे ।

चन्दन जकाँ सिन्दूर कैलनि एक-दोसर माँग मे ॥

लगली करय श्रद्धा-सहित गौरीक पूजा नेम सैं ।

कर जोड़ि सविनय प्रार्थना कैलनि सिया अति प्रेम सैं ॥

“हे शैलजे ! गिरिजे ! उमे ! मैना-सुते ! शंकर-प्रिये !

हिमवन्त-नन्दिनि ! विश्व-वन्दिनि ! सतत् वासिनि शिव-हिये !

कैलनि पिता प्रण उचित हमरा योग्य वर के प्राप्त ले ।

कृपया प्रतिज्ञा पूर्ण करू सब मे ‘उमे ! छो व्याप्ति भे ॥

करुणामयी गिरिजे ! कृपाकऽ योग्य दुलहा कऽ दिअऽ ।

जे भऽ सकय सेवा सिया सैं से अखन करबा लिअऽ’ ॥

एही प्रकारे ठाढ़ि भऽ कर जोड़ि कऽ जनकक लली ।

गौरीक पूजा - प्रार्थना लगली करय श्री मैथिली ॥

तावत सखी मे एक गेली वाग घूमय लेल जे ।

देखल युगल कुमार के की मुग्ध अति भऽ गेल से ।

सीताक लग झटकैत दौड़लि मुदित मन अयलीह ओ ।

किछु छन परम आनन्द-सर मे डूबि चुप रहलीह ओ ॥

पूछलि सिया “बाजू अहाँ के हे सखी ! अछि मेल की ?

अद्भुत कोनो शुभ दृश्य किछु पागल जकाँ कऽ देल की ?

अपस्यात भऽ हकमैत छी पगलैल जकाँ लगैत छी ।
की ? देखि अयलहुँ कोन दिशि से नहि कियंक कहैत छी" ॥

कहलनि सखी "देखल परम सुन्दर युगल कुमार केँ ।
सौन्दर्य-युत सुकुमारता सद्गुण सकल प्रकार केँ ॥

छथि एक श्यामल गोर दोसर हँसथि सबखन मन्द मे ।
नहि हम पबैछी ओहन सुन्दरताक समता चंद मे ॥

दर्शन करै लै सब चली अनुपम मनोहर रूप केँ ।
सार्थक करी निज नयन केँ लखि युगल मूर्ति अनूप केँ ॥

अनुमान होइछ वैह छथि जे काल्हि खन घूमै छला ।
देखबैत सभकेँ अपन छवि देखैत नगरक प्रिय कला ॥

सब क्यो चली-देखी कने की धारणा छनि बूझिली ।
जो पैब अवसर तो कनी वतियैब किछुओ पूछिली ॥

सीता हृदय सँ सत्य मानल नारदक सद्यचन केँ ।
होयत घटित घटना अखन अनुसार ऋषिवर कथन केँ ॥

छथि पुरुष ई पति-योग्य सुनलनि मधुर वाणी गगन केँ ।
विश्वास जमलनि देखि कऽ फरकैत वायाँ नयन केँ ॥

भेलनि विचार अवश्य देखी छथि केहन वर पुरुष ई ।
देखी कने छनि शक्ति तोड़क स्वकर सँ शिव-घनुष ई ॥

चञ्चली सुनयना - नन्दिनी समुदित सखी - गण - संग मे ।
प्रकटित पुरातन प्रीति उपजल रोम सिहरल अंग मे ॥

सब दिशि चकित भऽ नयन घूमनि जनक राज-दुलारि केँ ।
जहिना तकै छथि भक्त उर मे बसल प्रभु त्रिपुरारि केँ ॥

सीताक कंगना-पायलक ध्वनि मधुर सुखकर सूनि कऽ ।
कहलनि लखन केँ राम "कहु स्वर ककर मन मे गूनि कऽ ॥

अन्दाज अछि डंका बजै अछि मनसिजक जग-विजय केँ ।
पहुँचत एतय जीतत अखन हमरा अहाँ केँ हृदय केँ" ॥

भेलनि सिया-मुल-चन्द्र लखि रामक नयन-चकोर केँ ।
आनन्द जहिना होनि वारिद देखि प्रेमी मोर केँ ॥

सीता-मुखक सौन्दर्य अनुपम मुग्ध कैलक राम के ।
 तजि पुष्प तोड़व करय लगला मधुर दर्शन वाम के ॥
 मन मे कहथि अछि धन्य मिथिला रहथि ई सुन्दरि जतऽ ।
 छी धन्य हमहूँ सभ एहन दर्शन करय पबितहुँ कतऽ ॥
 जे छलनि सुन्दर वस्तु-गुण ब्रह्माक निज भण्डार मे ।
 से सभ इकत्रित देखि रहलहुँ जानकी आकार मे ॥
 सीताक योग्य सुयोग्य वर नर के ? अखन संसार मे ।
 अनुमान अछि नहि छथि कियो लछमन हमर विचार मे ॥
 सीताक सुन्दरताक वर्णन कऽ अनेक प्रकार सँ ।
 पृच्छल मुदित मन राम निज प्रिय अनुज लखन कुमार सँ ॥
 "हे लखन ! बूझि पढ़ैय हिनके लेल नृप प्रण कैल की ?
 भऽ रहल अछि धनु-यज, हम सभ अेल छी ऐ लेल की ?
 गौरीक पूजा हेतु छथि आयल सखी संग वाग मे ।
 सुनलहुँ अखन संगीत हिनके मधुर सुन्दर राग मे ॥
 गौरीक प्रति श्रद्धा हिनक लखि परम पूजाचार के ।
 हम मुग्ध छी भऽ गेल हिनकर बूझि मधुर विचार के ॥
 हम तौँ प्रभावित भऽ रहल छी एहि नारि-प्रभाव सँ ।
 परिचित करा क्यो देखि जौँ सम्प्रति हिनक स्वभाव सँ ॥
 तौँ हे लखन ! हृदयेश्वरी हिनका बनबितहुँ यत्न सँ ।
 भऽ जाइ हम अतिशय सुशोभित एहि नारी-रत्न सँ ॥
 देखैत छी लक्ष्मण सुखद फरकैत दहिना अंगके ।
 होनी लागै अछि प्राप्त होयत वस्तु अनुपम रंग के ॥
 कवनो कुपथ पर नहि चली ई रघुकुलक स्वभाव छै ।
 पर नारि पर भऽ जाइ मोहित भावनाक अभाव छै ॥
 छी किन्तु अखन देखैत अति विपरीत बात स्वभाव मे ।
 परि गेल छी हम राम एक कुमारि नारि-प्रभाव मे ॥
 बतियाति छथि सौमित्र सँ छनि ध्यान सीता-दिशि मुदा ।
 सीताक मुख-छवि-मधुर-मय पीबैत मन सँ सुखप्रदा ॥

वाचक ! निहारू आव एमहर सियक ढंग लगैछ की ?
 लखि राम छवि सीता-हृदय मे भाव मधुर उठैछ की ?
 सब दिशि निहारथि किन्तु देखथि नहि युगल कुमार के ।
 भऽ जानि व्याकुलता अधिक मनमे अनेक प्रकार के ॥
 फूहरि अधिक सज्जानि एक छली सखी के गोट मे ।
 देलनि लखा श्री रामके छीपल लता के ओट मे ॥
 लखि रूप रामक जानकी के लागि गेलनि टकटकी ।
 कहु तो तखुनका दृश्य के वर्णन करै मे हम सकी ॥
 भेला प्रकट भ्राता दुनू सुन्दर लताके कुञ्ज सँ ।
 मानू जेना दू चन्द्रमा बहराथि वारिद-पुञ्ज सँ ॥
 छनि माथ पर जिनका मयूरक पंख शोभा धाम जे ।
 छनि बाल घंघरदार अति छथि नाम रखने राम जे ॥
 मणिमाल उर मे भाल परम विशाल बाल-स्वभाव के ।
 लखि मुग्ध छथि सीता विसरली अपन शक्ति प्रभाव के ॥
 विह्वल विदेह-कुमारि भेली जखन प्रेम अपार सँ ।
 दृग-गेह मे प्रभुरूप कैलनि बन्द पलक-किवार सँ ॥
 भेली अचेत खसैत देखलनि जखन जनक कुमारि के ।
 देलनि खसय नहि सीय के घऽ लेल सखी सम्भारि के ॥
 लगली कह्य सुकुमारि सीता के सखीगण प्रेम सँ ।
 "सीते ! करू दर्शन नयन भरि चेत भऽ शुचि नेम सँ ॥
 भेलछि विजम्ब विशेष आबहु भवन दिशि झट दऽ चलू ।
 अबिलम्ब अवध-किशोर लग सँ हे सखी ! सभ क्यो टलू ॥
 भऽ जँब सम्भव सब प्रभावित हिनक रूप-प्रभाव सँ ।
 भऽ जँब पीड़ित सभ युगल नर-नयन-वाणक घाव सँ ॥
 अनजान कोनो पुरुष लग अँटकलि रही फुलवारि मे ।
 सोचैत छी नहि की ? अहाँ लागत कलंक कुमारि मे" ॥
 वाणी सखी के सुनि सिय सकुचा गेली संकोच सँ ।
 पितु जनक-प्रण के बूझि चिन्तित भऽ गेली अति सोच सँ ॥

तत्काल धीरज राखि चलली राम के धरि ध्यान मे ।
 कोनो रखी लग ठाढ़ि भऽ लागथि कह्य किछु कान मे ॥
 झूठे लगे छनि ठेस बैसथि तौ निहारथि राम के ।
 कखनो ने बिसरै छथि मनोहर रूप आनन्द-धाम के ॥
 चाहैत छथि यावत समय धरि देखि रहलहु राम के ।
 अटकलि रही के कऽ बहाना झूठ-मूठक काम के ॥
 कऽ लेल चित्तक भीत पर अंकित प्रभुक शुभचित्र के ।
 लगली करय सीता विनय गौरीक मूर्ति पवित्र के ॥
 अति भक्तिवश दृग-नीर बहलनि जानकी के नयन सँ ।
 गौरीक बारम्बार विनती करथि मृदुतम वयन सँ ॥
 'हे श्रेष्ठ पर्वतराज - तनये ! शम्भु-भामिनि पार्वती !
 शिव-मुख-शशिक सुन्दर चकोरी ! जगत-प्रथित महासती !!
 गणपति तथा कार्तिक-सुमाता ! विश्व जननी हे उमे !
 जय हो अहाँ के हे शिवे ! मैनाक तनये ! हे उमे !!
 अर्द्धाङ्गिनी शम्भुक सदा वरदायिनी सब जीव के !
 जय हो अहाँ के हे शिवे ! आनन्द-दायिनि शीव के !!
 संसार के उत्पत्ति - पालन - नाश अपने हाथ मे ।
 अछि भक्ति अविचल माँ अहाँ के स्वपति भोलानाथ मे ॥
 अछि लालसा हमरा कथी ? जनिते अवश्ये छी अहाँ ।
 सबके हृदय मे जखन शिव-संग नित विराजित छी अहाँ ॥
 हम तखन अपने के सुनायब की ? मनोरथ शब्द मे
 सब किछु जनै छी माँ ! अहाँ विधि-लिखल जे प्रारब्ध मे ॥
 कैलनि विनय बहु भाँति सँ भरि नीर दूनु नयन मे ।
 प्रेमाकुला जनकात्मजा सिर टेकि देलनि चरण मे ॥
 सीता विनय सुनि प्रेम के वश मे भयानी भऽ गेली ।
 खसि पड़ल पुष्पक हार कर सँ तखन गिरिजा हँसि देली ॥
 आनन्द सँ आदर सहित लऽ माल गौरि - प्रसाद के ।
 कैलनि सहर्ष सुमाल धारण पाबि आशीर्वाद के ॥

गौरी हृदय मे हर्ष भरि कहलनि सियाके स्नेह सैं ।
“प्रण-पूर्ण हेतनि कैल अछि जे गेल नृपति विदेह सैं ॥

सीते ! अवश्ये पूर्ण होयत जे अहँक अछि कामना ।
अनुपम पुरुष वर प्रति बनौलहुँ भक्तियुत निज भावना ॥

अनुरक्त भेलछि मन अहँक सिय ! जाहि पुरुषक प्रति अहा !
दुलहा अवश्ये अहँक बनता ओ बली सुन्दर महा ॥

जिनका स्वपति मन मे बनौलहुँ छथि धनुद्धर राम से ।
सर्वज्ञ-सर्वसमर्थ-हँसमुख छथि दया के धाम से ॥

ओ सब जनै छथि नीक तरहें अहँक शील-स्वभाव के ।
ओ पूर्व सँ परिचित तथा ज्ञाता अहँक प्रभाव के ॥

ओ तौ प्रभावित भेल छथि पहिनहि जनक-व्यवहार सैं ।
मोहित अधिक भऽ गेल छथि मिथिलाक शिष्टाचार सैं ॥

ओ ऐल छथि बभू जनकपुर ऐह मन मे धारि के ।
बनबैक छनि प्राणेश्वरी सीते ! अहीं सन नारि के” ॥

गिरिजाक आशीर्वाद रुचिकर सूनि प्रमुदित जानकी ।
भेली प्रसन्न कतेक से कहि सकत कहु तौ आन की ?

गौरीक बारम्बार स्तुति कैल अति आनन्द सैं ।
चलली भवन दिशि जानकी वरदान पाबि पसन्द सैं ॥

पुनि आब देखु राम के की ? हाल सिय-सौन्दर्य सैं ।
भऽ गेल मोहित छथि अधिक सीताक छवि-माधुर्य सैं ॥

सीताक सुन्दरता सराहति पहुँचला गुरु चरण मे ।
सब घटित घटना कहि सुनौलनि सत्य समुचित वचन मे ॥

आशीष देलनि मुनि समुद मुसकैत दूनु बन्धु के ।
“होयत सफल मन के मनोरथ” कहल करुणा-सिन्धु के ॥

लऽ पुष्प पूजा कैल ओ निज इष्ट गुरुके प्रेम सैं ।
चर्चा चलऽ लागल परस्पर वेद शास्त्रक नेम सैं ॥

आदेश मुनि के पाबि दूनु भोजनक उपरान्त मे ।
किछु काल धरि विश्राम कऽ पहुँचै गेला एकान्त मे ॥

तुलसी चबुतरा पर दुनू बैसल छला दिवसान्त मे ।
वातावरण छल शान्त सुखमय सकल मिथिला प्रान्त मे ॥

देखल अहा ! पूरब दिशा मे उदित उज्जर चान के ।
श्री जानकी मुख-सदृश लखि लगला करय मिलान के ॥

“सीता-मुखक समता कोना भऽ सकत कहियो चान मे ।
छै भिन्नता जहिना बुझू अति मूर्ख आ विद्वान मे ॥

खारा जलधि सँ जनम चन्द्रक रहथि एकसर व्योम मे ।
छिप जाथि धनगर धूम्र सँ जे उड्य यज्ञक होम मे ॥

भ्राता हिनक छनि गरल दिन मे रहथि सदखन मलिन ई ।
लागल कलंकक दाग छनि जे आव छूटब कठिन ई ॥

नित दिन घटैत-बढ़ैत छथि दुख देथि विरहिणि नारि के ।
ग्रसि लैत छनि हा ! राहु हिनका ग्रहण-अवसर पाबि के ॥

सरसिज सुमन के शत्रु शशि छथि विश्व मे विख्यात ई ।
सीताक तुलना करब शशि सँ हैत व्यर्थक बात ई ॥

जग बीच अनुपम अविनि-तनया छथि अवश्ये लखन ई ।
भऽ गेल समय विशेष अँटकब हैत अनुचित अखन ई” ॥

अयलाह गुरुके निकट पुछलनि हाथ-जोड़ि प्रणाम कऽ ।
“हे गुरु प्रवर ! धनु-यज्ञके परिणाम कहु विश्राम कऽ ॥

सर्वज्ञ अपने छो भविष्यक बात सकल जनैत छी ।
सीताक वर के ? नर हेता बुझितहुं कने पूछैत छी” ॥

ई प्रश्न रामक सूनि मुनि लगलाह सोचय ध्यान सँ ।
की पूछि रहला अछि स्वयं जे पूण छथि सद्ज्ञान सँ ॥

अछि उचित उत्तर देब हमरा गुरु हिनक कहवैत छी ।
छथि शिष्य तखन छिपाउ की परिणाम जखन जनैत छी ।

कहलनि “कहब की ? राम ! हम आने स्वयं सर्वज्ञ छी ।
को हैत ? की भऽ रहल अछि ? की भेल अछि ? मर्मज्ञ छी ॥

सीता बना चुकली अहाँ के स्वपति पुष्पक वाग मे ।
वरदान दऽ देलनि उमा सानन्द भरि अनुराग मे ॥

तें आब की छीपल रहल सीताक वर बनताह के ?
राघव ! अहाँ के छोड़ि धनु के तोड़ि नर सकताह के ?

मुनि के कथन सँ राम अति हर्षित हृदय सँ भऽ गेला ।
गुरुवरक लऽ आदेश तीनू व्यक्ति सूतइ ले गेला ॥



धनुष-यज्ञ

नित कर्म सँ निवृत्ति भऽ गुरु-शिष्य प्रातःकाल मे ।
जनकक सुआग्रह पर पहुँचला यज्ञभूमि विशाल मे ॥

धनु - यज्ञ - आयोजन छला कैने जनक उत्साह सँ ।
प्रति देशके लगलाह आबय नृपति-गण सिय-चाह सँ ॥

मणि-मङ्गल मंडप छल बनल सीता-स्वयंवर लेल जे ।
अद्भुत-अपूर्व सुरम्य देखक योग्य मानल गेल से ॥

सम्पूर्ण थल छल भरल आगत शूर-वीर नरेश सँ ।
मन्त्री सुनीलनि जनक-प्रण मिथिलेश के आदेश सँ ॥

“राखल एतय अछि शिव-धनुषके तोड़ि देता वीर जे ।
बनताह पति सीताक नर-वर भूमिपति रणधीर से ॥

श्री जानकी जयमाल पहिरौती परम आनन्द सँ ।
सम्पन्न होयत कायं वैवाहिक सविधि सुपसन्द सँ ॥

प्रण-वाक्य सुनितहि भूप सब लगला विचारय हृदय मे ।
वीरत्व अपन करी प्रकट समुचित उपस्थित समय मे ॥

सब नृपति अपनाके लगाबथि वीर जग-विख्यात छी ।
फोड़ि के तोड़ब कहू ई कोन भारी बात छी ॥

लगला उठाबय आबि बेरा-बेरि शंकर-धनुष के ।
उठतनि की हिलबो कैल नहि ताकथि चहूँ दिशि मनुष के ॥

चुपचाप निज स्थान पर बंसाथि भुका सिर लाज सँ ।
लगलनि पता नहि कतेक भारी धनुष छै अन्दाज सँ ॥

धनु नहि हिलनि हिलबथि मुदा पुनि-पुनि अनेको यतन सँ ।

जहिना सती-मन हो न विचलित पुरुष कामी-वचन सँ ॥

लगला उठाबऽ एक सँग बहुतेक व्यक्तित सम्भारि कऽ ।

उठलनि तथापि ने धनुष रहला बैसि हीया-हारि कऽ ॥

देखल जनक निराश भऽ बैसल स्वयंभू भूप केँ ।

छनि शक्ति नहि तोड़ैक किनको ओहि धनुष अनूप केँ ॥

मिथिलेश केँ तँ कहऽ पड़लनि तखन यज्ञागार मे ।

“बुझि लेल हम छथि वीर नहि सम्प्रति कियो संसार मे ॥

जोँ पूर्व मे जनितहुँ तखन नहि प्रण एहन करितहुँ कदा ।

अछि आब कोन उपाय से सोचक पड़त हमरा मुदा ॥

वरु जानकी रहि जाथि जीवन भरि कुमारिक रूप मे ।

प्रण नहि टरत सुनि लेथि जे क्यो होथि ज्ञानी भूप मे ॥

नहि छनि लिखल विवाह सिय केँ बूझि सैह पड़ेछ की ?

रहती बिना ब्याहलि सिया लक्षण विचित्र लगैछ की” ?

जनकक वचन केँ सूनि लछुमन भौँह कैलनि टेढ़ तौँ ।

उठलनि फड़कि कर दहिन चुप छथि भाइ-भयकेँ बेढ़ सँ ॥

नहि रहल गेलनि तखन उठला बाजि झट लछुमन ततऽ ।

“नृप ई वचन वजला कियै ? रघुकुलक नर छथि क्यो जतऽ ॥

हे भानुकुल के दीप रघुवर ! अखन आज्ञा दी अहाँ ।

ब्रह्मांड केँ कंदुक जकाँ दी फेंकि जाँ कहि दी अहाँ ॥

आदेश दी मूली-जकाँ तोड़ब सुमेरु पहाड़ केँ ।

शक्तिक प्रदर्शन कऽ देखा दी जनक सँग संसार केँ ॥

कहु तखन श्रमकी हैत तोड़ब मे पुरान पिनाक केँ ।

लऽ लेथु वापस जनक अपना एहि बाजल वाक केँ” ॥

ई वीरता-सम्पन्न वाणी सूनि लछुमन लाल केँ ।

भेलनि असीम प्रसन्नता ज्ञानी सुजन नरपाल केँ ॥

भेली मुदित सीता अधिक आशा-जनक प्रसंग सँ ।

वातावरण बनि रहल छल उत्तम निराला दंग सँ ॥

सकुचागेला मिथिलेश कैलनि राम चुप सौमित्र के ।
भेलनि अतीव प्रसन्नता गुरुदेव विश्वामित्र के ॥

शुभ जानि अवसर कहल कौशिक स्नेह युत श्री राम सँ ।
"हे राम ! जनकक दुख हरू धनु-भंग कऽ आराम सँ ॥

तखने सखीगण सीयके लै आनि अन्दर गेह सँ ।
कैने छली सिय के उपस्थित प्रिय सखीसभ स्नेह सँ ॥

अनुपम सुभूषण सँ सजलि सीता सुभग शृंगार कऽ ।
धनुयज्ञ-थल पर ऐल छथि सौन्दर्य जनु साकार भऽ ॥

सीताक सुन्दरताक वर्णन सृष्टि मे कऽ सकत के ?
रामक प्रिया बनती तिनक गुणगान पूरा करत के ?

नित रहथि गज-गामिनि सिया अति प्रिय सखी के संग मे ।
जहिना रहै छथि गंग विविध तरंग संग उमंग मे ॥

रहती कियै नहि सजलि सीता विविध रत्न विभूषिता ।
बल-विभव-पूर्ण उदार नृप-सन जनक जिनकर छथि पिता ॥

यज्ञक महा मण्डप सुशोभित आविकै कऽ देल ओ ।
मानू जेना नभ मे उदित तारा सहित शशि भेल हो ॥

सिय-पाणि मे जयमाल छनि छथि ठाढ़ि अनुपम रीति सँ ।
विश्वास छनि पति राम बनता ध्रुव पुरातन प्रीति सँ ॥

सब दिशि सिया ताकथि हृदय मे बसल शोभा घाम के ।
नहि देखि व्याकुल छथि महा ! मन मे पुकारथि राम के ॥

गुरु-बन्धु-बीच सुशान्ति बैसल देखि प्रेमी के अहा !
वर्णन करत के ? कते भेलनि जानकी के सुख महा ॥

बुधियारि सीता ध्यान कऽ रामक मनोहर रूप के ।
लगली करय मधु-पान अति सुखमय अमिय अनूप के ॥

मानू पतंग प्रदीप पर जीवन-निछावर हो जेना ।
प्रेमी मधुप मकरन्द पर अर्पित करय तन-मन जेना ॥

छनि जानकी के राम पर रामक सिया पर दृष्टि जे ।
प्रत्यक्ष ई तौ भऽ रहल सत्प्रेम-वारिक दृष्टि से ॥

लगली करय सीता हृदय सँ पुनि उमाके बन्दना ।

“हे शैलजे ! गिरिजे ! करु मम पूर्ण कृपया कामना ॥

कोमल हिनक कर-कमल छनि भारी धनुष विशाल ई ।

तोड़िथि अखन श्री राम बाधक बनल अछि विकराल ई ॥

प्रण ई पिता केँ पूर्ण अपने केँ कृपा सँ हैत जोँ ।

शिष्या अहाँ केँ सब दिनक ई जानकी भऽ जंत तौँ ॥

हम तौँ बना चुकलहुँ स्वरुचि सँ प्रागपति श्री राम केँ ।

जग मे उमे ! सुन्दर पुरुष हम नहि बुझैत छी आन केँ” ॥

दशरथ-सुवन केँ सुखद सुन्दर सुमुख रूप निहारि कऽ ।

मिथिलाक महिला भऽ गेली शिथिला शिला-सन ठाढ़ि भऽ ॥

करजोड़ि नगरक लोग सब मन सँ मनाबथि ईश केँ ।

नाना प्रकारेँ प्रार्थना सब करथि प्रभु जगदीश केँ ॥

सुकुमार छथि श्री राम तौँ सुकुमारि छथि श्री जानकी ।

गुण-बल-मनुजता मे कहूँ छथि नहि दुनू समान की ?

आदर्श पुरुषक सकल शुभ लक्षण भरल छनि राम मे ।

तौँ नारिगुण-सम्पन्न सीता छथि एम्हर सब वाम मे ॥

श्यामल ओम्हर रघुवर एम्हर छथि गोरि वंदेही महा ।

देलनि मिला बिधि सोचि कऽ जोड़ी युगल सुन्दर अहा !

गुणवान सुत अवधेश केँ तौँ ई जनक केँ गुणवती ।

भगवान छथि जोँ राम तौँ श्री जानकी छथि भगवती ॥

हे ईश ! सभ शुभ कार्य होइछ सफल अहिक प्रसाद सँ ।

धनु-भंग होयत राम-कर सँ अहिक आशीर्वाद सँ ॥

हे जीव-दुख-हर ! हरू सत्त्वर जनक-तनया शोक केँ ।

वामाङ्गिनी ई बनथि रामक लालसा सब लोक केँ” ॥

पौलनि गुरुक आदेश उठला राम इष्ट प्रणाम कऽ ।

धनुषक निकट झट चल गेला भोला-दिगम्बर नाम लऽ ॥

श्री रामचन्द्र मृणाल-सदृश तोड़ि देल पिनाक ओ ।

नरपति उपस्थित जे छला कटलनि सभक श्रुति-नाक ओ ॥

जयमाल पहिरौलनि तुरत श्री रामके श्री जानकी ।
 प्रत्यक्ष देखल सभकियो शोभाक ह्वै छ सिमान की ?
 आदर्श वर छथि राम तौ आदर्श कन्या जानकी ।
 भरि मोन दर्शन कऽ लिअऽ पुनि पैव एहि समान की ?
 अति प्रेम जकरा जाहि मे दृढ़तम रह्य श्रुति-वाक्य ई ।
 ओ प्राप्ति हो तकरा अवश्ये शास्त्र कथन अकाट्य ई ॥
 श्री राम देखिय सीय के सीता लखथि प्रिय प्राण के ।
 करतार देखथि जीव के आ कोक जहिना चान के ॥
 उर-बीच प्रेम प्रगाढ़ छनि दूनूक हृदयागार मे ।
 दूनू संगेसंग बहि रहल छथि प्रेम-सरिता-धार मे ॥
 रखवाक छनि संसार मे आदर्श शिष्टाचार के ।
 गम्भीर छथि ते कऽ रहल छथि मनुज-सन-व्यवहार के ॥
 सब देवगण द्वारा जयति जय भऽ रहल आकाश मे ।
 सुमनक मुवृष्टि सहर्ष सुर-महिला करथि उल्लास मे ॥
 बाजथि समाजक लोग सुन्दर सुवन दशरथजोक ई ।
 श्री जानकी के योग्यवर चुनलनि विधाता नीक ई ॥
 विधि ! जौ युगल जोड़ी सकल रचना करी ऐ भाँति सँ ।
 तौ अबनि मे सब जन्तु सदिखन रहत अति सुख-शान्ति सँ ॥



परशुराम के लक्ष्मण सँ वार्त्ता

तखने घटल घटना अपूर्व सँह आव लिखैत छी ।
 रामक प्रभावक मात्र किछु चर्चा अखन चलबैत छी ॥
 धनु-भंग-शब्द कठोर पड़लनि परशुरामक कान मे ।
 अयला कतहुँ सँ परशु लय अगुतल यज्ञ-स्थान मे ॥
 रघुकुल-तिलक राघव-निकट देखबैत अपन प्रभुत्व के ।
 लगलाह गर्जय जनक पर सुनबैत निज ब्रह्मत्व के ॥
 “के ? शिव-धनुष के खण्ड कयलक शीघ्र हमरा दे बता ।
 मारब पकड़ि कय अखन ओकरा कहि कने दे तौ पता ॥

हम परशु-द्वारा खण्ड दू तकरा करब धनुषे जकाँ ।
ओ नर्क भोगत बहुत दिन धरि पातकी मनुखे जकाँ" ॥

भय-भीत भऽ गेलाह सुनि नृप सकल मुनि-वर्त्तवि केँ ।
उत्तर कियो नहि दऽ सकथि सुनि परशुराम-स्वभाव केँ ॥

क्षत्रिय कुलोद्भव लखन सँ नहि रहल गेलनि ई मुदा ।
भेलनि हृदय मे अत्यधिक पीड़ा लखन केँ दुखप्रदा ॥

पुछलनि "परशुधर छी अहाँ धनु पर तखन मात्सर्य की ?
पहुँचल तपस्वी छी अहाँ केँ क्रोध हो आश्चर्य ई ॥

द्विजश्रेष्ठ भऽ धारण किये ? कौने रहै छी क्रोध केँ ।
अछि भावना उर मे किये ? शुभ कार्य-बीच बिरोध केँ ॥

छल ई अधिक पुरान राखल जगह केँ अजवारने ।
बूझू अहाँ तँ अखन तोड़ल गेल तकरे कारने ॥

^फ
सुपिना~~ख~~ निर्मित नित्य नेन्ना मे करी पुनि तोड़ि दी ।
मन भेल तौं टूटल धनुष केँ पूर्ववत् पुनि जोड़ि दी ॥

हे धनुष-प्रेमी ! दी अहाँ हमरा अखन आदेश जोँ ।
निर्माण हम कऽ देब सुन्दर एहि सँ सविशेष तौँ" ॥

श्री परशुरामक क्रोध बदलनि सुनि लखनक वचन केँ ।
श्री राम दिशि तकलनि विशाल गुराड़ि अपना नयन केँ ॥

मनमे कहथि 'ई युवक के छी ? छैक नहि डर मारि केँ ।
मारय पड़त एकरा अवश्ये आब हमरा हारि केँ ॥

"सुन राम ! तोरा संग मे दुर्बुद्धि संगी के ? छियो ।
कऽ दे मना नहि तौँ अखन हम काल-मुँह मे दऽ दियो ॥

हम के ? थिकहुँ नहि चीन्हलक अछि की ? अखनधरि मूढ़ ई ।
क्यो नहि मना एकरा करथि बेसल कते छथि बूढ़ ई ॥

मुनिकेँ कठोर कुवाक्य सुनि नहि रहल गेलनि लखन सँ ।
कहलनि 'मुनीश्वर ! दुर्बचन सुनलहुँ अहाँ-सन सुजन सँ ॥

छी धन्य अपने, अपन गुण वर्णन करी निज बँन सँ ।
मारंत क्षत्री-वर्ग केँ घुमैत छी बेचैन सँ ॥

अपना प्रतापक डींग हाँकब उचित बूझि पड़ैछ की ?
क्रोधाग्नि सँ जड़बेत सबकेँ नीक काज लगैछ की ?

अद्भुत कोनो शुभकार्य सँ नाखुश कियै भऽ जाइ छी ।
बिनु बात बुझने व्यक्ति सभ सँ की ? ठनैत लड़ाइ छी ॥

छी विप्रवर वेदाध्ययन कैने अवश्ये हैब तौ ।
ककरा कहै छै श्रेष्ठतम व्यवहार बुझले हैत तौ ॥

कहु तखन एहन महान भऽ बच्चा-जकाँ बतियाइ छी ।
नहि छोट-बड़क विचार अछि सभ पर एना खिसियाइ छी ॥

सुनितहि बचन विचित्र लखनक द्विज भेला कोपित महा ।
बजलाह "बालक ई हमर सब मान देलक अछि ढहा ॥

सब देखि अखने लेखि हम जे करब हिनकर दुर्दशा ।
फरसाक द्वारा छनि हिनक मरबाक सम्प्रति लालसा ॥

श्री परशुरामक लखन प्रति देखल असह व्यवहार केँ ।
श्री राम कहलनि परशुधर सँ धारि शिष्टाचार केँ ॥

"हे विप्र ! अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परम देव-समान श्री ।
एवं छमा केँ शील नामी ज्ञानवान महान छी ॥

कहणाकरक स्वभाव अछि अपनेक हमहुँ जनैत छी ।
तँ हेतु बालक केँ छमा करबाक हेतु कहैत छी ॥

हम दास छी अपनेक अपने थिकहुँ तपसी मुनि अहा !
हम राम केवल थिकहुँ अपने परशुराम प्रथित महा ॥

अपनेक सम्मुख टीक हम की ? सकब कोनो काल मे ?
ब्राह्मण-तपस्वी-तुल्य-गुणबल हो कतहुँ भूपाल मे" ॥

द्विजवरक क्रोध विलैल तखने सुनि रामक बात केँ ।
उर सँ निठुरता क्रोध दुर्गुण राखि देलनि कात केँ ॥

अति शान्ति भऽ गेलाह रामक नम्रयुत वर्त्ताव सँ ।
परिचित जखन भेलाह रामक परम मृदुल स्वभाव सँ ॥

कहलनि "लिअऽ हे राम ! ई विष्णुक धनुष केँ हाथ मे ।
ई जी" चढ़ा दी तौ हँटत सन्देह बातक बात मे" ॥

कहितहि धनुष चलि गेल रामक हाथ अपने आप सैं ॥
खींचल प्रत्येचा शब्द भेल कठोर विष्णुक चाप सैं ॥

भेला अचम्भित देखि राम-प्रभाव अद्भुत जखन ओ ।
अति नम्र भऽ करजोड़ि विनती करय लगला तखन ओ ॥

“रविकुल-कमलके” सूर्य रघुपति ! अहंक जय-जयकार हो ।
प्रत्यक्ष विष्णुक रूप के” जयकार बारम्बार हो ॥

सुर विप्र-पृथ्वी-धेनु रक्षा करक हेतु अबेत छी ।
निज भक्तजन हित कष्ट सहि रक्षा सदैव करैत छी ॥

कहि देल अनुचित वचन अपने अनुज के” अनजान मे ।
करुणानिधे ! ऐ बातके” राखब ने कहियो ध्यान मे ॥

कऽ दी छमा अपने छमाके शील कृपानिधान छी ।
अपने दुनू भ्राता जगत मे मनुज-श्रेष्ठ महान छी ॥

जे किछु करब आदर्शमय ओ हैत ए संसार मे ।
उपयोग नर-तन के” करब नित जीवके” उपाकार मे ॥



शुभ विवाह

कर जोड़ि कय केलनि विनय नृप अरुन्धती के” कन्त सैं ।

“ई शुभ विवाहोत्सव सविधि सम्पन्न कर आनन्द सैं” ॥

जनकक शुभेच्छा बृक्षिकय मुनिवर वशिष्ठ प्रसन्न सैं ।

लगला करावय मंत्रयुत सानन्द विधि सम्पन्न सैं ॥

जल-कलश अंकुर पान राखल गेल वस्तु प्रबन्ध सैं ।

मन मृदित सभके” भेल अति सुरभित सुमन-सुगन्ध सैं ॥

छल अर्घ्य-लावा धूप-श्रुक पर्याप्त अक्षत पात्र मे ।

पुरहित ग्रहण केलनि स्वआसन लेपि चन्दन गात्र मे ॥

अरिपन पिठारक पड़ल छल सिन्दूर लालक रंग सैं ।

वेदीक चारुदिशि कुश-कुश छल सजावल ढंग सैं ॥

बाजन बजैछल विविध रूपक दूर देश-विदेश के” ।

नटुआ नचैछल गावि सुन्दर गीत मिथिला देश के” ॥

महिला उपस्थिति पहिर वस्त्र सुरंगल लाल सुपीत सँ ।

वातावरण भऽ गेल सुन्दर मैथिलानिक गीत' सँ ॥

सिन्दूरदानक विधि सुवेदी पर अहा ! आनन्द सँ ।

सम्पूर्णरूपे भेल विधि-सम्पन्न रघुकुल-चन्द सँ ॥

सीताक पाणि-ग्रहण कैलनि राम अति आनन्द सँ ।

श्री माण्डवी के संग कैलनि ब्याह भरत पसन्द सँ ॥

लछुमनक जीवन-संगिनी श्री उर्मिला सभ रीति सँ ।

रिपुसूदनक श्रुतिकीर्ति संग भेलनि विवाह सुनीति सँ ॥

सिन्दूर दानक विधि सकल मुनिवर करौलनि नेम सँ ।

आशीष देलनि वर-वधू के सब मुदित मन प्रेम सँ ॥

सुरभित सुमन बरिसय तखन लागल अहा ! आकाश सँ ।

जयकार के ध्वनि भेल अति प्रिय घोषयुत उल्लास सँ ॥

माता-सुनयना संग जनकक हर्ष वर्णन करत के ?

ई दृश्य अनुपम देखि कहु तँ मुग्ध भऽ नहि रहत के ?

गिरिजा रमायुत शारदा के संगकय स्वनिकेत सँ ।

शिव-विष्णु ब्रह्मा सब कियो आयल छला साकेत स ॥

शोभा विवाहोत्सवक लखि सन्तुष्ट भऽ वापस गेला ।

ओ दृश्यके अवलोकि मोहित देव-नर सभक्यो भेला ॥



श्री वैदेहीक विदाइ

सीता जखन सासुर चलय लगली सुनेहर धाम सँ ।

वंचित कियो नर-पशु-विहग नहि रहल कानब-काम सँ ॥

सीता-विदाइक छन सुनयना भऽ गेली मूर्च्छित अहा !

रहली अचेत तथापि मूँह सँ वाक्य बजली मृदु महा ॥

बेटो ! जनकपुर त्यागि कय जी जेब सासुर धाम के ।

तौ आब रहि जायत जनकपुर मात्र केवल नाम के ॥

छल पड़ल पैघ अकाल सीते ! जन्म सँ पहिने जतऽ ।

ओकाल बिनु रहने अहाँके आवि जायने कहुं एतऽ ॥

यावत् समय धरि छी उपस्थित जानकी ! ऐ नगर मे ।
तावत् समय धरि बहथि सब आनन्द-सागर-लहर मे ॥

की ? आब हमरा मोन लागत घरक कोनो काज मे ।
कहु ककर बलके पाबि अनुशासन सिखैव समाज मे ॥

हम आब वस्तु बचैव ककरा लेल उत्तम चूनि कऽ ।
ककरा दुलारब गाल चूमब बोल मधुमय सूनि कऽ ॥

वश जाँ चलैत कदापि नहि हम जाय दीतहुँ सीय केँ ।
घर-बीच कहुना राखि लीतहुँ सिय-सहित सिय-पीय केँ ॥

हे देव ! नियम कठोर रखने छी कियै ? संसार मे ।
कन्या विवाहित होथि की चलि जाथि पर परिवार मे ॥

सन्मान-प्रति माताक ममता ह्वै छ केहन ? जनैत छी ।
जनितहुँ अहाँ सर्वज्ञ देव ! कियैक कठोर बनैत छी ?

मात्सर्य उरमे भरल अछि उपयोग ककरा लय करू ?
वात्सल्यता उमड़ैत अछि कहु आब ककरा पर धरू ?”

मद-मोह ममता सँ विरत यद्यपि विदेह रहै छला ।
अदभुत परम लीला प्रभुक सब थिकनि से बूझै छला ॥

तद्यपि अहा ! लगला खसाबै नोर दून नयन सँ ।
बेटी विदाइक काल नहि किछु बोल निकलनि बयन सँ ॥

बूझैछला नहि होइ व्याकुल व्यथं विरह-वियोग सँ ।
नहि होइ आनन्दित अधिक सुखमय मिलन संयोग सँ ॥

छथि किन्तु व्यथित विदेह वैदेही-विदाइक बेर मे ।
पड़ि गेल छथि मायापतिक भ्रम-जाल-माया-फेर मे ॥

मन मे कहथि ‘हम कोन विधि समझैव जगतक लोक केँ ।
कन्या-विदाइक काल मे नहि करक चाही शोक केँ ॥

ई कथन निर्मोही नरक उपदेशप्रद सुनताह केँ ?
अपने चली नहि जाहि पथ पर ताहि पर चलताह केँ ?

दो अन्य केँ उपदेश किन्तु ने कय सकी निज काज जे ।
कहबथि महा ढोंगी जगत मे परम पण्डितराज से” ॥

ई सब बजैत विदेह चलला जानकी-लग स्नेह सँ ।
छलि ठाढ़ि वैदेही शुभाशीर्वाद लेल विदेह सँ ॥

कैलनि प्रणाम पिताक पद मे परम श्रद्धा-भक्ति सँ ।
देलनि शुभाशीर्वाद सिय के जनक स्नेहासक्ति सँ ॥

कहलनि "सिये ! सौभाग्य अविचल रहत सत्य कहैत छी ।
सानन्द स्वामी-सँग रहब आशीष उर सँ दैत छी ॥

हे आत्मजे ! सीते ! स्वयं शुभकार्य पहिने करब जो ।
करबाक लय ककरो तखन प्रियगर वचन सँ कहब तो ॥

हम तो बुझू अपना जनैत सुयोग्य घर-वर देखि कऽ ।
सम्बन्ध हम रघुवंश सँ जोड़ल समुझि-परेखि कऽ ॥

अछि तँ भरोश सदैव सुख सँ रहब स्वामी संग मे ।
नहि हैत कहियो कष्ट किछु मन मे न कोनो अंग मे ।

राखब अपन चरित्र पावन शशिकुलक सन्तान छी ।
गुणबल-चरित-सौन्दर्य मे दम्पति दुनू समान छी ॥

रखलहुँ जेना आदर्श अनुपम चरित एतय कुमारि के ।
राखब सतत नहिना चरित सम्भारि व्याहिल नारि के ॥

जहिना एतऽ रक्षा अहाँ के भेल हमरा शक्ति सँ ।
तहिना रहब रक्षित ससुर-गृह-मध्य स्वामी-भक्ति सँ ॥

विश्वास अछि राखब बचा कऽ कष्ट सहि निज शील के ।
नहि किन्तु राखब गेह एवं राज्य-शासन ढील के ।

जौ कुलक मर्यादा बढ़ाबय अत्यधिक चाहैत छी ।
जौ चन्द्र-सूर्यक वंशके पावन परम मानैत छी ॥

तो नारि-धर्म-विरुद्ध कथमपि नहि करब दुष्कार्य के ।
प्रतिकूल मानवताक पथ पर नहि चलब अनिवार्य के ॥

लागल रहब जौ शुद्ध मन सँ नित्य पर-दुखवाण मे ।
तो हैब नहि कहियो दुखी छे कहल शास्त्र-पुराण मे ॥

देखू कने एमहर व्यथाकुल के ? सियाक वियोग मे ।
नहि नोर दृग मे छनि एहन नहि कयो बचल छथि लोग मे ॥

अति प्रेमवश पक्षी तथा पशु सकल शोकित छथि महा ।
जकरा स्वयं निज हाथ सँ नित दै छली दाना अहा !!
सूगा तथा मैना विकल भए गेल पिजरा-गेह मे !
पूछथि सिया सँ "जाइछो तजि जोड़ि हमरा नेह मे ॥

हा ! आव 'आत्माराम' सुन्दर शब्द नित्य पढ़ौत के ?
नित गाबि प्राती भोर मे कहु आव हाय ! जगौत के " ?

मिथिलाक बालक-बालिका पर्यन्त छथि व्याकुल महा ।
नगरक सकल पथ-धूलकेँ दृग-नीर सँ देलनि बहा ॥

संगिति-सखी-मानिनि रहथि सहपाठिका सीताक जे ।
तन रक्षिणी बनि रहथि सदिवन श्री जनक-दुहिताक जे ॥

जिनका संगे भूले छली भूला सदैव सुनेम सँ ।
जिनका संगे खेलै छली चौपड़ि-पचीशी प्रेम सँ ॥

वहिना-सुपारी, लौंग किसमिस, प्रियसखीगण सहचरी ।
हँसबैत जे दिनका छलनि मृदु बचन कहि कऽ सब घड़ी ॥

से सभकियो सद्भाव अरु मात्सर्य-विश्रित वचन सँ ।
दै छथि सिया केँ सान्त्वना खसबैत अश्रू नयन सँ ॥

देलनि शुभाशीर्वाद सिय केँ रहथि वय मे श्रेष्ठ जे ।
भेलनि सियाकेँ उम्र भारि सम्बल परम यथेष्ट से ॥

आदर्शनारी बनथि सीता तँ विविध उपदेश दऽ ।
लगली कहय सभ वचन मधुमय अमिय भरल विशेष कऽ ॥

"हे प्रिय जनक-तनये ! सुनू हमरो कथन किछु ध्यान दऽ ।
वर्तवि सबकेँ संग उत्तम करब समुचित मान दऽ ॥

प्रातः समय सासुक युगल पद-पद्म पर सिर टेकि दी ।
छल-झपट ईर्ष्या-द्वेष केँ दुर्भाव उर सँ फेकि दी ॥

गृह-कार्य अपना योग्य जे हो मन लगा कऽ से करी ।
बैसलि निरर्थक नहि विताबी समय किछु एको घड़ी ॥

किनको कहब नहि कटु वचन नहि लैब मन मे खेद जी ।
स्पष्ट रूपेँ साँच बाजब हैत नहि मतभेद ती ॥

स्वामीक जी० सेवा करब सानन्द प्रेमावेश सँ ।
सीते ! सहर्ष सदैव मानल करब पति-आदेश जी० ॥
तौं शान्ति सँ जीवत कटत आनन्द सँ परिवार मे ।
होयत उजागर नाम साध्वी नारि-सम संसार मे ॥

लक्ष्मी, स्वधा, संज्ञा, सुमति, स्वाहार सावित्री सती ।
श्रद्धा, सुमेना, साण्डली, दमयन्ति, अनुसूया ब्रती ॥
साध्वी सकल ई छथि भूँ ध्रुव ऐह कोटिक हैब जी० ।
नारी-नियम-पालन करब नित अति प्रशंसा पैब तौं ॥

ई सीख शुभ सीता हृदय मे धारि लेलनि हर्ष सँ ।
बञ्चित सिया रहलीह नहि नारी-चरित-आदर्श सँ ॥

दुर्गुण-कुसंगति सँ जनक-दुहिता रहथि बाँचलि सदा ।
कतबो दुलारल जाथि नहि तजलनि मनुजता ई मुदा ॥

तेँ एहन अनुपम दिव्य कन्या केँ विदेह प्रसन्न सँ ।
चाहैत छथि दय दी सकल भूषण-वसन-सम्पन्न सँ ॥
अपना जनैत विदेह नहि चुकलाह दान-प्रदान मे ।
सोचथि दहेजक बस्तु ने बाँकी रहय अनजान मे ॥

अछि जखन अतुल अपार सम्पति राज्यकेँ भण्डार मे ।
व्यय सँ बचल अतिरिक्त धन अछि पड़ल जे बेकार मे ।
से दान कऽ दी देखि अवसर देश अह सत्पात्र केँ ।
नहि करक अखन बिलम्ब अछि हमरा एको छन-मात्र केँ ॥

नहि छनि स्वभाव मँगैक जहिना सूर्यकुलक नरेश केँ ।
तहिना चुकथि नहि दान मध्य स्वभाव छनि मिथिलेश केँ ॥
सम्पति विपुल बिदेह-गृह राखल छलनि अमूल्य जे ।
सीताक संग सम्हारि साजि सनेस देल अतुल्य से ॥

कत भार देलनि ? गिन कियो नहि सकल सियक विदाइ मे ।
अवधेश केँ लगलनि कतो दिन बस्तु सभक रखाइ मे ॥
श्री राम सानुज व्याह कऽ अयलाह अपना धाम मे ।
मुनिह अवध केँ लोग पहुँचल अवध पतिक सुधाम मे ॥

सीताक दर्शन करक आतुरता अयोध्या-लोग के ।

सब छथि प्रसन्न अतीव मन सँ पाबि शुभ संयोग के ॥

सब सासुगण लै दीप-जल-अच्छत सुवर्णक थाल मे ।

भेली उपस्थित कैल परिछन स्नेहयुत तत्काल मे ॥

देलनि उधारि सुनारिगण महफा परक ओघार के ।

दृग-पल खसनि नहि देखि किनको जानकी-शृंगार के ॥

भूपर पड़्य नहि देल पग लऽ लेल सासु स्वअंक मे ।

चलली सिरागू-गृह सहर्ष छलीह सब निःशंक मे ॥

कैलनि प्रणाम सभक्ति रवि-कुलकेर देवी-देव के ।

पुनि पैर छूबि प्रणाम कैलनि समुर-संग भूदेव के ॥

कैलनि प्रणाम सनन पुनि सब सासु एवं श्रेष्ठ के ।

प्रणिपात कैलनि समुद नगरक नारि-नर मे जेठ के ॥

मुँह-देखना लगलनि पड़्य दशरथ नृपति-पुतोहु के ।

नहि गिन सकल क्यो ओहि दर्शक-दर्शिकाक गिरोह के ॥

पड़लनि कते देखना कहत त्रेता युगक ई बात के ?

नहि कतहुँ पड़लहुँ नहि सुनल हम कहब तँ पतियेत के ?

देलनि सुमित्रा अपन चूड़ामणि उतारि स्वमाथ सँ ।

केकड़ कनक-गृह देल भेटल छलनि स्वामी नाथ सँ ॥

दशरथ विहुँसि कऽ कहल कौशल्या सुमुखि बुधियारि के ।

“हम आ अहाँ की ? दियनिदेखना जानकी सुकुमारि के ” ॥

किछु काल रहली ध्यान सँ सोचैत कौशल्या सती ।

झट फूरिगेलनि हर्ष सँ पाति के कहल शोभावती ॥

“हे नाथ ! हम दूनु गोठय दी राम कर सिय-पाणि मे ।

‘प्रिय रामके हम दैत छी सीते’ ! कही मृदुवाणि मे ” ॥

भेलनि अपार प्रसन्नता सीताक हृदयागार मे ।

अति श्रेष्ठता पौलनि एतय आचार अरु व्यवहार मे ॥

मुँह देखना के विधि बहुत दिन धरि चलल शुभ रीति सँ ।

देलनि शुभाशीर्वाद बृद्धा-बृद्धजन अति प्रीति सँ ॥

मिथिलाक पावन कुलक कन्या आवि गेली गेह मे ।
 से जानि तीनू सासु रखलनि जानकी केँ नेह मे ॥
 जे भार काजक देल गेलनि कैल तकरा पूर्ण ई ।
 कहबैत काजुल जे छली कैलनि तिनक मद-चूण ई ॥

हम एहि घरक पुतोह भेलहुँ आब नेनमाँति त्यागि दी ।
 जे हैत इच्छा मोन मे से सासु सबसँ माँगि ली ॥
 ई भावना भेलनि हृदय मे सीय केँ अबितहि एतऽ ।
 की ? कखन ? अछि करबाक बस्तु रखैक अछि की ? की ? कतऽ ?

सब जानि लेलनि कार्यक्रम नित दिनक ऐ परिवार केँ ।
 सब बूझि गेली सभक शुभ आचार तथा विचार केँ ।
 की ? छै ककर स्वभाव क्रोधी-सहनशील मनुष्य के ?
 की ? श्रेष्ठ छथि के ? छोट अरु हमरा वयसकेँ तुल्य के ?

वर्त्ताव तहिना करथि ई जे रहथि जाहि स्वभाव केँ ।
 तँ सब सराहनि सकल नारी-नर सिबा सद्भाव केँ ॥
 नित कर्म सँ निवृत्त भऽ पति-सासु-ससुर-प्रणाम कऽ ।
 गृह-कार्य मे लगि जाथि दासिन वर्ग केँ नित काम दऽ ॥

अपने करथि ओ काज जे करबाक अपना योग्य हो ।
 सेवक-खवासिन सँ कराबथि काज ओकरा योग्य हो ॥
 भनसा घरक वासन मँजाबथि साँझ-भिनसर नेम सँ ।
 रुचिगर यथेष्ट निरोगप्रद भोजन कराबथि प्रेम सँ ॥
 सूतलि सियाकेँ देखि नहि क्यो सकथि कोनो काल मे ।
 नहि होनि पीड़ा देह मे नहि होनि पीड़ा भाल मे ॥

केवल अपन परहेज सँ बाँचलि रहथि सब रोग सँ ।
 सेवा करौलनि अपन कहियो नहि कोनोटा लोग सँ ॥

किछु वस्तु कोनो लेल नहि कैलनि दुराग्रह जानकी ?
 भूषण-वसन पर्यन्त लै रुसलीह नहि पुनि आन की ?

पितु-तुल्य गुरुजन ससुरकेँ आदेश शुभ मानथि सदा ।
 माता जकाँ मानथि सपूज्या सासु-गणकेँ सर्वदा ॥

तीनु सुदेवरके लगावथि छोट बन्धु-समान मे ।
 सेवक-टहलनी के सुवन अरु सांगिनीक मिलान मे ॥
 प्रियतम स्वपति श्रीरामके सर्वस्व प्राणधिक जका ।
 पूजथि सदैव सहर्ष चित सं इष्ट-परमेश्वर जका ॥
 हर्षित अबधवासी रहथि अनुपम बहुरिया पाबि कऽ ।
 वर्णन करथि सब नारि-गण सीता-प्रशंसा गाबि कऽ ॥
 बंसल-चलैत सराहना सब करनि सीता शील के ।
 नहि कहल सीता प्रति कियो अपशब्द किछु अश्लील के ॥
 अति उच्चकुलक पवित्र कन्या अवध मे अवितहि अहा !
 बढिगेल सुन्दरता अवधके सुखद मंगलमय महा ॥
 दशरथ प्रसन्न छलाह लखि पावन अपन परिवार के ।
 मन्त्री सुमंत समेत सब सन्तुष्ट छल दरवार के ॥
 कुल राज्य-काज चलैत छल सुन्दर सुशासित ढंग सँ ।
 सन्तुष्ट सभजन रहथि सज्जन साधु के सत्संग सँ ॥
 नृप गुरु वशिष्ठक पाबि अनुमति करथि कोनो काज के ।
 बनबथि विधान विचारि दशरथ पूछि सकल समाज के ॥
 नृप-कोष के धन-खर्च हो अति दीनजन के दान मे ।
 जनताक हित शुभ काज मे विद्वान के सम्मान मे ॥
 आन्हर, अबोध, अनाथ, लांगड़ जीव के कल्याण मे ।
 मन्दिर - सरोवर - पाठशाला - धर्मगृह - निर्माण मे ॥
 जप-यज्ञ-पूजा होइ छल सदिखन उचित स्थान मे ।
 अवकाश छण बीतनि सभक सियराम के गुणगान मे ॥
 सब सत्य-शिव-सुन्दर-स्वरूपक मूर्ति सुजन समाज मे ।
 लागल रहथि कर्तव्य निज-निज बृद्धि अपना काज मे ॥
 माता-पिता के कहल जे नहि करथि नर मुश्चण्ड से ।
 दोषी प्रमाणित होथि जौ पाबथि उचित ध्रुव दण्ड से ॥
 सबक्यो चलथि निज धर्म के अनुकूल पर हित जानि कऽ ।
 नहि भूठ बाजथि कहथि नहि कटु वचन ककरो जानि कऽ ॥

पसरल सुयश बल-कीर्ति दशरथ केँ सकल संसार मे ।

परिवार सुन्दर देखि भूपति रहथि मुदित अपार मे ॥

सब भाँति विज्ञ विशाल बुद्धि-प्रवीण बूझल राम केँ ।

गृह कार्य-पटु-वित्तपनि-सुयोग्या बूझि रामक वाम केँ ॥

दशरथ बिचारल आब हम अतिबृद्ध-सन भऽ गेल छी ।

सुख-भोग कैलहुँ बहुत सब सँ अति प्रतीष्ठित भेल छी ॥

गत भेल तीनू पन हमर चारिम अवस्था अँल ई ।

तन-भोग मे लागल छलहुँ आगूक किछु हम कैल की ?

तँ आब राज्यक भार दऽ श्री राम केँ वनमे चली ।

देखथि सँभारथि आब ऐ परिवार केँ जनकक लली ॥

पीलहुँ पुतोहु-सपुत्र सीता-राम सन सद्धर्म सँ ।

भऽ गेल अछि सार्थक मनुज-तन पूर्व जन्मक कर्म सँ ॥

व्रत-यज्ञ कैलहुँ दान देलहुँ काज उत्तम बँचल की ?

कर्तव्य नृपतिक सब निबाहल आब बाँकी रहल की ?

विश्वास अछि बढ़बे करत सद्कीर्ति नित रघुवंश केँ ।

अवतरित सीता-राम छथि लक्ष्मी तथा हरि अंश केँ ॥

एबम्प्रकारे अबधमति सोचल बहुत विधि हृदय मे ।

गुरुवर वशिष्ठ-समोप जाकय कहल अनुनय-वितन मे ॥

“हे गुरु ! हृदय मे भेल इच्छा से सनम कहैत छी ।

मनमे मनोरथ भेल से किछु शब्द मे सुनबैत छी ॥

सद्गुण सकल सम्पन्न छथि बूझैत छी हम राम केँ ।

सन्तुष्ट छी हम देखि हिनकर परम सुन्दर काम केँ ॥

ई योग्य शासक बनि गेला अपनेक कृपा अपार सँ ।

छथि सब प्रजन्न विदेह-नन्दिनिकेर शिष्टाचार सँ ॥

परिवार केँ सब व्यक्ति छथि सन्तुष्ट हिनका काज सँ ।

सदिखन सराहल जाथि सज्जन-साधु-सभ्य समाज सँ ॥

तँ हेतु हम चाहैत छी युवराज पद दी राम केँ ।

वन मे तस्या लेल हम चल जाइ तजि निज धाम केँ ॥

ई जे मनोरथ हमर अछि से पूर्ण घ्रुव भऽ जंत जौं ।

ई गुरुप्रवर ! अपनेक दिशि सँ समुद स्वीकृत हैत तौं ॥

जे क्यो गुरुक पद-पद्म-रज धारण करथि निज माथ मे ।

ब्रह्म सकल वैभव सुयश-उपलब्ध तिनका हाथ मे ॥

हमरा तकर अनुभव अधिक अछि गुरुक सेवा-धर्म सँ ।

जे प्राप्ति होयत से न कथमपि पब दोसर कर्म सँ ॥

तैं आइ धरि कैलहुँ सकल शुभ कर्म गुरु-आदेश सँ ।

जीवन सकल भऽ गेल केवल मात्र गुरु-उपदेश सँ ॥

हे गुरु ! कृपा कऽ दय दिअनि युवराज-पद श्री राम केँ ।

हमरा दिअऽ आज्ञा चली वन त्यागि सब सुखधाम केँ ॥

हम बृद्ध भेलहुँ आब रहलहुँ नहि कोनोटा काम केँ ।

राजा बनल बैसल रही नहि आब केवल नाम केँ ॥

शुभ कार्य मे न विलम्ब होयत जौं कृपा अपनेक हो ।

शुभ लगन मे प्रिय रामकेँ युवराज-पद-अभिषेक हो ॥

सुन्दर कथन ई सुनि गुरुवर कहल नृप अवधेश केँ ।

हे नृप ! अहाँ पर छनि कृपा अतिशय कृपालु रमेश केँ ॥

ई उचित अवसर पर अहाँ सँ सुमति बाजल गेल जे ।

मर्जी प्रभुक छनि ई अवश्ये पूर्ण ब्रह्म भेल से ॥

साक्षात परमेश्वर बनल छथि सुत अहाँकेँ राम ई ।

होयत तखन इच्छा कियै नहि पूर्ण सकल सुकाम ई ॥

ई भऽ सकै अछि पूर्व मे बाधा विविध उत्पन्न हो ।

पाँछा मुदा परिणाम उत्तम रूप मे सम्पन्न हो ॥

राज्यक व्यवस्थित विज्ञ-ज्ञानो व्यक्ति सभक विचार सँ ।

युवराज-पद पाबथि सिया-पति वेद-विधि-अनुसार सँ ॥

गुरुवर वशिष्ठक पाबि आज्ञा नृपति अति उत्साह सँ ।

लगला करय ओरिओन तखने सँ मुदित मन-चाह सँ ॥

सेवक सुयोग्यक हाथ मे दऽ भार कार्यक रीति सँ ।

आनन्दमय वातावरण भऽ गेल मंगल-गीत सँ ॥

राज्याभिषेकक बात सुनि रघुवर विचारल स्वमन मे ।
 "अवतार भेलछि हमर असुरक नाश ले ऐ भुवन मे ॥
 तैं हेतु रची उपाय किछु वन जाइ कोनो रीति सैं ।
 माता-पितकेँ मति फिरनि कहुना अखन कुटनीति सैं" ॥
 वाचक ! विदित अछि वात ई भगवान छथि चाहैत जे ।
 मायाक द्वारा विधि प्रभुक रुचि देखि ध्रुव करबैथ से ॥

□

मंथराक-मंत्रणा

श्री राम-सीता अवतरित छथि भेल असुरक नाश ले ।
 सुख-भोगता ओ तैं किये ? कहु तौ अवधमे बास कै ॥
 हिनका दुनूकेँ करक छनि लीला ललित संसार मे ॥
 नर-नारिकेँ कर्तव्य छनि करबाक की ? व्यवहार मे ।
 तैं तदनुसार उपाय रचलनि देवगण चुपचाप सैं ।
 वन जाथि कहुना राम सीता-संग अपने आप सैं ॥
 भेलनि विचार-विमर्श केँ सुरगणक निर्णय स्वर्ग मे ।
 बुधियारि सबसँ शारदा केँ बूझि अपना वर्ग मे ॥
 सब देवगण कैलनि विनय-अनुनय सुवीणा-पाणि सैं ।
 "कहुना दिअविअनु रामकेँ वनबास केकइ-रानि सैं" ॥
 श्री शारदा झट मंथरा द्वारा करौलनि कार्य ई ।
 रचना रचल ओ राति भर मे बूझिकऽ आनिवार्य ई ॥
 चलि गेल प्रेरित मंथरा केकइक शुचि आवास मे ।
 अगुतल चिन्तित भावयुत बाजलि गरम निःश्वास मे ॥
 "हे रानि ! बनता कान्हि खन युवराज राम सुनैत छी ।
 अछि हानि अपने केँ अधिक तैं कान मे कहि दैत छी ॥
 अवधेश श्री दशरथ कपट में कार्य छथि कऽ रहल ई ।
 नहि छथि भरत परोक्षमे अन्याय अति भऽ रहल ई ॥
 ई सुनि केकइ क्रोध सँ कहलनि "महा तोँ मूर्ख छेँ ।
 घर-फोड़नी झगड़ाउ निश्चर-सदृश बड़का धूर्त छेँ ॥

तोरा ने किछुओ ज्ञान छी मतिमंद परम गँवार छेँ ।
हमरा संगे रहि कऽ तखन रखने एहन कुविचार छेँ ?

रामक विषय मे मंथरा ! 'बाजल एना गेली कोना ?
शुभ काज मे बाधा उपस्थित हेतु ई फुरलौ कोना ?
बड़भाइ राजा होथि ई रघुवंश मे शुभ रीति छै ।
सब नीक कुलक सुव्यक्ति द्वारा बनल बढ़ियाँ नीति छै ॥

हम तौँ अनेकोँ वेर लेलहुँ अछि परीक्षा राम केँ ।
सब बेर पौलहुँ छल-रहित प्रिय राम आनन्द धाम केँ ॥

रामक प्रशंसा करब कतबो बहुत थोड़ कहौत से ।
निज मातु सँ बेरशा जकाँ श्रद्धा एहन देखौत केँ ?

प्रिय छी अधिक तीनू जननि मे रामकेँ हम जानि ले ।
ई राम कौशल्याक सुत नहि पुत्र हमरे मानि ले ॥

सीता-विषय मे पूछ नहि ओ शीलवन्ती छथि महा ।
सद्गुण भरल छनि एक नहि दुर्गुण सिया मे छनि अहा !

सबकेँ प्रसन्न करैत अपनो नित प्रसन्ने रहथि ओ ।
हमरा बिना पुछने कोनो नहि काज कखनो करथि ओ ॥

परिवार-परिजन छथि प्रसन्न दुनूक मृदु व्यवहार सँ ।
सन्तुष्ट छथि जनता सकल सीताक शिष्टाचार सँ ॥

युवराज-पद भेटनि अवश्ये राम-सन सद्पात्र केँ
छौ क्लेश केवल मंथरा तोरे समान कुपात्र केँ ॥

तोरा शपथ भरतक कपट-तजि कह खुलाशा बात की ?
हर्षक समय पीड़ित कियै छेँ ? कहव मे पुनि लाथ की ?

“हमरा कपार क दोष अछि” बाजलि दुखी भऽ मंथरा ॥
नीको कहल पर स्वामिनी ! हमरा कहैछी निश्चरा ॥

हम आइ सँ नित मुँह-देखोवलि बात सभ केषल कही ।
अनुचित क्रियाकेँ देखि हम तौँ जानि कऽ चुप्पे रही ॥

जे छी अखन तखनो रहब दासी जकाँ सन्ताप की ?
क्यो राज्य पाबथि तँ कि हमरा हानि अथवा लाभ की ?

तैयो बिना दजने ने हमरा रहल जाइख केकयी ।
भरतक भविष्य विशेष भयप्रद बूझि मन अछि दुखमयी ॥

राजा कहौता राम रानी जानकी सुख भोगती ।
घर मे अहाँ केँ जूति किछुओ चलत नहि ओ रोकती ॥

सेवक कहौता भरत केकइ ! अहाँ कहायब सेविका ।
ई सहन होयत ? सोचिली नहि थिकहुँ अपने बालिका ॥

माया-विवश सब जीब अछि ककरो अपन नहि चलि सकै ।
हैबाक छै से हैत किनको सँ कदापि न ओ रुकै ॥

जे काज जकरा सँ जखन हैबाक छै ओ हैत से ।
जकरा जतय जैबाक छै निश्चय ततै ओ जैत से ॥

छनि लिखल केकइ रानिकेँ बड़का कलंक कपार मे ।
तँ बदलि गेलनि मोन कहलनि मंथरा सँ प्यार मे ॥

‘तो’ उचिन कहलै मंथरा ! हम आब बुझलहुँ ठीक ई ।
रुकत कोना ई काज हमरा तो’ बता दे नीक की ?

युवराज-पद पर राम नहि बैसथि तकर उपाय की ?
सोचय पड़त भरतक विषय मे जखन भरतक माय छी ॥

अपना मनक अनुकूल देखल जखन केकइ रानि केँ ।
बाजलि बनाके मंथरा मुसकंत मधुर सुवानि केँ ॥

“वरदान राखल अहाँक अछि दू गोटा बहुतो” वर्ष सँ ।
जे भूप देने छथि अहाँकेँ वचन द्वारा हर्ष सँ ॥

से आइ माँगू राति मे कऽ स्ववश निज प्राणेश केँ ।
बनताह राजा भरत सहजहि बिनु उठौने क्लेश केँ ॥

बन मे रहथि श्री राम चौदह वर्ष तपसी भेष मे ।
राजा बनथि श्री भरत गणना होनि अवध-नरेश मे ॥

ई युक्ति-युक्त सलाह उर मे ठूकि गेलनि रानि केँ ।
चलली भवन मे करक हित ओ काज मनमे ठानि कै ॥

नखरा पसारल कोप घरमे रानि केकइ राति मे ।
ई बात देखल जाइ अछि अखनहुँ जनानी जाति मे ॥

स्वामीक रुचि-विपरीत जिह्ठ ठनैत छथि निज स्वार्थ ले ।
 रूसथि-लटाइम करथि भूषण-वसन आदि पदार्थ ले ॥
 की ? भेल एवं भऽ रहल अछि नारिगणक स्वभाव सँ ।
 घायल करथि पति केँ स्वहित ले शोकरूपी घाव सँ ॥
 वनवास भेलनि रामकेँ प्राणान्त भेलनि भूप केँ ।
 सीताहरण-दुख सँ भेला श्री राम विरही रूप केँ ॥
 निशिचरक घर में रह्य पड़लनि जानकी सन नारि केँ ।
 अपवाद लोकक सह्य पड़लनि राम-सन असुरारि केँ ।
 तँ अन्त में वन वासिनी भेलीह वैदेही सती ।
 नारी विना जीवन बितौलनि एक नारीकेँ ब्रती ॥
 विस्तार सँ वर्णन करब की ? राम-कथा जनैत छी ।
 तुलसीक रामायण जखन रुचि सँ सदैव पढ़ैत छी ॥
 कतवा करऽ पड़लनि परिश्रम जानकीक तलाश मे ।
 आगू करब वर्णन कोना कटलनि समय वनवास मे ॥



वन-गमनक आदेश

अवधेश सँ वरदान ले केकयि कहल श्री राम केँ ।
 चौदह वरष ले जाउ वन तजि कऽ अयोध्या-धाम केँ ॥
 हा ! तखन केकयि पैर पर पड़ि कैल राम प्रणाम तौ ।
 जे छल उपस्थित सभक तन भिजलनि अहा ! अति घाम सँ ॥
 चललाह कौशल्या जननि सँ राम शुभ आशीष ले ।
 कैलनि प्रणाम सभक्ति माता-चरण पर निज शीश धै ॥
 देलनि अहा ! आशीष सुतकेँ प्रेमयुत उद्गार सँ ।
 बैसौल अपना कोढ़ मे गहि पाणि रामक प्यार सँ ॥
 मुँह चूमि लेलनि रामकेँ दृग-नीर वहलनि स्नेह सँ ।
 झट दौड़ि कौशल्या समुद मिष्ठान्न अनलनि गेह सँ ॥
 प्रिय पुत्रकेँ भोजन करौलनि जखन अपने पाणि सँ ।
 मुसकैत सुमुख निहारि कहलनि मधुरतम मृदु वाणि सँ ॥

“हे राम ! ओ आनन्ददायक छण कखन उचरैत छै ।
युवराज-पद भेटत जखन से समय कखन पड़ैत छै ॥

युवराज-पद आसीन हम निज आँखि सँ देखी कने ।
देखब सियाकेँ वाम बैसलि बनलि श्री रानी भने’ ॥

चाहैत अत्रि चातक जेना स्वाती नक्षत्रक बुन्द केँ ॥
आतुर रहथि चकोर जहिना पाबि जाइ सुचन्द केँ ॥

माताक स्थिति देखि सोचल राम अइ आनन्द मे ।
दुर्गन्ध हैत मिलैब सुरभित मुरुचिकर प्रिय अन्न मे ॥

तेँ हम प्रथम प्रसन्नता बतबैत दुर्घटना कही ।
नहि बहथि मातु विछोह-शोक-समुद्र मे हमहूँ बही ॥

पुनि केँ प्रणाम सनम्र कहलनि “मा ! सुबात कहैत छी ।
हम भाग्यशाली परम अपना केँ अखन लगबैत छी ॥

करुणामयी मा केकइ सब भाइ सँ देलनि जिता ।
हमरा विपिन के राज्य दऽ वनपति बना देलनि पिता ॥

बस, मात्र केवल वरष चौदह रहब हम वनवास मे ।
राजा भरत बनताह अवधक नहि रहब उदाश मे ॥

वन जाइ लेल सलाह हमरा समुद्र जननी ! दी अहूँ ।
पुत्रक विछोहक क्लेश पुत्रक हितक लै माता ! सहू ॥

आज्ञा अहूँ हे मा ! कृपा कऽ दी विपिन मे जाइ लै ।
हम सहब वन-दुख समुद्र सज्जन भरत-सन प्रिय भाइ लै” ॥

मुनितहि वचन दुख-जनक थकमक भेलि ठाढ़े रहि गेली ।
चुपचाप माटिक मूर्ति मानू अचल निर्मित भऽ गेली ॥

नहि राम केँ मुख सँ अशुभ कहियो कथन सुनने छली ।
नहि केकइक वरदान विषयक बात ओ बुझने छली ॥

पल नहि खसल किछु काल धरि माता-दशा केँ देखि कऽ ।
मा ! मा ! पुकार करैत खसला पैर पर सिर टेकि कऽ ॥

किछु चेतना भेलनि जखन चेतन पुरुष-स्पर्श सँ ।
कर युगल सँ सुतकेँ उठौलनि तौ मुदा नहि हर्ष सँ ॥

कहलनि शुभ शीर्वाद दऽ "हे राम ! सकुशल नितऽ रहूँ ।

ई की अहाँ कहलहुँ कने फरिछा-बुझा हमरा कहूँ ॥

सुनने छलहुँ युवराज-पद भेटत अहाँकेँ हर्ष सँ ।

भू-देवकेँ हम देव धेनु सहस्र हर्षोत्कर्ष सँ ॥

के ? राति भर मे उलटि देलक शुभ महोत्सव रूप केँ ।

के ? पलटि देलक कैल निर्णय सत्यवादी भूप केँ ॥

सब छल बुझैत सुनारि केकड़ रामकेँ माता थिकी ।

हुनका दुलार-पियार सन कहियो ने हमहूँ कऽ सकी ॥

मात्सर्य नहि हमरा अपेक्षा कम हुनक एको रती ।

विश्वास छल निर्दय कदापि न राम-प्रति केकड़ हेती ॥

हे राम ! ई की उचित भेलछि काज सोचि अहीँ कहूँ ।

रविकुलक रीति-विरुद्ध अनुचित बात लखि सहिकऽ रहूँ ?

हमरा लग अछि दैव केँ रचना अवश्ये थीक ई ।

किछु सोचि कऽ कै रहल छथि विधि हैत आगू नीक की ?

आश्चर्य अछि एकरा अहूँ उर सीँ पसन्द करैत छी ।

सुख-भोग राज्यक त्यागि वनमे जैव नीक बुझैत छी ॥

एहना परिस्थिति मे कोना कऽ रोकि राखू स्नेह सँ ।

अथवा कोना कऽ कहल जायत जाउ वन निज गेह सँ ॥

हम तौँ छुछुन्दर-साँप-सन पड़िगेल छी अति फेर मे ।

सुत स्नेहकेँ देखू कि देखू धर्म एहना वेर मे ॥

तैयो कहब हम राम ! मन सँ नीक तरहे सोचिली ।

की करक चाही से प्रथम सब श्रेष्ठजन सँ पूछिली ॥

गुरुवर वशिष्ठ वरिष्ठ सब सँ बूझितौँ पहिने लिअऽ ।

पुनि-पुनि पिता सँ पूछि कऽ पश्चात्त पथ पर पग दिअऽ ॥

सब देव एवं पितर निशिदिन करथि रक्षा स्नेह सँ ।

जहिना पलक रक्षा करथि दूग केँ सदैव निमेष सँ " ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र माता चरण कर सँ दाबि कऽ ।

आशीष पौलनि जननि सँ चललाह आज्ञा पाबि कऽ ॥

सीता-भवन दिशि जानकी-पति जा रहल जखने छला ।
अबितहि छली सीता स्वयं पथ-बीच विधि देलनि मिला ॥

भेलनि मिलन दम्पति दुनू केँ उचित शिष्टाचार सँ ।
अवगत करौलनि एक-दोसर अपन-अपन विचार सँ ॥
'स्वामी ! कहू कानन-गमन कहिया करब ?' पछलि सिया ।
'अनेक संग हमहूँ चलब अदेश दी प्रभु ! कै दया ॥

□

वन चलबाक 'लेल' सीताक आग्रह

ई देखि उत्सुकता सियाकेँ राम सोचथि हृदय मे ।
की ? कहि सियाकेँ रुकय कहियनि एहि दुषंट समय मे ॥

नेनमति अखन छनि नारि छथि सुकुमारि अधिक अबोध ई ।
कहबनि तौँ हिनके नीक ले करती कियैक विरोध ई ॥

'हे सिय प्रिये ! हमरा संगे भोगव अहाँ वन-दुख कोना ?
वन मे विपत्ति विशेष छै से सहि सकब सीते ! कोना ?

क्षत्री थिकहुँ जूझय पड़त जाऊय अनेक कुशाम मे ।
वन मे भयानक असुरगण-संग लड़क अछि संग्राम मे ॥

रक्षा अहाँ केँ करब मे लगि जैब तौँ हम लड़ब की ?
निशिचर-असुर सँ हारिकै हमहूँ अहाँ संग मरब की ?

अछि अघ असुर वन मे अनेको रंग-रूप-स्वभाव केँ ।
ऋषि मुनि-तपस्वी केँ सतत देखबैत अपन प्रभाव केँ ॥

ओ रूप देखब लागि जायत चकविदोर कहैत छी ।
ओ सब कुचरपन करत लगमे आबि सतत मुनैत छी ॥

वन मे बहुत हुड़दंग सभ मचबैत सदिखन रहत ओ ।
सभकाल हरबिहरो करैत रहैत भागल करत ओ ॥

कहु तखन सीते ! हैत नहि दुर्गति अहाँकेँ विपिन मे ।
सोचू कने बुधियारि छी कहबैत चारू बहिन मे ॥

निशिचरक संग लड़ाइमे फंसिजाइ सम्भव हम कही ।
फुरसति ने कखनो भऽ सकय भूखल-पियासल जाँ रही ॥

दश-पाँच दिन लगाल रही रणमे कदाचित हे प्रिये !
एकसरि अहाँ वन-बीच कतवा काल धरि बेसब सिये !!

कहुतौ तखन उपाय सीते ! विपिन मे अहुँ करब की ?
बपहारि काटि कनैत वनमे कहु अहाँ नहि मरब की ?

तैं बात मानू हमर महिला वर्ग मे बुधियारि छी ।
सुकुमारि सँग सँग मैथिली ! मिथिलेश नृपक दुलारी छी ॥

कंटक बहुत पगमे गइत अति कोमलाङ्गी नारि छी ।
देखल कोना जायत अहाँ तो हमर परम पियारि छी ।

सीता कहल "हे नाथ ! हमरा निबल कियेक बुझैत छी ।
मिथिलाक कन्याके किये ? सावान्य-सन लगबैत छी ॥

की ? एहि दुखमय काल मे प्रेमक परीक्षा लैत छी ।
अर्द्धाङ्गिनी के अंग सँ अन्यत्र रहय कहैत छी ॥

जइ कार्य लै लेलहुँ अहाँ अवतार अइ संसार मे ।
तइ कार्य मे सँग देव हमहू नाथ ! नित व्यहार मे ॥

हम सँग रहलहुँ अखन धरि तहिना रहब छाहरि जकाँ ।
सब काल हम सेवा करब अपनेक प्रभु ! चाकरि जकाँ ॥

कहियो अहाँ हमरा बिना हे नाथ ! रहलहुँ कतहुँ की ?
कहु तौ अही बिनु नाथ के रहि सकब हमहूँ छनहुँ की ?

मिथिलाक कन्या थिकहुँ हम अपनेक सन पुरुषक प्रिया ।
अछि ज्ञात हमरा पतिक प्रति की करक चाही सद्क्रिया ॥

धन-धाम-धरती-राजसुख अपनेक बिनु सब व्यर्थ ई ।

ई देह पति-बिनु शत्रु-सदृश सब भाँति सँ असमर्थ ई ॥

ई प्राण बिनु प्राणेश के कहु टिक सकै अछि देह मे ।

ई बात जनिते छी तखन रोक किये छी गेह मे ॥

अपनेक आधा अंग छी हम सँग नित्य रहैत छी ।

हे नाथ ! तैं अपनेक हम अर्द्धाङ्गिनी कहबैत छी ॥

बिनु प्राण के तन जल-रहित सरिता न आवथि काज मे ।

सहिना पुरुष बिनु नारि बूझल जाथि मनुज-समाज मे" ॥

सीताक आग्रह देखि कहलनि राम गहि सिय-पाणि के ।
 "सीते ! अहाँके देब दुख कहु कोन तरहे जानि के ॥
 नेहर जनकपुर मे वयस बीतल दुलार-पियार मे ।
 सब सुखक साधन सतत छल सीते ! अहिक अधिकार मे ॥

बकरा कहैछै कष्ट जनलहु आइधरि किछु नहि अहाँ ।
 कखनहु सखी सँ भिन्न नहि रहलहुँ कतहुँ एकसरि अहाँ ॥
 पर्याप्त छल उपलब्ध भोगक वस्तुकेँ स्वामिन अहाँ ।
 जखने प्रयोजन जाहि वस्तुक भेल पौलहुँ झट अहाँ ॥

नीपल-बदरल भूमि पर पद-कमल रखलहुँ नित अहाँ ।
 ड्योढ़ीक बाहर ह्वैछ की ? से देखि नहि सकलहुँ अहाँ ॥
 अखनो एतय सब सासुगण सँ अति दुलारल जाइ छी ।
 गीदर तथा कुक्कुर भुवै अछि तौ तुरत पड़ाइ छी ॥
 एहना परिस्थिति मे अहाँ वन मे रहब कहु तौ कोना ?
 गरजत जखन गज-बाघ कटु स्वर होइ छै वज्रक जेना ॥
 बिनु पादुका केँ चलक अछि गड़ि जैत कंटक पैर मे ।
 हिंसक कोनो पशु जौं खिहारत तखन सकब पढ़ैब मे ?
 कहु खेत जोतल ढेप पर पड़ि जैत पैर कुठाम मे ।
 तौ नहि खसब की ? छी अहाँ सुकुमारि अधिक सुवाम मे" ॥

स्वामी बचन केँ सुनि सीता देल उत्तर राम केँ ।
 "हे नाथ ! निर्वल एहन नहि बूझू अहाँ निज वाम केँ ॥
 प्रियतम ! अहाँ सँ को ? कहब हम प्रभु स्वयं सर्वज्ञ छी ।
 पत्नीक की ? कर्तव्य पति-प्रति तकर प्रभु मर्मज्ञ छी ॥

स्वामीक सेवा करक अवसर अछि तुलायल आबि कऽ ।
 कहु तखन हम चूकब कोना संयोगवश ई पाबि कऽ ॥
 एहने समय मे जाँच प्रिय पत्नीक सचमुच होइ छै ।
 स्वामीक जीवन-सँगिनी पत्नी कहल तँ जाइ छै ॥

अछि भेल नारी सृजन पुरुषक संग पूरक लेल तौ ।
 नित स्वपति-सेवा करब नारी-धर्म मानल गेल तौ ॥

पालन स्वधर्मक करक चाही प्रभु अवश्य जनैत छी ।
 अपने तखन हमरा कियै ? प्रभु ! एतय रहक कहैत छी ॥
 जे वीर नहि लइलाह रण मे तिनकर जीवन व्यर्थ छी ।
 जे दान नहि देलनि धनी तिनकर निरर्थक अर्थ छी ॥
 ओ साधु की ? जे वासना तजलनि ने अपना चित सँ ।
 समर्थ कथी ? जे दीन जनकेँ केल हिन नहि वित्त सँ ॥
 विद्वान हुनका नहि कहब जे कथि नहि सत्कर्म केँ ।
 बुधियार ओ नहि छथि करथि जे राति-दिन दुष्कर्म केँ ॥
 नेता कथी ? जनताक हितलै काज किछु नहि कैल जे ।
 ओ तारि की ? पति-विपति-छत्रमे काज किछु नहि ऐल जे ॥
 स्वामिनि कथी ? स्वामीक संग नहि रहथि भागि-पराथि जे ।
 बुधियारि की पति सँ कहै मे मनक बात लजाथि जे ॥
 वेशी हमर अधिकार की ? हे नाथ ! अपने सं कही ।
 रहलहुँ सँगे सब दिन भविष्यो मे रहब अखनो रही ॥
 चेतन-प्रकृति भवमे बनल हम आ अहाँ अनेक छी ।
 हम-शक्ति अपने शक्तिधर प्रभु ! बसुतः हम एक छी ॥
 वाल्मीकि-रामायण अनेकोँ बेर पढ़ने हमहुँ छी ।
 विद्वान-गण सँ वेद-शास्त्र समस्त सुनने बहुत छी ॥
 बीतल अनेकोँ बेर त्रेता युग अखनिधरि सृष्टि मे ।
 भेलहुँ सिया हम राम अपने जगत-जीवक दृष्टि मे ॥
 दशरथ-सुवन भेलहुँ अहाँ हम जनक-दुहिता भेल छी ।
 सब बेर हमरा संग ले सानन्द कानन गेल छी ॥
 कहु तखन सम्प्रति एहि बेर कियैक मना करैत छी ।
 की हेतु सँ हमरा बिपिन नहि चलै लेल कहैत छी "॥
 प्रभु मुघ भऽ गेलाह सिय केँ तर्क संगत बात सँ ।
 खसलनि तखन जल बिन्दु प्रभुकेँ युगल दृगकेँ कात सँ ॥
 लगलाह सोचय कोन विधि हमरोकि सकबनि सीय केँ ।
 वन मे कतय रखबनि सुरक्षितरूप सँ रमणीय केँ ॥

सोचैत छथि उत्तर दिअनि की ? तर्कयुत सिय-उक्ति केँ ।
सूझैत नहि छनि युक्ति किछु रघुवीर-सन सद्ब्यक्ति केँ ॥

कहलनि सियाकेँ राम जे अति प्रिय मधुरतम वचन केँ ।
से बूझि सबकेँ ध्रुव सराह्य पड़त रामक कथन केँ ॥

“हे जनक तनये ! हम कहब सम्प्रति अहाँ सँ आव की ?
अछि प्रश्न कठिन अहाँक ई हम अखन देब जबाब की ?

नृप जनक सौँपल भार हमरा पर अहँक तँ विवश छी ।
बन में कोना रक्षा करब तँ सोच मे हम पड़ल छी ॥

हम जैब कत्तहुँ हमर जी टँगले अहीँ पर रहत जे ।
ओ काज सपरत कोन तरहेँ आवि सिर पर पड़त जे ॥

हम धर्म-संकट मे अखन सीते ! बुझू पड़ि गेल छी ।
किछु अहँ सम्मति दिअऽ आधा अङ्गिनी जे भेल छी ” ॥

देलनि सिया उत्तर तखन “हे नाथ ! जीँ पूछैत छी ।
तीँ सूनि लीअऽ नाथ ! अंतिम बचन आव कहैत छी ॥

समझा सकब हमकी ? अहाँ केँ नारि हम अज्ञान छी ।
जे कहि रहल छी सूनि सोचू अहँ स्वयं सज्ञान छी ॥

हमरा कहऽ पड़बे करत तँ लेल आव कहैत छी ।
बाजऽ पड़ै अछि आइ हमरा तँ निधोक बजैत छी ॥

पर्याप्त पौलनि बल अहाँ मे जनक कैल पसंद जेँ ।
सौँपल अहाँकेँ हाथ मे हमरा पिता सानन्द तँ ॥

तकरा निबाहक अछि अहाँ केँ प्रभु ! अवश्ये आव ई ।
हमरा अवश्ये लऽ चलू वन देब हमहुँ सुझाव ई ॥

पति सँ विछोहक कष्ट-सन दुख अधिक की ? ससार मे ।
पति-संगकेँ सुख-तुल्य की ? के ? कहि सकल विस्तार मे ।

लीला अहाँ केँ पूर्ण होयत कोन विधि हमरा बिना ।
जे काज करवा लेल उद्यत हैब से जायत घिना ॥

अर्द्धाङ्गिनी केँ त्यागि जीवन-मफल कौलनि मनुज के ?
निजनारि तजि परनारि-संग जीवन बितीलनि दनुज से ॥

हम तो सुरक्षित सतत छी प्रभु परम पतिव्रत-शक्ति सँ ।
 सामर्थ नहि दुखकेँ सतीता पति चरण केँ भक्ति सँ ॥
 नित हैत अनुभव नाथ ! सुख दुख ह्वै छी की ! वनवास मे ।
 की ? हैत रहने नगर मे बंसलि-पड़ल रनिवास मे ॥
 तँ लऽ चलू वन संग हमहूँ देव नित सब काज मे ।
 छुप छी किये ? बाजू रहू नहि पड़ल अखनो लाज मे ॥
 'आग्रह उचित सीताक छनि' स्वीकार भेलनि राम केँ ।
 'ले आउ आज्ञा सासुसभ सँ' कहल अपना वाम केँ ॥

□

सासुगणक आदेश

चलली सिया आशोष आ आदेश ले रनिवास मे ।
 प्रणिपात केँ सविनय कहलि सब सासु सँ एक श्वास मे ॥
 "स्वामी सँगे हमहूँ चली वन मातुगण ! आज्ञा दिअऽ ।
 मात्सर्य-वश जनु रोकि राखू हृदय पत्थर कऽ लिअऽ ॥
 जी' विधिक इच्छा ऐह छनि तो' कऽ सकै छी तखन की ?
 बुझनीक सभ क्यो छी स्वयं वेशी कहब हम वचन की ?
 दुख पैघ अछि अपने सभक सेवा-समय वन जाइ छी ।
 आशा मुदा अछि छमब ध्रुव सभ तो' हमर प्रिय माइ छी" ॥
 सीताक अद्भुत भावना केँ बूझि सब विस्मित भेली ।
 रहती कोना वन-ठाग मे सुकुमारि भऽ जनककलली ॥
 अभ्यास नहि छनि कष्ट कोनो सहक सिय सुकुमारि केँ ।
 अनुभव ने किछुओ छेन्ह एकसरि रहक सीता नारि केँ ॥
 तैयो सिया छथि जाइ ले तत्पर अहा ! वनवास मे ।
 दुख बिसरि सुख बूझथि अहा ! स्वामीक मृदु सहवास मे ॥
 पति-चरण-सेवा मे निरत छथि बूझि सिय सुकुमारि केँ ।
 सब सासु शुभ आशीष दैलनि मुद सुमति विचारि केँ ॥
 "हे प्रिय सिये ! नारीक सब कर्तव्य अहाँ जनैत छी ।
 पति-संग पत्नी केँ रहब नित उचित अहाँ बुझैत छी ॥

कहु तखन हम रोकव किये ? रहबाक ले सुखधाम मे ।
सुखप्रद बुझै छी रहब पति-संग जखन जंगल-ठाम मे ॥

अछि धारणा उत्तम अहाँ केँ बूझि हम सन्तुष्ट छी ।
स्वामी-प्रिया नारी-सुलक्षण सँ अहाँ परिपुष्ट छी ॥

विश्वास अछि राखब अहाँ पावन परम आदर्श केँ ।
सीते ! अहाँ पर गर्व छै सम्पूर्ण भारतवर्ष केँ ॥

हम सभ अहाँ सन सुतवधू केँ पाबि धन्य बुझैत छी ।
सानन्द सबखन रहो सीते ! सैह सब चाहैत छी ॥

हा ! किन्तु दुख अछि जनक की ? कहताह अपना मोन मे ।
छनि सासु केहन कठोर देलनि जानकी केँ वोन मे” ।

प्रिय कथन सासुक सूनि भरि प्रेमाश्रु सीता नयन मे ।
कहलनि सिया अति नयुत मधु-अमिय-वोरल वयन मे ॥

“हे मातुगण ! चिन्ता कनेको नहि करू पति-संग मे ।
रहताह तौँ दुख हैत की ? मन मे ने कोनो अंग मे ॥

सुख-दुखक अनुभव भावना पर छैक निर्भर जीव केँ ।
कर्त्तव्य केँ आगू न किछुओ कष्ट हेतनि सीय केँ ॥

स्वामी-बिना अइ अवध केँ हम वन-समान बुझैत छी ।
स्वामीक संग रहने विपिन केँ अवध-सन लगबैत छी ॥

तैं मातुगण ! आज्ञा दिअऽ वन जाइ ले आनन्द तैं ।
परिणाम उत्तम हैत जोँ हम जेब सभक पसन्द तैं” ॥

दृढ़ता सिया केँ देखि कहलनि सासुगण “सकुशल रहू ।
सीते ! अहाँ केँ आब वन नहि जाइ ले कोना कहू ॥

तजि राजसुख वन-दुख सहै मे जखन अहाँ समर्थ छी ।
हम तखन रुकवाले कहो तौँ कहब हमरो व्यर्थ छी ॥

वन जेब तौँ सिय ! जाउ सदिखन रहब चेतलि-सन मुदा ।
नहि करब गप्पो अपरिचित-संग आबि जाय कियो कदा ॥

वन मे घुमैत रहैत छै राक्षस-निशाचर वर्ग जे ।
चाहत अहाँ तैं करक बहु-विधि यत्न सँ सम्पर्क से ॥

निर्दय दुराचारी अधर्मी होइ छैंक पुनैत छी ।
ओ सभ ठगत दऽ लोभ चेतल रहब तैं कहि दैत छी' ॥

कैलनि विदा सीता वधू केँ दऽ विविध उपदेश केँ ।
सीतो समुद स्वीकार कैलनि सीख-युत आदेश केँ ॥

वन जाइ छथि प्रभु जानकी जंग ज्ञात भेलनि लखन केँ ।
झट दौड़ि केँ अयलाह धौलनि प्रभुक दुनू चरण केँ ॥

श्रीराम दूनु हाथ सँ धँकऽ उठौलनि लखन केँ ।
लगलाह देमय सान्त्वना मृदु बाजि सुन्दर वचन केँ ॥

'हे प्रिय अनुज ! हम दैत छी सब भार राजक काज केँ ।
भरतक बँटायब हाथ राखब सतत सुखी समाज केँ ॥

बस, वर्ष चौदह मात्र अछि रहबाक हमरा विपिन मे ।
घुरि आवि सिंहासनक ऊार हरषि बेसब सुदिन मे' ॥

सुनि कथन रामक लखन मन मे तखन बुझने की ? हेता ।
की ? उचित हुनकर छलनि वाचक ! ओहि छन दीतहुँ बता ॥

चाहै छलनि पालन लखन केँ करक प्रभु-आदेश केँ ।
चलबाक तौं चाहै छलनि अनुसार प्रभु निर्देश केँ ।

छथि किन्तु की ? सोचैत मन मे राम केँ प्रिय दास ओ ।
छथि ठाढ़ भेल दयालु लग कर जोड़ि भेल उदास ओ ।

मन मे कहथि हैबाक की ? छल किन्तु की ? भऽ गेल ई ।
घटना दुखद रचलनि विधाता अखन ककरा लेल ई ॥

हमरा कियैक कहैत छथि प्रभु अवध मे रहबाक ले ।
हम जन्म-जन्मक दास हिनकर रहब कोना फराक भै ।

कैलनि अखन घरि पूर्ण इच्छा ई कि नहि करताह की ?
करबनि विनय तौं छोड़ि हमरा विपिन चल जैताह की ?

देखल लखन केँ ठाढ़ सन्मुख कहल रघुवर प्रेम सँ ।
'सेवा करू माना-पिता केँ रहि एतै शुचि नेम सँ ॥

भऽ जैत अवध अनाथ बूझू जैव कानन लखन जाँ ।
नहि छथि भरत-शत्रुघ्न तैं ई हमर मानू कथन तौं ॥

देखू अखन तौ छथि पिता चिन्तित अवस्था मे महा ।
गुरुवर वशिष्ठ सुमन्त मन्त्री छथि व्यथित-शोकित महा ॥

जौं शत्रु कोनो आवि जाय ससैन्य अपना नगर मे ।
कहु तखन नगर बचौत के ले लेत किछुए पहर मे ॥

तैं मानि लीअऽ बात लछुमन ! जे अखन कहैत छी ।
रक्षा करत के ? नगर के ? रक्षक अहीं लगैत छी ॥

सुनि कथन रामक लखन कहलनि "हम अहाँ के दास छी ।
मन-वचन एवं कर्म सँ सेवक बनल खवास छी ॥

अपने हमर सबकिछु थिकहुँ दोसर तौ केवल नाम के ।
स्वामी-पिता-माता-सखा-गुरु हम जनै छी राम के ॥

देखल लखन के धारणा दृढ राम कहलनि माइ सँ ।
"चलबे करब तौ चलू पहिने पूछिलीअनु माइ सँ" ॥

पूछल लखन सब मातु सँ "हम जाइ वन प्रभु-संग मे ।
तैं दी अहूँ सभ मुदित मन सँ सुमति एहि प्रसंग मे" ।

देलनि शुभाशीर्वाद संग अनुमति हृदय सँ लखन के ।
"रामक चरण-सेवक थिकहुँ रोकत अहाँ के तखन के ?

अद्य किन्तु संशय छथि परम पति-भक्तिकी समान जे ।
बिनु चरण-रज लेने अहाँ के करथि नहि किछु पान जे ॥

से उर्मिला रहती कोना स्वामी-बिना कहु तौ एतऽ ।
पहिने अवश्ये पूछि ली जेबाक ही लछुमन जतऽ ॥

गेला सुमित्रा आदि माता-निकट मा-आदेश ले ।
लिखि माइ-प्रति-श्रद्धा कहल सब जाइ ले उपदेश दै ॥

गेला तखन लछुमन स्वपत्नी उर्मिला के गेह मे ।
कहलनि सकल वृत्तान्त मृदुमय वचन सानि सनेह मे ।

"हे उर्मिले ! प्रभु राम-संग वनबास मे हम जाइ छी ।
सेवक हुँनक हम छी बुभू नहि मात्र केवल माइ छी ॥

जीवन सफल होयत हमर तैं प्रिय ! सहर्ष बिदा करू ।
आज्ञा हमर ई मानि तीनू सासु के सेवा करू ॥

हमरा सभक दिन कटत सुखमय अहिक पतिव्रत-धर्म सँ ।
बाँचल रहब सदखन तखन हम सब सकल दुष्कर्म सँ" ॥

स्वामी-कथन पर कलपि कऽ कहलनि वचन जे उमिला ।
से बूझि पाथर-सन हृदय केँ देत निश्चय ओ गला ॥

"हे नाथ ! के ? सुख-वारि मे दुख-धूल केँ देलक मिला ।
सुरभित सुमन वर्षाक बदला पटक देलक अछि शिला ॥

हम अखन अति आनन्द-सागर केँ लहर लैते छलीं ।
हम बहिन चारु एक अनुपम कल्पना करिते छलीं ॥

सेवा ससुर-सासुक करब हम सभ स्वपति-सँग मील कऽ ।
अति मोद मानब पतिक चरणोदक-सुधा केँ पीबि कऽ ॥

कखनो ने कोनो सासु केँ लागय देबनि गृह-कार्य मे ।
आदर्शमय परिवार छल रचना करक समाज मे ॥

आशा बहुत कैने छलहुँ सभ क्यो रहब आनन्द सँ ।
उपदेश सीता बहिन सँ सुनब सतत स्वच्छन्द सँ ॥

हा ! किन्तु शोकान्वित दुखद सम्वाद अखन सुनैत छी ।
की ? कऽ विधाता ! देल अनुचित काज किये ? करैत छी ॥

नहि नोक किनको होनि किछुओ सह की ? चाहैत छी ।
संसार रचि निर्दय-सदृश व्यवहार किये ? करैत छी ॥

हे प्राणपति ! हम की ? कहू श्री राम-सीता संग मे ।
नहि जाउ अथवा जाउ नहि फूरेछ एहि प्रसंग मे ॥

अपने स्वयं सजान छी जे उचित बूझी से करी ।
स्वीकार अछि हमरो अहाँ जे कहब से हमहुँ करी" ॥

तीनू तखन गेलाह केकइ-निकट केकइ-भवन मे ।
कैलनि विनय "मा ! दिअऽ आज्ञा जाइ हम सभ विपिन मे ।

रामक निवेदन सुनि देलनि वस्त्र वत्कल केकयी ।
श्री राम-लछुमन पहिरि लेलनि देखि प्रमुदित निर्दयी ॥

कहलनि सिया केँ "वस्त्र ई पहिरू अहूँ" ओ तखन हा !
लगलीह पहिरय होनि नहि पहिरल सिया केँ जखन हा ॥

ई देखि गुरु वशिष्ठ के नहि रहल गेलनि तखन हा !

ओ डाँटि कऽ कहलनि 'अहाँ छी अति निठुर महिला महा ॥

भरतक अहाँ माता थिकहुँ नहि अछि दया किछु हृदय मे ?

सद्ज्ञान-बुद्धि-विवेक को भऽ गेल एहना समय मे ??

नर-नारि के व्यवहार उत्तम करक लेल कहैत छी ।

कहु तखन स्वयं कियैक निर्दयताक काज करैत छी ?

श्री राम के वनबास भेटल छनि अहाँ वरदान मे ।

सीता किये ? बल्कल पहिरती अछि इहो नहि ध्यान मे ॥

नव वस्त्र धारण करथि सीता पहिरि भूषण अंग मे ।

वन जाथि स्वेच्छा सँ रहथि सानन्द स्वामी संग मे" ॥



वन-गमन

रथ आनि मन्त्री द्वार पर रखलनि नृपक आदेश सँ ।

आज्ञा सुनौलनि राम के मृदु वचन द्वारा क्लेश सँ ॥

रथ पर चढ़ौलनि लखन एवं सिय-सहित श्री राम के ।

केलनि प्रणाम सनम तीनू जन अयोध्याधाम के ॥

सब सँ बिदा भऽ जखन धौलनि सघन बिपिनक डगर के ।

नर-नारि-बच्चा बूढ़ पाछू लागि पड़लनि नगर के ॥

सस्नेह अवधक धेनु-गज-नभचर निहारथि सीय के ।

चलि पड़ल पाछू लागि वृषभ-तुरंग सब अवधीय के ॥

सौन्दर्य सम्पत्ति शौयं मानू जा रहल अछि अवध सँ ।

सुख-शान्ति-शुचि सद्गुण सकल जनु जा रहल अछि महल सँ ॥

गृह द्वार-भवन विशाल नगरक अति उदास लगैछ ई ।

सब जीव जन्तु निराश भऽ मानू जेना कनैछ ई ॥

बूझू जेना दोषक बिना मन्दिर पिया-बिनु नारि के ।

गुणशील बिनु वनिता जेना सरिता लगथि बिनु वारि के ॥

तहिना लगै अछि अवध सीता-राम केर अभाव मे ।

सब कहथि बंसल छी बुझू नाविक बिना हम नाव मे ॥

के ? सान्त्वना दऽ सकत हमरा हा ! विपत्तिक बेर मे ।
 सन्तुष्ट द्विज के ? के ? करत दै दान नित्य सवेर मे ॥
 राज्यक सुशासन के ? संभारत राम-लक्ष्मण के ? बिना ।
 भऽ जेत गृहपति-रहित घर-परिवार के ? दुर्गति जेना ॥
 कहु आव दशरथ राजगद्दी पर कदापि विराजता ।
 युवराज-पद दऽ राम के ? संकल्प कथमपि टालता ॥
 असमर्थ अपना के ? बुझथि ओ राम-बिनु सब रूप सँ ।
 ओ आव बाहर नहि हेता गम्भीर शोकक कूप सँ ॥
 तँ सब अवधबासी चली वन राम-सीता-संग मे ।
 तप करब हिनके संग मिलि नित लेपि भसम स्वअंग मे ॥
 एमहर बढऽ चाहैत छथि तौ रथ बढे छनि नहि मुदा ।
 रथ के ? पकड़ि कनैत सभ के ? लखि कोना हेता विदा ॥
 कोमल वचन सँ राम तौ बुझबैत छथि सब लोक के ? ।
 किछु दिनक लेल सुधैर्य पूर्वक सहक हेतु वियोग के ? ॥
 तैयो मुदा नहि पाछु छोड़नि लूह-आन्हर छोड़ि कऽ ।
 परिवार-मित्र-समाज-सम्पति-गेह सँ मुँह मोड़ि कऽ ॥
 श्री राम असमंजस मे पड़ल सोचैत छथि की ? हम करी ।
 दिन भरि रहय दीअनि करब किछु सोचि कऽ रातुक घड़ी ॥
 ई सत्य अछि शास्वत वचन प्रभु जखन छथि सोचैत जे ।
 मायाक द्वारा तखन निश्चय देव छथि करबैत से ॥
 ओ राति मे विश्राम ले सब वृक्षतर सूतै गेला ।
 की नींद सँ भऽ भेर जखने फोंफ सब कटिते छला ॥
 श्री राम-लखन-सुमन्त मिलि मन मे तखन सोचै गेला ।
 चलि दी अखन वन-सघन मे होयत सभक तखने भला ॥
 लाचार-वश हुनका करय पड़लनि समय अनुसार ई ।
 करितथि तखन जन-वर्ग सँ बिहड़क कहु उपचार की ?
 उठलाह सब, नहि देखि मन्त्री लखन सीताराम के ? ।
 चीत्कार पारि कनैत उठला नाम ले सुखधाम के ? ॥

चललाह सब रथ-लीख लखि आगू चलल किछु नहि पता ।
के ? कहत कतवा भेल सब केँ शोक एवं विकलता ॥

बपहारि हाय ! कटैत घुमला तखन हीया-हारि कऽ ।
चललाह माथा केँ पकड़ि चिन्तित जकाँ मन-मारि कऽ ॥

सभ कयो अहुछिया हा ! कटै छथि आबि कऽ निज नगर मे ।
शोकाश्रु दृग सँ बहनि सब केँ सतत आठो पहर मे ॥

मब लोक नगरक पुछनि "तजि कऽ राम केँ घुमलहुँ किये ?
जौँ राम नहि घुमलाह तौँ श्री सीय केँ छोड़लहुँ किये ?

रथ सँ उतारि-सँभारि कऽ लऽ कान्ह पर अबितहुँ अहाँ ।
से कैल नहि तौँ हारि कऽ रथ टांगि केँ लबितहुँ अहाँ ॥

की ? आब सब भेलहुँ निराश्रय पीटि अपना माथ केँ ।
जीवन निरर्थक बीत जायत आब बिनु रघुनाथ केँ" ॥

□

वन-प्रवेश

एमहर अबै गेलाह सभ श्री जाह्नवीक किनार मे ।
कैलनि प्रणाम सनम्र मज्जन कैल गंगा धार मे ॥

थकनी सभक हटलनि जखन बैसल छला शुचि नेम सँ ।
गंगाक महिमा कहि सुनौलनि राम सबकेँ प्रेम सँ ॥

वन सँ मँगौलनि दूध बड़केँ तखन कोनो सुजन सँ ।
सिर पर बनौलनि एक-दोसर केँ जटा अति यतन सँ ॥

ई देखि दृग प्रेमाश्रु सँ भरिगेल तखन सुमंत केँ ॥
मुँह मलिन कऽ अति दीन बनि कहलनि बचन श्री मर्त केँ ।

"हे राम ! अवध-नरेश हमरा जे कथन कहने छला ।
से कहि रहल छी" की तखन भरिगेल छल हुँनकर गला ॥

"फल-फूल सँ शोभित विपिनकेँ देखि जखने लेथि ओ ।
तपसी-मुनीश्वर वगैरे दर्शन जखन कऽ लेथि ओ ॥

पावन परम आति सुरसरिक जल पीबि तीनू लेथि ओ ।
स्नान कऽ तन-मनक कलमष सकल जौँ धो लेथि ओ ॥

लऽ अब सादर नगर मे सिय-लखन शोभा घाम के ।
तखने हृदय मे शान्ति होयत पाबि दर्शन राम के ॥

तैं आब जे आजा अहाँ दी सोचि कऽ हम से करी ।
जे उचित बूझी से कहू हम ताहि रूपे पग धरी ॥

ई कहि सुमन्त विनम्र सैं छथि ठाढ़ चिन्तित भेल ओ ।
आदेश की छथि दैत राघव संह सूनै लेल ओ ॥

मंत्री सुमंतक कहब तौं उचिते छलनि ई जानि कऽ ।
दशरथ-पिता सम पूज्य ई छथि राम उर सैं मानि कऽ ॥

कहलनि "अहाँ तौं धर्मके जाता स्वयं हे तात छी ।
धर्मक महत्त्व जनैत छी बुधियार मे विख्यात छी ॥

हरिचन्द नृपति दधीचि शिवि सब कष्ट सहलनि धर्म ले ।
सहलनि अनेको व्यक्ति संकट विश्व मे सद्धर्म ले ॥

तौं हम किये छोड़ब पिता-आदेश रूपी धर्मके ।
धर्मिष्ठ हम कहबैत छी तौं करब किये अधर्म के ॥

केकयि-मनोरथ पूर्ण हेतनि राम के वनबास सैं ।
रहबाक अछि किछु दिवस हमरो दूर भोग-विलास सैं ॥

तैं अधिक आग्रह नहि करू आपस अवध मे जाइ ले ।
नहि कहू जीवन-युद्ध मे रण भूमि त्यागि पड़ाइ ले ॥

रामक कथन के सूनि छुप भऽ किछु छतक उपरान्त मे ।
देलनि सुमंत बिचारि उत्तर रामके ई अन्त मे ॥

"हे प्रभु ! अहूँक दृढ़ता उचित अछि तैं हमहुँ लाचार छी ।
जहिना करै ले कही हमरा करै ले तैयार छी ॥

अछि किन्तु चिन्ता जानकी वन मे कोना रहतीह ओ ।
कहबनि अहाँ तौं घूमि निश्चय अवध मे जयतीह ओ ॥

कहलनि सुमंतक कहल पर श्री राम सिय के "हे प्रिये !
जौं घूमि घर जेतहुँ अहाँ तौं नोक होइत हे सिये ॥

रामक वचन सुनितहि अचम्भित भऽ गेली श्री जानकी ।
मन मे कहल प्रभु छथि सियाक स्वभाव सैं अनजान की ?

करजोड़ि कऽ कहलनि बचन मुसकैत-आनन्द-कंद सँ ।
 "को हेतु हँटे कहैत छी प्रभु ! अखन अपना संग सँ ॥
 अपने स्वयं ज्ञानी-दयार्णव छी बिचारू तौ कने ।
 छाया अन्न हेतौक को ? तन सँ अही" सोचू भने ॥
 सूर्यक प्रभा तजि कतय जायत त्यागि रविके" सृष्टि मे ।
 शशि संग तजि कऽ चांदनी जायत कतय ? अछि दृष्टि मे ?
 हे तात ! मंत्री थिकहुं अपने नीति-निपुण नरेश के" ।
 अपने पिता-सम छी हितेषी तुल्य श्री अवधेश के" ॥
 सम्मुख अहाँके" आर्त भऽ उत्तर अहाँ के" दैत छी ।
 प्रभु राम-चरणक नित्य दर्शन पाबि हम जीबैत छी ॥
 ऐश्वर्य हम देखल पिता के" ससुर केर प्रभाव के" ।
 पति-बिनु मुदा न सोहाय लक्षण अछि हमर स्वभाव के" ॥
 कहबनि ससुर सब सासु के" हे तात ! हमरा ओर सँ ।
 नहि करथि चिन्ता हमर बजितहि नयन भरलनि नोर सँ ॥
 छथि धनुषधारी प्राण-रक्षक प्राण-प्रिय पति संग मे ।
 देवर लखन-सन छथि सहायक तँ न पीड़ा अंग मे ॥
 कहबनि हमर किछु सोच नहि ओ सभ करथि मनमे कदा ।
 राखथि हृदय मे स्मरण नित छनहुं नहि विसरथि मुदा " ॥
 सीताक वाणी मधुर सुनि प्रेमाश्रु मंत्री-नयन सँ ।
 लगलनि बहय फुरलनि ने किछु नहि बाजि सकला वयन सँ ॥
 कैलनि बहुत प्रयत्न घूमथि अवध के" कहना सिया ।
 हा ! किन्तु नहि भेला सफल ओ हारि के" अंतिम हिया ॥
 घुमला अवध दिशि छोड़ि कऽ प्रिय लखन-सीताराम के" ।
 पूँजी गवाँ बनिया चलथि चललाह तहिना घाम के" ॥
 पुनि आउ गंगा-तीर पर ओ ठाढ़ छथि तीनू जना ।
 पर-पार करबा लेल केवट सँ करै छथि प्रार्थना ॥

केवट-संवाद

नहि नाव मुदा अनैत अछि लागल कहय श्री राम सँ ।

“हम मर्म अपनेके” जनैछी सुनल अछि निज कान सँ ॥

ई अहक चरणक धूरि मानव-रचक अद्भुत छी जड़ी ।

छुबितहि शिला सुन्दरि त्रिया बनिजाइ छे ओही घड़ी ॥

अछि नाव काठक हमर पाथर सँ कठिन नहि अधिक ई ।

साधन हमर छी ऐह दै अछि पूर्ण पारिश्रमिक ई ॥

परिवार-पोषण तौ अही सँ होइ अछि जहिना-तेना ।

रोजी हमर चलि जैत संग-संग पार जायब अहं कोना ?

तैं अखन गंगा-पार अपने जंक जौ चाहैत छी ।

तौ अपन चरणाम्बुज पखारय दी हमहुं चाहैत छी ॥

हम शपथ खाकऽ कहैछी वरु लखन मारथि वाण सँ ।

बिनु पैर धोने पार गंगा नहि करब जलयान सँ ॥

अटपट वचन सुनि केवटक हँसला सियापति जोर सँ ।

ओ छल विनय सँ भुकल खसबति नोर दूगके कोर सँ ॥

कहलनि ‘चरण पखारि ले नहि नाव बूझौ जाहि सँ ।

तौ बूझि ले हमरा कोनो आपत्ति नहि अछि ताहि सँ ॥

नहि कर बिलम्ब उतार हमरा पार गंगाधार के ।

सविनय कहैत छिओक कर चरितार्थ शिष्टाचार के ॥

वाचक ! बिचारू प्रभुक लीला छनि केहन अनुपम महा ।

सामान्य नर-सन कऽ रहल छथि बात सुन्दतम अहा !

जे पार लगबधि जीवके भव-जलधि अगम अथाह सँ ।

से प्रभु निहोरा कऽ रहल छथि एक नर-मल्लाह सँ ॥

अनलक कठौता-भरि अछिजल राम-आज्ञा पाबि कऽ ।

आनन्द सँ पद-कमल धोलक राम-पदके दाबि कऽ ॥

अपने स्वयं पीलक पियोलक सकल कुल परिवार के ।

भव-गार अपने भेल कैलक पार जग-करतार के ॥

ई देखि सुरगण केवटक मन सँ सराहथि भाग्य के ।
नभ सँ अहा ! बरिसल सुगन्धित तखन पुष्पक माल्य के ॥

कैलक प्रणाम ने माँग कैलक जखन खेवा नाव के ।
प्रभु के बहुत संकोच भेलनि देल नहि मल्लाह के ॥

स्वामी-हृदय के बात जाननिहारि सिय निज ओर सँ ।
देलनि अपन अँगूठी सहर्ष निकालि अँगुर-पोर सँ ॥
नहि किन्तु ले अछि नाव के उतराइ केवट राम सँ ।
कर जोड़ि के केवट कहै अछि भक्तियुत सुखधाम सँ ॥

“हे राम ! हम पौलहुँ बहुत दुर्लभ सुफल श्री नाथ सँ ।
निज चरण धोअय देल हमरा पर कृपा कै हाथ सँ ॥
हम पाबि गेलहुँ पूर्ण श्रम-फल आइ प्रभुक प्रताप सँ ।
दुख-दोष-दुर्बलता दरिद्री हँटल अपने-आप सँ ॥

वन सँ जखन घूमब तखन जे देव अपने लेब से ।
मन-कामना पूरत हमर सब तखन ध्रुव स्वयमेव से” ॥
लेलक जखन उतराइ नहि किछु राम रघुकुल-चंद सँ ।
देलनि स्वयं वरदान निर्मल भक्ति के आनन्द सँ ॥

कैलनि कृपालु सहर्ष मञ्जन पैसि गंगा-धार मे ।
किछु काल लगलनि इष्ट शिवके सविधि पूजाचार मे ॥

सीता विनय कैलनि दयामयि जह्नुवी के प्रेम सँ ।
“हे मा ! समय वनवास के कटि जाय कुशलरु छेम सँ ॥

हम घूमि कऽ आबी लखन-सँग नाथ के वनवास सँ ।
पूजा करी अपनेक हमसभ अधिक हृदय-हुलास सँ” ॥

ध्वनि मधुर सुनलनि सब कियो जे भेल गंगा-धार सँ ।
“हे सिय ! अहाँ के हम प्रशंसा करब कोन प्रकार सँ ॥

सुन्दर अहँक स्वभाव ककरा ज्ञात नहि संसार मे ।
के ? नारि जूमि सकैछ सीते ! अहँक विमल विचार मे ॥

कैलहुँ हमर विनती वढ़प्पन देल हमरा स्नेह सँ ।
देलहुँ अपन दर्शन एतय सिय ! आबि अपना गेह सँ ॥

सीते ! बूझू हम अपन वाणी के पवित्र करैत छी ।
 सकुशल विपिन सँ घुमि आयब सत्य बचन कहैत छी ॥
 मन-कामना ध्रुव पूर्ण होयत अहंक जे अछि हृदय मे ।
 यश विमल फैलत विश्वभरि मे अहंक किछुए समय मे ॥
 जनकात्मजा हर्षित भेली सुनि सुरसरिक मृदु कथन के ।
 जल पीवि कऽ भरि पोख पावन केल तन-मन-बचन के ॥
 कैलनि प्रयाण प्रयाग दिशि कहबैछ तीरथ-राज जे ।
 भरद्वाज मुनि सँ भेट भेलनि नीक बुझलनि काज से ॥

भरद्वाज मुनि सँ भेट

सन्तुष्ट तीनू जन भेला अति मुनिक शुचि सत्कार सँ ।
 अतिशय पुनोत विचार एवं उच्च शिष्टाचार सँ ॥
 प्रभु अपन दर्शन दऽ अहा ! कैलनि मुदित भरद्वाज के ।
 जीवन सफल कऽ देल तोर्यक सकल सुजन समाज के ॥
 वन-पथ-प्रदर्शक शिष्य के देलनि लगा ओ संग मे ।
 चललाह तीनूजन विपिन दिशि अति निराला ढंग मे ॥
 चलबाक क्रम अद्भुत छलनि श्री लखन-सीता-राम के ।
 जमु जीव एवं ब्रह्म बीच चलैछ माया नाम के ॥
 रति रहथि शोभित मदन एवं ऋतु वसंत सुपास मे ।
 बुध अरु निशापति बीच रोहिणि रहथि नित आकाश मे ॥
 सीता चलथि बचवैत रामक चरण सुभग निशान के ।
 लछुमन दुहु पद-चिह्नसँ निज पग बढ़ाबथि वाम के ॥
 सुंदर एहन झाँकी बसै अछि जाहि भक्तक हृदय मे ।
 ओ धन्य छथि मानव रहथि नहि दुखित कोनो समय मे ॥
 जे नारि नहि चललीह एको डेग बिनु पदत्राण के ।
 से चलथि कंटकमय विपिन मे बिनु कोनो थलयान के ॥
 पृच्छथि सिया "कत दूर अछि ठहरब जतै स्थान ओ ।
 सन्ध्या समीप लगैत अछि जा रहल छथि दिनमान ओ" ॥

ई कहि असोथकीत भऽ कऽ बैसि रहली जानकी ।
 सीताक स्थिति पर कतहुं नहि देखि रघुवर ध्यान की ?
 थाकलि सिया केँ बूझि किछु छन एक पावन ठाम मे ।
 थकनी मेटौलनि बैसि कऽ किछु काल केँ विश्राम मे ॥
 देखल सघन वट वृक्ष सुन्दर छल सुकूप समीप मे ।
 सब से सुरक्षित बूझि पढ़लनि ओहि वीपिनक बीच मे ॥
 कहुना बितौलनि राति भितर भेल कलनि नितक्रिया ।
 चललाह आगू भूमि पावन देखि कऽ कहलनि सिया ।
 "ई अछि लगैत मुनीश केँ आश्रम कतहुँ समीप मे ।
 सब सँ मनोहर भूमि लगइछ एहि जम्बूद्वीप मे ॥
 देखैत छी हम विटप सब परिपूर्ण अछि फल-फूल सँ ।
 वातावरण सुरमित बहै अछि वायु मन-अनुकूल सँ ।
 अति मधुर निर्मल जल सरोवर मे एतय देखैत छी ।
 कोकिल निरंतर कऽ रहल कू-कू सुशब्द सुनैत छी ॥
 अछि भऽ रहल शुभ पाठ वेदक ब्रह्मचारी-बृन्द सँ ।
 घन सघन देखि मयूर सभ नाचैत अछि आनन्द सँ ॥
 कहलनि सियापति "थीक ई तप-भूमि साधु-ऋषीश केँ ।
 पावन परम आश्रम थिकनि ई वाल्मीक मुनीश केँ ॥
 सुन्दर सरोवर मे कमल विकसित विविध प्रकार छै ।
 मकरंद-रस मे मस्त भँवरा कऽ रहल गुञ्जार छै ॥

वाल्मीक सँ भेंट

देखू सिये ! पशु-विहग केँ स्वर मधुर पड़ितहि कान मे ।
 हँटिगेल तनक थकान सब अबितहि सुभग स्थान मे ॥
 रघुवीर रामक आगमन पर मुनि परम हर्षित भेला ।
 सानन्द अगवानी करै लय शिष्य-संग तखने एला ॥
 श्री राम लछुमन दण्डवत केलनि मुनिक पद छूबि कऽ ।
 देलनि शुभाशीर्वाद मुनिवर हृषं सँ सिर चूमि कऽ ॥

श्री राम के छवि देखि मुनि चख भरल प्रेमक नोर सैं ।
पुछलनि कुशल-मंगल मुनीश्वर समुद अवध-किशोर सैं ॥

भोजन करौलनि मधुर फल दऽ कमल-पत्रक पात्र मे ।
स्तुति करय लगलाह गायक-वर छला जे छात्र मे ॥

बैसल छला विश्राम-गृह मे सब अधिक आराम सैं ।
श्री राम कैलनि विनय मुनिवर पूर्ण सद्गुण ग्राम सैं ॥

“हे मुनि ! परम ज्ञानी थिकहुं त्रयकालदर्शी छी अहाँ ।
फल बैर-सम निज पाणि मे छी विश्व के रखने अहाँ ॥

हम सभ एतय वन मे किये अयलहुं अवश्य जनैत छी ।
तैं की कहब जानल विषय के कहब व्यर्थ बुझैत छी ॥

सुस्थान अपने दी बता निज यज्ञ-भूमि समीप मे ।
सीता-लखन सँग रहक अछि किछु दिन विपिन के बीच मे” ॥

श्री राम के वाणी मधुर सुनि मुनि परम आवेश सैं ।
कैलनि मुनीश्वर प्रश्न सुखप्रद नर-प्रवर अवधेश सैं ॥

“हे राम ! पुछलहुं अछि अहाँ वन मे कतय जाकऽ रहू ।
तौ हम पृछैत लजाइ छी नहि छी कतय से तऽ कहू ॥

हम कोन ठाम बताउ अपने जतय न सतत रहैत छी ।
स्थान रहबा-योग्य होयत कतय स्वयं जनैत छी ॥

तैंयो सुनू स्थान हम रहबाक योग्य कहैत छी ।
जा कऽ ततय ली बास अपने उचित सँह बुझैत छी ॥

छनि कान जिनक समुद्र-मन सरिता अहाँ के शुभ कथा ।
जे नित निरन्तर भरि रहल अछि भरि सकय नहि ओ यथा ॥

चातक जेना पीबैछ केवल मात्र स्वाती-बुन्द के ।
चाहथि ने कखनो जल त्रिमल सरिता सरोवर-सिन्धु के ॥

तहिना जिनक दूग तृप्ति होनि सुरू अमृत पीबि कऽ ।
तिनके हृदय मे जा बसू हे राम ! तीनू मील कऽ ॥

छनि जीभ हंसिनि बनि जिनक यश-रूप-मानस-नीर मे ।
अपनेक गुण-मोती चुनथि बसु तिनक हृदय-कुटीर मे ॥

सूँघेछ जिनकर नासिका अर्पित सुमन-सुगन्ध के ।
 पाबथि प्रसादक रूप मे अर्पित वसन अरु अन्न के ॥
 भुकि जानि सिर गुरुदेव-ब्राह्मण देखि जिनकर विनय सँ ।
 पूजथि चरण अपनेक रघुवर ! भजन गाबथि हृदय सँ ॥
 जे जयथि रामक नाम पावन दान दैछथि दीन के ।
 सेवा करथि असहाय के बसबथि अगार-विहीन के ॥
 छनि प्रीति जिनका प्राण सँ बड़ि कऽ अहाँ के चरण मे ।
 जाकय बसू सिय-लखन के संग ओहि मानस-भवन मे ॥
 नहि क्रोध-मद-अभिमान छनि किछु लोभ नहि पर बित्त मे ।
 तिनका हृदय मे जा बसू नहि छैन्ह ईर्ष्या चित्त मे ॥
 छथि सभक प्रिय सभ के हितैषी अति प्रशंसा-पात्र जे ।
 परदुख-निवारण-हेतु दौड़थि रुकथि नहि छणमात्र जे ॥
 जे ताकि-ताकि सदैव नाशथि दुर्दशा दयनीय के ।
 तिनका हृदय मे राम ! जाकय बास कर संग सोय के ॥
 मुनि पुनि सुनौलनि अंत मे "सुनु राम ! आब कहैत छी ।
 किछु दिवस वन मे सिय-लखन संग रहक जाँ चाहैत छी ॥
 तौ जाउ ततय प्रसन्न सँ हम जतय आब कहैत छी ।
 ओ हैत रहबा योग्य उत्तम अति अवश्य बुझैत छी ॥
 अति भव्य सुन्दर एहि वन मे चित्रकूट पहाड़ छै ।
 फल-फूल सँ सम्पन्न मन-अनुकूल बहति वयार छै ॥
 गज-सिंह-हरिण-सियार-पक्षी बसथि मित्रक भाव सँ ।
 नहि शत्रुता राखथि परस्पर अत्रि मुनिक प्रभाव सँ ॥
 सुरसरि बहैथ समीप मे मन्दाकिनी के नाम सँ ।
 अनलन्हि अनुसूया सती तप-शक्ति सँ सुरधाम सँ ॥
 हे राम ! जाउ अवश्य अपनेसब ओतय जाकऽ रही ।
 दी संग कऽ दू-चारि वन-पथ विज्ञ के जकरा कही ॥
 मुनिवर-कथन के सुनि रघुवर कहल अति आनन्द सँ ।
 "हे मुनिप्रवर ! जाकय रहब हम कतहुँ अहिक पसंद सँ ॥"

कैलनि विदा कऽ देल सँग वन-मार्ग-जाननहार के :
दूनु निबाहल शुभ परस्पर मधुर शिष्टाचार के ॥



अत्रि-अनुसूया सँ भेट

बिचरैत वन मे रहथि तीनु एक दिन पहुँचे गेला ।
श्री अत्रिमुनिक पवित्र आश्रम देखि अति हर्षित भेला ॥

मुनि-चरण-युग मे दण्डवत कैलनि सप्रेम प्रणाम क ।
आशीष पौलनि अत्रि सँ “होयत अहाँ के राम जे” ॥

आदर सहित बैसौल कर गहि लखन एवं राम के ।
“बैसू सिये !” कहलनि अधिक सस्नेह रामक वाम के ॥

पूछल कुशल-मंगल सभक स्थिति अयोध्या नगर के ।
“अयलहुँ किये ? सेजात अछि तजि अपन अनुपम सुघर के” ॥

तैं आब सहष विताउ चौदह वर्ष वन मे वास कऽ ।
ईहो जनै छी जँब अपने आब निश्चर-नाश कऽ ॥

हम तौ प्रतीक्षा आइ घरि करितहि छलहुँ आयब अहाँ ।
रुकब कतय कहिया कखन पहुँचब रहब-ठहरब कहाँ ॥

हम छी जनैत अहाँक लीला-कार्यक्रम विस्तार सँ ।
कऽ देब अपने दूर दुगुण-दुगुणी संसार सँ ॥

हे राम ! कर अनुपान सुन्दर फल मधुरतम प्रेम सँ ।

विश्राम कऽ किछु कहू अथवा सुनू बैसू नेम सँ” ॥

मुनि केँ छलनि पत्नी तपस्विनि नाम अनुसूया सती ।
बृद्धा विशेष सुविज्ञ भक्तिनि नीति-निपुण दयावती ॥

“तिनका निकट सिय जाथि” कहलनि अत्रि अपन सुभाव सँ ।

“पतिव्रत-नियम-लक्षण त्रिया केँ सीखि आबथु चाव सँ” ॥

मुनिवरक आज्ञा पाबि देलनि राम आज्ञा सीय के ।

“जा कऽ प्रिये ! मन दऽ सुनू उपदेश श्री रमणीय के” ॥

ततकाल सीता आश्रमक अन्दर पहुँचली हर्ष सँ ।

भेलनि अहा ! प्रत्यक्ष दर्शन नारि-धर्मादर्श सँ ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र अनुसूया-चरण पवित्र के ।
देखल सिया साक्षात तप-व्रत-त्याग-पावन चित्र के ॥

कर जोड़ि सीता कुशल-मंगल पूछि निश्छल प्रेम सैं ।
जा कऽ निकट मे बैसि रहली भक्ति-श्रद्धा-नेम सैं ॥

देलनि शुभाशीर्वाद सीता के तखन मुनिवर-प्रिया ।
“अहिबात अविचल रहत पति सैं प्यार भेटत नित सिया !

अछि धर्म पर रुचि अहँक आ अनुराग स्वामी चरण मे ।
सदिखन सुरक्षित रहब अहँ छी जखन रामक शरण मे ॥

मुनिप्रवर-गण चर्चा अहाँ के करथि बहुतों वर्ष सैं ।
आदर्श नारी मे अहाँ के नाम गनबथि हर्ष सैं ॥

छल मोन लागल कत दिवस सैं अहँक हम दर्शन करी ।
सीते ! अहाँ लग बैसि नारी-शील-गुण-वर्णन करी ॥

छै नीति उत्तम पाबि श्रोता धर्म के चर्चा करी ।
उपयुक्त अवसर पाबि कऽ धन-अन्न के खर्चा करी ॥

छल प्रबल अभिलाषा हमर जे भऽ रहल अछि पूर्ण से ।
अनुभव अखन धरि भेल अछि जे कहब हम सम्पूर्ण से ॥

स्वामीक रुचि के बूझि पहिने काज नारी करथि जे ।
पति-हृदय-आसन पर विराजित सतत नारी रहथि से ॥

रामक करैछी शुश्रूषा छी धन्य महिला-जाति मे ।
गणना अहँ के ह्वैछ नित पति-प्रेमिका के पाँति मे ॥

स्वामी नगर मे रहथि अथवा घोर जंगल-बीच मे ।
स्वामी प्रतिष्ठित होथि अथवा होनि गणना नीच मे ॥

धन-हीन वा बल-हीन छथि अथवा रहथि बड़का धनी ।
स्थिति सकल मे नारि के चाही स्वपति-भक्तिनि बनी ॥

हे जानकी ! सीते ! बुझू ओ श्रेष्ठ नारि-समाज मे ।
जे हाथ बँटबथि नित्य निज स्वामीक सभटा काज मे ॥

पढ़लहु बहुत सद्ग्रन्थ सूनल साधु-सन्त अनेक सैं ।
बहुतेक तरहें कैल अछि मन मे विचार विवेक सैं ॥

प्रत्यक्ष ईश्वर-तुल्य मानू स्वपति प्रिय प्राणेश के ।
स्वामीक सेवा करब तौ नहि हैत अनुभव क्लेश के ॥

मन मे मनोरथ जे उठय छल-त्यागि स्वामी सँ कहू ।
होयत मनोरथ पूर्ण ध्रुव विश्वास कैने तौ रहू ॥

जौं किछु समस्या हो उपस्थित स्वपति-पद निर्भय गहू ।
सब कष्ट के सानन्द सदखन सीय ! स्वामी ले सहू ॥

जौं पति रहथि विपत्ति मे शोकित सकल अभाव सँ ।
तन-क्षीण मनमति-हीन अति क्रोधी रहथि स्वभाव सँ ।

तद्यपि पतिक प्रति प्रेम-श्रद्धा मे कमी नहि करथि जे ।
ओ धन्य नारी लोक मे पूज्या अवश्ये बनथि से ॥

छथि चारि तरहक नारिगण पतिव्रत-व्रती जग-बीच मे ।
सर्वोत्तमा अह मध्यमा निकृष्ट अधमा नीच मे ॥

नित स्वप्न मे पर्यन्त अपने पतिक दर्शन करथि जे ।
पर पुरुष दिशि ताकथिने ध्यानो हृदय मे नहि धरथि जे ॥

से उत्तमा स्वामीव्रता कहबैथ शास्त्र-पुराण मे ।
ई प्राप्त पद जे करथि नहि सन्देह तिनका त्राण मे ॥
जे पर पुरुष के वाप-भ्राता-पुत्र-सम मानथि सदा ।
से मध्यमा कहबैथ जगमे सकल जव सौं सर्वदा ॥

अति शुद्धतम आचार राखथि करथि काज विचारि जे ।
निकृष्ट छथि पातिव्रता-श्रेणीक मध्य सुनारि से ॥

नहि करथि पति-प्रतिकूल किछु स्वामीक भय सँ जे त्रिया ।
से अधम पतिवरता कहाबथि करथि यद्यपि सत् क्रिया ॥

ऐ चारि सँ जे शेष छथि तै नारि के पतिता कही ।
पर पुरुष संगक रमण-शीला नारि सँ अलगे रही ॥

व्यभिचारिणी वनिता बनथि विधवा बरावरि विश्व मे ।
भोगथि विविध दुख आ कलंकित होति रहथि भविष्य मे ॥

ई सुनि सीता मुदित भऽ उपदेश प्रद शुभ वाक्य के ।
कैलनि प्रशंसा हुनक कहलनि धन्य अपना भाग्य के ॥

"हे देवि ! सृष्टिक नारिगण मे श्रेष्ठ ज्ञानी छी अहूँ ।
 नहि देखि रहलहुँ अछि अहाँ सन विश्व भरि मे तिय कहूँ ॥
 अपने-सदृश साध्वी-सती केँ पाबि भारतवर्ष ई ।
 गर्वित महा अछि विश्व मे भेलहुँ त्रिया-आदर्श ई ॥
 हमरो रहैछ प्रयत्न पालनकरी नारी धर्म केँ ।
 सीखी सती सभ सँ सुशिक्षा-शीलता सद्धर्म केँ ॥
 रहितथि कदाचित पति असुन्दर अरु विहीन चरित्र सँ ।
 करितहुँ तथापि हृदय-विलग नहि पति-चरण पवित्र सँ ॥
 छथि जखन हमरा पति प्रशंसा-पात्र भेटल ई महा !
 कहु तखन हम हर्षित किये नहि रहब नित मन सँ महा ॥
 हम सासु-ससुर-समाज केँ व्यवहार सँ सन्तुष्ट छी ।
 नहि याद अछि हम सेविका पर भेल कहियो रुष्ट छी ॥
 छी भाग्य-शालिनि नारि मे हमहूँ ने कम संसार मे ।
 श्री राम श्रीपति प्राप्त छथि जे श्रेष्ठ शिष्टाचार मे ॥
 ई वैह पुरुष थिकाह जे कोपित ने ककरो पर भेला ।
 नित सुपथ पर पग धैल ई नहि कुपथ पर कहियो गेला ॥
 हमरा सदृश अबोध कन्या केँ बनौलनि निज प्रिया ।
 भेलछि जनम तौँ माटि तर कहबैत छी जनकक धिया ॥
 कहु तौँ अहीं हमरा सदृश महिला बनथि रामक प्रिया ?
 ई मात्र प्रभुक उदारता छनि हमर किछु नहि सत् क्रिया ॥
 वन-आगमन कालक सुशिक्षा सासुसभ सँ प्राप्त जे ।
 माता मुनयना-वचन उरमे अखनि धरि अछि व्याप्त जे ॥
 सूनल-पढ़ल अद्रि सन्त सँ सद्शास्त्र केँ पद्यांश मे ।
 हम सुनि रहलहुँ अहुँक मुख सँ वैह सब सारांश मे ॥
 सीताक समुचित वचन सँ सन्तुष्ट अनुसूया छली ।
 मिथिलेश-द्रहिता केँ मुदित मन कहल श्री कर्दम-लली ॥
 "पति-संग हमरा सँ तपस्या कैल किछु गो गेल जाँ ।
 वरदान देवक शक्ति हमरा हे सिये ! अछि भेल तौँ ॥

माँगू अहाँ संकोच तजि हम देब अति सत्कार सँ ।
सचमुच बुझू सन्तुष्ट हम छी अहँक उच्च विचार सँ ॥

कहलनि सिया “हे मातु ! अपने देल शुभ उपदेश जे ।
पोलहुँ बहुत किछु आब की ? रहिगेल देबक शेष से ॥

अपनेक सन साध्वी सती केँ चरण-रज चाहैत छी ।
चाहैत छी आशीष शुभ पुनि-पुनि प्रणाम करैत छी” ॥

निर्लोभ लखि सीता सती केँ देखि अनुसूया कथी ?
लगली विचारै की दिअनि ? स्वीकार करती की ? सती ॥

वनवास नहि रहितनि सजबितहुँ स्वर्णमय शृंगार सँ ।
करितहुँ बिदा प्रिय नारि केँ उपहार दऽ सत्कार सँ ॥

कहलनि “सिये ! सौभाग्य अविचल रहय, रही आनन्द सँ ।
रक्षित जेना छी रहब तहिना सतत रघुकुल-चंद सँ” ॥

देलनि अनेक अमूल्य आभूषण सिया केँ स्नेह सँ ।
आशीष दऽ कैलनि बिदा की पुष्प बरिसल मेघ सँ ॥

□

सीताक सन्देह-निवारण

वन-भ्रमण मे मुनिगणक दर्शन होनि नित श्री राम केँ ।
सब सँ शुभाशीर्वाद पाबथि चलथि अगिला ठाम केँ ॥

तूणीर बाँधल पीठ पर लखि धनुष लटकल कन्ध सँ ।
मुनि-भेष मे चलि रहल छथि तपसी-नियम-प्रतिबन्ध सँ ॥

प्रभु राम केँ वाणी मनोहर मे कहल श्री मैथिली ।
“हे नाथ ! अपने छी दयानिधि आर्यवर अति निश्चली ॥

देखू-विचारू दुर्व्यसन पर प्रभु ! अहाँ पड़िगेल छी ।
हमरा लगय कुपंथ पर की ? चलक तत्पर भेल छी ॥

जौ आइ धरि दुर्व्यसन सब सँ सर्वथा निवृत्ति छी ।
तौ आब की प्रभु ! निष्प्रयोजन कार्य मे प्रवृत्ति छी ॥

छे तीन तरहक दुर्व्यसन तँपर ने कखनो पग धरी ।
परनारि-संगति, भूठ-बाजब, वैर-बिनु हत्या करी ॥

ऐ तीन मे स प्रथम के त्यागी अहाँ प्रारम्भ सँ ।
दोसर व्यसन अछि नहि अहाँ मे हम कहैछी दम्भ सँ ॥

हम किन्तु तेसर दुर्व्यसन-लक्षण देखे छी नाथ मे ।
तरकस बगल मे धनुष-शर रखने अहाँ छी हाथ मे ॥

वनबास भेटल अछि बनोलहुँ भेष-मुनि-तपसी जकाँ ।
शस्त्रक प्रयोजन तखन की ? घूमी एना हिंसक जकाँ ॥

हमहूँ जनैछी शस्त्र धारण करथि क्षत्री सर्वदा ।
पीड़ित कोनो प्राणोक पीड़ा दूर करबालय मुदा ॥

अछि शस्त्र धारण करक अवसर अखन की ? वनबास मे ।
के भिड़त-लूटत, लेत की ? अछि किछु ने अपना पास मे ॥

वन आबि चुकलहुँ जखन प्रभु ! अनाउ ऋषि-मुनि-कर्म केँ ।
पालन करक अछि आब हमरा विपिन-बासी-धर्म केँ ॥

करुणा-निधान महान प्रभु ! कहबैत छी संसार मे ।
अछि जे छमाशीलक स्वभाव सदैव सब व्यहार मे ।

बिनु कष्ट सहने धैर्य धैने प्राप्त धर्मक हैत की ?
आचार शुद्ध विचार-बिनु दुर्गुण हृदय सँ जैत की ?

प्रत्येक जन्मक प्रेमिका केँ सब सिखौने छी अहाँ ।
हम सेह किछु सुनबैत छी जे किछु सुनौने छी अहाँ ॥

हम कोन योग्यक छी, अहाँ केँ नीक बात बतैब की ?
सब भाँति सर्वोत्तम पुरुष केँ हम अधिक सुनैब की ?

सीताक सुन्दर वचन सुनलनि राम अतिशय ध्यान सँ ।
लगला कहय 'सुकुमारि ! अछि उचिते अहँक अनुमान तोँ ॥

घबड़ाउ नहि सीते । प्रिये । लखि एहन हमरा रूप केँ ।
छेँ धर्म परम सदैव धारण करब आयुध भूप केँ ॥

अयलहुँ एतय हम धेनु-सज्जन-विप्र-हित संसार मे ।
शस्त्रक करब उपयोग हम सब निश्चरक संहार मे ।

जे दुष्टता करताह तिनकर छोड़ि देबनि प्राण की ?
तखने अहाँ बूझब प्रयोजन अस्त्र केँ की ? जानकी !

वन मे घटत घटना बहुत निर्भीक भऽ देखू अहाँ।
की ? की ? करय पड़ैत छै अइ जीव के जाकय कहाँ" ॥

बीतनि समय दम्पति दुनू के मधुर वार्त्तालाप मे।
सीता समय बितबैथ स्वामी राम-संग आलाप मे ॥

□

अगस्त्य सँ भेंट

एवम्प्रकारे विपिन मे वनबास-अवधि कटे छला।

घूमैत सब अयला जतय मुनिवर अगस्त्य रहै छला ॥

साष्टांग कैलनि दण्डवत सविनय प्रणाम मुनीश केँ।

देलनि शुभाशीर्वाद मुनि-सिय लखन संग जगदीश केँ ॥

"हे राम ! हम छी घन्य ! दर्शन भेल अहंके स्वनैन सँ।

हर्षक करब वणन कठिन बूझैत छी हम बेन सँ ॥

श्रम भेल होयत अधिक चलने विपिन-कंटक-बीच मे।

खसि पड़ल होयब पिछड़ि कऽ पथ-मध्य कादो-कीच मे ॥

नृप-सुत विवाहित युवक भऽ कऽ भेष केलहुँ साधु केँ।

वन विकट मे सीताक संग घूमैत छी बिनु पादुकेँ ॥

सुकुमारि राजकुमारि सीता कष्ट सहैत-रहैथ ई।

कहु कोन तरहेँ काँटकुश-युत मार्ग मध्य चलैथ ई ॥

ई कष्ट सीता सहथि केवल स्वपति - प्रेमावेश मे।

पातिव्रता नारी रहथि पति-संग मुदित विशेष मे ॥

संसार मे बहु काल सँ नारी स्वभाव देखैत छी।

बहुतेक मुख सँ नारि-जातिक चालि-चलन सुनैत छी ॥

स्वामी सुखी सम्पन्न सुन्दर स्वस्थ सदिखन रहथि जी।

नहि संग छोड़थि नारिगण अनुराग पति सँ करथि तो ॥

दुर्भाग्यवश पति कष्ट सँ संव्रस्त अति भऽ जाथि जी।

नारी अधिकतर स्वपति केँ शट त्यागि दूर पराथि तो ॥

सीता मुदा स्वामीक संग मे रहथि सदिखन अति सुखी।

बिनु सेज-घर-शृंगार केँ छथि, होथि नहि तयो दुखी ॥

राघव ! अहाँ राखब सिया पर ध्यान अधिक सचेत भऽ ।
 कहूँ खसि पड़थि नहि सुनि गर्जन बाघ केर अचेत भऽ ॥
 तकिन्हि छलहुं हम बाट आयब अवश विपिन-निवास मे ।
 सहयोग चाहब, देव हमसभ असुर-गणक विनाश मे ॥
 कैलक उपद्रव आइ धरि ई यज्ञ-जप-तप काल मे ।
 डेरबैत छल बहुरूप बनि कऽ आबि झुण्ड विशाल मे ॥
 ई देखि जे रहलहुं पहाड़क सदृश हाड़र मांस केँ ।
 तप-लीन मुनि केँ मारि देलक फेँकि लाखो लाश केँ ॥
 अयलहुं अहाँ वन मे अहा ! हमरा सभक सौभाग्य सँ ।
 केकयिक मन विपरीत भेलनि निश्चरक दुर्भाग्य सँ ॥
 भऽ जेत यज्ञक कार्य ध्रुव सम्पन्न आब बुझैत छी ।
 अछि ज्ञात हमरा यज्ञ केँ रक्षक अहाँ कहबैत छी ॥
 अछि बुझल धर्मक हानि होबय जखन-जखन लगैत छै ।
 जग मे अधर्मक बाढ़ि दिन-दिन बहुत अधिक बढ़ैत छै ॥
 तखने प्रभुक ध्रुव होइ अछि अवतार अइ संसार मे ।
 नहि होइ छैक बिलम्ब किछुओ असुर केँ संहार मे ॥
 तँ आब बूझि पड़ैछ हमरा आबि अवसर गेल से ।
 दर्शन अहाँ केँ पाबि आब मरोश बढ़का भेल जे ॥
 जा कऽ रहू हे राम ! दंडक-वन पुनीत सुधाम मे ।
 भऽ जेत ओ वन प्रथित जगभरि तीर्थ श्रेष्ठ सुधाम मे ॥
 जल स्वच्छ, थल पावन, मधुर फल प्राप्त होयत ध्रुव ततऽ ।
 बनि जेत स्वर्गक तुल्य अपने रहब सीता-संग जतऽ ॥

□

जटायु सँ भेंट

बूझू अहा ! घूमैत वन तीनू गोटे पहुँचथि जतऽ ।
 आशीष संग सत्कार भेटनि भोजनक आग्रह ततऽ ॥
 संयोगवश वन मे मिलन भेलनि विहंग जटायु सँ ।
 जे छला सभ्य-सुशील-ईश्वर भक्त अति अल्पायु सँ ॥

सोचल सियापति एहि खग सँ करक चाही मित्रता ।
छथि बृद्ध वन मे कोन तरहें रहब से देता बता ॥

वन मे ककर के ? मित्र, ककरा छै कथी सँ शत्रुता ।
के अछि केहन स्वभाव के ? हिनका अवश्ये छनि पता ॥

विश्वास-पात्रक योग्य छथि दशरथ पिताक सुमीत ई ।
करताह अवसर पर हमर हित अछि अवश्य प्रतीत ई ॥

सीताक रक्षा भार सौपी अखन हिनके हाथ मे ।
सीता-लखन के ? संग तेसर स्वजन रहता साथ मे ॥

मिलि कऽ परस्पर प्रेम सँ चललाह निश्चित ठाम के ।
बतबैत चलथि जटायु शुचि स्थान सभ लऽ नाम के ॥

पूछैत विपिनक लोक सँ अयलाह चारु जन ततऽ ।
मुनि वाल्मीकक कहल-चूनल छलनि पावन थल जतऽ ॥

पहुँचै गेला, मन मुदित भेलनि पंचवटी-समीप मे ।
कहबैत छल जे अति मनोहर भूमि जम्बूद्वीप मे ॥

□

पंचवटी मे निवास

पुनि पूछि वन-बासी-सुजन नर-नारिगण वृद्धायु सँ ।
कुटिया बनाबी राय लऽ सीता-लखन-जटायु सँ ॥

कहलनि सियापति लखन सँ “जौ सब पसंद करैत छी ।

तौ एक सुन्दरतम कुटी-निर्माण हेतु कहैत छी ॥

प्रकृतिक सकल सुन्दर कला सँ पूर्ण अछि शुचि प्रान्त ई ।
निकटहि जलाशय जलज सँ शोभित अहा ! अति शान्त ई ॥

कुसुमित कदम्बक डाढ़ि पर बेसल विहंगक वर्ग जे ।
सुनबैत सभखन अछि मृदुल स्वर सूनि होयत हर्ष से ॥

तँ एक शुचि आश्रम बनाबी जानकीक पसंद सँ
वनवास अवधि व्यतीत होयत सभक अति आनन्द सँ” ॥

आदेश-पालन मे सतत तत्पर लखन सुनिताहि छला ।
लगला बनाबै पर्ण-गृह जानल छलनि सुन्दर कला ॥

खड़-पात चुनि-चुनि आति देलनि बहुत माता जानकी ।
 कहु एकर सुन्तरताक कयो कऽ सकत ठीक बखान की ?
 अति स्नेह सँ कहलनि सियावर उर लगा कऽ लखनकेँ ।
 "ई पर्णशाला नहिं बुझू बूझू मनोहर भवन केँ" ॥
 हम सभ बनाबी कार्यक्रम प्रतिदिनक सुन्दर रीति सँ ।
 जे आवि जाथि एतय तिनक स्वागत करी अति प्रीति सँ ॥
 दी दीन केँ किछु दान नित अभिमान तजि मृदु भाव सँ ।
 कऽ ली स्ववश सभ केँ सुप्रिय वत्ताविकेर प्रभाव सँ ।
 दुर्बल दया केँ पात्र जे छथि तिनक रक्षा ध्रुव करी ।
 आपद-विपत्तिक काल उर मे धैर्य केँ धारण करी ॥
 अति दूर दुर्जन सँ रही नित सुजन केँ संगति करी ।
 आचार सर्वोत्तम रहय सत्शास्त्र केँ चर्चा करी ॥
 जौ उच्च परम विचार राखब रहब सादा वेष मे ।
 नहि पड़ब कवनो ध्रुव बुझू कथपपि कियो दुख-क्लेश मे ।
 बाजब असत्य कदापि नहिं वरु प्राण त्यागथि देह केँ ।
 विश्वासपात्र कहैब एवं पैब सभक सिनेह केँ ॥
 ई अछि कुटी आरोग्यप्रद रचलनि लखन निज पाणि सँ ।
 हिनकर प्रशंसा थोड़ होयत करब कतबो वाणि सँ ॥
 तँ आब सहषं बिताउ सिय ! वनबास अवधिक काल केँ ।
 देखू मनोहर दृश्य अद्भुत सघन विपिन विशाल केँ" ॥
 स्वामीक सुखप्रद वचन सँ सन्तुष्ट बैदेही छली ।
 नहिं विश्व मे लगबथि जनकजा राम सँ किनको बली ॥
 सभ काज शचिपूर्वक समय पर करथि अति आनन्द सँ ।
 सुनथि कथा भक्तक चरित्रक सुभग रघुकुल-चंद सँ ॥
 नित लोढ़ि लाबथि सुमन सिय सुरभित कुसुम केँ वाग सँ ।
 ऋषि-नारि-संग शुभ हार गाथिथि गाबि कऽ अनुराग सँ ॥
 फल मधुर लाबथि तोढ़ि रघुवर विविध अनुपम स्वाद केँ ।
 तुलसीक पावन पत्र-युत पाबथि प्रभुक प्रसाद केँ ॥

बैसथि जखन सीता उठावथि प्रश्न मानव-धर्म के ।
श्री राम उत्तर देथि सभ के खोलि सृष्टिक मर्म के ॥

लक्षण सुनावथि ईश-भक्तिक सविधि कथा-पुराण के ।
साध्वी सतीक चरित्र सुनबथि दऽ अनेक प्रमाण के ॥

श्री जानकी के जखन जे सन्देह उपजनि हृदय मे ।
कऽ देथि दूर दयालु रघुवर तुरत किछुए समय मे ॥

बूझल छलनि यद्यपि सिया के नियम नारी-धर्म के ।
जानल छलनि विस्तारपूर्वक विधि सकल सत्कर्म के ॥

तद्यपि सुनऽ चाहै छली धर्मज्ञ कृपानिधान सँ ।
चाहै छली लेमऽ सुसम्मति स्वपति श्री भगवान सँ ॥

सन्तुष्ट छथि सीतेश सीता केर सभ व्यवहार सँ ।
बाजल करथि सभखन वचन रघुवीर हृदयोद्गार सँ ॥

“हमरा जखन आहार उत्तम-सुलभ अछि फल मूल के ।
पौलहुँ सिया-सन शीलवन्ती नारि मन अनुकूल के ॥

लछुमन-सदृश हम बन्धु पौलहुँ रहथि सदिखन संग मे ।
बीतेत अछि अवधिक समय ऋषि-मुनि-सुजन-सत्संग मे ॥

अछि नहि किछुक अभाव हमरा जखन कोनो समय मे ।
तौ हैत की ? अनुभव विपिन-दुखकेर किछुओ हृदय मे ॥

एही प्रकारेँ समय बितवति रहथि अति आनन्द सँ ।
छथि राम हर्षित सीय सँ सीता मुदित प्रियकन्त सँ ॥

श्री राम घूमल करथि सबदिशि विपिन मे सदिखन मुदा ।
मुनिगणक जप-तप-यज्ञ-रक्षा मे रहथि लागल सदा ॥

सीता एम्हर मृग-संग खेलथि विहग सँ बतियाथि ओ ।
मुनि-नारि-वृन्दक संगकऽ जल-हेतु सर पर जाथि ओ ॥

नहि कष्ट किछुओ होनि प्रभु के लखन ताहि प्रयास मे ।
सदिखन रहथि सचेत भऽ रखवारकेर लिवास मे ॥

बूझै छला लछुमन स्वयं के श्रेष्ठ रामक दास मे ।
रक्षाक सभटा भार हुनके पर छलनि वनवास मे ॥

ओ राति-दिन धनु-वाण लऽ पहरा करैत रहै छला ।
वनवास भरि सुतलाह नहि जानल छलनि जागक कला ॥
बीतल अनेको दिवस-मास सचेत भेल रहै छला ।
निशिदिन परस्पर विविध वार्त्तालाप मे वितब छला ॥

□

सूर्पणखा सँ भेंट

आयल कतहुँ सँ एक दिन अति खल शूनखा निश्चरा ।
रावण प्रतापी केँ बहिन ओ छल अधिक कामतुरा ॥
रामक मनोहर कान्तिमय मुख देखि मोहित भेल ओ ।
प्रभु सँ करैल बात प्रेमक बेसि लग मे गेल ओ ॥
कामक वशी भऽ गेल छल ओ देल तजि निज लाज केँ ।
लागल करय मोहित वचन सँ अवधपति महाराज केँ ॥
ठीके कहब छै बस्तु किछु सूझैक नहि जन्मान्ध केँ ।
उन्मत्त जे मद सँ रहय बूझै ने से प्रतिबन्ध केँ ॥
लोभी धनक जे छथि लखथि नहि दोष किछु दुष्कर्म मे ।
कामातुरा केँ बोध नहि की ? हैत कुफल कुकर्म मे ॥
ओ राम केँ पूछल 'अहाँ के छी ? अपन परिचय दिअऽ ।
चाही अहाँ तौ पूर्ण परिचय अखन हमरो लय लिअऽ ॥
ई गोरि-सन महिला तथा ओ गोर-सन नर के थिका ?
वन मे अहाँ एलहुँ कियै लऽ संग मे ई बालिका'??
रघुवीर परिचय अपन सभटा आदि सँ देलनि बता ।
पूछल निशाचरि सँ 'बता दे तो अपन पूरा पता ॥
बेटी ककर ? की नाम तोहर ? ककर तौ पत्नी थिके ?
अयले एतय एकसरि लगै अछि हेतु किछु तोहर निके' ॥
बाजलि महा अभिमान सँ 'हम लंकपतिक बहीन छी ।
बितपनि-पढ़लि-सुन्दरि कलासम्पूर्ण मे सुप्रवीण छी ॥
अपना सनक हमरा पुरुष नहि भऽ सकल तैं दुखित छी ।
बूझी ओना तैं सब प्रकारे पूर्णरूपे सुखित छी ॥

भैया कृपा सँ किछु कमी नहि तँ बनलि सुकुमारि छी ।
लंका नगर भरिमे अहा ! हमहीं परम बुधियारि छी ॥

सब भाइ-बहिनक बीच वेशी वाप केर दुलारि छी ।
माताक तौ हम प्राण सँ बढि कऽ परम पियारि छी ॥

अछि नाम सूर्यपणखा हमर नख सूप-समान रखैत छी ।

जे क्यो भिड़ै छथि उदर तिनकर चीढ़ि तखने दंत छी ॥

अपना मनक अनुकूल क्यो नहि पुरुष भेटल अछि कतौ ।

नहि जैक चाही जतय अना गरज सँ गेलहुँ ततौ ॥

सुन्दर पुरुष केँ प्राप्ति लय घुलहुँ बहुत हम सृष्टि मे ।

नहि अेल तोरा सन मनोहर पुरुष हमरा दृष्टि मे ॥

हम तौ अनूपम नारि छी अपना सदृश बश हमहि छी ।

तौ राम ! हमरा योग्य पति पत्नी तोरा लय हमहि छी ॥

शोकाकुला अवला सिया केँ संग तौ झट छोड़ि दे ।

हमरा सँगे दाम्पत्य केँ सम्बन्ध मन सँ जोड़ि ले ॥

दण्डक विपिन मे संग मिलि विचरण करब स्वच्छन्द सँ ।

सुखमय सुजीवन सतत काटब हम दुनू आनन्द सँ ॥

हमरा सदृश गुण-बल अधिकतम अन्य जनि रखीह के ?

हमरा जकाँ बहुरूप छन-छन मे बना पोतीह के ?

हँसला ठहाका मारि रघुवर सूनि अटपट बचन के ।

उत्तर तुरत देलनि उचित श्री राम ओकरा कथन के ॥

“हे भोग-भोगिनि ! हम विवाहित छी हमर छथि नारि ई ।

तोरा कोना हम संग राखब जखन छथिये प्यारि ई ॥

हम प्रेम-बन्धन मे परस्पर सविधि बान्हल गेल छी ।

हम एक-दोसर केँ चरित सँ मुग्ध-मोहित भेल छी ॥

हम छी मनुज ई मानवी समता दुनूक विचार मे ।

नहि दोष पौलहुँ आइ धरि सीताक शिष्टाचार मे ॥

हम रवि-कुलक सन्तान छी ओ शशि-कुलक कन्या थिकी ।

सुख-दुख सहैछी संगमिलि हम, हमर ई प्रिय जानकी ॥

हम एक पत्नीव्रत निबाहक कैल अछि प्रण बूझि ले ।
ओ प्रथम कोटिक नारि मे स्वामीव्रत छथि जानि ले ॥

छथि छोट हमरे भाइ लछुमन जे प्रमुख विद्वान मे ।
बल-बुद्धि सँ सम्पन्न सुन्दर प्रथित सब बलवान मे ॥

हुनकेँ निकट जाकय मनोरथ अपन सभटा बाज तों ।
कामातुरा भऽ गेल छेँ नहि आव कर किछु लाज तों ॥

रामक कथन पर ओ पहुँचिए गेल लखन-समीप मे ।
बाजलि 'अहीं लछुमन थिकहुँ बड़वीर सातो द्वीप मे ॥

हमहीं अहाँ सन पुरुष केँ अनुरूप नारि लगैत छी ।
सौन्दर्य मे हमहूँ अहाँ सँ थोड़ किछु ने पड़ैत छी ॥

तैं शीघ्र अंगीकार कऽ अपने हमर स्वामी बनू ।
सिन्दूर शिर मे दऽ अखन हमरा अपन पत्नी गुनू ॥

वन मे करब विहार दूनु स्वरुचि एवं प्रेम सँ ।
सानन्द बीतत समय सदखन करब केलि स्वनेम सँ ॥

रोकत कियो नहि किछु करब खर-दूषणक अइ राज मे ।
सहयोग सभ क्यो देत नित अनुचित-उचित सभ काज मे ॥

निर्लज्ज अछि ई बूझि पड़लनि बातचीतक ढंग सँ ।
नखशूप-सन ओ नारि केँ कहलनि लखन किछु व्यंग सँ ॥

'हे कामिनी ! हम दास छी रामक अधीन रहैत छी ।
सब काज आज्ञा पाबि हुनकर हम सदैव करैत छी ॥

हमरा बनीने पति कहेमे सेविका सीताक तों ।
से सहन करमे कह कदापि कुमारि छेँ लंकाक तों ॥

तैं बात हमरो मान कहुना राम केँ स्वामी बना ।
तोरा-सदृश सीता कतय ? तोँ सुन्दरी काली जेना ॥

ई नारि छनि दूवरि वयस कम रंग गोर विशेष छै ।
डोका-सनक छै आँखि बड़का लाम-कारी केश छै ॥

तोँ मोट-गाँठक नारि तोहर हाथ-पैर विशाल छी ।
दूनु नयन रवि-किरण-सन दाँतो अहा विकराल छी ॥

तोरा-सदृश स्वच्छन्दचारिणि नारि के? संसार मे।
तुलना करत के नारि? तोरा चालि-चलन-विचार मे।

बहुरूप अद्भुत स्वमन सँ सहजहि अहा! बनबैत छे।
श्री राम के स्वामी बना जाँ नीक तो चाहैत छे” ॥

बूझल कनेको नहि शुपनखा ओहि मृदु-उपहास के।
पहुँचैत रामक निकट लागल ओ देखाबय त्रास के” ॥

“सुन राम! हमरा बात के” बाजलि निशाचरि कोध सँ।
“मानैत नहि छे तो कियै? अति प्रेममय अनुरोध के” ॥

के? विश्व मे बुधियारि वेशी हम सुनारि सुबोध सँ।
सब भाँति योग्या छी जखन सीता कुनारि अबोध सँ ॥
कहु तखन हमरा कथन पर किछु नहि विचार करैत छे।
हमरा विनय पर तो कियै? नहि ध्यान मन सँ दंत छे” ॥

तो एहि दूवरि छोट निर्बल लाजवन्ती नारि सँ।
प्रेमक अखन कर त्याग कर अनुराग हम बुधियारि सँ ॥

नहि तौ अखनिये देखले हमरा निशाचरि-शक्ति के।
लंकापतिक लग बान्हि कऽ लऽ जेब तीनू व्यक्ति के” ॥

नहि ज्ञात छी हमरा बलक तँ तो एना अगढ़ाइ छे।
हँ देखले अखने कोना नहि नारि छोड़ि पड़ाइ छे” ॥

ई बाजि झपटल बाज झपटै छैक पक्षी पर जेना।
भेलै जेना रवि-किरण के पकड़त कोनो मच्छर तेना ॥

रोकल सियापति निश्चरी के कात कलनि सीय सँ।
ओ दूर जा कऽ गरजि बाजलि जानकी के पीय सँ।

“तो सभ बूझै छे नारि हम असहाय बनि घूमैत छी।
पति सँ झगड़ि कऽ भागि वन-वन व्यर्थ हम बिचरैत छी ॥

तो सभ तमाशा देख हम की? आब अखन करैत छी।
अपना स्वजन सभ के एतय हम देखिले बजबैत छी” ॥

ई देखि रघुवर चालि-बात विचार केलनि हृदय मे।
“अज्ञानि अछि किछु दण्ड दऽ दी मात्र एहना समय मे” ॥

प्रभु देल आज्ञा लखन के "सत्त्वर कुरुपा कऽ दिअऽ ।

वत्तवि केलक बहुत अनुचित दण्ड समुचित दऽ दिअऽ ।

जौ दण्ड किछु नहि देव तौ ई परिक जेत जनैत छी ।

तैं अंग के दी भंग कऽ दश दण्ड उचित बुझैत छी ॥

अन्याय-अनुचित कार्य के लखि बैसि जाइ अधर्म छी ।

न्यायार्थ शत्रु-स्वबन्धु की ? दण्डित करी सत्कर्म छी ॥

केवल स्वहित दिशि ध्यान दऽ आनक अहित के जौ करी ।

तौ श्रेष्ठ नर के कहब छनि ध्रुव विपद-वारिधि मे पढ़ी" ॥

अविलम्ब लछुमन उचित आज्ञा पाबि कऽ असुरारि सँ ।

काटल दुनूटा कान एवं नाक निज तरुआरि सँ ॥

ई जे प्रसंगक केल चर्चा तकर एतवै अर्थ छै ।

कामातुराक कुभावना सँ ह्वै छै केहन अनर्थ छै ॥

खर-दूषणक समीप तखने गेल विलाप करैत ओ ।

जा कऽ अपन ई दुर्दशा देखबैत कहल कनैत ओ ॥

"हे बन्धु ! तोरा-वीरता-बल के बहुत धिक्कार छी ।

बहिनक एहन दुर्गति करी क्यो की ? तोहर विचार छी ॥

जौ प्राण नहि लेमे अखन तो कान-काटनहार के ।

जौ छोड़ि देमे ओहि मानव नाक-नोचनहार के ॥

तौ आइ सँ बूझब हमहुँ असहाय-बन्धु-विहीन छी ।

क्यो अछि सहायक नहि स्वजन सभ भाँति सँ हम दीन छी" ॥

□

खर-दूषण-वध

दुखपूर्ण दुर्गति देखि एवं सूनि दुखद विलाप के ।

दम्भी असुर लागल बखानय तखन अपन प्रताप के ॥

"हे प्रिय बहिन ! हम आब नहि बैसल रहब छन शान्ति सँ ।

दुर्गति करब अहिना तकर हम पकड़ि कोनो भाँति सँ ॥

कछमछ करै अछि मोन लऽली प्राण अखने वाण सँ ।

जाकय ओकर गरदनि तुरत दी काटि अपन कृपाण सँ ॥

तो शान्ति रह हम आइ अखने मारि ओकरा दैत छी ।
ऋषि-मुनि-मनुज हत्या करेमे वीर हम कहबैत छी ॥

देलक बहिन के धैर्य कर मे अस्त्र लेलक लोह के ।

ऊठल गरजि कऽ खर तखन तनलक भयानक मोह के ॥

कुरहरि-कोदारि-गुलेल-खंती मोट वांसक लट्ट लऽ ।

चलि पड़ल पकड़ै लेल ओ चौदह हजारक भट्ट लऽ ॥

अछि राम नारी-संग कतय ? बतबैक छै तै लेल ओ ।

श्रुति-नाक-कट्टो शूणख चलि पड़ल आगू भेल ओ ।

अशकुन अनेको देखि तैयो दैत छल क्यो ध्यान की ?

ककरो विनाशक काल किछु रहलैक अछि सद्ज्ञान की ?

बाजल कियो "जिविते पकड़िलो अखन दूनु भाइ के ।

श्रुति-नाक हमहूँ काटि कऽ दऽ दी शूणखा दाइ के ॥

देखल सियापति निश्चरक सेना पहुँचिये गेल जौ ।

आयल इकत्रित भऽ स्वयं मरबाक छै अइ लेल तौ ॥

कहलनि लखन सँ "दंड एकरा दँक अछि नीके जकाँ ।

हमरा बुझै अछि दीन अति निर्वल-भयातुर नर-जकाँ ॥

तँ जाउ सीता के नुका राखू कोनो गिरि-खोह मे ।

हम असुर के मारैत छी जे पड़ल अछि मद-मोह मे ॥

॥ रामक अनूप सुरूप लखि भऽ गेल मोहित सब अहा !

खर कहल दूषण सँ "अहा ! ई अछि केहन सुन्दर महा ॥

सुर-असुर-नागरु मनुज देखल आइधरि हम सृष्टि मे ।

नहि किन्तु एहन अनूप रूपक जीव आयल दृष्टि मे ॥

यद्यपि कुरूपा बहिन के कैलक एकर बड़ दोष छै ।

ईहो जने छी अधिक एकरा पर बहिन के रोष छै ॥

तद्यपि हमर मन ह्वै नहि बध करी एहन कुमार के ।

उपजँत अछि मन मे दया ई य.ग्य नहि संहार के ॥

तँ एक जाकय दूत ई सन्देश हमर सुना दही ।

'नारी अपन दय भागि दूनु जाथि' जाकऽ ई कही ॥

कहलक तुरत जाकऽ कियो श्री रामके भय-भीति मे ।
 रघुवीर देलनि वीर-सन उत्तर तुरत रण-नीति मे ॥
 “क्षत्री थिकहुँ हम अखन तोरा सभक-सनके ताकि कऽ ।
 मारैत हम घूमैत छी वन-वन अहर्निश डाकि कऽ ॥
 रण मे उतरि देखबैत छेँ की ? आब तो ममता-मया ।
 कायरपना कहबैछ जे निज शत्रु पर कैलक दया ॥
 भय छीक तो कामान्ध बहिनक बात पर पड़ले कियै ?
 बल छीक नहि तो युद्ध करवा लेल तो अयले कियै ?
 तो सभ उपद्रव कऽ रहल छेँ ऋषि-मुनिक जप-यज्ञ मे ।
 जे करथि जन-हित यज्ञ जिनकर नाम छनि सर्वज्ञ मे ॥
 कर युद्ध अथवा नहि, मरण छी सभक कोनो भाँति सँ ।
 करबाक अछि संसार के द्रुति रहित निश्चर जाति सँ” ॥
 निर्भीक रामक कथन सुनि अबिलम्ब घूमल दूत ओ ।
 खर के सुनीलक आबि भय सँ छल कपैत अकूत ओ ॥
 खर-दूषणक उर-धधकि ऊठल अति प्रखर क्रोधाग्नि मे ।
 रघुवीर के बध-हेतु झट धनु-वाण लऽ निज पाणि मे ॥
 दौड़ल गरजिकय वेग सँ जुझल भयानक युद्ध मे ।
 द्योड़ल सहस्रो वाण सभमिलि राम पर अति क्रुद्ध मे ॥
 ई देखि रघुवर तीन पग पाछू तखन हँटि अड़ि गेला ।
 ततकाल निश्चर-नाश करवा लेल ओ उद्यत भेला ॥
 पल मे सकल निश्चर मरल खर-दूषणक संग खेत मे ।
 होयत निशाचर-नाश बुझना गेल ई सँकेत मे ॥
 निशिचर अकम्पन एक छल खर-दूषणक पछुआर मे ।
 बचि गेल कहुना ओ चतुर रण-नीति-छल-व्यवहार मे ॥
 जाकय सकल घटना दुखद कहलक तुरत लंकेश सँ ।
 सुनितहि दशानन बाजि ऊठल गरजि क्रोधावेश सँ ॥
 “के ? ओ बली अछि भेल हमरा क्षेत्र एवं प्रान्त मे ।
 आयल करै लय ओ उपद्रव छीपि कऽ एकान्त मे ॥

हमरा पराक्रम सँ विदित ओ मूर्ख नहि अछि भेल को ?
खर-दूषणक आघात सँ ओ अखनि धरि बचि गेल की ?

के छी बता दे शीघ्र अखने प्राण ओकर गेल छै ।
ओ अछि अभागल दुर्दशा तौँ आब निश्चय भेल छै ॥

आश्चर्य हमरा ह्वैछ ओ बचि गेल कोन प्रकार सँ ।
खर-दूषणक ललकार एवं कठिन प्रबल प्रहार सँ ॥

बाजल अकम्पन जोड़िकर लंकाक प्रभु-सरकार सँ ।

‘सूनु निशाचर-पति ! कहै छी हम अखन विस्तार सँ ॥

ओ अछि अयोध्यापतिक प्रिय सुत राम सुन्दर नाम छै ।

सानुज रहै अछि विपिन मे सँग म अनूपम वाम छै ॥

बड़ पैघ तीरन्दाज अछि कहबैत ओ संसार मे ।

लगबैछ नहि ककरो स्वयं सँ ओ अधिक बुधियार मे ॥

तैं हेतु एक उपाय अछि मानी उचित तौँ से करू ।

कोनो प्रकारेँ ओहि सुन्दर नारि केँ छल सँ हरू ॥

विश्वास अछि मरिजेत ओ वनिता-बिना सन्ताप सँ ।

भऽ जेत शत्रुक नाश दशमुख ! तुरत अपने-आप सँ ॥

ई उचित सम्मति बूझि पड़लै तैं हृदय सँ मानि कऽ ।

अविलम्ब नारी केँ हरब चलि पड़ल मन मे ठानि कऽ ॥

□

मारीच-बध

मारीच नामक एक निश्चर छल अधिक बुधियार जे ।

तकरे निकट पहुँचल त्वरित दशग्रीव केँ छल यार से ॥

घटना सकल कहि देल रावण निज सखा मारीच केँ ।

‘अनबाक अछि रामक प्रिया केँ पकड़ि कहुना खींच केँ ॥

तौँ बन सहायक हमर दऽ किछु संग सम्प्रति काज मे ।

तौँही देखै मे आबि रहले चतुर हमरा राज मे ।

छल-कपट केने होउ अथवा अन्य आओर उपाय सँ ।

सीता-हरण करबाक अछि हम चलब तोरे राय सँ ॥

मारीच उत्तर देल 'दशमुख ! ध्यान सँ सोचू कनी ।
विद्वान-ज्ञानी छी अहाँ हम जे कहैछी से सुनी ॥

छनि राम जिनकर नाम जग मे पैघ छथि बलवान से ।
तिनका संगे जे शत्रुता करताह छथि अज्ञान से ॥

ओ मूर्ख अछि देलक अहाँ केँ एहन नीच विचार जे ।
श्री राम-संग छल करै ले कहलक परम गँवार से ॥

रामक संगे जौं रारि ठानब हैत क्षति लंकेश केँ ।
कहि दैत छी अखनहि अहाँ केँ त्यागि दी आवेश केँ ॥
धूमू अहाँ जा कऽ रहू निज नारि संग स्वच्छन्द सँ ।
पर नारि केँ पाछू पड़ू नहि, छी भने आनन्द सँ ॥

मारीच केँ ई तर्क-संगत बात हितकर सुनि कऽ ।
धूमल दशानन लंकदिशि मन मारि माथा धूनि कऽ ॥

किछु काल केँ उपरांत पहुँचलि शूर्पनख दरबार मे ।
निज दुदंशा देखबैत बाजलि कानि कऽ विस्तार मे ॥

"हम तौं थिकहुँ तोरे बहिन दुर्गति तखन हो हमर ई ।
कहतौक जग केँ लोक की ? अपमान बढ़का ककर ई ॥

दशग्रीव शूट पूछल 'बता ई दुदंशा केलकौक के ?
ई कान एवं नाक तोहर काटि हा ! खेलकौक के' ?

बाजलि शूर्पनखा "भाइ ! दूटा मनुज बन मे अँल जे ।
सँग मे परम सुन्दरि त्रिया छै तँ अधिक अगड़ँल से ॥

चाहै छलहुँ हम ओहि अनुपम नारि केँ परतारि कऽ ।
लऽ आनि तोरा दऽ दिऔ गेलहुँ ततऽ विचारि कऽ ॥

तोरा गुणक वर्णन सुना कऽ छलहुँ बैसलि आश मे ।
की कान दूनु नाक काटल गेल ताहि प्रयास मे ॥

हम की ? अधिक कहिऔ स्वयं तोँ लंकपति सज्जन छै ।
प्रतिशोध लेबक यत्नकर सब सँ अधिक बलवान छै ॥

रावण बहिन केँ बात पर लागल बिचारय हृदय मे ।
किछु करब नहि प्रतिकार तौँ क्षति हैत आगू समय मे ॥

तैं जाहि रूपेँ भऽ सकत सीता-हरण निश्चय करी ।
युद्ध करत ताँ राम केँ मारी स्वयं अथवा मरी ॥

ई सोचि पुनि मारीच-लग चलि पड़ल बड़का डेण सैं ।
झटकैत आ दौड़ैत पहुँचल मद्य केँ आवेग सैं ॥

हकमैत बाजल "सुन हमर आदेश केँ मारीच तोँ ।
बुधियार छेँ बेबूझ नहि बन एहि वनचर-बीच तोँ ॥

हम जे कहैत छिऔक से कर बात निश्चय मानि ले ।
नहि तोँ दशा दुखमय करा देवौक से तोँ जानि ले ॥

बतबै छिऔक उपाय से कर अखन जाकय काज तोँ ।
सोनाक मृग बनि दौड़ सिय-ला कर ने किछुओ लाज तोँ ॥

लखि स्वर्ण-मृग मोहित सिया हेती अवश्य बुझैत छी ।
पति केँ पठौती पकड़ि कऽ अनबाक लेल जनैत छी ॥

तोँ तखन जैहें भागि वन मे दूर बहु अति वेग सैं ।
पाछू तोहर करतौक रामो दौड़ि बड़का डेग सैं ॥

तोँ उच्चस्वर सँ पारिहें चित्कार "लछूमन छी जतऽ ।
दौड़ तुरत दौड़ अहाँ रक्षा करू हमरा एतऽ" ॥

ई वाक्य सुनितहि जानकी निश्चय पठौती लखन केँ ।
एकसरि सिया रहती कुटी मे बिनु कोनोटा स्वजन केँ ॥

झट पाबि अवसर हरण सीता केँ करब छल-नीति सैं ।
रानी बना राखब भवन मे स्ववश कय अति प्रीति सैं ॥

तोँ शीघ्र तोँ ई काज कर पठबै छियौ हम सोचि कऽ ।
नहि तोँ अखन हम मारि देबी कंठ तोहर दबोचि कऽ" ॥

मारीच सोचल "छैक लीखल विविध ग्रन्थ-पुराण मे ।
विद्वान-वर्गक कहल छनि सूनल बहुत स्थान मे ॥

कवि, भाँट, वेद्य, समर्थ स्वामी होथि अति धनवान जे ।
आ पाककर्ता, भेद-ज्ञाता, शस्त्रधर, अज्ञान जे ॥

अइ व्यक्ति नौ केँ संग वैर-विरोध कथमपि नहि करी ।
ई जे कहथि झट मानिली, नहि व्यर्थ संकट मे पड़ी" ॥

दशमुखक शासन बड़ भयानक छैक से बूझल छलै ।
मन मानिगेलै संह करबा लेल मन उद्यत भेलै ॥

चलि पड़ल तँ मारीच करबा लेल छल-युत काज ओ ।
'मरबाक अछि हमरा अखन' कैलक तखन अन्दाज ओ ॥

नहि कहल मानब एकर मारल जैब अखन जनैत छी ।
मरबैक अछि तौँ राम मारथि नीक सैह बुझैत छी ॥

नृप हठ, त्रिया-हठ, बालहठ तौँ अडिग सब कहबैत छै ।
अइ तीन हठ केँ नहि जगत केँ जीव टारि सकैत छै ॥

ई सोचि स्वर्णक हरिण बनि मारीच हरि-सुमरैत ओ ।
सीताक आश्रम-निकट पहुँचल झट कुदैत-फनैत ओ ।

सीताक पड़लनि दृष्टि मृग पर भऽ गेली विस्मित महा ।
वन मे अखनि धरि एहन मृग नहि दृष्टि मे अयलनि अहा !

मृग-प्राप्ति लय इच्छुक सिया आतुर अधिक भेलीह ओ ।
श्री राम-लछुमन केँ पुकारय जोड़ सँ लगलीह ओ ॥

"हे आर्यवर ! सुन्दर मृगा के पकड़ि कऽ आनू एतऽ ।
बहलैत मन सब केँ एहन मृग पैब हमरा सभ कतऽ ?

जौँ पकड़ि एकरा नहि सकी तौँ कोन दिशि सँ अँल ई ।
कहुना पता लगाउ बचिकऽ कोन दिशि चलि गेल ई ॥

जाकय ततय सँ लाउ पोसब पुत्र-सम प्रिय मानि कऽ ।
भागय ने देब कदापि कखनो सतत राखब बान्हि कऽ" ॥

लछुमन बुझौलनि बहुत तरहें "ई कपट-मृग असुर छी ।
सोनाक मृग बनि कय ठगइ लय अँल क्यो ई चतुर छी ॥

होनी मुदा जे छैक से तौँ अवश भऽ कऽ रहै छ ।
सभ केँ विवश भऽ काज तहिना तखन करक पड़ैत छै ॥

कहलनि लखन केँ राम "निश्चय थोक ई मृग असुर केँ ।
हम अखन तुरत खिहारि कऽ मारैत छी अइ चतुर केँ ॥

रक्षा सिया केँ करू हम अइ हरिण केँ मारैत छी ।
आग्रह सिया केँ मानिलीअनु उचित सैह बुझैत छी" ॥

चलला मृगा के पाछु पकड़ लेल प्रभु धनु-वाण लऽ ।

भागल कपट-मृग तेज सँ अति दूर वन मे प्राण लऽ ॥

पहुँचल जखन अति दूर ओ मृग संग लऽ श्री राम के ।

लागल पुकारय राम-स्वर मे मधुर लछुमन नाम के ॥

“हे लखन ! दौड़ू शीघ्र दौड़ू देर किछुओ नहि करू ।

मारू पकड़ि झट हम दुनू मिलि कऽ अखन एकरा घरू ” ॥

व्याकुल व्यथा-युत आर्त्त स्वर सुनितहि सिया आकुल भेली ।

“झट जाउ लक्ष्मण” बाजि कऽ चिन्तित अधिक ओ भऽ गेली ॥

“हा ! आर्त्त सँ बजबैत छथि की विपत्ति पड़लनि नाथ के ” ।

खसलनि नयन सँ नोर आ लगलीह पीटय माथ के ॥

सीताक स्थिति देखि दुविधा मे लखन हा ! पड़ि गेला ।

आदेश रामक सोचि कऽ कर्तव्य के शोचै छला ॥

सीता लखन दिशि तानि भौं के कहल “की ? अछि चित्त मे ।

छी ठाढ़ आब कियै ? जखन छाँथ पड़ल प्रभु आपात्ति मे ॥

प्रत्यक्ष स्वर स्वामीक छनि स्पष्ट हम सुनैत छी ।

सत्त्वर अपन धनु-वाण लऽ दौड़ू पुकारि कहैत छी ॥

चिन्ता अहाँ के ह्वैछ नहि अग्रज अपन प्रिय भाइ ले ।

चुप भेल ठाढ़ कियैक छी ? हम कहि रहल छी जाइ ले ॥

अनुमान हमरा ह्वैछ मन मे पाप किछु भऽ गेल की ?

अधिकार हमरा पर करब, नहि जाइ छी तै लेल की ?

श्री राम संकट मे पड़थि प्रायः अहाँ चाहैत छी ।

लोभी हमर भऽ गेल छी की ? किन्तु हम काह दैत छी ॥

ओ सेव्य छथि सेवा करइ लय हुनक एलहुँ हम-अहाँ ।

रक्षा हमर की ? जौ पड़ल छथि नाथ संकट मे महा ॥

हा ! प्राणपति के प्राण पर पड़तनि विपत्ति कदा कहूँ ।

तौ कोन तरहें रहब रक्षित हम तथा लक्ष्मण ! अहूँ ॥

खसवैत दृग सँ नोर कहलनि सिय जखन सौमित्र के ।

बाजऽ तखन पड़लनि लखन के सुनि बोल विचित्र के ॥

‘हे देवि ! सोचि अहीँ कहू भव-बीच राम-समान के ?

नर-अमुर-सुर-गन्धर्व तीनू लोक मे बलवान के ?

छथि राम रण मे कुशल, नहि बलहीन नहि असमर्थ ओ ।

सीते ! करू विश्वास अहँ सभभाँति सर्व-समर्थ ओ ॥

हुँनका मधुर स्वर-सन अहाँ तौँ व्यर्थ मिलान करैत छी ।

अमुरक कपट-युत बोल सीते ! ई थिकैक जनैत छी ॥

खर-दूषणक बध कैल एकसर राम जन-स्थान मे ।

चौदह हजारक सैन्य केँ मारल रणक मैदान मे ॥

हम जे शुपनखा केँ कटलियै कान-नाक कृपाण सँ ।

प्रतिशोध लेमक हेतु ओ पड़ि गेल जानरु प्राण सँ ॥

एहना परिस्थिति मे अहाँ केँ छोड़ि हम जायब कोना ?

रक्षाक देने भार छथि आज्ञा प्रभुक टारब कोना ’’?

लखनक बचन सुनितहि सिया देलनि नयन सँ जल बहा ।

आ क्रुद्ध-स्वर सँ कहल “छी अहँ निर्दयी लक्ष्मण ! महा ॥

किछु अछि दया नहि क्रूर अतिशय लखन ! अहाँ लगैत छी ।

पड़लनि विपत्ति स्वनाथ पर अहँ बात की बनबैत छी ॥

अधिकार नहि होयत सिया पर व्यर्थ लोभ करैत छी ।

होयत मनोरथ सिद्ध नहि कथमपि हमहुँ कहि दैत छी ” ॥

सीताक सुनि वाणी लखन केँ विवश कलक जाइ लै ।

चलताह जिज्ञासा करक हित लखन अपना भाइ लै ॥

छनि किन्तु चिन्ता जँब हम एकसरि सिया केँ छोड़ि कऽ ।

कहने छला प्रभु रहब चेतल सतत सिया-अगोरि कऽ ॥

तैं की करी की नहि करी किछु तौँ करक अछि सोचिली ।

आज्ञा प्रभुक मानी कि मानी जे कहै छथि मैथिली ॥

माताक आग्रहपूर्ण आज्ञा मानि जौँ नहि जाइ छी ।

तौँ जन्म भरि लय हम बेसाहै की तखन लड़ाइ छी ॥

ई सोचि लछुमन कहल सिय केँ “बेश तखन चलैत छी ।

आशीष दी मा ! हम अखन श्री राम-लग पहुँचैत छी ।

वश एक हमरो बात मानी मा ! विनय करैत छी ।
अइ चिह्न सँ नहि हैब बाहर पारि रेखा दैत छी ॥

पाठक ! सिया पर नहि कदापि लगैब किछुओ लांछना ।

पति-प्रेमिका सीताक पति-प्रति अमित प्रेमक भावना ॥

पति पर पड़ल संकट कोनो सुनि होथि पागलि नारि जौं ।

पति लेल किछु बाजथि-करथि पर-पुरुष सँतकरारि जौं ॥

तौं दोष हुँनका पर मढ़ब कथमपि उचित नहि थीक ई ।

प्राणेश-रक्षा लेल बाजथि नारि क्यो नहि नीक ई ?

बुझबाक चाही राम केँ लीला करक छनि नर-जकाँ ।

सीताक सभटा रीति तहिना नारि साधारण-जकाँ ॥

रावण-असुर केँ भान नहि किछु होइ छथि भगवान ई ।

सीता थिकी लक्ष्मीक शुचि अवतार नहि अनुमान ई ॥

भऽ जाइ छै मति-भ्रष्ट सभ केँ अवश संकट-काल मे ।

देखबैक छनि प्रभु केँ कोना फँसि जाथि नर भ्रम-जाल मे ॥

पुनि आब आउ प्रसंग दिशि सीता बहुत चिन्तित छली ।

एकसरि कुटी पर बैसि कऽ लगलीह सोचय मैथिली ॥

□

सीता-रावण संवाद

ताही समय पहुँचल दशानन सुन्न कुटिया देखि कऽ ।

ओ छल बनौने वेष साधुक एक सुन्दर टेबि कऽ ॥

कर मे कमण्डल रँगल तन पर वसन गेरुआ रंग सँ ।

भिक्षाक कैलक याचना सविनय निराला ढंग सँ ॥

लागल प्रशंसा-युत वचन बाजऽ निशाचर-पति ततऽ ।

चौकल रहय देखैत चहुँदिशि ने कियो देखय एतऽ ॥

बाजल सिया सँ 'शोभने ! अत्यन्त सुन्दरि छी अहाँ ।

लक्ष्मी थिकहुँ वा कामदेवक वल्लभी रति की ? अहाँ ॥

सब अंग अछि उत्तम अहाँ केँ हम पसन्द करैत छी ।

अयलहुँ कियै वन मे अहाँ एकसरि कियैक रहैत छी ?

बहु बाघ-वानर-भालु एवं सिंह एतय रहैत छै ।
दिन-राति सभ त्रिशि ई भयंकर पशु घुमैत-फिरैत छै ॥

एकसरि कियै युवती ! अहाँ बैसलि-झखैत रहैत छी ।
ई वयस सुन्दरि ! व्यर्थ बैसलि विपिन मे बितबैत छी ॥

जिज्ञासु हमरा केँ बुझू परिचय अपन सब दऽ दिअऽ ।
पश्चात् हम के थिकहुँ से अखने अहूँ बुझिए लिअऽ ॥

अति निश्छला श्री जानकी हा ! बात मे भुतिया गेली ।
वर साधु-ब्राह्मण बूझि बैसऽ लेल कहलनि मैथिली ॥

बुझलनि सिया छथि ऋषि कियो तपसी-मुनीश महान ई !
भिक्षा मँगै छथि आबि भिक्षुक वेष मे भगवान ई ॥

तैं कैल अति सत्कार कहलनि मृदुलतम अह्लाद सँ ।
“हे पूज्य मुनिवर ! प्रथम भोजन कऽ लिअऽ चखि स्वाद सँ ॥

छी अतिथि अपने तैं गृहस्थक नारि केँ अछि धर्म ई ।
अपने-सदृश साधुक करी सेवा मनुज केँ कर्म ई ॥

हम के थिकहुँ से कहि रहल छी अखन सब विस्तार सँ ।
आयल कियै छी विपिन मे हम अखन किनक विचार सँ ॥

मिथिलेश केँ कन्या थिकहुँ श्री अवधपतिक पुतोहु छी ।
सीता हमर थिक नाम रामक प्रिय विवाहित बोहु छी ॥

देवर लखन अरु शत्रुहन एवं भरत सत्पात्र जे ।
छथि सासु कौशल्या तथा केकड़-सुमित्रा मात्र से ।

केकड़-वचन केँ मानि चौदह वरष लै वन अँल छी ।
ई डाँड़ि पारल लखन केँ छनि ताहि बीच घेरैल छी ॥

मृगया करक हित गेल छथि स्वामी तथा देवर कतौ ।
सोनाक मृग केँ पकड़ि कऽ अनताह ओ भेटतनि जतौ ॥

मुनिवर ! अपन परिचय दिअऽ अपनेक थिक शुभ नाम की ?
अपनेक तप-स्थल कतय अछि पुण्य पावन धाम की ?

रावण तखन स्पष्ट बाजल सीय सँ अभिमान मे ।
“सीते ! हमहि रावण थिकहुँ छी श्रेष्ठ सभ बलवान मे ।

मानव असुर-सुर सकल प्राणी डरथि हमरा नाम सँ ।

आश्रय हमर छनि प्राप्त सभ केँ तँ रहथि आराम सँ ॥

अछि राजधानी हमर सुन्दर जकर लंका नाम छै ।

सब सुखक साधन छै ततय अनुपम मनोहर धाम छै ॥

बिचरैत छथि सुन्दरि सहस्रों सतत हमरा महल मे ।

आनन्द सँ सुख-भोग भोगथि रहथि हमरा कहल मे ॥

क्रीड़ा अनेकों करथि सभ मिलि विविध पुष्पक वाग मे ।

भऽ जैब मोहित ओ जखन गउती मधुर प्रिय राग मे ॥

आत्मा हमर कहैत अछि सभ सँ महासुन्दरि अहाँ ।

हम पैब सीते ! सुन्दरी बेशी अहाँ सँ प्रिय कहाँ ॥

निश्चय बनायब आब पटरानी अहीं केँ रानि मे ।

हम राज्य-शासन-सूत्र अर्पण करब अहिक सुपाणि मे ॥

लंकेश केँ भार्या कहायब बढ़ा गौरव विश्व मे ।

अधिकारिणी होयब अहीं निश्चय हमर सर्वस्व मे ॥

वामाङ्ग-दिशि बैसब अही अरु शेष रानी दहिन मे ।

लाखो टहलनी करत सेवा रहि अहिक आधीन मे" ॥

□

रावण केँ सीताक फटकार

मुनि-रूप असुरक बोल सुनि कऽ जानकी क्रोधित भेली ।

अपमान-युत दुर्वचन बाजक लेल वेवश भऽ गेली ॥

"पापी-छली निश्चर ! एना वर्ताव कियै करैत छेँ ।

हम राम बलशालीक पत्नी थिकहुँ तोँ ने जनैत छेँ ॥

अनुगामिनी तन-प्राण-मन सँ हम थिकहुँ से मानि ले ।

अर्द्धाङ्गिनी हम छी हुँनक ओ पति हमर छथि जानि ले ॥

रामक प्रिया-सँग एहि तरहें बात तोँ कऽ रहल छेँ ।

तँ बूझि हमरा अछि पढ़ैत विशेष तोँ नहि पढ़ल छेँ ॥

तोँ देखि आयल छेँ स्वयं धनु-यज्ञ-उत्सव-काल मे ।

नहि ठहरि सकला राम-सन बलवान क्यो भूगाल मे ।

के ? ठाढ़ होयत छनहुँ नर-वर राम-संग कतार मे ।
रवि-कुल-वधू के छू सकत से व्यक्ति नहि संसार मे ॥
चेष्टा करै छे व्यर्थ ई तो आगि मे कूदैत छे ।
तो मूर्ख ! हमरा नारि साधारण जकाँ लगबैत छे ॥

हम राम के पत्नी-प्रिया-अर्द्धाङ्गिनी छी जानि ले ।
पति-भक्तिनी अनुगामिनी स्वामीक हमरा मानि ले ॥
महि गन्ध के त्यागथि बरू जल तजथि निज गुण सरसता ।
रवि ज्योति के त्यागथि कदाचित तजथि पावक उष्णता ॥
त्यागथि पवन स्पर्श गुण तजि देथि चपला-चपलता ।
सुन किन्तु पति-पद-कमल-रज कथमपि तजथि नहि पतिव्रता ॥

हमरा लगै अछि मृत्यु तोरा माथ पर मरराइ छौ ।
दुर्दिन निकट छौ अल तैं की मन एना बौआइ छौ ॥
तो आँखि के की सूई सँ पोछक प्रयास करैत छे ।
अति तीक्ष्ण चाकू सँ अपन मृदु जीभ के सटबैत छे ॥

राजा कोना रहमे बनल दुर्नीति मन मे आनि कऽ ।
जग जीत तो सकमे कोना कऽ रारि प्रभु सँ ठानि कऽ ॥

बाजऽ कोना चाहैत छे सुइ-ताग सँ मुँह-सीबि कऽ ।
जीबऽ कोना चाहैत छे दशग्रीव ! माहुर पीबि कऽ ॥

के पार सागर कैल अछि गरदनि मे पाथर बान्हि कऽ ।
के हाथ सँ पकड़त जगत मे सूर्य नभ सँ आनि कऽ ॥

नहि ठाढ़ भऽ सकबे छनों भरि राम-सन्मुख जानि ले ।
हुँनका भयंकर सिंह आ अपना के गीदर मानि ले ॥

ओ छथि महासागर जकाँ तो तुच्छ धारक श्रोत छे ।
ओ वाज पक्षी-तुल्य तऽ तो एक भीरु कपोत छे ॥

गज बूझ हुँनका तो बिलाड़ि-समान आना के लगा ।
आबहुँ समझि कऽ मूढ़ मन सँ भेल भ्रम के दे भगा ॥

जे भिन्नता छै स्वर्ण-लोहा मध्य चानन-कीच मे ।
छी सेह अन्तर बूझि ले श्री राम तोरा बीच में ॥

विख्यात छथि ओ विश्व मे बलवान मध्य बलिष्ठ ओ ।
प्रख्यात उच्च विचारवानक बीच मध्य वरिष्ठ ओ ॥

ई जानि ले नहि तौ ने रहमे जोबि कऽ संसार मे ।
बेशी तोरा समझाउ की कहि आब हम विस्तार मे" ॥

सीताक ई फटकार सुनि कऽ बाजि ऊठल रोष मे ।
भौं टेढ़ कऽ रावण सगर्व कठोरमय उद्घोष मे ॥

"गर्विणि ! कुवेरक हम प्रतापी एक माझिल भाइ छी ।
बलवीर-वैभवशील-विजयी-वर कहल हम जाइ छी ॥

हम जाइ छी ठहरैत छी देखैत छी जेमहर जतऽ ।
पत्ताक हीलब बन्द आ सरिताक धारा थिर ततऽ ॥

लागथि पवन झट बह्य भय सँ मानि मम आदेश के" ।
रवि होथि शीतल तप्त शशि निर्देश पर लंकेश के" ॥

सुन्दर पुरी लंका हमर अछि स्वर्ग के" लजबैत जे ।
बड़ पैघ उच्च विशालतम स्वर्णक महल चमकैत से ॥

नाना प्रकारक फूल-फल सँ पूर्ण विटप सुवाग मे ।
विकसित सुगन्धित पुष्प-वर मकरन्द सकल तराग मे ॥

जखने पढ़त लंकाक ऊपर दृष्टि मोहित जैब भऽ
लंकाक उपवन मे करी विचरण एहन मन जैत भऽ ॥

गज-अश्वरथ सँ राजपथ शोभित सदैव रहैत छै ।
गायक-गुणीगण मधुर स्वर युत सुखद गीत गबैत छै ॥

हम की करू वर्णन दशो मुख थाकि जायत हमर ई ।
सारांश मे कहि रहल छी सबभाँति सुन्दर नगर ई ॥

हम भीख लेमक हेतु अयलहु" अछि स्वयं लंकेश छी ।
प्रेमक दिअऽ भिक्षा अहाँ जौ" धर्म-भीरु विशेष छी ॥

बुद्धिआरि भऽ स्वीकार हमरा नहि कियेक करैत छी ।
पाछू अहाँ पछतैब निश्चय अखन हम कहि दैत छी" ।

एवम्प्रकारे" अपन बल-पौरुष बतौलक धाख ओ ।
कैलक अनेको" यत्न मति-फेरक जनक-तनयाक ओ ॥

नहि कऽ सकल अनुकूल सियकेँ लंकपति कथमपि मुदा
बाजल तखन ओ हारि कऽ किछु सानि बोली मे सुधा ॥

‘भद्रे ! दिअऽ भिक्षा लखन-रेखाक बाहर ओबि कऽ ।
हम लेब बान्हल भीख नहि कथमपि अहाँ सँ जानि कऽ ॥

तौं आब जे देबाक हो से दऽ दिअऽ निज पाणि सँ ।
आदर्श महिला छी अहाँ से जाय कहब स्वराणि सँ ॥
हम मुग्ध छी भऽ गेल सुन्दरि ! अहँक शुद्ध विचार सँ ।
हमरा समय भेटैत तौं सिखतहुँ अहँक आचार सँ ।

अपने थिकहुँ पावन परम सिय ! सकल महिला वर्ग मे
के ? भेल अहाँ-समान चौदह भुवन एवं स्वर्ग मे” ॥

लंकापतिक अइ कपट पूर्ण सुवाक्य सँ श्री जानकी ।
बुझलनि अहा ! प्रायः लगैअछि ई महा सज्जन की ?

नहि कैल किछु सन्देह खलपर शुद्ध-हृदया जानकी ।
बिनु भीख दऽ रहि जेब होयत पाप एहि समान की ?
सोचलि हृदय मे जानकी गृहिणीक तौं ई धर्म छी ।
करबाक चाही ध्रुव अतिथि-सत्कार मानव-धर्म छी ॥

घन कोन कार्यक अछि जखन घरि जाथि याचक द्वारि सँ ।
बलवान की ? बलहीन केँ ओ नहि बचौलनि मारि सँ ॥
नहि भेल उत्तम आचरण पुस्तक-पढ़ब सब व्यर्थ छी ।
इन्द्रिय विजय जौं कैल नहि पुरुषार्थ मनुजक अर्थ की ?

भिक्षुक कियो जौं आबि जाय अवश्य किछुओ भीख दी ।
ई कार्य सभ नर केँ करे केँ चाहियनि से सोख दी” ॥



सीता-हरण

होनी कोना कऽ रुकि सकत हैबाक जे छै हैत से ।
सीता-हरण कारण बनत सब असुर मारल जैत जे ॥
रेखाक बाहर भीख लऽ भेलीह जखने जानकी ।
सत्वर सुश्रवसरपात्रि कलक हरण रावण पातकी ॥

झट बलि पड़ल रथ पर चढ़ा कऽ राम-उर-रमणीय के ।

रथ तेज सँ देलक बढ़ा भागल चुरा कऽ सीय के ॥

हा ! भूमिजा भयभीत भऽ लगली पुकारय नाथ के ।

पशु-खग पथिक के देखि कानथि हाय ! पीटथि माथ के ॥

चीत्कार पाड़थि जानकी "हे राम ! लछुमन ! छी कतऽ ?

अविलम्ब दौड़ू वीरवर ! झट आउ हमरा लग एतऽ ॥

कानय तखन लगली अधिक आकुल छली सीता सती ।

नहि धैर्य रहलनि हृदय मे बुधियारि के एकोरती ॥

जकरा जतय देखथि निहोरा करथि तकरे जोड़ सँ ।

सब भीज गेलनि वस्त्र एवं अंग आँखिक नोर सँ ॥

"दशग्रीव हमरा हरण कैने जाइ अछि देखैत जा ।

हम कोन आव उपाय करू किछु बुद्धि-बल बतबैत जा ॥

कृपया कियो जाकऽ दुखद सम्वाद कहियनि राम के ।

रावण-हरण कैलक कपट सँ आइ हुँनका वाम के ॥

विश्वास हम कैलहुँ अहा ! अछि साधु-ब्राह्मण रूप ई ।

ज्ञाता चतुर्वेदक दशानन बुद्धिमान सुभूष ई ॥

हम आइ धरि नहि सुनल पकड़त क्यो पुरुष पर-नारि के ।

सन्देह नहि किछु भेल एकरा पर हरत परतारि के ॥

हे राम ! अपने थिकहुँ न्यायी आर्य-पुत्र-महान छी ।

दी दण्ड दोषी के उचित नर मे अहाँ मतिमान छी ॥

ठग-धूर्त-अपराधी-छली के दण्ड दी नृप-धर्म छी ।

सज्जन तथा निर्दोष पाबथि दण्ड पैघ अघर्म छी ॥

रे निकुर रावण ! हरण कैने जाइ छेँ हमरा कियै ?

तौ जानि कऽ दुष्काल के मँगबैत सिर पर छेँ कियै ?

सृष्टिक रचयिता पुरुष अद्भुत छथि कलाविद जे कियो ।

ओ देखि सब रहलाह अछि की ? कऽ रहल अछि किछु कियो ॥

भऽ गेल तोहर बुद्धि छी अति भ्रष्ट रावण ! मानि ले ।

भोगऽ तोरा पड़तीक बढ़का कष्ट निश्चय जानि ले ॥

छल-रहित पश्चात्ताप कर जे भूल भेलौ मानि ले।
 करथुन छमा जौं छमाशीलक चरण पड़मे जानि ले ॥

देखल सिया बैसल विटप पर बिहग-वर बृद्धायु के० ।
 कहलनि कनैत-कनैत सीता गीधराज जटायु के० ॥

“हे सभ्य पक्षीराज ! देखू निर्दयी लंकेश के० ।
 लऽ जा रहल अछि हरण कऽ कहबनि कने प्राणेश के० ॥”

ई करुण क्रन्दन सुनि कऽ जगला बिहग-वर नीन्द सैं ।
 जे गाछ पर सूतल छला हरिभजन कऽ निश्चिन्त सैं ॥

देखल कनै छथि व्यथित-व्याकुल भऽ दयामयि मैथिली ।
 लऽ जा रहल अछि गगन-पथ सैं लंक दिशि रावण बली ॥

ओ बहुत समझौलनि दनुज रावण निशाचार दुष्ट के० ।
 नृप नीति उत्तम धर्मयुत कहलनि वचन अति पुष्ट के० ॥

नहि कान देलक किछु जटायुक कथन पर दम्भी महा ।
 ठनि गेल युद्ध खगेश देलनि गर्व के० असुरक ढहा ॥

जे सुजन ज्ञानी होथि से नहि सहथि अत्याचार के० ।
 कथमपि ने होमय देथि कोनो निम्नतम व्यवहार के० ॥

चुकलाह पक्षीराज नहि निज शक्ति भरि लड़लाह ओ ।
 रावण बली छल अत्यधिक तैं जीति नहि सकलाह ओ ॥

ई छै नियम सृष्टिक असत के० जीत पहिने होइ छै ।
 सत्यक विजय तऽ अन्त मे निश्चय अवश्ये होइ छै ॥

नहि होनि एहन विवेक पापी-दुष्ट-अधम-कुपात्र के० ।
 पश्चात् भोगथि दुष्ट दुख, सुख प्राप्त हो सत्पात्र के० ॥

छथि पड़ल आहत भेल हाय ! जटायु पथ पर शोक सैं ।
 व्यासल बहुत छथि हा ! मंगै छथि पानि विपिनक लोक सैं ॥

सीता निरन्तर करुण स्वर सैं छथि करैत विलाप हा !
 जे भूल भेलनि ताहि लेल करैत पश्चात्ताप हा !!

दृग बन्द भऽ गेलनि सिया के० रुदन एवं रंज सैं ।
 भऽ जाय पंकज साँझ खन जहिना निशिक-तम पुंज सैं ॥

निश्चर महा दशग्रीव केँ डाँटय बहुत लगलीह ओ ।
 धिक्कार-युत कटुबोल सँ अति कोप मे बजलीह ओ ॥
 'रे नीच रावण ! लाज किछु नहि होउ एहि कुकर्म सँ ।
 भऽ तोँ जेमे निन्दित जगत मे तुच्छतम दुष्कर्म सँ ॥
 विद्वान अपना केँ बूझै छैँ किन्तु बूझ यथार्थ मे ।
 बड़ पैघ तोँ छैँ मूर्ख ! ब्राह्मण की कहौलेँ व्यर्थ मे ॥
 मिथिलाक महिला केँ असुर वश मे करत, आश्चर्य छै ।
 भय-लोभ द्वारा वश करब तोँ अति असम्भव कार्य छै ॥
 छल-कपट धारण कऽ ठगथि ककरो हरण किछु करथि जे ।
 ईश्वर-निकट दोषी परम रावण ! अवश्ये बनथि से ॥
 करबनि विजय हम विश्व केँ पुनि जीति लेबनि स्वर्ग केँ ।
 कऽ लेब हम आधीन त्रिभुवन केर भूपति-वर्ग केँ ॥
 ई धारणा जिनकर रहनि बुभू पड़ल छथि भ्रान्ति मे ।
 दुखमय तिनक जीवन कटनि आ रहथि सतत अशान्ति मे ॥
 अनुचित कोनोटा कार्य सँ क्यो शान्तिपूर्ण रहैछ की ?
 वेदज्ञ छैँ नहि ज्ञात छौ पर - नारि हरणे ह्वैछ की ?
 जे करथि अपने मोन सँ किछु, त्यागि शास्त्र-विधान केँ ।
 से कष्ट भोगथि नियम छनि अति प्रबल विश्व-प्रधान केँ ॥
 अपराध तोँ कयलेँ हुँनक, छथि राम सर्व-समर्थ जे ।
 तोरा-सदृश पापीक रक्षा मे रहथि असमर्थ से ॥
 खल ! शरण जग मे कतहुँ तोरा आब भेटब कठिन छौ ।
 रे मूर्ख ! बूझि पड़ेछ तोहर आबि गेलौ कुदिन छौ ॥
 प्रभु राम केँ सामान्य नरपति-तुल्य जौँ लगबैत छैँ ।
 तोँ बूझ तोँ अज्ञानतम संसार मे भटकैत छैँ ॥
 जे पुरुष चौदह सहस्र सेना केँ हनल पलमात्र मे ।
 खर-संग-दूषण मरल जे छल अति प्रसिद्ध कुपात्र मे ॥
 से राम पुरुषोत्तम कोना कऽ छोड़ि देथुन दे बता ।
 दुर्गति बहुत करथुन दशानन ! लागि जैतनि जौँ पता ॥

अछि प्राप्त हमरा शक्ति देबक श्राप स्वामी-भक्ति सँ ।
 नहि किन्तु चाहै छी करक उपयोग क्रोधासक्ति सँ ॥
 हम आइ धरि नहि कैल अछि अपकार कोनो जीव केँ ।
 जोँ क्रोध उपजल किन्तु रहलहुँ क्रोध-विष केँ पीबि केँ ॥
 जोँ छौ दया उर-मध्य किछुओ तौँ सिया केँ छोड़ि दे ।
 अथवा निठुर छेँ तौँ बधिक-बनि घेँट हमर मचोड़ि दे ॥
 नहि रहब जीवित आब हम घ्रुव प्राणपतिक वियोग मे ।
 तोँहूँ सतत अशान्ति रहमे पड़ल अति दुख-भोग मे ॥
 कयो कहथि जा कऽ नाथ केँ हम कानि रहलहुँ अछि एतऽ
 आबथि-बचाबथि प्राण केँ ओ होथि कानन मे जतऽ ॥
 तखने सिया गिरि शिखर पर कपि-वर्ग केँ देखल अहा !
 भेलनि हृदय मे धैर्य दृग सँ अश्रु केँ देलनि बहा ॥
 निज सकल आभूषण तुरत सब फेँकि देल उतारि कऽ ।
 प्रभु सँ कहत दऽ हमर वस्तु प्रमाण मे से धारि कऽ ॥
 पुनि दुष्ट निश्चर-नाथ केँ फजहति तखन लगली करे ।
 रावण मुदा सीता-कथन पर ध्यान किछुओ नहि धरै ॥
 सीता बुझौलनि वचन कहि बहु भाँति सँ दशग्रीव केँ ।
 छूलक कनेको मात्र नहि निष्ठुर निशाचर जीव केँ ॥
 कुल-नाश होमक छैक जकरा बुद्धि हत भऽ जाइ छै ।
 अति नीक सन बातो लगै कटु लेश भरि ने सुहाइ छै ॥
 बल-बुद्धि-विद्या-विभव सँ लंकेश छल गवित महा ।
 लऽ गेल सीता केँ करै लै दृश्य सँ मोहित अहा !
 लऽ गेल ओ अन्तःपुरी मे विभव सभ देखथि सिया ।
 भऽ जाथि मोहित कहथि हमरा प्रेम सँ प्रेमी-पिया ॥
 रावण देखौलक सकल सुन्दर स्वर्णमय निज महल केँ ।
 छल मनुज सभ बान्हल जतय लाखो देखोलक जहल केँ ॥
 लऽ गेल अति सुन्दर मनोहर सकल शुभ स्थान मे ।
 भंडार-आँगन-पाकघर लऽ गेल एक दलान मे ॥

मणिमय सजल बैसक जतय बड़ ऊँच सिंहासन छलै ।
 गायक गुणीगण केँ जतय नित राति-दिन गायन चलै ।
 लऽ गेल सीता केँ दिखाबऽ रत्नमय रनिवास मे ।
 भऽ जाथि मोहित जानकी छल दुष्ट ताहि प्रयास मे ॥
 मन-मुग्धकर सुन्दर अनेकोँ ओ देखौलक दृश्य केँ ।
 लऽ गेल पुष्पक वाग मे देखथि मयूरक नृत्य केँ ॥
 नहि भेल मोहित किन्तु सीता केर मन तखनो अहा !
 पति-शोक सँ कानल करथि केवल कहथि हा ! राम हा !!
 नहि चूकि रावण रहल किछु अपना जनैत प्रयास सँ ।
 सीताक दृढ़ता देखि कऽ बाजल तखन निराश सँ ॥
 “हे जानकी ! सूनू हमर अन्तिम विचार कहैत छी ।
 सोचू अहाँ सब भाँति सँ किछु और अवसर दैत छी ॥
 होयब हमर की नहि ? विचारू समय किछु हम दैत छी ।
 किछु दिन सुरक्षित रूप सँ हम तँ अखन रखैत छी ॥
 हम अखन किछु नहि कहब भीतर आब बारह मास केँ ।
 बिनु राम केँ रहि सकी पहिने कऽ लिअऽ अभ्यास केँ ” ॥
 ई कहि दशानन राक्षसी-गण केँ कहल “सब सूनि ले ।
 हम जे कहैत छिओक से सब नीक तरहें बूझि ले ॥
 लऽ जो सिया केँ शीघ्र आइ अशोक-वनिका-कक्ष मे ।
 रक्षा हिनक करिहें मनविहें होथि हमरा पक्ष मे ॥
 गुण गाबि हमर विशाल वैभव केँ बतबिहें रीति सँ ।
 बनिजाथि हमरे प्रेमिका ओ जाहि तरहें नीति सँ ” ॥

□

अशोक वाटिका मे सीता

हा ! फंसि गेली श्री जानकी कामी दशानन-जाल मे ।
 ई डूबि कऽ मरि जाथि ने कहूँ शोक-ताल विशाल मे ॥
 अनुमान कऽ ब्रह्मा कहल सुरराज सँ साकेत मे ।
 “हे इन्द्र ! रावण भेल अछि सम्प्रति विशेष अचेत मे ॥

सीता-हरण कऽ लंक मे लऽ ऐल अछि अन्याय सँ ।
होयत निशाचर-संग रावण-नाश एहि उपाय सँ ॥

सुख-भोगिनी सीता निशाचरि-वगं बीच घेरैल जे ।
स्वामीक दर्शन सँ अखन वञ्चित बहुत घबड़ैल से ॥

वन मे ओतय श्री राम लछुमन जानकीक तलाश मे ।
धूमैत छथि पागल जकाँ भूखल व्यथाकुल प्यास मे ॥

लगि जानि समय विशेष निश्चर-नाश मे जाँ राम केँ ।
तौँ की बूझै छी पैब जीवित तखन रामक वाम केँ ॥

भूखलि-पियासलि नारि बहु दिन धरि जिवैत रहैथ केँ ?
पति-प्रेमिका स्वामी-वियोगक कष्ट अधिक सहैथ केँ ?

तौँ हे सुरेश ! प्रवेश कर लंकेश केर सुदेश मे ।
लऽ जाउ खीर खुआउ सिय केँ जाउ ब्राह्मण-वेष मे ॥

कनियो करू ने बिलम्ब सीता अम्ब केँ रक्षक बनू ।
प्रिय एक अपना केँ अहाँ सीताक सेवक मे गनू ॥

ब्रह्माक शुभ आदेश सँ सुरपति पहुँचला लंक मे ।
सिय-लग पहुँचि सानन्द लय निद्रा-सुदेवी संग मे ॥

घनगर अशोकक वृक्षतर वसलि छली जनकक लली ।
निद्राक द्वारा निश्चरीगण नीद सँ मातलि छली ॥

श्री जानकी केँ प्रार्थना कैलनि शचीपति प्रेम सँ ।
'हे देवि ! अनलहुँ स्वर्ग सँ हम खीर पावन नेम सँ ।

हम इन्द्र थिकहुँ, कहैत छी अछि खीर ई भोजन करू ।
नहि भूख-प्यासक त्रास लागत जानकी ! घोरज धरू ॥

हम देवगण सहयोग देविनि राम केँ सब काज मे ।
कपि-रूप बनि सेवा करब जे थिकहुँ देव-समाज मे ॥

इन्द्रक कहल पर तुरत नहि विश्वास कैलनि जानकी ।
कहलनि शचीपति सँ अहाँ छी इन्द्र तकर प्रमाण की ?

लक्षण सुरक अछि जात हमरा अखनि धरि तिन-चारि जे ।
दीतहुँ लखा पतियैब तखने थिकहुँ अहँ असुरारि से ॥

लक्षण सुनू पग पड़नि नहि भू पर जनै छी देव के ।

आखिक पलक कखनो खसनि नहि सुर तथा सुरदेव के ॥

नहि वस्त्र पर धूरा लगनि अति स्वच्छता नित वसन मे !

कुम्हलानि नहि माला सुमन के घाम किछु नहि बदन मे ॥

देलनि लखा सुरपति जखन, विश्वास कैलनि प्रभु-प्रिया ।

सुरराज सँ कहलनि तखन आनन्द सँ जनकक धिया ॥

“देवेन्द्र ! दर्शन देल अपने थिकहुं पिता-समान मे ।

बहुतों दिनक उपरान्त सुनलहुं प्रभुक नाम स्वकान मे ॥

भूपति ससुर दशरथ, पिता मिथिलेश जे वर भूप मे ।

देखैत छी देवेश ! अपने के अखन तद् रूप मे ॥

सानन्द कैलहुं खीर हम स्वीकार आज्ञा पाबि कऽ ।

दर्शन अपन दऽ धैर्य दी अहिना वरावर आबि कऽ ” ॥

ई कहि सिया लऽ इन्द्र कर सँ खीर अपना हाथ मे ।

ध्यानस्थ भऽ मन के लगौलनि स्वपति श्री रघुनाथ मे ॥

सविनय निवेदन कैल पति के जनक-नन्दिनि प्रेम सँ ।

“अपने जतऽ छी ततहि प्रभु ! ई अछि समर्पित नेम सँ ” ॥

पश्चात प्रभुक प्रसाद-रूपे ग्रहण कैलनि प्रभु-प्रिया ।

निश्चर-निशाचरि बीच रहली पूर्ववत घेरलि सिया ॥

□

राम के अन्देशा

हँ आब एमहर राम के देखू मृगा के मारि कऽ ।

अबितहि छला अपना कुटी पर वेग सँ झटकारि कऽ ॥

को हरिण रूपी असुरके सुनि बोल परम विचित्र ओ ।

मन मे कहल सुनने हेता श्री जानकी-सौमित्र ओ ॥

सुनितहि कपट-युत बोल, चिन्ता-उदधि मे पड़ताह ओ ” ।

अपनहुँ अनेको अपशकुन लखि बहुत घबड़ैलाह ओ ॥

अनुमान कऽ बजलाह “किछु घटना अशुभ अछि भेल की ?

प्रिय जानकी एवं लखन पर विपत्ति अछि पड़ि गेल की ?

अति वेगपूर्वक वाम दिशि गीदड़ भगै अछि दहिन सँ ।
कूकुर भुकै अछि आ कनै अछि पग बढ़ै अछि कठिन सँ ॥

कलक निशाचर पैघसन अपकार बूझि पड़ैछ की ?
मिथिला कुमारी केँ पकड़ि लऽ गेल असुर लगैछ की ?

खर-दूषणक संग कैल बध बहु असुर केँ तँ लेल की ?
प्रतिशोध लेमक हेतु हमरा पाछु ओ पड़ि गेल की ?

ई सब बजंत-अबैत रघुवर जखन आश्रम-दिशि छला ।
लछुमन भेटलथिन मार्ग मे जे अति उदास लगै छला ॥

पूछल लखन केँ राम “लक्ष्मण ! आबि रहलहुँ अछि कियै ?
निर्जन विपिन मे छोड़ि एकसरि सीय केँ एलहुँ कियै ?

कैलहुँ अहाँ ई काज अनुचित परम अहँ बुधियार भऽ ।
सीताक रक्षा-लेल ककरा लखन ! एलहुँ भार दऽ ॥

हम तौँ अहाँ पर आइ धरि कँने छलहुँ विश्वास ई ।
आज्ञा उलंघन करब नहि कथमपि अहाँ, छल आश ई ॥

कैलहुँ मुदा बड़का उलंघन लखन ! हमरा वचन केँ ।
विश्वास हमहूँ करब आब कोना अहँ केँ कथन केँ ॥

आशा अहाँ सँ बहुत हम कँने छलहुँ भविष्य मे ।
हमरा अहाँ मे भाव छल जहिना रह्य गुरु-शिष्य मे ॥

हा ! किन्तु आइ देखैत छी बदलल अहाँक स्वभाव केँ ।
ई पार भव-सागर करत के ? खेबि जीवन-नाव केँ ” ॥

रामक कथन सँ भऽ दुखी लछुमन सभय लगला कहै ।
“भैया ! सिया केँ छोड़ि दी एकसरि विचारो नहि रहै ॥

तजि किन्तु आबय पड़ल अछि माताक कटु आदेश सँ ।
हमरा पठौलनि अछि अहाँ-लग डाँटि कऽ अति क्लेश सँ ॥

अपनेक स्वर मे क्यो पुकारल जे सुनल हम ध्यान सँ ।
“लक्ष्मण एतय दौड़” जखन सुनलनि सियो निज कान सँ ॥

से सृति व्याकुल भऽ गेली दृग भरि गेलनि बहु नोर सँ ।
“झट जाउ लछुमन जाउ” सीता बाजि उठली जोर सँ ॥

अपना जनैत बुझौल हुनका हम अनेको भाँति सँ ।
 सीता मुदा घबड़ेल रहली ओहि काल अशान्ति सँ ॥
 लाचार भऽ अयलहुँ दयानिधि ! आब हमरा जे कही ।
 दी दण्ड फजहति जे करी स्वामी ! अहाँ के सब सही ॥
 कहलनि कृपानिधि "आब पश्चात्ताप कैने हैत की ?
 होयबाक जे छै हैत से रोकल ओ किन्नहु जैत की ?
 सुख सँ रहब जौ करब अपना बुद्धि के अनुसार सँ ।
 ओ कार्य सुखमय अधिक होयत करब गुरुक विचार सँ ॥
 परबुद्धि सँ सब कार्य होयत भ्रष्ट निश्चय जानि ली ।
 नारी-दुराग्रह बूझि हुनकर कथन झट नहि मानि ली ॥



रामक विलाप

देखु-चलू सत्त्वर कुटी पर हम दुनू अति वेग सँ ।
 अछि पैघ अन्देशा चलू दौड़त बड़का डेग सँ ॥
 अगुतैल आ घबड़ेल दूनु भाइ कुटिया पर एला ।
 नहि देखि सीता के कुटी मे राम व्याकुल भऽ गेला ॥
 लगला पुकारय "हा ! सिये ! तजि राम के गेलहुँ कतऽ ।
 लछुमन ! तुरत लऽ चलू हमरा होथि वामाङ्गिनि जतऽ ॥
 लक्ष्मी सदृश सुन्दरि सिया प्रिय सहचरी प्राणक थिकी ।
 शुभकाल आ दुष्काल मे सुख-दुखक संगिनि ओ थिकी ॥
 भरि सृष्टि मे सीता महा सुन्दरि कहल हा ! जाथि ओ ।
 लावण्य लखि कय लखन ! लक्ष्मी ल्यून जानि लजाथि ओ ॥
 श्री मैथिली बिनु शिथिल हम किछु करक नहि चाहैत छी ।
 सीता-बिना सचमुच लखन ! आनन्द नहि मानैत छी ॥
 हम आब उत्तम कार्य कोनो लखन ! कऽ ने सकैत छी ।
 बिनु सीय अपना के लखन असहाय-सदृश बुझैत छी ॥
 जीअब असम्भव हमर अछि ओ छथि हमर प्राणेश्वरी ।
 रहली सदैव स्वअंग बनि कऽ संगिनी ओ सहचरी ॥

हा ! की कहू, व्याकुल अधिक हम शोक सँ भऽ गेल छी ।
सीताक बिनु हम एक तरहे लखन ! मुरदा भेल छी ॥

सीता-बिना जीवित छनहुँ भरि आव रहि ने सकैत छी ।
परलोक मे पहुँचब पिता सँ बात सूनि सकैत छी ॥

वनबास केँ आज्ञा कियै टारल अहाँ पुछताह जी ।
हम की तखन उत्तर पिता केँ देब लखन ! बताउ तौ ॥

हम एक केवल पुत्र निज माताक हा ! मरिजैब जी ।
कथमपि ने कोशल्या जननि केँ छनहुँ जीवित पैब तौ ॥

बचती सुमित्रा कहू कदापि सुसौत कोशल्या बिना ।
पुनि लखन ! तखन बताउ बिनु माता अहाँ जीअब कोना ?

बाजू लखन ! सीता हमर जीबैत छथि की मरि गेली ।
की ? कयो हरण कैलक सिया केँ पाबि एकसरि ओ छली ॥

छल-कपट-चोरी सँ सिया केँ असुर कैलक हरण जे ।
चौदह भुवन मे अन्ध कियो नहि देत हुँका शरण से ॥

की ? छथि कतहुँ कनैत की खा गेल राक्षस मारि कऽ ।
बौआसि छथि वन मे कि मरली डूबि हीया-हारि कऽ ॥

दुख सहक अनुभव नहि छलनि सीता सती सुकुमारि केँ ।
रहबाक अवसर आइ धरि एकसर ने भेलनि प्यारि केँ ॥

कपटी निशाचर शोर छल कैने अहाँ केँ जखन हा !
भऽ गेल छल सन्देह हमरो पैघ मन मे तखन हा !

ओ उच्च स्वर असु क छलै किछु हूबहू हमरे जकाँ ।
से सूनि सीता अरु अहाँ भेलहुँ संशंकित नर जकाँ ॥

अनुमान हमरा हूँछ तँ लाचार भऽ गेलहुँ अहाँ ।
सीताक चिन्ता कैल नहि चिन्ता हमर कैलहुँ अहाँ ॥

जे हो, परञ्च सुबोध भऽ कैलहुँ अहाँ दुष्कार्य ई ।
एकसरि सिया केँ छोड़ि आयब उचित छल नहि आर्य ! ई ॥

नारी-दुराग्रह केहन लछमन ! होइ छै नहि जात की ?
आवेश मे प्रवितहि ने सोबय उचित-अनुचित बात की ?

अवसर अखन भेटलैक अछि अति अधम क्रूर-सुरारि के ।
ओ लेत बदला मारि कऽ प्रायः सिया-सुकुमारि के ॥

भऽ गेल व्याकुल राम छथि दुख-विरह शोक अतीव सँ
पूछथि विटप-पशु-विहग रवि शशि विपिन-बासी जीव सँ ॥

“हे तरु अशोक ! सशोक लोकक शोक दूर करैत छी ।
हमरा सदृश विरही जनक विरहाग्नि केँ मिश्रबैत छी ॥

जौँ आबि बैसलि होथि कखनो अहँक छाहरि मे सिया
तौँ हैत बूझल कोन दिशि गेली एतय सँ मम प्रिया !

जामुन ! अहाँ तौँ मुनि-जकाँ वन मे सदैव रहैत छी ।

फल अहँक श्यामल हमहुँ श्यामल एक रंग लगैत छी ।

वन-पथिक केँ विश्राम हित नित धूप-शीत सहैत छी ।

कहु तौँ कृपा कऽ त्वरित जौँ सीता-पता जनैत छी ॥

हे शाल ! नयनि-विशाल केँ किछु हाल कहु ततकाल मे ।

सिन्दूर-शोभित लाल छनि सब काल जिनका भाल मे ॥

हे आम ! हमरा वाम केँ तौँ नाम अहाँ जनैत छी ।

छनि लाम बाल तमाम तिनकेँ सकल ठाम तकैत छी ॥

कृपया हुँनक किछु सुधि जनै छी तौँ अहाँ हमरा कहु ।

संसार मे सबदिन हमर कहबैत उपकारी रहू ॥

कटहर ! अहाँ छी कष्ट-हर तैँ हरण कष्टक झट करू ।

मिथिला कुमारी केँ पता हमरा बता कऽ दुख हरू ॥

पीपर ! अहाँ केँ पात पीयर भेल पर उपकार मे ।

पति-प्रेमिका पातिव्रता सीताक सुधि कहु सार मे ॥

जूही ! जनैछी जानकी केँ जौँ जिवैत अहाँ जतऽ ।

अपना सँगे हमरा उड़ा कऽ लऽ चलू ओ छथि ततऽ ॥

हे प्रिय कनैल ! कनैत कान्ता केँ पता कहु छथि कतऽ ।

सब दिन अबैत छलीह लोढ़य सुमन श्री सीता एतऽ ॥

गेना ! गुलाब ! बताउ जे नित गाबि गीत सबेर मे ।

सुनबै छली से गायिका छथि कतऽ असुरक फेर मे ॥

चम्पा ! अटल विश्वास अछि जौं अहेंक अनुकम्पा अहा !
भऽ जाय तौं ध्रुव भेट जयती जानकी सुन्दरि महा ॥

चन्दन ! कतहुं क्रन्दन सुनल अछि जनक-नन्दनि केँ अहाँ ।
कहु हे कमल ! कोमल अहीँ सन ओ कमल-नयनी कहाँ ॥

हे वट ! कदम्ब ! अनार ! गूलरि ! सब हितैषी हमार जौं ।
कृपया पता सीताक कहु उपकार मानब परम तीं ॥

कोकिल ! अहीँ सन बोल जिनकर से सिया कहु छथि कतऽ ?
हे काग ! सुन्दर राग-स्वर भऽ जैत सीता कहु कतऽ ?

हे हरिण ! सीता-हरण कैलक के ? चरण धरैत छी ।
कहु, अहिक जातिक पाछु पड़ि कऽ विपति ई भोगैत छी ॥

गजराज ! तोरे चालि सन सीता चलै छथि छौ पता ?
तौं चालि सीखक लेल हुँनका की ? छिपौने छेँ बता ॥

हे सिंह ! वानर ! भालु ! कयो देखल कतहुं सुकुमारि केँ ।
ताकू अहूँ सभ भेट ओ जौं जाथि, लाउ सम्हारि केँ ॥

सीताक सुधि सचमुच अहीँ सभ देब हमरा ध्रुव बता ।
अति व्यथित छी व्याकुल पुरुष केँ दूर कर सत्वर व्यथा ॥

हे सूर्य ! अहिक प्रकाश सँ अछि सब प्रकाशित सृष्टि मे ।
प्रत्यक्ष सकल पदार्थ अछि दिनकर ! अहाँ केँ दृष्टि मे ॥

छी पुण्य-पापक अहीं साक्षी जगत अछि मानैत ई ।
नहि रहि सकय छीपल अहां सँ किछु, पुराण कहैथ ई ॥

कृपया पता सीताक अग्ने दी बता अछि प्रार्थना ।
अपने हमर पुरखा थिकहुँ तैँ कऽ रहल छी याचना ॥

के हरण कऽ हुनका कतऽ अछि दऽ रहल दुख-यातना ?
ताकू अहूँ भेटथि कतहुँ, दीअनि अवश्ये सान्त्वना ॥

हे वायु ! कोनो बात नहि अज्ञात अपने सँ रहै ।
सर्वत्र अपने केँ पहुँच अछि, विश्वव्यापी सब कहै ॥

सुखदायिका सीता कतय छथि जौं अहाँ दीतहुँ बता ॥
सीता-हरण कैलक असुर के ? जौं अहाँ कहितहुँ पता ॥

तौ ई परम उपकार अपने के ने हम विसरब कदा ।

हम पूर्व से उपकृत्य छो कृतकृत्य भऽ जंतहु सदा ॥

हे चन्द्र ! मुख छनि अहिक सन तै शशिमुखी कहबैथ ओ ?

छथि अहिक वंशज जनक-पुत्री सतत प्रसन्न रहैथ ओ ॥

करितहु कृपा स्पर्श कऽ निज किरण के सिय-अंग सं ।

छुबितहु हमर तन हर्ष हमरा ह्वैत एहि सुढंग सं ॥

हे मा अवनि ! अपने अपन दुहिताक सुधि नहि लैत छी ।

तै भेल छथि निपता, विमाता-सदृश अहाँ लगैत छी ॥

आबहु पता लगाउ भेटथि राखि लीअनि कोड़ मे ।

कन्या करोड़ो मे ने भेटत एहन हिनका जोड़ मे ॥

हे वरुण ! अहाँ बताउ तौ को ? डूबि मरली जानकी ?

भूखलि-पियासलि भेल तत्पर छथि तजइ लै प्राण की ?

आकाश ! नहि आकार अछि सुधि कहब की साकार के ।

साकार बिनु रहि सकत को ? अस्तित्व निराकार के ॥

एही प्रकारे राम पूछथि विपिन मे सब जीव सं ।

चेतन रहय वा जड़ रहय जोवित तथा निर्जीव सं ॥

निज सत्त्व के ओ विसरि बिरही बनल छथि मानव-जका ।

सीताक सूरति ध्यान मे अबितहि बनथि पागल-जका ॥

मृग-नैन कोकिल-बैन लखि-सुनि भान भेलनि राम के ।

सीता लगहि मे छथि कतहु लगला पुकारय वाम के ॥

“सीते ! सुनीते ! सत्यभाषिणि ! शीलवन्ती हे सिये !

मैथिलि ! मधुर भाषिणि ! जनक-धौ हमर प्राणक अति प्रिये !

हमरा किये हे प्रियतमे ! व्याकुल बनौने छी एना ?

प्राणेश्वरी छी तौ अही बिनु प्राण के जीअब कोना ?

हृदयेश्वरी ! सुन्दरि ! जगत-आनन्द-दायिनि ! जानकी !

बिनु अहँक एकसर श्रीमती ! हम रहि सकब श्रीमान की ??

लछुमन ! अब अछि नहि कतहु सीता अहँ के दृष्टि मे

की ? आब ताकय पड़त वन-वन नगर घर-घर सृष्टि मे ।

हम आ अहाँ मिलि एक स्वर सँ शोर तौ करियनि कने ।
सुनि बोल उत्तर देथि प्रायः कतहुँ सँ जौँ ओ भने ।

जे गीत-बाद्यक मधुर ध्वनि सदिखन सुनेत रहै छली ।
से बाघ-सिंहक शब्द सुनि की बधिर प्रायः भऽ गेली ॥
लछुमन ! कदाचित मारि कऽ खा गेल होयत असुर जौँ ।
सीताक बिनु जोअब असम्भव जैत भऽ ध्रुव हमर तौँ ॥

तैं आब हम रचना करी सीताक नवल स्वरूप केँ ।
अछि किन्तु ई सन्देह हम रचि सकब ओहि अनूप केँ ॥
हमरा अटल विश्वास अछि सीता ने तजती प्राण केँ ।
ओ जा सकै छथि राम-पत्नी शरण मे नहि आन केँ ॥

लछुमन ! कुटी सँ चलल होयब अहाँ जखन तलाश मे ।
तखने सियो भऽ गेल पाछू होथि अधिक उदाश मे ॥
वन-बीच भुतिया गेल छथि अनुमान हमरा हँछ ई ।
बैसलि कतहुँ कनेत छथि ओ सैह बूझि पढ़ैछ ई ॥

तैं तुरत अन्वेषण करब हमरा सभक अनिवार्य छी ।
सम्प्रति कहू लछुमन अहीँ दोसर एहन अछि कायं की ?
सब जीव पर करुणा करब अछि हमर सरल स्वभाव जे ।
तकरा बुझै अछि लोकसभ हमरा मे निर्बल भाव से ॥

हे अनुज ! हम पुरुषार्थ अपन देखैब, आब छिपाउ की ?
कोमल स्वभाव समेटि अखनो निठुरता नहि लाउ की ?
अछि शक्ति जे हमरा प्रबल ओ रहत कहिया लेल से ।
उपयोग अखने करक अछि ई आबि अवसर गेल जे ॥

छथि विश्व मे सुर-नर-निशाचर-आर्य तथा अनार्य जे
क्यो दैत छथि नहि ध्यान हमरा बात पर आश्चर्य से ॥
रहना कियो नहि आब जग मे चैन सँ कहि दैत छी ।
जड़ि जैत ई ब्रह्माण्ड जौँ कऽ देव क्रोध कहैत छी ॥

सब सूनि पहिने लेथु जौँ सीताक देता नहि पता ।
बिरहो जनक क्रोधाग्नि होइछ केहन से देवनि बता ॥

सीताक दर्शन हैत नहि जी लखन ! हमरा नेत्र के ।
तौ करब नारि-विहीन हम सम्पूर्ण सृष्टिक क्षेत्र के ॥

ई कहि लखन के धनुष पर झट वाण के सन्धानि कऽ ।
“होयत अखन बड़का प्रलय” कहलनि जगा क्रोधाग्नि के ॥
“जौ ताकि कऽ सिय के कियो नहि आनि देत समीप मे ।
तौ आब हे लछुमन ! कियो बचता ने सातो द्वीप मे ॥

हम देखि लेलहुँ कयो हितैषी नहि समस्त समाज मे ।
केलहुँ बहुत के हित कियो नहि अल हमरा काज मे ॥
देखल लखन प्रभु तौ पड़ल छथि पिय-विरह के शोक मे ।
जे नर-प्रवर कहबैत छथि ज्ञानी परम त्रैलोक मे ॥

हा ! आइ नर-सामान्य-सन व्याकुल-व्यथित छथि भेल जे ।
लीला-बिहारी ई करै छथि खेल बुझना गेल से ।
बुझितहि छला लछुमन, भरल भएडार छथि ई ज्ञान के ।
लगलाह देमय सान्त्वना लघु जीव श्री भगवान के ॥

“हे आर्यवर ! अगुनाउ नहि, लागत क्रिये नहि सिय-पता ।
तकरे प्रयत्न करैत छी, सब देत अपने सँ बता ॥
अपने अपन अनुपम स्वभावक त्याग कथमपि नहि करी ।
आदर्श-मर्यादा-पुरुष छी, कुपथ पर पग नहि धरी ॥

पर्वत जेना कम्पित कदापि ने होथि वायु विशेष सँ ।
तहिना अहाँ-सन व्यक्ति विचलित होथि नहि दुख-क्लेश सँ ॥
त्यागथि ने चन्दन गन्ध सुरभित घसति कतबो जैब जौ ।
कुशियार के कतबो अहाँ छीलब मधुरते पँब तौ ॥

कंचन अपन सुवर्ण निखारथि दग्ध भेलो पर सदा ।
सज्जन सह्यिदुख समुद, सदगुण तजथि नहि कथमपि मुदा ॥
हँ देख लीअऽ मभक सम्मुख रथ ककर ई पड़ल छै ।
टूटल जकाँ ओघरैल पहिया संग धुरी धरल छै ॥

लड़लाह अछि अखने कियो संग्राम बड़का भेल की ?
ई बृन्द रुधिरक कहि रहल अछि जीव मारल गेल की ?

के अछि लड़ल ककरा संगे से हम पता लगबैत छी ।
 ई युद्ध भेल कियँक ! कारण बूझि अखन कहैत छी ॥
 सीता पुनीता लेल राक्षस बीच ई रण भेल जौ ।
 रण जीति कऽ के असुर सीता केँ कतय लय गेल तौ ॥
 यावत पता लागत प्रभो ! तावत अहाँ धीरज धरू ।
 सजान छी अज्ञान भऽ नहि काज अगुता कऽ करू ॥
 श्री जानकी केँ अपहरण रघुवीर ! केने हैत जे ।
 रामक अचूक अमोघ शर सँ कतय बचि कऽ जैत से ॥
 ताकय दिअऽ किछु काल हमरा गिरि-विपिन सब ठाम मे ।
 पूछय दिअऽ सब सँ प्रथम प्रति नगर-घर-घर ग्राम मे ॥
 जौ उचित रूपेँ ताकि हारब किन्तु लागत नहि पता ।
 तखने सकल संसार केँ हमहूँ तुरत देबनि बता ॥
 दुख धैर्य पूर्वक सहक अछि अपने स्वयं सर्वज्ञ छी ।
 आदर्श राखब नहि तखन सीखत अहाँ सँ अज्ञ की ?
 आर्त्ति ककरा पर पड़ल नहि आइ धरि संसार मे ।
 कैलक मुदा सब दूर सोचि उपाय विविध प्रकार मे ॥
 सुत एक सौ देखू छलनि गुरुवर महर्षि वशिष्ठ केँ ।
 राजर्षि विश्वामित्र हत्या कैल सकल बलिष्ठ केँ ॥
 दऽ देल नृप हरिचन्द्र द्विज केँ दान निज ऐश्वर्य केँ ।
 विकलाह डोमक हाथ किन्तु ने त्याग कैलनि धैर्य केँ ॥
 शशि-सूर्य धरि छथि ग्रसल जाइत पाबि अवसर राहु सँ ।
 पकड़ल छी पहिनो अहाँ हमहूँ सहस्राबाहु सँ ॥
 ई तौँ विपति सब पर वरावरि प्रभु ! अबैत-रहैत छै ।
 दुख-भोग दुष्कर्मक कुफल अनिवार्य सहक पड़त छै ॥
 सभ क्यो मुदा दुख-सहन करिते अल अछि संसार मे ।
 धीरज धरो हमहूँ अहाँ अछि उचित हमर विचार मे ॥

जटायु-उद्धार

प्रभु ! छथि परीक्षा लैत देव सदेव सज्जन लोक के ।
 से सोचि धीरज धारि उर सँ दूर कऽ दी शोक के ॥
 वैरी-विनाशक लेल हमसभ वीर विपुल बलिष्ठ छी ।
 चिन्ता कथी ? अपने स्वयं बुधियार-बीच वरिष्ठ छी ॥
 शोकित सियापति सारगर्भित वचन लखनक सूनिकऽ ।
 धीरज हृदय मे राम धैलनि सोचि मन मे गूनि कऽ ॥
 देखल विहंग जटायु के हत भेल रंजित रक्त सँ ।
 "ई भेल दुर्गति अछि कियै ?" रघुवीर पुछल भक्त सँ ॥
 बाजल "सिया के हरण कयने जाइ छल रावण बली ।
 चित्कार कऽ रक्षा करू श्री जानकी बजने छली ॥
 तैं हेतु हम लड़लहुं बहुत निज शक्ति भरि लंकेश सँ ।
 रथ-क्षत्र सारथि के हताहत कैल कोधावेश सँ ॥
 रघुवर ! मुदा हम मारि नहि सकलहुं निशाचर भूप के ।
 ओ पाखि दूनु काटि हमरा कऽ देखलक बदरूप के ॥
 ओ छी कुवेरक भाइ, वेटा विश्रवाक कुपात्र ई ।
 केवल पता कहलहुं, हमर सहयोग एतबै मात्र ई ॥
 ई बाजि प्राणक त्याग कैल जटायु प्रभुक समीप मे ।
 प्रभु के कहय पड़लनि "एहन के ? भक्त जम्बू द्वीप मे ॥
 बजलाह लछुमन सँ सियावर कैल बड़ उपकार ई ।
 हम हा ! एकर करबैक किछुओ आब प्रत्युपकार की ?
 अछि पूज्य पिता-समान ज्ञानी-भक्त वीर महान ई ।
 प्रेमी हमर दुख काल के संगी परम सज्जन ई ॥
 दाहक-क्रिया हैबाक चाही सविधि हमरा हाथ सँ ।
 सद्गति परम भेटनि समादर होथि स्वर्गक नाथ सँ ॥
 श्रद्धा-सहित संस्कार सब भेलनि सुपक्षी-राज के ।
 चलला सियापति सीय-अन्वेषण करैलय काज के ॥

छल एक विपिनक बीच मे राक्षस कबन्धक नाम सँ ।
मुठभेड़ भेलनि ओहि निशिचर केँ लखन श्री राम सँ ॥

ओ देल परिचय अपन मृत्युक काल मे श्री राम केँ ।
बाजल विनययुत बात बड़ियाँ एक बड़का काम केँ ॥

“हे राम ! सीता केँ अहाँ झट पेंब जाहि प्रकार सँ ।
से युक्ति हम बतवैत छी समुचित अपन विचार सँ ॥

अछि ऋष्यमूक पहाड़ पर वानर-प्रवर सुग्रीव जे ।
बड़ बन्धु वालि सुबोर सँ भय-भीत भेल अतीव से ॥

ओ वालि बड़ अगड़ल अछि ब्रह्माक किछु वरदान सँ ।
सुग्रीव केँ ओ अछि भगोने अपन राज्य-सिमान सँ ॥

यद्यपि परम बुधियार अछि सुग्रीव विक्रमशील ओ ।
तद्यपि अवश्ये वालि केँ सँग युद्ध मे किछु ढील ओ ॥

चाहैत अछि ओ प्रभु ! अहीं सन एक निश्छल मित्र केँ ।
उरमे ने राखय जे कियो ईर्ष्या-कपट-छल-छिद्र केँ ॥

निज-निज व्यथा-गाथा परस्पर कहि सुनायब नाथ ! जी ।
बनिजैत सहजहि ओ सहायक अहँक दहिना हाथ तौ ॥

पबिते अहँक सहयोग बदला लेत अपना भाइ सँ ।
ओ तखन चूकत नहि पता सीताक लागय जाहि सँ ॥

कृपया अहाँ तकरा बनाउ सुमित्र सुन्दर काज ई ।
सब भाँति सँ हित ओ करत सुग्रीव वानरराज ई ॥”

चललाह तखने भाइ दूनु बूझि काजक बात ई ।
पहुँचै गेला सुन्दर परम पम्पा-सरोवर-कात ई ॥

मुनिवर मतंगक दिव्य आश्रम-लग रहै छल भक्तिनी ।
सवरी जकर शुभनाम छल जे बड़ पवित्र तपस्विनी ॥

रामक चरण-धूरिक प्रतीक्षा मे सदैव रहैथ ओ ।
प्रभु केँ समर्पण करक हित फल चूनि-चूनि रखैथ ओ ॥

सर्वज्ञ कृपानिधान प्रेमी रसिकवर चुकतथि कोना ।
भक्तिनि समर्पित वस्तु बिनु कँने ग्रहण रहितथि कोना ॥

सुग्रीव संग मित्रता

स्वीकार कऽ सीताक वर सवरीक सभ सत्कार के^० !
साकेत के सत्वर पठौलनि देखि भक्ति-विचार के^० ॥

चलला तखन सुग्रीव सँ प्रभु मित्रता करताह जे ।
गिरि-निकट मे जाकय दुनू ताकय ओतय लगलाह से ॥
ओ ऋष्यमूक पहाड़ पर बैसल रहय भय-भीति सँ ।
सोचैत छल बदला कोना कऽ वालि सँ ली नीति सँ ॥
देखल घुमेत-फिरैत पर्वत-कात नर अनजान के^० ।
सत्वर पठौलक प्राप्त परिचय करक हित हनुमान के^० ॥

श्री राम-सम्मुख अंजनी-सुत आबि विप्रक रूप मे ।
पूछल सियापति सँ विनय-युत 'के अहाँ अइ रूप मे ?

हे वीर ! बूझि पड़ैत अछि बलवान अहाँ महान छी ।
वन विकट मे बिनु यान अहँ घुमेत लऽ धनुवान छी ॥

सुन्दर शरीरक कान्ति सँ तौं ह्वैछ बड़ सज्जान छी ।
को ? थिकहुँ नृपति-कुमार कानन-विपथ सँ अनजान छी ॥

परिचय अपन कृपया दिअऽ एमहर कतय चल जाइ छी ।
वन-प्रान्त मे विरही-जकाँ की हेतु सँ बौआइ छी ॥

सब अंग ललित अहाँक लखि अद्भुत भुजा विशाल के^० ।
शुचि भाल मञ्जुल गाल घूँघरवाल अधर सुलाल के^० ॥

के हैत नहि मोहित अहँक ई रूप सुखकर देखि कऽ ।
दू बात सँ बतियेत के नहि पथ अहाँ के छेकि कऽ ॥

बाजू अहाँ किछु, तखन बूझब की अहाँ चाहैत छी ।
तजि निज भवन की हेतु सँ वन मे एना घुमेत छी ॥

सुग्रीव नामक एक छथि कपिवीर एतय रहैथ जे ।
बालिक निकालल छथि सतत भोगल पड़ैल फिरैथ से ॥

तिनके पठावल हम अहाँ लग अखन दौड़ल अँल छी ।
सचमुच अहाँ के थिकहुँ बूझबा लेल हम अगुतैल छी ॥

हनुमान हमरे नाम अछि छी दूत हुनकर एक टा ।
बेकार बैसल काज किछु नहि भरि रहल छी पेट टा ॥

यद्यपि जनै छी जतय मन हो जा अवश्य सकैत छी ।
चाही जेहन धारण करै लय रूप से बनबैत छी ॥

जौ मित्रता कऽ ली अहाँ सुग्रीव वानरराज सँ ।
तौ हम अपन परिचय करा ध्रुव देव अपना काज सँ ॥

ई बाजि हनुमत ठाढ़ रहला राम-लग चुपचाप सँ ।
मन मे बिचारथि बूझि ली उद्देश्य वार्त्तालाप सँ ॥

सोचल एतय श्रीराम "क्यो छथि बुद्धिमान महान ई ।
विद्वान बूझि पढ़ैछ कोनो राज्य केर प्रधान ई ॥

कहलनि लखन सँ "जंक चाही देखि तौ लीतहुं कने ।
मिलि जैत मन तौ मित्रता कऽ लेब भेटल अछि भने ॥

देलनि अपन परिचय सविस्तर राम द्विज-हनुमान केँ ।
कहलनि "अहाँ ब्राह्मण लगै छी बड़ पयोनिधि ज्ञान केँ ॥

सज्ञान सुग्रीवक सकल गुण ज्ञात हमरो भेल जेँ ।
बूझू एतय आयब हमर अछि भेल हुँनके लेल तेँ ॥

स्वीकार अछि हमरो करब मंत्री तुरत सुग्रीव सँ ।
अछि स्नेह हमरा अधिक वानर-भालु-विपिनक जीव सँ ॥

चलला पवनसुत कान्ह पर लय राम-लखन कुमार केँ ।
सुग्रीव केँ सम्मुख उपस्थित कैल अवध-कुमार केँ ॥

देलनि सुआसन पाणि-गहि बैसौल आदर-भाव सँ ।
परिचय करौलनि पवन-सुत दूतक मूढुल स्वभाव सँ ॥

वर्त्ताव कैलनि मधुररूपेँ छल-कपट केँ त्यागि केँ ।
भेलनि दुनू मे मित्रता साक्षी बनौलनि आगि केँ ।

ओ एक-दोसर सँ परम सन्तुष्ट भऽ लगला रहऽ ।
बालिक निठुर व्यवहार केँ सुग्रीव सब लगला कहऽ ॥

सुनितहि सखाक विपत्ति प्रण कैलनि तुरत राघव ओतऽ ।
अविलम्ब मारव बालि केँ हम हैत निष्ठुर ओ जतऽ ॥

सुग्रीव के कहलनि "अखन ललकार रण हित वालि के ।
ओ आबि जायत क्षेत्र मे हम तखन अवसर पाबि कै ॥

मारब अवश्ये मित्र ! करु विश्वास एकहि बाण सँ ।
ओ बालि, देखब हाथ धोयत तखन अपना प्राण सँ ॥

रामक कथन-अनुसार कैलनि कपि प्रवर ओ काज के ।
मारल अबध कुमार अवसर पावि वानर-राज के ॥

पश्चात् देलनि राज-पद सुग्रीव के अति हर्ष सँ ।
जे राज्य-बंचित भेज भागल रहथि बहुतो वष सँ ॥

युवराज-पद दऽ देल राघव चतुर वालि-कुमार के ।
बन-बीच बाँटल गेल फल-मिष्टान्न विविध प्रकार के ॥

सुग्रीव सोचल राम कैलनि निज प्रतिज्ञा पूर्ण जौ ।
हमहूँ सियाक तलाश मे दी झोंकि बल सम्पूर्ण तौ ॥

सीताक अन्वेषण करक हित सब तखन तत्पर भेला ।
सुग्रीव के आदेश सँ वानर सकल चहुँदिशि गेला ॥

हनुमान पर विश्वास बेशी छलनि वानर-राज के ।
तौ छलनि सभटा भार हुनके पर कठिनतम काज के ॥

लगला कहय हनुमान सँ "सब तोहर अद्भुत काम छौ ।
आकाश-पृथ्वी-जल जतय चाहै पहुँच सब ठाम छौ ॥

बेरोक गति मति तेज बड़का डेग वेग विचित्र छौ ।
बल मे पिता वायुक बराबर छै पवित्र चरित्र छौ ॥

सत् शास्त्र के ज्ञाता तथा बलवान मे प्रख्यात छै ।
तौ तौ महावीरक परम शुभ नाम सँ विख्यात छै ॥

हनुमान केर सुकंठ मुख सँ बड़ प्रशंसा सूनि कऽ ।
कैलनि विचार सुधीर रघुवर तखन मनमे गूनि कऽ ॥

अछि उचित हिनके हम पठाबी जानकीक तलाश मे ।
घुनताह जाधरि पवनसुत ताधरि रहौ सभ आश मे ॥

ई सोचि रघुपति नाम खोद्यल सुभग कर-अरविन्द सँ ।
दय देल कपि के पाणि मे अँगूठी अपन आनन्द सँ ॥

कहलनि "पवन सुत ! हमर ई शुभ चिह्न अपने लय लिअऽ ।
पहिचानि जैती जानकी विश्वास मन मे कय लिअऽ ॥

कपिवर ! अहँक बल-बुद्धि लखि लच्छन लगे अछि नीक ई ।
आत्मा कहै अछि काज बनि जायत अहाँ सँ ठीक ई ॥

कपिश्रेष्ठ ! जाउ तलाश मे जनकात्मजा भेटथि जतऽ ।
कय भेंट दय ई मुद्रिका लय चिह्न जाउ अहाँ ततऽ' ॥

हनुमान केँ साहस बढ़ल प्रभु-मुद्रिका-स्पर्श सँ ।
प्रभु-पाद-पद्म-प्रणाम कय प्रस्थान कैलनि हर्ष सँ ॥

शुभ धारणा बनवैत मन मे झट बिदा भेलाह ओ ।
उर धारि रामक रूप केँ जय राम कहि चललाह ओ ॥

मन मे कहैत सुदास बनलहुँ आइ सँ अवधेश केँ ।
करबनि टहल, पालन करब मन सँ सकल आदेश केँ ॥

ओ कार्य हम पहिने करब स्वामीक छनि अनिवायं जे ।
नहि लेब किछु विश्राम जाधरि पूर्ण नहि हो कार्य से' ॥

कपि संग कऽ चललाह दक्षिण दिशि समुद्रक कात मे ।
पहुँचैत सब गेलाह दच्छिन प्रान्त बातक बात मे ॥

रहलाह सब भटकैत किछु दिन गिरि-विपिन-उद्यान मे ।
नहि पता सीताक लगलनि किछु कोनो स्थान मे ॥

हा ! ओ हकासल आ पिआसल बैसि कऽ मैदान मे ।
सोचै छला की ? हम करी सब आब अइ स्थान मे ।

तखने पहुँच गेला ततय सम्पाति शुभ संयोग सँ ।
चिन्ता हटा देलनि सभक व्याकुल छला जे शोक सँ ॥

देलनि पता ओ छथि सिया दशमुखक लंका नगर मे ।
जौ जा सकी तौ जाउ छिपि कऽ ओतय रातुक पहर मे ।

सुनितहि पवनसुत कहल निज वीरत्व केर स्वभाव सँ ।
हम जा सकै छी रामचन्द्रक मुद्रिकाक प्रभाव सँ ॥

दर्शन करब सीता-चरण केँ हम अहा ! निज नयन सँ ।
सन्देश रामक हम सुनेबनि मधुरतम प्रिय वयन सँ ॥

ताबत अहाँ सभ जलधि केँ अइ पार बैसल तौं रही ।
 बस आइ झट सीता सती केँ आनि दी जौं सब कही ॥
 सीता हेतो नहि लंक मे तौं जैब हम साकेत मे ।
 ताकब ततय हम पैसि कऽ सब देवगणक निकेत मे ॥
 जौं नहि कतहु भेटतीह तौं पकड़ब असुरपति-टीक केँ ।
 हम मारि थप्पड़ गाल मे कऽ देब दुर्गति थीक के ।

□

हनुमान केँ समुद्र-लंघन

ई बाजि सागर-पार करबा लेल फनला जोर सँ ।
 नभ-बीच नागक माइ सुरसा आबि गर्जल घोर सँ ॥
 बाजलि "ठहर तों भक्ष्य बन लेँ आबि ककरो श्राप सँ ।
 हम खैब तोरा आबि जो मुँह-बीच अपने-आप सँ ॥
 चल लाँधि कऽ हमरा जेमे वानर ! बुझै तों खेल छेँ ।
 संयोग सँ आहार बनि कऽ आबि सम्मुख गेल छेँ" ॥
 ई कहि अपन विशाल मुख कऽ अँल वेग प्रचण्ड सँ ।
 निज देह केँ कैलनि द्विगुण हनुमान ओकरा तुण्ड सँ ॥
 पुनि तिगुन कैलक ओ पवनसुत चारिगुन कैलनि अहाँ !
 सुरसाक दुस्तर दर्प दानव-दलन देलनि द्रुति ढहा ॥
 कपि-रूप लखि ओ अधिक मुँह केँ पैघ कैलक अपन जौं ।
 लघु-रूप बनि मुँह मे टर्हाल बाहर भेला शिव-सुवन तौं ॥
 सन्तुष्ट भऽ सुरसा कहल "हे सुकपि ! अहाँ सुयोग्य छी ।
 रघुवीर-कार्यक सिद्धि मे केवल अहींटा योग्य छी ॥
 सन्देह छल सम्पन्न होयत की ? अहाँ सँ काज ई ।
 तँ छल परीक्षा-मात्र, कहबा मे अहाँ सँ लाज की ?
 आगू बढ़ू निर्भीक भऽ रूकू कतहुँ नहि बीच मे ।
 रोकक जे चेष्टा करत से फँसत निश्चय कीच मे" ॥
 रुकलाह नहि, बढ़लाह पुनि हनुमान कपिवर साहसी ।
 आकाश-मग मे एक अद्भुत सिहिका छल राक्षसी ॥

छाहरि पकड़ि गति रोकि देलक एक छन हनुमान केँ ।
मन मे कहल हनु रोकि के ? देलक पुनः नभ-यान केँ ॥

देखल निशाचर एक अछि स्थिर जलधि-मझधार मे ।
छायाक ग्राही थीक कौने मुँह विचित्र प्रकार मे ॥

केलनि अपन तन संकुचित हनुमान बुद्धि विचार सँ ।
झट सिंहिका-मुख पैसि चिरलनि हृदय निज नख-धार सँ ॥

बाधा बिविध केँ भेलि कैलनि हनु प्रवेश विदेश मे ।
लगलाह ताकय जानकी केँ गुप्त चूनल भेष मे ॥

सीता-हरण उपरान्त रावण रहै छल भय-भीति सँ ।
लंकाक तँ रक्षाक कयने छल प्रबन्ध सुरीति सँ ॥

सब काल पहरूदार पहरा पर उपस्थित शस्त्र लऽ ।
के ? आबि जायत कोम्हर सँ चौकल रहै छल अस्त्र लऽ ॥

कविवर पहुँचला साँझ खन लंकाक उत्तर द्वार मे ।
लंकाक रक्षा-लेल राक्षस ठाढ़ एक कतार मे ॥

क्यो देखि नहि राक्षस सकल पैसैत श्री हनुमान केँ ।
मन मे जपैत रहैथ हनु शुभ नाम दयानिधान केँ ॥

कैलनि विचार 'अहा ! प्रथम माताक शुभ दर्शन करी ।
चिन्तित हेती बैसलि कतहुँ से बूझि आगू पग धरी ॥

देखैथ नहिं क्यो तेहन छोपल हम बनाबी रूप केँ ।
आयल छलय क्यो राति मे केवल कहय सब भूप केँ ॥

ताकी सिया केँ रहय सूतल जखन धरि सब चैन सँ ।
दर्शन प्रथम माताक कयली अखन अपना नेन सँ ॥

प्रायः हेती बैसलि कतहुँ एकसरि सिया एकान्त मे ।
अथवा हेती डूबल कतहुँ सिय शोक-सागर-प्रान्त मे ॥

लगलाह ताकय जननि सीता केँ सकल स्थान मे ।
बाहर तथा भीतर भवन आँगन तथा दलान मे ॥

धैलनि विलाइक वेष दुकला रावणक प्रति गेह मे ।
देखथि कतहुँ सुकुमारि अति पड़ि जाथि ओ सन्देह मे ॥

प्रति महल के प्रति खंड मे कपि घूमि तकलनि सीय के ।
 नहि किन्तु पाबथि कतहुँ सीता-सदृश शुचि रमणीय के ॥
 देखल कतहुँ सुन्दरि सजलि सुवरण सुभूषण सँ अली ।
 देखल कतहुँ रमणी पुरुष-सँग रमण कऽ सूतलि छली ॥
 क्यो नारि निज युग पाणि उर पर राखि सूतलि नोन्द सँ ।
 क्यो एक-दोसर सँ सटल बान्हल भुजा-अरविन्द सँ ॥
 देखल अनेकों कामिनी के हँटल आँचर अंग सँ ।
 क्यो वसन-रहिता छथि लजायल भेल मानक भंग सँ ॥
 सुमुखी उकल छल सजलि सोलह माँति के शृंगार सँ ।
 प्रेमीक संग प्रेमक प्रदर्शन-पटु सकल प्रकार सँ ॥
 मोहित पुरुष के छल कियो कयने सुप्रेमालाप सँ ।
 क्यो नारि पति लग आबि रहली सूति जनु चुपचाप सँ ॥
 ककरो मुखक छवि छल कहैत हँसैत सतत रहैथ ओ ।
 ककरो मुखाकृत कहनि दुसनी नारि विशेष लगैथ ओ ॥
 सूतलि कियो बक-बक करै छथि भाँग पीने छथि जेना ।
 पति सँ झगड़ि क्यो आबि सूतलि होथि लागथि छथि तेना ॥
 लंकेश अनने छल हरण कऽ नारि बहुतों देश सँ ।
 सब नारि बन्दी भेलि छल लंका पतिक आदेश सँ ॥
 कपिवर कहल 'कखनो न रहती सिय दशानन कहल मे ।
 नहि सूति रहती एहि तरहे मातु लंका-महल मे ॥
 उद्दण्ड-उच्छृंखल त्रिया के लंक रहबा योग छै ।
 निज पति पसन्द ने छैक तकरे लेल लंका भोग्य छै ॥
 सीताक सुन्दर रूप-चालि-स्वभाव हमरा ज्ञात जे ।
 नहिं षोड़शांशो तकर कोनो हम पबैं छी बात से' ॥
 तकलनि सकल गृह-महल-वाग-तड़ाग उपवन भवन मे ।
 नहिं पाबि वैदेही-जननि के जखन कोनो सदन मे ।
 लगला विचारय सिय बिछुड़ि छथि गेल प्रभु श्री राम सँ ।
 एहना परिस्थिति मे ने कथमपि रहि सकथि आराम सँ ॥

सुतती ने भोजन कऽ सकै छथि दशमुखक आवास मे ।
 शृगार केँ तौ बात की ? बैसलि हेती उदास मे ॥
 सुर-असुर कतबो होथि कयो सुन्दर गुणी-धनवान की ?
 दोसर पुरुष-संग मे ने रहि छन भरि सकै छथि जानकी ।

गज-वाजि-गर्दभ-वृषभशाला ताकि थकलहुँ हम एतऽ ।
 तकलहुँ समग्र कुठाम कथमपि हम ने जा सकितहुँ जतऽ ॥
 सीताक छाया-मात्र हम नहिं कतहुँ किछु देखैत छी ।
 हेती कतहुँ कनैत-हिचकति किन्तु किछु न सुनैत छी ॥
 अनुमान होइछ जानकी जीबैत नहिं छथि लंक मे ।
 कैलक कियो हत्या अधम जे पढ़ैत पापक पंक मे ॥

सीता-हरण कऽ मूढ़ ओ अगुतैल भागल हैत जे ।
 श्री रामचन्द्रक वाण सँ वचि कय कतय ओ जैत से ॥
 अछि किन्तु अन्देशा अधिक लय गेल हो आकाश सँ ।
 सुविशाल सागर देखि मूर्च्छित भेल होथि हुताश सँ ॥
 निष्प्राण बूझि कठोर रावण फेँकि देने हैत जाँ ।
 निश्चर कियो झट दय जलधि सँ छानि कै लऽ जैत तौ ॥

ओ होथि परम दयालु रखने होनि अपना गेह मे ।
 जाँ निर्दयी ओ हैत पीड़ा दैत हेतनि देह मे ॥
 लखि राक्षसीगण केँ सिया डरि गेल होथि लगैछ जे ।
 निज प्राण देने होथि सीता त्यागि बूझि पढ़ैछ से ॥

माताक दर्शन सँ तखन वंचित हमहुँ रहि जैब की ?
 'सीता-पता लागल' सुखद सम्बाद कहि नहिं पैब की ?
 दर्शन बिना कयने सिया केँ घूमि कऽ हम जैब जाँ ।
 घूमक अवधि बीतल अवश्ये दण्ड बड़का पैब तौ ॥

हम मुँह देखेबनि की ? कहब सुग्रीव बानर-राज केँ ।
 हम अधम, नहिं जग-बीच रहलहुँ आब कोनो काज केँ ।
 पुछताह बानर-वर्ग लंका जाय की कैलहुँ अहाँ ।
 'आशा' लगीने सब छलहुँ, सुधि कहब सियकेँ ध्रुव अहाँ ॥

हा ! हम तबन की देव उत्तर पूछि बैसथि कैल की ?
 श्री राम के कहबनि कथी ? नहि अछि फुरैत बतैब की ?
 सीताक दर्शन भेल नहि कहबनि अमंगल बात जौ ।
 जीवित कदापि ने रहि सकै छथि राम प्रभु पल-मात्र तौ ॥

प्राणान्त प्रभु के देखि लछुमन त्यागि देता प्राण के ।
 ई सुनि रिपु-सूदन भरत बचताह ? बिनु भगवान के ॥
 एवम्प्रकारे रघुकुलक भऽ जेत निश्चय नाश टा ।
 सुग्रीव-अंगद-संग वानर-वंश हैत विनाश टा ॥

तैं सुधि सिया के बिनु लगौने जाइ नहि, लंके रही ।
 श्री जानकीक तलाश में दिन-राति भरि घुमिने रही ॥
 ई सोचि पुनि बजलाह हनु 'बैसल रही ने हुताश भऽ ।
 तकलहु जतय नहि ततय ताकी अधिक मनमे आश कऽ ॥

उत्साह कथमपि त्यागि नहि करबाक चाही जानि कऽ ।
 लागल रही सत्कर्म मे होयत सफलता मानि कऽ ॥
 तकलनि सघन वसवारि-बाढ़ी सब तड़ाग इनार मे ।
 बहु तार-विटप-कतार एवं धारसभक किनार मे ॥

लंकाक कोनो भाग नहि बाँचल रहल कनि-दृष्टि सँ ।
 सीताक दर्शन ले विनय सदखन करथि निज इष्ट सँ ॥
 लगलनि पता नहि किछु जखन शंकर-सुवन हनुमान के ।
 लगला करय अनुमान धऽ कऽ ध्यान श्री भगवान के ॥

क्यो छथि अवश्ये एहि गृह मे भक्तवर भगवान के ।

जाकऽ प्रथम दर्शन करी हम एहि बड़ सज्जन के ॥

छथि भक्त ई भगवान के चरणाम्बुजक आशक्ति सँ ।

लागत पता सीताक निश्चय एहि सज्जन व्यक्ति सँ ॥

उठले छला तखने विभीषण भक्त रामक नाम लऽ ।

हनुमान-सम्मुख ठाढ़ भऽ गेलाह सनम्र प्रणाम कऽ ॥

पूछलनि “अहाँ के थिकहुँ ? कृपया अपन परिचय तो दिअऽ ।

जे काज सँ अयलहुँ एतय स्पष्ट बाजि सुना दिअऽ ॥

ओ भक्त-भक्तक मिलन अनुपम केहन से कहि सकत के ?

हूनूक उर मे हर्ष कतबा भेल वर्णन करत के ?

“हम राम के सेवक थिकहुँ” कहलनि बचन प्रिय मधुर मे ।

“हम अँल छी सीताक सुधि लय एहि लंका नगर मे ॥

सुग्रीव-मंत्री थिकहुँ, हनुमत नाम सँ प्रख्यात छी ।

रामक प्रियाक तलाश मे हम काल्हि सँ अपस्यात छी ॥

नहि भेटि रहलो कतहुँ सीता घूमि-घूमि तकैत छी ।

कृपया बता दी हे सुजन ! जौ पता अहाँ जनैत छी ॥

सज्जन समर्पण करथि सम्पति निज सहर्ष समाज मे ।

लगबैथ तन-मन-बुद्धि-बल के लोक-हितकर काज मे ॥

पर दुख-निवारण-लेल नित लागल रहथि प्रयास मे ।

प्रभु-भजन गाबथि रहथि नित हरि-भक्त के सहवास मे ॥

ई सुभग लक्षण पाबि रहलहुँ अछि अहाँसन व्यक्ति मे ।

हम नहि कमी किछु देखि रहलहुँ राम-प्रति-अनुरक्ति मे ॥

देलनि बता सुन्दर अशोकक वाटिका मे छथि सिया ।

“ओ वाटिका अछि रावणक सब वाटिका सँ अति प्रिया ॥

जायब ततय अहँ कोन तरहें गुप्त पथ बतबैत छी ।

हमही की लंकेस्वर जनै छी मात्र सँह कहैत छी ॥

छै मार्ग कठिन तथापि अपने थिकहुँ रामक दास जौ ।

सहजहि पहुँच जायब अहाँ अछि प्रभु-कृपाके आश तो ॥

पथ-सूत्र भेलनि ज्ञात कपि केँ रावणक निज भ्रात सँ ।
ओ वाटिका मे पहुँचि पूछथि बृक्ष केँ हर पात सँ ॥

“छथि कतय बैसलि हमर पूज्या इष्ट देवी, दे बता ।
सब सँ निहोरा छी करैत सुवाटिका केँ हे लता !” ॥

शोभित मनोहर सुभग छल ओ वाटिका सब भाँति सँ ।
नव कमल सँ परिपूर्ण पोखरि विटप लागल पाँति सँ ॥

कोकिल समूहक काकली सँ छल कोलाहल पूर्ण ओ ।
छल पूर्ण बृक्ष विशाल नव फल-फूल सँ सम्पूर्ण ओ ॥

नाना प्रकारक विहग कलरव सतत करितहि छल जतऽ ।
ऋतुराज रहथि सदैव तत्पर निज निरीक्षण मे ततऽ ॥

बड़ सघन एक विशाल बृक्ष अशोक पर चढ़ि छोट भऽ ।
लगलाह ताकय कपि-प्रवर सबदिशि लता केँ ओट कऽ ॥

देखल ततय कपिवर विटप-तर नारिगण बैसलि छली ।
छथि मध्य मे चुपचाप बैसलि रहथि घेरलि मैथिली ॥

हनुमान केँ अनुमान भेलनि ऐह छथि श्री जानकी ।
भार्या बना रखताह हूबरि नारि केँ भगवान की ?

पति-प्रेमिका साध्वी सती केँ ऐह लक्षण ह्वैछ की ?
बिछुड़लि स्वपति सँ नारि केँ अहिना रहक पढ़ैछ की ?

श्री राम चर्चा सिय-स्वभावक दास सँ कैने छला ।
तहिना लगै छथि हूबहू सब भाँति सीता निर्मला ॥

भूषण खसौने रहथि जे से नहि एतय छनि अंग मे ।
लक्षण मिलै अछि ज्ञात अछि जे जानकीक प्रसंग मे ॥

दुर्वल अखन भऽ गेल छथि प्रायः सिया उपवास सँ ।
व्याकुल-व्यथित छथि भेल हा ! अति भूख एवँ प्यास सँ ॥

छथि दुखित पत्नी पति-विना पति व्यथित छथि पत्नी विना ।
जहिना विना शशि राति, चन्दा मन्द अति रजनी विना ॥

आविष्ट छथि पीअर पुरान मलीन रेशम वसन सँ ।
सन्तप्त छथि सीता निशाचरि वर्ग केँ कटु वचन सँ ॥

मुखपर रहनि बहैत नोरक धार सदिखन नयन सैं ।

श्री राम स्वपतिक नाम कखनो बोल निकलनि वयन सैं ॥

विश्वस्थ भऽ मन मे कहल कपि ऐह ध्रुव सीता थिकी ।

नहि रहथि परिचित पूर्व सैं तैं कोन विधि बतियाथि की ?

सीत'-चरण पर भूकि गेलनि माथ श्री हनुमान के ।

'आयब सफल भऽ गेल' बुझलनि अति कृपा भगवान के ॥

देखल मुदा सीताक स्थिति सोच मे ओ पड़ि गेला ।

घेरलि निशाचरि-वर्ग सैं लख सीय के शोकित भेला ॥

बजला "लगै अछि छथि विधाता बड़ विवेक विहीन ओ ।

सीता-सदृश-साध्वी सती सैं हर्ष लेलनि छैन ओ ॥

के ? हैत नहि क्लेशित दशा लख हिनक हा ! संसार मे ।

सिय-सन सुशीला-शीलवन्ती हैत के ? व्यवहार मे ॥

श्री जानकी-पति रहथि व्याकुल एहन महिला लेल तैं ।

बौआति छथि वन-वन सतत पागल-जकाँ भऽ गेल तैं ॥

अर्द्धांगिनी सीता-बिना जीअब असम्भव राम के ।

सुख-प्राप्त कथमपि भऽ सकनि नहि सीय-बिनु सुखधाम के ॥

त्रैलोक के सद्गुण सकल जो एक दिशि राखथि कियो ।

सीताक केवल एक गुण-सम हैत नहि तौलथि कियो ॥

ई धन्य छथि पति-प्रेम-कारण राजसुख त्यागल अहा !

रहलो विपिन मे कत वरष, छै पशु जतय हिंसक महा ॥

पति-संग रहने दुखक अनुभव कैल नहि किछुओ मुदा ।

स्वामीक प्रति सानल सुधा सैं शब्द सुनबथि सुखप्रदा ॥

कतबो सराहब सीय-गुण के पार कथमपि पैब की ?

माताक दर्शन त्यागि जायब जन्म भरि पछतैब की ?

बुधिआर वानर-वीर कपि मन मे विचार करैत ई ।

बैसल अशोकक गाछ पर मन-मुदित कऽ सोचैत ई ॥

सीता-रावण-विवाद

तखने निशिक अन्तिम पहर मन्दोदरी के संग कऽ ।

पहुँचल दशानन सिय-निकट, रहली सिया अपचंग भऽ ॥

लखि ढंग रावण के विचित्रे सिय-दशा भेलनि तेना ।

पवनक प्रचण्ड प्रवाह सँ कदलीक काँपब हो जेना ॥

झट बाँहि सँ छाती छिपा कऽ पेट अपना जाँघ सँ ।

सिय मोड़ि ठेहुन बैसि रहली दाबि आँचर काँख सँ ॥

अति दीन-दुखिया नारि-सन ओ छथि लगेत अनिन्दिता ।

बिनु पानि-पवन-प्रकाश के होइछ जेना मूर्च्छित लता ॥

यद्यपि सदाचारी प्रतिष्ठित वंश के कन्या थिकी ।

धार्मिक सुसंस्कृत उच्च कुलक पुतोढ़ बड़ धन्या थिकी ॥

तद्यपि लगे छथि नोच दूषित वंश मे उत्पन्न ई ।

असहाय त्यागलि गेह सँ छथि बनल बहुत विपन्न ई ॥

करजोड़ि तखन करै छली सिय प्रार्थना कुलदेव सँ ।

रावण निशाचर संग मारल जाय झट पतिदेव सँ ॥

ताही अवस्था मे असुरपति सीय सँ लागल कहै ।

ओ गर्व सँ गर्वित महा अरु काम सँ मातल रहै ॥

“हम आबि गेलहुँ अछि स्वयं असुरारि-पति लंकेश छी ।

भय नहि करू निर्भय रहू हमरा कहू अछि क्लेश की ?

सुन्दरि ! अहाँ दुख कखन धरि ई सहब अति सुकुमारि छी ।

हमरा पसंदक छी अहाँ तँ हमर परम पियारि छी ॥

मन सँ अहाँ के चन्द्र-वदनी ! हम अधिक चाहैत छी ।

सुमुखी ! अही के आब पटरानी जकाँ मानैत छी ॥

हँसि कऽ कने बाजू बचन प्रिय ताकि हमरा दिशि प्रिये !

आदर करू हमरा हृदय सँ आबि बैसू मम हिये ॥

यावत अहाँ हमरा संगे बतियैव नहि अति स्नेह सँ ।

तावत बूझू तँ हमहुँ नहि भीड़ब अहाँ के देह सँ ॥

हमरा सदृश प्रेमीक सिय ! अपमान कियैक करैत छी ।

उपवास-प्यासलि रहि सदैव झखैत-कनैत रहैत छी ॥

त्रुटि नहि पड़त सुख-भोग मे भार्या हमर बनि जैब जौं ।

निज तन सकल सुवरण-सुभूषण सँ सजल नित पैब तौं ॥

जे रत्न हम छी जीति कऽ अनने अनेको ठाम सँ ।

से सब पठा देबनि तखन हम अहिक जननी-नाम सँ ॥

हमरा-सदृश धनवान समरथ-चतुर के ? संसार मे ।

सम्पत्ति विविध अपार अनुपम भरल अछि भंडार मे ॥

सीते ! अहाँ के जाहि बस्तुक जखन इच्छा हैत जे ।

अविलम्ब सम्मुख अहाँक ततछन पहुँचि निश्चय जंत से ॥

अहं भाँति-भाँतिक भोग भोगब दिव्य भोजन-पान कऽ ।

सन्तुष्ट याचक वर्ग के कऽ देब मन भरि दान दऽ ॥

जे यज्ञ चाहब करय तखने जंत भऽ निर्विघ्न ओ ।

करता प्रशंसा राम, लछुमन, भरत अरु शत्रुघ्न ओ ॥

चाहब अहाँ जौं करय तीर्थाटन सकल संसार मे ।

छर्मथि पावनि-व्रत करी नित रही पूजाचार मे ॥

स्वीकार अछि जे कहब तखने देब इच्छा पूर्ण कऽ ॥

जकरा कही तकरा धनी कऽ देब धन सम्पूर्ण दऽ ॥

जे शत्रु होथि अहाँक तिनकर देब मद के चूर्ण कऽ ।

लायब पकड़ि कऽ ओहि अरि के नारि-धन सम्पूर्ण लऽ ॥

मिथिला-अवध के सदन बनबा देब सभटा सोन सँ ।

निर्भीक सम्मुख भऽ सिये ! हमरा कहू तौं मोन सँ ॥

सुखभोग के भोगनि अहाँ के हम सिये ! मानैत छी ।

हमरा सदृश समरथ सँगे रहने अहाँ शोभैत छी ॥

प्रत्यक्ष सम्मुख देखि हमरा तखन की ? सोचैत छी ।

अति दीन निष्ठुर राम के संग दुख कियै भोगैत छी ॥

श्रीहीन भऽ वन-वन घुमैत-फिरैत छथि नित राम ओ ॥

निज राज्य सँ वञ्चित अखन छथि गेल भऽ बेकाम ओ ॥

अनुमान हमरा ह्वेछ ओ जीबैत प्रायः नहि हेता ।
जौ होथि जिबितो तौ अहाँके पाबि नहि सकता पता ॥

तैं हम कहै छी आश हुनकर त्यागि हमरा लग रहू ।
प्राणेश्वरी बनि परम-प्रियतम प्रेम सँ हमरा कहू ॥

हम तैं अहाँ के आब सुन्दरि ! कहब जीवन-संगिनी ।
अन्तःपुरी के सकल सुन्दरि बनत अहि क खवासिनी ॥

लक्ष्मीक सेवा जाहि तरहें करथि नित सुर-गायिका ।
ताही तरह सँ टहल करती सकल महलक नायिका ॥

त्रैलोक मे अतुलित प्रभावक घाक हमरा व्याप्त जे ।
धनपति कुवेरक सदृश धन हमरा अखन अछि प्राप्त जे ॥

से हैत समटा अहि क, अहँ बनि जब सबहक स्वामिनी ।
चाही अधिक की आब बाजू तैं कृपा कऽ भामिनी !

विरही बनल बौआति वन मे विकल छथि जे वाम लै ।
नहि कऽ सकल रक्षा अहँक जे ताहि दुर्बल राम लै ॥

घर सँ निकालल गेल अछि असहाय भऽ घबड़ल ओ ।
हा ! रोग-शय्या पर पिता के त्यागि भागि पड़ल ओ ॥

जे अछि एहन अब्झ तकरा लेल कियै ? कर्नत छी ।
कहियो अहाँ के डेबि कऽ राखत ? भरोश करैत छी "।

एकम्प्रकारे लंकपति बाजल अनेक प्रकार सँ ।
अपना जनैत सुरारि नहि चूकल कोनो उपचार सँ ॥

अपना सदृश संसार मे किनको ने तो लगबैत छे ।
तै साधु-मनि-तपसी-सृजन के सतत तो सतबैत छे ॥

अभिमान के सर्वोच्च चोटी पर पहुँचि ऐँठैत छे ।
हा ! वेद पढ़ि सद्धर्म सभटा अखन तो बिसरैत छे ॥

ई तँ स्वयं विचार, भेलौ बुद्धि ताँहर भ्रष्ट जौ ।
अति शीघ्र स्वजन-समेत छौ होयबाक तोरा नष्ट तौ ॥

मनके विषय सँ मोड़ि ईश्वर दिशि लगे मे नहि कदा !
तौ बूझ मन चंचल विषय-दिशि लागि जयतौ सर्वथा ॥

रुचिगर विषय-चिन्तन-संगे आसक्ति हेतौ जाहि मे ।
आसक्ति सँ कामक उदय भऽ जाइछै घ्रुव ताहि मे ॥
पुनि कामना मे विघ्न पड़ने क्रोध अधिक बढ़ैत छै ।
क्रोधाग्नि सँ अविवेक एवं मूढ़ता उपजैत छै ॥

अविवेक सँ स्मृति सुगुण के तुरत देतौ नष्ट कऽ ।
स्मृति जखन रहतौक नहि तँ बुद्धि जेतौ भ्रष्ट भऽ ॥
हा ! तखन हेतौ दुर्दशा की ? से स्वयं अनुमानिले ।
ई वचन केवल हमर नहि श्रुति-वाक्य एकरा जानिले ॥

परिवार-संग सदैव सकुशल जौ रहक चाहैत छे ।
तौ ध्यान दे हमरा कथन पर नीक जौ मानैत छे ॥

तँ आइ अखने सुपथ पर चलबाक प्रण तौ ठानिले ।
पर नारि के तजि निज प्रिया के प्रेमिका-सम मानिले ॥

रहतौक मन मे पाप तँ करबे न प्रभु के प्राप्त तौ ।
दुष्कर्ममय कुविचार के कऽ दे अखन समाप्त तौ ॥

हम उच्चकुल के थिकहुँ कन्या उच्च कुल मे अँल छौ ।
पतिव्रत-परम पावन सुव्रत-सीमाक बीच घेरैल छौ ॥

पति-प्रेमिका के लल जे निन्दित कोनो दुष्कर्म छै ।
से करथि नहि स्वामी-प्रिया जे नारि लै अपकर्म छै ॥

अधमेश ! हमरा स्वपति-भक्तिनि नारि के सम बूझ तौ ।
सचमुच एहन नारीक आगू अति लगै छै तुच्च तौ ॥

वरु हो अनादर सत्पुरुष सँ चरित जिनकर नीक हो ।
सम्मान नहिं चाही पतित सँ चालि जिनकर नीच हो ॥

ओ छथि प्रशंसा पात्र जे सहि सकथि अश्व-लथार केँ ।
निन्दा करनि सब लोक गदहा पर चढ़ल असवार केँ ॥

सम्मान नहिं चाहैत छी तोरा समान कुपात्र सँ ।
सानन्द अपमानो सहब हम राम-सन सद्पात्र सँ ॥

केवल करय चातक ग्रहण स्वातीक वर्षा-बुन्द केँ ।
छथि होइ मुदित चकोर केवल गगन मे लखि चन्द केँ ॥

नाचथि मयूर जनैत छेँ नहिं देखि वारिद-श्याम केँ ।
तहिना प्रसन्न यथार्थ होयब पाबि प्रियतम राम केँ ॥

की वेद पढ़ि विद्वान भेलेँ ज्ञान नहिं भेलौक ई ।
धिक्कार तोरा बुद्धि केँ छी लोक सभ कहतौक की ?

सुन ज्ञान, जकरा मे हृदय सँ प्रेम केन्द्रित कैल जे ।
ई बूझ तकरे नित्य जीवन-संगिनी भऽ गेल से ॥

भुतियैल-सन अज्ञान बनि भ्रम मे अखन तों पड़ल छेँ ।
रावण ! दुराग्रह पर एना तें अखन धरि तों अड़ल छेँ ॥

अखनो संभरि जो समय संभरक छौ अखन बाँचल कने ।
सन्मार्ग पर चलबेँ तुरत बनबेँ सदाचारी भने ॥

प्रभ राम प्रति दुर्वचन हमरा व्यथे तों सुनबैत छेँ ।
हा ! भूठ-निन्दा सत्पुरुष केँ तोँ कियैक करैत छेँ ॥

सुन, ओहि पुरुष महान केँ सन्दर्भ मे बतबै छिऔ ।
छनि स्वजन जिनक अपूर्व सुन्दर सैह हम सुनबै छिऔ ॥

घोरज पिता छनि, जिनक जननी छनि छमा, भगिनी दया ।
सुत सत्य, भ्राता मत्तक संयम, परक हित लय सब क्रिया ॥

भूतल रहनि शय्या जितक, नहि बस्तु किछु लय लालशा ।
भोजन जिनक छनि ज्ञान तिनका भऽ सकनि नहिं दुर्दशा ॥

अद्भुत स्वजन छनि एहन वन मे राम केँ परिवार मे ।
तोँ दे बता अनुपम एहन नर के ? अखन संसार मे ॥

जो होनि स्याही गिरि-सदृश सागर-सदृश मसि-पात्र हो ।
 सुर-विटप-शाखा कलम संग मे लिपिक लाखो छात्र हो ॥

भू-पत्र पर जो सर्वदा लीखथि रहथि श्री शारदा ।
 नहि लीखि सकती प्रभुक गुण सम्पूर्ण रूपे ओ मुदा ॥

तैं हम कहैत छिऔक आबहु नीक तरहे सोचिले ।
 लोखल-पढ़ल छे शान्ति मन सँ खूब सोचि-बिचारिले ॥

अपराध निज स्वीकार कर जो शरण मे रघुनाथ के ।
 जा कऽ छमा तों मांग सविनय पेर पर धऽ माथ के ॥

करथुन छमा रघुवर दयानिधि छथि छमा के शील ओ ।
 शरणागतक रक्षा करै मे नहि कनेको ढील ओ ॥

शिव-भक्त छे शिव राम के प्रिय तैं उपाय कहै छियौ ।
 हम छी छमाशीलक प्रिया तैं युक्ति ई बतबै छियौ ॥

अपना प्रिया सँ नहि रह्य सन्तुष्ट जग मे पुरुख जे ।
 भऽ जाय ओ लम्पट-दुरावारी-अधर्मी प्रमुख से ॥

धन-बल-विभव के गर्व छी तों बूझ पढ़ले व्याधि मे ।
 दुष्मार्ग पर चल रहल छे खसबे अवश्ये खाधि मे ॥

कह तों अनेको नारि सुन्दरि के छिपौने छे कियै ?
 सुरवृन्द सँ नित टहल करबावैत दशमुख ! छे कियै ?

निर्दोष नृपगण छथि कियै ? हा ! बन्द करागार मे ।
 ई छे कनय लोखल नियम नृप-नीति के व्यवहार मे ।

निर्दोष के दी दण्ड दोषी के मुदा नहि दण्ड दी ।
 ई बुद्धि जकरा छैक से शासक विमूढ़ प्रचण्ड छी ॥

होमय खिधांस विशेष लगतौ अटल कलंक कपार मे ।
 निन्दित महा सबदिनक लय भऽ तों जेबे संसार मे ॥

सब भर्त्सना रहतौ करैत सदैव तोरा काम के ।
 थुकतौक सदिखन लोकसभ लऽ नित्य तोरा नाम के ॥

निज सम्पतिक उपयोग कयले नहि परक उपकार मे ।
 पावन चरित श्रीराम-सन नहि छौक किछु आचार मे ॥

ब्राह्मण जखन छे तखन दानवता कियैक विचार मे ।
पढ़ि वेद विधिवत मन कियै लगलौक दुष्टाचार मे ॥

रखले सकल रहतौक धन भण्डार सुन्दर धाम मे ।
पढ़ले बनल रहतौक कोठा आदि ठामक ठाम मे ॥

घरनी दखखा लागि छाती पीटतौ बेजान मे ।
परिजन-स्वजन शव लऽ पहुँचतौ कान्ह पर स्मशान मे ॥

हा ! नोचि लेतौ पुत्र-पुत्री सकल भूषण देह सँ ।
तन के चितापर राखि देतौ बोझि लकड़ी स्नेह सँ ॥

दऽ आगि मुख मे तोर के खसबैत रहतौ नयन सँ ।
जीवन भरिक करनीक वर्णन करय लगतौ वचन सँ ॥

क्यो संग नहि जयतौक हा ! देहान्त के उपरान्त मे ।
कर्तव्य के अमुसार लेबे जन्म पुनि मरणान्त मे ॥

हम देखि रहलहुँ अछि विनाशक काल तोहर अँल छौ ।
तो बूझिले रावण ! अखन मृत्युक समय लगिचैल छौ ॥

मऽ जाइ छै विपरोत सभके बुद्धि नाशक काल मे ।
नहि वचन नीक सोहाइ जे पढ़ि गेल कालक गाल मे ॥

जा कऽ कतहुँ रहबे नुका आ युद्ध कर रण-खेत मे ।
प्रभु राम-शर शिर काटि दश के फेंकि देतौ रेत मे ॥

सीताक शिक्षाप्रद वचन लगलैक कटु लंकेश के ।
लागल तखन छाँटय अपन अभिमान युत उपदेश के ॥

“हे मानिनी ! हमरा अहाँ सामान्य नर लगबैत छी ?
हम वेदविद विद्वान के की जानि शिक्षा दैत छी ?

अनुनय करैछ विशेष रूपे पुरुष कोनो नारि सँ ।
सविनय सिनेहक भीख माँगय परम प्रेमी प्यारि सँ ॥

तौ के ! निठुर नारी बनत कहु आइ धरि सुनलहुँ कतौ ?
हठ धर्मिणी हम नहि अहाँ सन देखि हम रहलहुँ कतौ ॥

किछु नहि गुदानइ छी अहाँ हमरा सदृश लंकेश के ।
उलटे अहाँ लगलहुँ सुनाबय ज्ञानमय उपदेश के ॥

कैलक अनादर हमर जे, नहि रहल से जीवित कियो ।
 नहि मानलक लंकापतिक आदेश से अछि नहि कियो ॥
 आश्चर्य अछि बाँचलि कोना छी अखन धरि सीते ! अहाँ ।
 नहि क्रोध अछि उपजैत तैं बाँचलि अखन धरि छी अहाँ ॥
 रथ केँ कुपथ दिशि देखि सारथि अश्व केँ रोकथि जेना ।
 अछि प्रेम मन मे अहँक प्रति ओ क्रोध केँ रोकय तेना ॥
 हम किन्तु छी देखैत नहि छोड़ब अहाँ हठधर्म केँ ।
 तैं हेतु आब कृपाण सँ बध करब जानि कुकर्म केँ ॥
 लंकापतिक वकवास अनुचित बोल सीता सनि कऽ ।
 किछु वाक्य मे देलनि सिया संक्षिप्त-उत्तर चूनि कऽ ॥
 “रे नीच ! निश्चर ! छौक नहि तोहर हितैषी लंक मे ।
 जे रोकि रखतौ जा रहल छेँ अगम पापक पंक मे ॥
 तोँ मारबेँ की ? अमर आत्मा केँ जखन अकाट्य ई ।
 निश्चल सनातन सर्वगत अति गोप्य नित्य अदाह्य ई ॥
 तजि एहि तन केँ बसत आत्मा फेर दोसर देह मे ।
 ममता तखन राखब कथी किछु काल देहक नेह मे ॥
 मस्तिष्क मे ढुक्लौक नहि वर्णित विषय ई वेद केँ ।
 नहि ब्रह्मि मे अयलौ अमर आत्मा-शरीरक भेद केँ ॥
 धन-जन-विभव-सामर्थ केँ अभिमान-गिरि पर चढ़ल छेँ ।
 लक्षण लगै अछि अखन निश्चय पतन-दिशि तों बढ़ल छेँ ॥
 ई नहि जनै छेँ तजथि नहि सज्जन कदापि सुधर्म केँ ।
 जहिना अधर्मी तजथि नहि कथमपि अधर्म-अकर्म केँ ॥
 जड़ि मे भुजंगक बास वानर बसथि शिखरक छोर पर ।
 पक्षी बसथि शाखाक ऊपर भ्रमर कुसुमक कोर पर ॥
 सकलाङ्ग सेवित दुष्ट सँ चानन तजथि ने सुगन्ध केँ ।
 दुष्टक उपद्रव सँ ने सज्जन तजथि सत-सम्बन्ध केँ ॥
 रे अधम ! दुर्गति अपन करबा लेल उद्यत भेल के ?
 तोरा-सदृश विद्वान भऽ दुष्कर्म पर अड़ि गेल के ?

प्रत्येक प्राणी के जगत मे भिन्न-भिन्न स्वभाव छै ।
 पति-प्रेमिका के स्वपति-प्रति अति प्रेम-श्रद्धा भाव छै ॥
 छथि इन्द्र के पत्नी शची, शिव के प्रिया भामिनि उमा ।
 ब्रह्माक वीणापाणि जहिना विष्णु के प्यारी रमा ॥
 तहिना थिकहुँ हमहूँ कृपानिधि राम के प्रिय प्रेमिका !
 ई युगल जोड़ी बनल छै शाश्वत परम सुखदायिका ॥
 जो बुद्धि किछुओ बचल छी तौ नीक तरहें सोचि ले ।
 रघुवीर-रामक तुल्य अपना के कने तौ तौलि ले ॥
 खरगोश तौ नर-सिंह-रामक संग लड़बे कह कोना ।
 तौ रे अनायें ! लगैत छै पवनक निकट मच्छर जेना ॥
 तोरा-सनक पापी असुर के भ्रम कऽ दीतहुँ मुदा ।
 तप-योग-बल नहि क्षीण हो अछि ध्यान मे हमरा सदा ॥
 तौ व्यर्थ अपना बुद्धि-बलक बढ़ाइ कय बतबैत छै ।
 बड़ पैघ वैभवशील अपना के बहुत लगबैत छै ॥
 से शक्ति जो रहितौक तौ चोरी एना कैले कियै ?
 श्री राम-लखन-परोक्ष मे सिय-हरण कऽ अनले कियै ?
 ओ शक्ति तोरा छौक नहि जे छनि उपस्थित राम मे ।
 तौ तौ कदापि ने जीत सकबे राम-संग संग्राम मे ॥
 ई विधिक रचना कैल छनि सब आब हम बूझैत छी ।
 तोरा विनाशक हेतु वातावरण बनल देखैत छी ॥
 रे शठ ! हमर प्रग आब अन्तिम सूनिले निज कान सँ ।
 नहि आब कहबौ किछु तोरा-सन मूढ़तम अज्ञान सँ ॥
 दशकंठ ! पड़त कृपाण तोहर मात्र हमरा कंठ मे ।
 अथवा प्रभुक कर-कमल लागत जानकी के कंठ मे ॥
 स्वीकार कर शिर हमर समुदित चन्द्रहास ! कृपाण तौ ।
 अनुरोध तोरा सँ हमर अछि अखन लऽ ले प्राण तौ ॥
 सीता-बचन छल मर्मयुत चुभलैक बड़ लंकाश के ।
 जो रोक नहि सकलक निरुरतम अपन क्रोधावेश के ॥

नहि कऽ सकल रावण सहन सीताक बातक मारि के ।
सीताक गरदनि पर उठौलक तखन ओ तरुआरि के ॥

नहि रहल गेलनि देखि ई मन्दोदरी बुधियारि के ।
झट रोकि कऽ लेलनि बचा सीता सती सुकुमारि के ॥

रावण कृपाण सँभारि बाजल वचन क्रोधावेश मे ।
निन्दा अपन, रामक प्रशंसा सूनि कहलक शेष मे ॥

“सीते ! हमर अदखोइ आ वदखोइ कैलहुँ नारि भऽ ।
हम लंकपति के लंक मे धिक्कारि रहलहुँ गारि दऽ ॥

तैं आब काटब अहँक शिर निश्चय अपन तलवार सँ ।
प्रिय बात कहलो पर अहाँ मानैत छी नहि प्यार सँ ॥

सोचू विचारू पुनि सुअवसर दैत छी दू मास के ।
हमरा करू स्वीकार नहि तौँ हैब प्राप्त विनाश के ॥

ई कहि दशानन निज भवन दिशि चलल क्रोधित भेल ओ ।
निश्चर-त्रिया-गण के निठुर-निर्देश दऽ कऽ गेल ओ ॥

कटु वचन असुरक सूनि सिय भेली दुखी अति क्लेश सँ ।
तखने प्रकृति-गण सान्त्वना देलनि अहा ! आवेश सँ ॥

आकाश सँ स्वर सूनि पड़लनि ‘धैर्य के धारण करू ।
अति शीघ्र रामक हैत दर्शन ध्यान प्रभु-पद मे धरू ॥

पवनक मधुर ध्वनि भेल ‘सीते ! स्वपति के सुमिरण करू ।
लऽ अँल छथि सन्देश रामक हमर सुत धीरज धरू ॥

अग्निक कथन ‘देबनि जड़ा हम आब लंका नगर के ।
देखब जड़ैत समग्र गृह पश्चात किछुए पहर के ॥

जल कहल ‘हे जग-जननि ! जिनकर थिकहुँ जीवन-संगिनी ।
से आबि हरता अहँक विपदा शीघ्र हे सुखदायिनी !!

पृथ्वी अहा ? कहलनि सिया के ‘छी हमर बेटी अहाँ ।
घबड़ाउ नहि अति शीघ्र पहुँचब श्री अवधपति छथि जहाँ ॥

धीरज बँधल सीताक उर मे सूनि स्वर देवादिके ।
कैलनि प्रगाम विनम्र मन सँ अति हितैषी मानि के ॥

बंसलि छली सिय ध्यान छऽ प्रिय चरण मे श्री राम के ।
 लगली करय जप जानकी स्वामीक सुन्दर नाम के ॥
 छल घेरि कऽ बैसलि सिया के किछु निशाचरि-वर्ग जे ।
 लागल करय सब निज मतिक अनुसार नाना तर्क से ॥

“ई अछि अभागलि नारि किछुओ ज्ञान नहि छे देह मे ।
 नहि रहक चाहै अछि असुर पति के सुवर्णक गेह मे ॥
 रावण-समान समर्थ पुरुषक हैब पत्नी नहि रुचे ।
 निबुद्धि नारी हैत जकरा बनब रानी नहि जँचै ॥
 हमरा दशानन एहि तरहें प्रेम के देखबैत जो ।
 एकरा जकाँ हमरा स्वपत्नी बनक लेल कहैत जो ॥

तौं हम कदापि न चूकितहुँ शुभ एहन अवसर पाबि कऽ ।
 अविलम्ब रावण-कोढ़ मे हम बैसि जैतहुँ आबि कऽ ॥
 छलि हरजटा नामक निशाचरि बाजि ऊठलि ओ ततऽ ।
 “हे सुमुखि ! दशमुख-सन पुरुष भेटत अहाँ के कहु कतऽ ॥

ब्रह्माक मानस-पुत्र चारिम छथि पुलस्त्य प्रसिद्ध जे ।
 तिनकर परम प्रिय पुत्र भेला विश्रवा अति बृद्ध जे ॥
 मुनि विश्रवा के पुत्र दशमुख भेल छथि अतिशय बली ।
 माता हिनक छथि केशकी राक्षस सुमाली के लली ॥

आदित्य वारह, रुद्र ग्यारह, आठ वसु, दू अश्विनी ।
 तैंतीश कोटि सुदेव एवं नाग-नर, तपसी, मुनी ॥
 सबके प्रसन्न सदेव रखने रहथि बुद्धि-विवेक सँ ।
 सेवा कराबथि अपन जग मे नित नरेश अनेक सँ ॥

सीते ! एहन राजाक सत्त्वर जाउ बनि भार्या अहाँ !
 भाग्यक-उदय अछि भेल, शुभ संयोग भेटल अछि महा ॥

विकटा निशाचरि बाजि ऊठलि “ हम विशेष बतैब की ?
 ई छथि केहन बलवीर, धनपति हम कतेक सुनैब की ?
 किछु मात्र गुण-बल हिनक हम संक्षेप मे सुनबैत छी ।
 रावण-सदृश नहि छथि बली कयो विश्व मे कहि दैत छी ॥

गन्धर्व-सुर-नर-नाग-दानव के पराजित कैल जे ।
 छी भाग्यशालिनि अहाँ प्रेमी बनि हृदय सँ अल से ॥

अति गुणवती जो छी अहाँ दशमुखक गुण पर झट रिभू ।
 नहि तो जनक तनये ! अभागलि नारि अपना के बुझू ॥

पुनि तखन आगू आबि कऽ तेसरि निशाचरि दुमुखी ।
 बाजलि 'दशानन के प्रिया बनि जैब तो होयब सुखी ॥

लंकेश-इच्छामात्र सँ तर मे फलादि फरैत छै ।
 कृषि-काल मे पर्याप्त रूपे मेघ नित बरबैत छै ॥

हे देवि ! अहीं बताउ मन सँ नारि जग मे हैत के ?
 कहु, एहन भूपक भामिनी नहि मुदित भऽ बनि जैत जे ॥

अनुमान छल हमरा अखन धरि बड़ अहाँ बुधियारि छी ।
 तँ ने स्वपति के त्यागि रावण-संग मन सँ अल छी ॥

कहु, तखन कियैक उदाश भऽ बैसलि सदैव रहैत छी ।
 जे अछि कहैत कियैक से नहि बात अहाँ करैत छी ॥

सोचू विचारू, समय अछि, सज्जानि छी, बुधियारि छी ।
 सुनने छलहुँ हम तो अहाँ अति उच्च कुलके नारि छी ॥

हठ त्यागि मानू कहल हमरो सोचि सीते ! ध्यान सँ ।
 नहि तो अहाँ के हाथ धोअऽ पढ़त अपना प्राण सँ ॥

देलनि सभक उत्तर अहा ! मृदु बचन मे श्री जानकी ।
 कहलनि "जने छै नहि कियो कहबैत छै सद्ज्ञान की ?

तो सभकियो मिलिकय अनर्गल बात के सुनबैत छै ।
 अनुवित बचन सँ हृदय हमरा के कियै जड़बैत छै ॥

ई अनसोहातक बात हमरा लग कियैक बजैत छै ।
 उपदेशिका बुधियारि अपना के बहुत लगबैत छै ॥

सुन आब हमरो बात किछु दऽ ध्यान जे सुनबै छिओ ।
 अति तर्कयुत उपदेशप्रद किछु वाक्य मे बतबै छिओ ॥

कह, मनुज-दुहिता कतहुँ सुनले दनुज-वनिता बनल छै ।
 मानव-दनुज मे प्रेमयुत सम्बन्ध कहियो रहल छै ॥

पति मानि लेलनि नारि जिनका, रहथि जौं गुण-हीन ओ ।
 तद्यपि सुपूज्य सुनारि के छथि वैह, यद्यपि दीन ओ ॥
 स्वामी तथा गुरु वैह छथि पति-प्रेमिका के जानि ले ।
 सम्पूर्ण मानव-नारि के पूज्या परम तो मानि ले ॥
 नल मे जेना दमयन्ति, मदमन्ती जेना सौदास के ।
 श्री रोहिणी शशि के, सगर के केशिनी द्युतिऽकाश के ॥
 तहिना हमहुँ भक्तिन थिकहुँ श्री राम के आरम्भ सँ ।
 तँ आव क्यो नहि बाज बारम्बार एतबा दम्भ सँ ॥
 तो सभ जकर नित अन्न-जल आहार-पान करैत छै ।
 तँ बुद्धि तेहने भेल छौ तकरे सदैव गबैत छै ॥
 संसर्ग जकरा जाहिसँ तहिना स्वभाव बनैत छै ।
 सद्गुण सुजन सँ दुष्ट सँ अवगुण अवश्य मिलैत छै ॥
 बेशी बतेबौ की ? अपढ़ तोरा-सदृश अज्ञान के ।
 मानैत छै नहि जखन नीको बात सुभप्रद ज्ञान के ॥
 तौ बूझि ले नाशक समय तोरा सभक लगिचैल छौ ।
 प्रत्यक्ष रावण लंक मे ई काल बनिकऽ अल छौ ॥
 सीताक समुचित बात नहि दुकलैक ककरो हृदय मे ।
 तँ छै कहब भऽ जाइ छै मतिशून्य दुर्घट समय मे ॥
 उलटे निशाचर-नारिगण लागल डेराबय सीय के ।
 निन्दा करय लागल पुरुष-वर प्रवल सीता-पीय के ॥
 'तो' एक निर्वल नारि भऽ हमरा कथो सुनबैत छै ।
 अज्ञान नरपत्नी थिके उपदेश कथो छँटैत छै ॥
 जौ कान नहि देबे कथन पर हम कहैत छिओक जे ।
 अखने शरीरक खाल के हम खींचि तौ लेबौक से ॥
 खेलब बना कऽ गेंद तोहर एहि सुन्दर शीर के ।
 शतखंड कै कऽ रान्हि खायब तोहर एहि शरीर के ॥
 ताहो समय मे नाक-कान-विहीन बाजलि शुपनखा ।
 'हम सभ ककर दासिन-बहिन छी दे अभागलि के लखा ॥

ओ अपन कुनह सब सधयबा लै सुअवसर पाबि कऽ ।
 बाजलि निशाचरि-वर्ग सँ तखने कतहुँ सँ आबि कऽ ॥

“अइ नारि केँ कारण कुरुपा भेल छी हम बूझि ले ।
 दुर्गति जहाँधरि होउ कर, ई कहल हमरो मानि ले ॥

हठ धर्मिणी नारीक प्रति उचिते सभक विचार छी ।
 कर ताहि सँ दुर्गति अखन जे ज्ञात अत्याचार छी ॥

स्वामी तथा देवर एकर अपमान कौने अछि महा ।
 ओ कान कऽलक नाक छटलक रक्त देलक अछि बहा” ॥

एही प्रकारेँ निश्चरोगण दुर्वचन सुनबैत ओ ।
 लागल डेराबय बहुत तरहेँ भय अधिक देखबैत ओ ॥

हा ! तखन सीता अति उदाश निराश भऽ बजली ततऽ ।
 “जे छी करक से कर दशा अइ देहकेँ लऽ जो जतऽ ॥

हम आब बहुत अकच्छ भऽ गेलहुँ सुनैत-सुनैत ई ।
 मृत्युक सतत देखबैत छेँ भय वार-वार बजैत ई ॥

इच्छा सभक छी मारि कऽ खेबाक तौँ झट मारि दे ।
 हमहुँ कहैत छिओक हमरा माटि तर मे गाड़ि दे ॥

हम एहि तन मे प्राण राखक आब नहि चाहैत छी ।
 छूलक दशानन देह केँ अपवित्र तैँ मानैत छी ।

देवर लखन केँ दुर्वचन कऽलहुँ तकर फल भेल ई ।
 सूनऽ पड़ै अछि बोल कटु तोरा सभक तैँ लेल ई ॥

बेबूझ-मूढ़ विशेष अनपढ़ केँ अधिक समझाउ की ?
 पतिव्रत-नियम-विधान की कहबैत छैक बताउ की ?”



सीता-विलाप

लगली विचारय जानकी करबाक चाही आब की ?
 एकरा सभक सँग व्यर्थ हम कऽ रहल छी बर्ताव की ?

सुमिरण करय लगलीह स्वामी राम कृपा-निधान केँ ।
 माता-पिता, संगिनि - सखी-गण-सासु-ससुर महान केँ ।

लगली करय परिजन-स्वजन के नाम लेत विलाप से ।
भोगय तकर पढ़ैत छनि फल, कैल छनि बड़ पाप जे ॥

“हे देव ! कतवा भेल अछि दुष्कर्म हमरा सँ कहू ।
जे आइ घरि भोगक पढ़ै अछि कष्ट आब कते सहू ॥
प्रभु राम सँ बिछुड़लि अखनि घरि हम किये जीबैत छी ।
बिनु अन्नजल-आहार के रहितहुँ किये ने मरैत छी ॥

जीवन-मरण नहि जीव के छै हाय ! अपना हाथ मे ।
दुख-सुख सहक पढ़ैत छै एकसर कियो नहि साथ मे ॥
सब भाँति सँ वेवशि अखन हम देव ! हा ! भऽ गेलि छी ।
कयो नहि सहायक अछि हमर अवला बनलि अकेलि छी ॥

हम छी कतय से छिपल नहि रहि सकय प्रभुवर राम सँ ।
छथि हा ! तखन बैसल किये ओ वीरवर आराम सँ ॥
हमरा हरण कैलक दशानन छल जनैत जटायु टा ।
ओ किन्तु आहत भेल छल तन मे छलै किछु वायु टा ॥

के ? राम के कहतनि, हमर ई दुर्दशा विस्तार सँ ।
चाहैत छी चलिदो एहन छल-कपटमय संसार सँ ॥
जीबैत कहना छी, वचन कटु दुष्टसभक सुनैत छी ।
घेरलि निशाचरि सँ सतत बन्दिनि बनलि रहैत छी ॥

ई जानि जौ जैतथि पिया, छथि कष्ट मे हुनकर सिया ।
तौ नहि विपत्ति सहैत रहितथि अखन घरि प्रभु के प्रिया ॥
अछि भेल हमरा सँ बहुत बड़का कोनो अपराध जँ ।
ई बूझि रहलहुँ अछि अखन ई पड़ल कष्ट अगाध तँ ॥

हम आब तन के त्यागि दी अविलम्ब उचित बुझैत छी ।
सामर्थवानक नारि भऽ दुख एहन कियैक सहैत छी ॥
जीबैक नहि अधिकार हमरा अछि, पतिक परोक्ष मे ।
मरि जाइ पतिक अछैत मे बाधा पड़त नहि मोक्ष मे ॥

सम्पन्न नर लीला समुद कऽ ओ पहुँचता स्वर्ग मे ।
बनि सेविका रहबनि उपस्थित प्रभु-पुजारिन वर्ग मे ॥

हेतनि पसंद की नहि हमर ई काज स्वामी राम के ।
हेतनि हँसी बड़का कदाचित लोक मे सुखधाम के ॥

करतनि जगत निन्दा, सिया के डेबि नहि सकलाह ई ।
संसार मे सब सँ अधिक निर्बल नृपति बनताह ई ॥
नहि अछि फुरैत, फुरैत के नर अछि हमर कर्त्तव्य की ?
किछु नहि सुझै अछि की करी ? हेबाक छै भवितव्य की ?

□

त्रिजटाक सान्त्वना

ताही समय मे त्रिजटा नामक सुलक्षणि नारि जे ।
सूतलि छली झट ऊठि बाजलि बचन मृदु शुभकारि से ॥
"सुनैत जो सब देखलहुँ हम स्वप्न अद्भुत राति मे ।
बड़ पैघ भगदर मचल छै लंकाक निशिचर-जाति मे ॥
छै आगि लागल महल सब जड़तैक किछुए पहर मे ।
औनी-पथारी छैक लागल सकल लंका नगर मे ॥
सम्पूर्ण पुर के भष्म करतै बड़ चतुर कपि एकटा ।
केवल विभीषण-गृह बचल रहतैक मात्र अनेक टा ॥
हम स्वप्न मे देखल दशानन के दशा दुखपूर्ण जे ।
गदहा-चढ़ल माथा-मुड़ल मदिराक मद मे चूर्ण से ॥
करवीर पुष्पक हार पहिरल पड़ल भूपर छल तेना ।
कारी वसन सँ अंग झाँपल मरल-पसरल हो जेना ॥
घबड़ेल सन कटुवचन कहि कऽ गाढ़ि ककरो दैत ओ ।
पगलैल-सन पथपर खसैत अलक्ष्य दिशि छड़पैत ओ ॥
तमपूर्ण नरकक तुल्य मल सँ भरल मूत्रक पंक मे ।
ओ छल ततै चुभकैत लागल मल छलै सब अंग मे ॥
सुअर-चढ़ल रावण सवारी मेघनादक सोंस छै ।
छै कुम्भकर्णक ऊँट-वाहन, सब मुढ़ौने मोछ छै ॥
लंकेश के लखि दुर्दशा सब हाकरोश करैत छै ।
लंका-निवासीगण अहुँछिया काटि माथ पिटैत छै ॥

वपहारि हाय ! करैत सब के सृनि अखनो रहल छी ।
 ई देखि-सुनि हम स्वप्न मे चिन्ता-उदधि मे पड़ल छी ॥
 अछि लिखल सभक कपार मे दुर्गति अवश्य जनैत छी ।
 ओ दुर्दशाक बखान सीता निकट कियैक करैत छी ॥
 श्री राम-लछुमन पहिरि पुष्पक माल पूर्ण सुवास सँ ।
 चढ़ि कऽ अलौकिक पालकी पर अँल छथि आकाश सँ ॥
 निश्चर-सहित निश्चर-पतिक बध भेल छनि छण मात्र मे ।
 केवल विभीषण छथि बचल विख्यात जे सद्पात्र मे ॥
 हाथी चढ़ल छथि राम-लछुमन नारि सीता-संग मे ।
 सुन्दर वसन-भूषण-सुशोभित सकल सभ के अंग मे ॥
 सुर-सुन्दरी-गण सुमन वर्षाबधि समुद आकाश सँ ।
 वातावरण छल भेल सुरभित सुभग सुमन-सुवास सँ ॥
 तै आब नहि कह दुर्वचन श्री रामचन्द्रक नारि के ।
 सम्मानपूर्वक राख रक्षाकर सतत सुकुमारि के ॥
 आबहुँ बचन विचारि बाजल कर विदेह-कुमारि सँ ।
 नहि होनि हिनका कष्ट कोनो हम निशाचरि-नारि सँ ॥
 अपराध के स्वीकार कऽ सविनय छमा सब मांगि ले ।
 आबहुँ अखन सँ मृदु बचन बजबाक प्रण सब ठानि ले ॥
 सीता परम करुणावती छथि धर्मपत्नी राम के ।
 सभक्यो सनम प्रणाम कर लऽ रामचन्द्रक नाम के ॥
 रक्षा सभक हेतुक ध्रुव सीता कृपा सँ जानि ले ।
 हमरा सभक ई रक्षिका छथि जानकी के मानि ले ॥
 किछु दिवस धरि सहि कष्ट सीता के रहक छनि लंक मे ।
 कहि कऽ कुवाक्य कदापि कखनो डाल नहि आतंक मे ॥
 फड़कैत छनि बांमा नयन सोताक हम देखैत छी ।
 उद्धार के लक्षण सकल प्रत्यक्ष अखन पबैत छी ॥
 वट-आम-पीपर-डाढ़िपर कोकिल सुरव सुनबैत छै ।
 पक्षो-गणक ध्वनि जानकी-पति-स्वागतार्थ लगैत छै ।

लक्षणा लगैछ विलम्ब नहि वेशी सिया-उद्धार मे ।
नहि छै विलम्ब सपुत्र-वान्धव रावणक संहार मे ।
सीते ! अहाँ घबड़ाउ नहि दर्शन करब सुखधाम के ।
मारल अवश्ये जेत रावण वाण सँ श्री राम के ॥

रहलैक अछि परिवार मे आ व्यक्ति मे दुर्मति जतऽ ।
भेलैक अछि दुखप्रद अवश्य असह्य अति दुर्गति ततऽ ॥
हे सिय ! सुनू सुन्दर वचन हम एक अखन कहैत छी ।
जे बूझि कऽ हमहूँ अखन सँ राम-नाम जपैत छी ॥

लागल पता किछु सूत्र के मन्दोदरी के दाइ सँ ।
मति-भेद भऽ छनि गेल दशमुख के विभीषण भाइ सँ ॥
फजहति बहुत कऽ अनुज के निष्ठुर जकाँ दरवार सँ ।
देलक निकालि अवाच्य कहि रावण अपन परिवार सँ ॥

तँ ओ पहुँचला मित्र-सँ ततकाल रामक शरण मे ।
कैलनि प्रणाम सनम्र अशरण-शरण के युग-चरण मे ॥
कहलनि अहा ! "हे राम ! अयलहुँ अखन अपने शरण मे ।
अपने सतत तत्पर रहै छी भक्त के दुख-हरण मे ॥

रक्षा अवश्ये करब अपने सुनल अछि, भगवान छी ।
अछि किन्तु हमरा शक, दशानन-सन अहाँ बलवान छी ??

सन्देह अछि मारब कोना ओ वीरवर बलवान के ।
ओ अछि चढ़ल रथ पर अहाँ छी रहित रथ-पदत्राण के ॥

देलनि अहा ! उत्तर सुनू सिय ! राम अनुपम रूप मे ।
जे भेल शिक्षाप्रद वचन नरपतिक लेल अनूप मे ॥

"हे मित्र ! रण मे विजय-रथ ओ असल मे कहबैत छै ।
पहिया जकर धृति-सौर्य, सत्यरु शील-केतु रहैत छै ॥

इन्द्रिय-दमन, परहित, विवेक रु बल-तुरग जोतल रहै ।
समता, दया एवं छमा-रजु सँ सुहय नाथल रहै ॥

ईश्वर-भजन-सज्जन-मुसारथि रहथि चलबथि यान के ।
निर्मोह रूपी ढाल मे सन्तोष-रूप कृपाण के ॥

फरसा बूझू दानक क्रिया के बुद्धि के बछीं बुझू ।
विज्ञान के बड़का गदा-सन दूढ़ तथा भारी बुझू ॥

मन मे परम पावन शिवक पद-भक्ति हमर दुकूल छी ।

यम अरु नियम धारण करै छी सह हमर त्रिशूल छी ॥

गुरु-विप्र-पूजा-कवच अछि दूढ़ आव अधिक बताउ की ?

अछि विजय के साधन सुलभ, हम तखन कहू घबड़ाउ की ??

पतिदेव के विजयक सुभग संवाद सीता सुनि कऽ ।

कहलनि “कथन जौ सत्य तोहर भेल तौ हम चूनि कऽ ॥

देवीक जे मँगबे सभक हेतौ भला सब माँति सँ ।

देवीक श्रेणी मे पहुँचबे राक्षसी के पाँति सँ” ॥

दशग्रीव के अप्रिय वचन सँ जे सिया पीड़ित छली ।

से किछु समय के लेल त्रिजटा-कथन सँ प्रमुदित भेली ॥

कहलनि “कहै जो जे फरौ सन्तोष लेल कहैत जो ।

दुख-विरह के हम बिसरि हर्षित होइ यत्न करैत जो ॥

त्रिजटे ! मुदा हम आव निश्चय कैल अछि मरबे करी ।

तन आव संकट सहत नहि प्राणान्त तँ करबे करी ॥

क्यो झट कृपा कऽ आगि अखने आनि हमरा दैत जौ ।

अथवा हलाहल दैत हमरा सँ शुभाशिष लेत तौ ॥

उपकार नहि बिसरब तकर कदापि कोनो काल मे ।

श्रद्धा अनुक्षण रहत तकरा प्रति हृदय विशाल मे ॥

पर्याप्त छल शोकाग्नि तन के भष्म तौ कऽ दैत ओ ।

अछि किन्तु नोर अपार दृग मे नहि जड़य अछि दैत ओ ॥

की ? अछि लिखल कपार मे हम मात्र किछु ने जनेत छी ।

की ? की ? दशा देखैक अछि बैसलि झखैत रहैत छी ॥

हे स्वजन ! परिजन ! बन्धु-वान्धव ! प्राण-पति-श्री राम हे !

केकड़ ! सुमित्रे ! मातु ! कौशल्ये ! अवधगुर घाम हे !!

सभक्यो किये ? हा ! निठुर भऽ कऽ बिसरि हगारा गेल छी ।

अछि नहि कियो अप्पन जेना तहिना अनाथनि भेल छी ॥

हमहूँ अहीं सभ केँ थिकहुँ मात्सयं किछु नहि हूँ छ की ?
अपने सभक अछेत दुर्गति हमर ई शोभैछ की ?

हे सत्यव्रतधारी प्रभो ! श्री राम ! अहिक भरोश सँ ।
जीवैत छी, ई भोगि रहलहुँ दुःख अपना दोष सँ ॥
हे नाथ ! हमरा सँ अनेको भेल अछि अपराध केँ ।
गणना करब जाँ तकर तौं नहि पार पैब अगाध केँ ॥

उबरब ने कहियो ताहि सँ हम नाथ ! अहूँ जनैत छी ।
करुणा करू प्रभु ! अहाँ करुणा-सिन्धु जे कहबैत छी ॥
कैलहुँ सकल व्रत-योग-जप नैहर रु सासुर-विपिन मे ।
पालन सती-नारी-नियम अरु धर्म-जप-तप सुदिन मे ॥

सद्धर्म श्रद्धा-प्रेम सँ निशि-दिन अखनि धरि कैल जे ।
पति-चरण-सेवा-व्रत निबाहल छल-रहित की ? भेल से ॥
हे नाथ ! अपने तौं पिता-आदेश-पालन कैल जे ।
वनवास-अवधि समाप्त कऽ नृप-पद अहाँ ले धैल से ॥

अवधेश भऽ अपने विवाहो कऽ अवश्य सकैत छी ।
भेटत सुलोचनि नारि सुन्दरि विश्व-मध्य जनैत छी ॥
हा ! किन्तु हम तौं अहिक छी नित सेविका बनि गेल छी ।
गति-मति अही आराध्य केवल मात्र हमरा लेल छी ॥
अति शीघ्र कृपानिकेत ! हमरा करब नहि उद्धार जाँ ।
हम आगि मे जड़ि जैब अथवा करब विष-आहार तौं ॥

क्यो दैत उपकारी कोनो हथियार हमरा हाथ मे ।
सिर काटि मरितहुँ ऐह लिखने छथि विधाता माथ मे ॥

सीता रहथि जे ठाढ़ि गहि तरुवर अशोकक डाढ़ि केँ ।
व्याकुल व्यथा सँ लखि पवनसुत, जानकी-सन नारि केँ ॥

सीताक प्रति निश्चर-पतिक व्याहार वात्सलाप केँ ।
सुनलनि जखन कपिवर बहुत श्री जानकीक बिलाप केँ ॥

एवं निशाचर-नारि-वर्गक अति कठोर कुपाच्य केँ ।
ओ साँस लंबा छोड़ि सुमिरण कैल निज आराध्य केँ ॥

देखल सिया केँ प्राण-त्यागक लेल तत्पर भेल हा !
सब भाँति सँ सीता हताश-निराश भऽ छथि गेल हा !

उपयुक्त अवसर पाबि हनुमत झट खसोलनि मुद्रिका ।
भेली अचम्भित देखि अँगुठी तखन रामक प्रेमिका ॥

सोचथि, अखन अनलक एतऽ के ? बस्तु जड़ आयल कोना ?
तजि राम-सुन्दर पाणि केँ चलि अँल हमरा लग कोना ?
भगवान रामक हेतु चिन्ता सीय केँ भेलनि महा ।
शोकित सिया-मुख सँ व्यथायुत शब्द निकलल 'राम हा' !

बजली सिया 'प्रभु राम तौँ तजलनि प्रथम निज राज केँ ।
हमहूँ अलग भेलहुँ स्वपति सँ त्यागि सेवा-काज केँ ॥

ई मुद्रिको प्रभु-संग त्यागल भागि आयल अछि एतऽ ।
हा ! सुखक साधन सकल स्वामी केँ तजल, भागल कतऽ ॥

हमरा दुनू केँ कष्ट लीखल अछि सदैव कपार मे ।
तौँ की ? करब आशा सुखक हम आब अइ संसार मे' ॥

एमहर पवन सुत सोच मे छथि पड़ल 'चाही करक की ?
भऽ जाइ सम्मुख, हैत उत्तम काज सुविधा-जनक की ?

नहि ज्ञात अछि हमरा बजै छथि बोल अवघक लोक की ?
कहबनि प्रथम की बात हेतनि दूर सीता-शोक की ?

कपिरूप मे होयब प्रकट भय-भीति भऽ जेती सिया ।
रावण छली अछि ओ करय आयल अखन अछि छल-क्रिया ॥

बुझती सिया 'रावण अनेको' रूप रचैत रहैछ ओ ।
तौँ एक बानर बनि कियै नहि आबि एतय सकैछ ओ ॥

नहि अछि फुरैत सुकाज सम्प्रति शीघ्रतम हम की ? करी ।
अबिलम्ब करक उपाय अछि, सीता जिबै छथि पल-घड़ी ॥

चाही अवश्य भरोश-आश्वासन सिया केँ अखन दी ।
करजोड़ि प्रथम प्रणाम कऽ माँ सँ शुभाशीर्वचन ली ॥

नहि सान्त्वना देबनि बचन सँ जानको केँ तुरत जाँ ।
बतियैब की ? हमरा सिया सँ हाथ धोमय पड़त तौँ ॥

अति मधुर भाषा मैथिलीक प्रयोग उचित बुझैत छी ।
करती छमा सब भूल केँ माता थिकी, भय-रहित छी ॥

हनुमान केँ सीताक संग वार्त्ता

सम्मुख सिया केँ होइ हम अतिशीघ्र ब्राह्मण-वेष मे ।
किछु तौँ करक चाही सिया छथि पड़ल बड़का क्लेश मे ॥

अगुताइ नहि कर्ताव्य समयोचित अवश्य बिचारि ली ।
सन्मार्ग तौँ सूझत अवश्ये राम-नाम उचारि ली ॥

रामक प्रसंसा मधुर स्वर सँ कऽ अखन छीपल रही ।
गुण गाबि प्रभुक चरित्र सुन्दर कथा सब बीतल कही ॥

फुरि गेल कपिवर केँ कथा आरम्भ कैलनि आदि सँ ।
भेलनि कोना कऽ मित्रता सुग्रीव-वानर जाति सँ ॥

अयलाह लंका मे कोना अपने पयोनिधि-फाँनि कऽ ।
दर्शन करौलक सीय सँ के ? राम सेवक मानि कऽ ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र पहिने जोड़ि दूत पाणि केँ ।
लगला कहय कपिवर समोद सुधारि मधुर सुवाणि के ॥

“हे मातु ! कैलनि राम वर्णन जेहन अहँक सुरूप केँ ।
प्रत्यक्ष से देखैत छी हम रूप अहँक अनूप केँ ॥

छल-कपट कऽ लंकेश कैलक हरण जनस्थान सँ ।
ओ जानकी थीकहुँ अहीँ बूझैत छी अनुमान सँ ॥

ई मुद्रिका हमहीं खसौने छलहुँ माता जानि कऽ ।
कऽ दी छमा हे जननि ! हमरा भक्तसुत-सम मानि कऽ ॥

आज्ञा दिअऽ मा ! अखन हम अपनेक की सेवा करी ।
जे बस्तु चाही, आनि दी सम्मुख सकल मेवा धरी ॥

जकरा कही गदहा जकाँ झट बान्हि कऽ हम छानि दी ।
अथवा कही बन्दी जकाँ सब असुर केँ हम आनि दी ॥

जौँ दी अहाँ आज्ञा उलटि हम देब लंका सकल केँ ।
देबनि मिला हम माट मे अइ स्वर्ण-निर्मित महल केँ ॥

हम शक्ति पौने छी अतुल प्रभु राम-चरण-प्रसाद सँ ।
सम्भव असम्भव केँ करब हम अहिक आजीवादि सँ ॥

सीता सुखी भेलीह अंजनि-सुतक सुन्दर बात सँ ।
हटलनि सकल चिन्ता-व्यथा-भय जानकी केँ गात सँ ॥

“अगुताउ नहि हे वीरवर !” कहलनि पवन कुमार सँ ।
“विध्वंश नहि करबाक अछि लंकाक एहि प्रकार सँ ॥

पौताह दण्ड अवश्य जिनकर जेहन हेतनि दोष जे ।
नहि पाबि सकता दण्ड कथमपि होथि जे निर्दोष से ॥

जे कार्य केला सँ अहित हेतक ककरो मानि कऽ ।
से कार्य स्वामी सँ कदापि ने भऽ सकै अछि जानि कऽ ॥

स्वामी हमर छथि न्याय-प्रिय नर-प्रवर श्रीयुत राम जे ।
आदर्श मर्यादा-पुरुषवर सकल सुख केँ घाम से ॥

रविकुल-तिलक श्री राम केँ अर्द्धांगिनी हम जानकी ।
छथि सब बतौने प्रेम सँ कहबैत छै सद्ज्ञान की ?

बलवान-ज्ञाननिधान दशरथ ससुर हमरे ओ छला ।
जे कैल जीवनभरि जगत मे राति-दिन सभ केँ भला ॥

पुत्री थिकहुँ विख्यात नृपवर-जनक श्री मिथिलेश केँ ।
जिनका दुलार-पियार मे पौलहुँ ने कहियो क्लेश केँ ॥

बारह वरष धरि विपिन मे बीतल वयस अति हर्ष सँ ।
बिछुड़लि स्वपति सँ छी अखन लगभग बुभू गत वष सँ ॥

हम नारि स्वामी लेल निज सुख सकल त्यागि सकैत छी ।
पति जे करै लय कहथि तखने सैह काज करैत छी ॥

आज्ञा पिता केँ मानि प्रभु कैलनि तपस्वी-भेष केँ ।
तजि राज-सुख अयलाह भोगै लेल बन मे क्लेश केँ ॥

छल ततय कानन मे बहुत राक्षस निठुर महाबली ।
व्यभिचार-भ्रष्टाचार-स्त सभ निदयी-कपटी-झली ॥

कर्तव्य बुझलनि राम सब केँ न्यायपूर्वक दण्ड दी ।
पापी-अधम केँ छोड़ि दी तौँ बनब अधम प्रचण्ड की ?

अन्याय सहि कऽ बैसि जायब ई महा दुष्कर्म छी ।
न्यायार्थ अपनो बन्धु केँ दी दण्ड से सद्धर्म छी ॥

से जानि, आयल जखन जे निश्चर निषिद्ध विचार लय ।
मारल सकल केँ राम छन मे नृपति-धर्मप्रचार लय ॥

अछि बचल निश्चर आन जे किछु एहि दक्षिण प्रान्त मे ।
क्यो नहि रहत जीवित जनै छी एहि मासक अन्त मे ॥

अछि किन्तु भय तावत अनेकोँ दुर्दशा ओ करत जे ।
हम निर्बला मारी सिया केँ सहक सभटा पड़त से ॥

सहि सकब दुख की नहि दशा देहक हमर हा ! बनत की ?
चिन्ता सतीत्वक अछि अधिक ओ तखन बचि कऽ रहत की ?

तेँ आब प्राणक त्यागि करबा लेल तत्पर भेल छी ।
तोरा सँगे बतिआइ मे लगलहुँ अँटकि तँ गेल छी ॥
वरु बास नरकक हो मुदा नहि रही दुर्जन संग मे ।
छीजत नरक मे पाप, वेशी बढ़त दुष्टक संग मे ॥

दुख सँ दुखी सीता-कथन केँ सूनि कपि भेला दुखी ।
दऽ सान्त्वना सिय मातु केँ किछु काल लय कैलनि सुखी ॥

लगला कह्य "हे मातु ! हम श्री रामचन्द्रक दूत छी ।
कपि-प्रवर सुग्रीवक थिकहुँ मंत्री पवन केँ पूत छी ॥

आयल एतै छी नृप-शिरोमणि राम केँ सन्देश लय ।
ओ छथि कुशल सँ किन्तु व्याकुल अधिक अहिक उदेश लय ।
श्री राम केँ अनुचर लखन सन्तप्त छथि अति शोक सँ ।
कैलनि सनम्र प्रणाम पद मे भक्तियुत भरिपोख सँ ॥

"स्वामी कुशल सँ छथि" सुखद स्वर सूनि सिय हनुमन्त सँ ।
देलनि शुभाशीर्वाद कपि केँ मन्हि मन आनन्द सँ ॥

कैलनि विचार विदेह-जा बूझी कने विस्तार सँ ।
भेलनि कोना कऽ मिलन हिनका हमर प्राणाधार सँ ॥

तखने सिया देखल निकट अति आबि वानर ठाढ़ ई ।
देखबैत अछि श्रद्धा बहुत हम नारि-संग प्रगाढ़ ई ॥

बतियाति लग मे घुसुकि कऽ कपि आबि गेल समीप मे ।
ई देखि क्रम केँ वानरक ओ पढ़ि गेलो भय-भीत मे ॥

संदेह सीता के तखन भेलनि कपिक व्यवहार सँ ।
 हो गुप्तचर कहूँ रावणक आयल ठगै लय प्यार सँ ॥
 तँ तुरत सीता बैसि रहली बृक्षतर मे घूमि कै ।
 भयभीत भऽ नख सँ तखन लगलीह खोघऽ भूमि के ॥
 ई देखि अंजनि-सुत बिचारल भेल की अनुचित क्रिया ।
 की ? जानि रहली बैसि, बजली किछु कियै नहि माँ सिया ॥
 लगला करय कर जोड़ि, कपिवर विनय प्रेमासक्ति सँ ।
 रघुवीर-यश-वर्णन करय लगलाह श्रद्धा-भक्ति सँ ॥
 रावण-निशाचर-वर्ग के निन्दा करय लगलाह ओ ।
 श्री राम-गुण-वर्णन करैत निमग्न भऽ गेलाह ओ ॥
 विश्वास भेलनि किछु प्रभुक चरितावली के सुनि कऽ ।
 लगली कहय हनुमान सँ सीता नयन के मूनि कऽ ॥
 "अछि पैघ मायावी दशानन अल छल ऋषि-रूप मे ।
 छल सँ हरण कैलक महा अछि धूर्त निश्चर-भूप मे ॥
 संदेह मन मे अछि अखन शंका-रहित होयब कोना ?
 तों रामचन्द्र दूत छे ई हम तोरा बूझब कोना ?
 जौ दूत रामक छे तखन प्रत्यक्ष प्रवल प्रमाण दे ।
 आशीष हमरा सँ अखन सानन्द तों हनुमान ले ॥
 अछि विरह-रूपी बीछ बिन्हने व्यथित छी, अछि दुर्दशा ।
 स्वामीक चर्चा-मंत्र सँ विष के बदन सँ दे खसा ॥
 अंगुठी चोराकऽ चोर रावण आनि एतय सकैछ ओ ।
 हमरा अनेकों रीति सँ नित ठगक प्रयास करैछ ओ ॥
 तों आबि एतय कोना गेलें कपि भऽ महा आश्चर्य ई ।
 अति गुप्त वाग अशोक मे पहुँचब असम्भव कार्य ई ॥
 हम स्वप्न की देखैत छी की कल्पनादि करैत छी ।
 कपि एक के मुख सँ सुयश स्वामीक कोना सुनैत छी ॥
 ई दृश्य बूझि पढ़ैछ किछु उन्माद-जन्य विकार की ?
 मति-भ्रमि भऽ अछि गेल की ? बौआति अछि विचार की ?"

अमुमान एवं भावना सीताक नाना भाँति केँ ।
लखि-सूनि कपि लगला हँटाबऽ वचन सँ सिय-भ्रान्ति केँ ॥

‘हे मा ! थिकहुँ हम तुच्छ सेवक श्री नरोत्तम राम केँ ।
सबखन जपैत रहैत छी रामक मनोहर नाम केँ ॥

हम छी बसौने हृदय मे मृदु युगल रूप अनूप केँ ।
अपने कही तौँ फाड़ि उर केँ हम देखादो रूप केँ ॥
अपने दुनू केँ चीन्ह गेलहुँ, प्रभुक सेवा-नेम सँ ।
ओ ईश छथि माया अहाँ लीला करैछी प्रेम सँ ॥

बनि कऽ विधाता राम रचना करथि सब संसार केँ ।
बनि शारदा दै छी अहाँ सद्ज्ञान सकल प्रकार केँ ॥
प्रभु विष्णु बनि पालन करथि संसार केँ सबजीव केँ ।
रक्षा करी लक्ष्मी अहीं बनि, जीव आ निर्जीव केँ ॥

गिरिजा अहीं छी शक्ति-दायिनि, शक्ति सभकेँ दैत छी ।
सब जीव केँ उपकार मे लागलि सदैव रहैत छी ॥
शिव-रूप सँ संहार सभकेँ करथि प्रभु कल्पान्त मे ।
मन भेल पुनि रचना करथि कल्पान्त केँ उपरांत मे ॥

मा ! राम छथि सर्वज्ञ एवं ईश केँ अवतार ई ।
केवल अपन किछु अंश सँ चलबैत छथि संसार ई ॥
आचरण छनि आदर्शमय रण-कुशल सकल प्रकार ई ।
छथि कऽ रहल व्यवहार सँ सद्धर्म केर प्रचार ई ॥

सिरमौर वीरक वर्ग मे बहु विज्ञ वात्तिलाप मे ।
भवभरिक भूपति सँ अधिक छथि बढ़ल राम प्रताप मे ॥
आधार हिनके पाबि बस्तुक विश्व मे अस्तित्व छै ।
बलवान मे बल गुण गुणो मे व्यक्ति मे व्यक्तित्व छै ॥

को जानि सर्वसमर्थ रघुपति परम शोभा घाम सँ ।
कऽ शत्रुता रावण कपट कैलक दयानिधि राम सँ ॥

सुनने रही वेदज्ञ अछि दशमुख महा विद्वान ओ ।
अछि किन्तु बूझि पड़ैत अति अल्पज्ञ मूढ़ महान ओ ॥

भोगत कुफल देखब अहूँ लंका नगर-विनाश के ।
हमहूँ उजारि सकत छी आदेश दी जौँ दास के ॥

श्री रामचन्द्रक हाथ सँ सन्देश लय अयलहुँ एतै ।
ओ छथि स्वयं विरहाग्नि सँ पीड़ित व्यथाकुल छनि हदै ॥

कुशलादि पुछलनि अछि अहूँक अवधेश अति आवेश सँ ।
कैलनि अहाँ केँ लखन लाल प्रणाम विनय विशेष सँ ॥

श्री रामकेँ प्रेमी सखा सुग्रीव वानरराज जे ।
प्रभु रहथि हर्षित जाहि तरहेँ करथि सबटा काज से ॥

हम लाँघि सागर केँ एतय लंकापुरी मे अँल छी ।
'अपनेक दर्शन भेल' प्रभुकेँ कहब, तँ अगुतँल छी ॥

अदना-जकाँ हमरा बुझू नहि जखन हम देलहुँ पता ।
नहि लाथ हमरा सँ करू कहि कऽ सुनादी उर-व्यथा ॥

हमरा जेहन बूझैत छी से हम थिकहुँ नहि जानकी !
हे मा ! कथी हम दी अखन विश्वास लेल प्रमाण की ?

कपि देल परिचय अपन यद्यपि बहुत-बहुत प्रकार सँ ।
सीता मुदा पूछऽ पुनः लगलीह पवन-कुमार सँ ॥

"कपिवर ! अहाँ केँ राम सँ सम्पर्क भेल कतऽ कहू ।
की रूप-रंग-स्वभाव छनि ओ जप करथि किनकर कहू ॥

वानर-मनुज मे भेल सम्भव भेल कहू तौँ ई कोना ?
विश्वस्थ भऽ देलनि अहाँ केँ मुद्रिका ई प्रभु कोना ?

हमरा अटल विश्वास ले वर्णन करू विस्तार सँ ।
की खाइ छथि, सूतथि कखन, बनियाथि कोन प्रकार सँ" ॥

सीताक ई सन्देह-सानल शब्द सुखप्रद सुनि कऽ ।
हनुमान हर्षित भऽ हृदय सँ कहय लगला गूनि कऽ ॥

"हे जनक-राजकुमारि ! हम तौँ भाग्यशाली छी महा ।
अपनेक अनुकम्पा असीम अवश्य ई भेलछि अहा !!

प्रभु राम केँ सन्दर्भ मे हमरा अहाँ पूछैत छी ।
गुण-रूप केँ ज्ञाता अहा ! हमरा अहाँ बूझैत छी ॥

ओ तौं पुरुष मे श्रेष्ठतम सदगुण-गणक अवतार ओ ।
आदर्शमय आचार हुनकर छथि परम उदार ओ ॥
ओ श्रेष्ठ छथि बलवान-बभ्रवान सब श्री मान सँ ।
भजनीय छथि त्रैलोक के विद्वान आ गुणवान सँ ॥

बाजब मधुरतम अंग-सुन्दर-सबल श्यामल रंग मे ।
नररूप मे ईश्वर थिका, बीतनि समय सत्संग मे ॥
कोमल कमल-दल-सम नयन-मुख पूर्ण रजनीपति जकाँ ।
छनि हुनक चालि-स्वभाव सज्जन-साधु-ऋषि-मुनि-यति जकाँ ॥

शिव-शिव जपैत-भजैत भक्तक गुण गबैत-रहैथ ओ ।
सीता कतय ? सीता कतय ? सब सँ पुछैत-फिरैथ ओ ॥
छनि पाणि युगल विशाल गरदन छनि जेना की शंख हो ।
रामक घनुष के वाण मे लागल मयूरक पंख हो ॥

सूतथि समय पर नित्य ऊठथि ब्रह्म-वेला-काल मे ।
प्रति दिन नहाथि त्रिकाल, चानन शिव-त्रिशूलक भाल मे ॥
छथि राम शिव के भक्त, शिव छथि भक्त सीताराम के ।
जप करथि निशि दिन एक-दोसर परम पावन नाम के ॥

आहार फल छनि मात्र सेहो खसल अपने-आप सँ ।
शोकित अखन रहैत छथि सीते ! अहिंक दुख-ताप सँ ॥
आदर्श-मर्यादा-पुरुष ओ अवधपति नरवर थिका ।
तैं प्राप्त भेलनि मा ! अहाँ-सन नारि अति सुखदायिका ॥

हम तौ हृदय मे रूप हुनकर धारि नाम जपैत छी ।
दर्शन कोना भऽ गेल हमरा सैह आब कहैत छी ॥
श्री राम दूत भाइ बन मे मा ! अहिंक तलाश मे ।
घूमैत अयला ऋष्यमूक पहाड़ केर सुपास मे ॥

सुग्रीव नामक कपि-प्रवर निज बन्धु वालिक भीति सँ ।
गिरि पर रहै छथि हम तिनक छी एक सेवक प्रीति सँ ॥

देखल दुनू के ठाढ़ छथि रखने घनुष-शर हाथ मे ।
सुग्रीव, डर सँ बाजि उठला 'ठाढ़ के ? गिरि-कात मे ॥

जाकय पता लगाउ के ? छथि विपिन मे घूमैत ई ।
कपि-वर्ग सभ सँ बस्तु किछु की ? अखन छथि चाहैत ई ॥

भेलहुँ उपस्थित हम अहा ! सम्मुख समुद भगवान के ।
लखि रूप रामक भेल हर्ष अपार अइ हनुमान के ॥

अनलहुँ चढ़ाकय पीठ पर सुग्रीव-लग धनुधीर के ।
सुग्रीव सँ देलहुँ मिला लछुमन तथा रघुवीर के ॥

ओ एक-दोसर सँ व्यथा-गाथा कहल विस्तार सँ ।
सोचल कोना दुख-दूर होयत अपन अपन विचार सँ ॥

ओ वानरेश्वर देल आश्वासन तखन अवधेश के ।
एवं नरेश्वर देल धीरज प्रिय सखा ग्रीवेश के ॥

रावण अहाँ के हरण कऽ लऽ जाइ छल नभ-पंथ सँ ।
कपि वर्ग के लखि कऽ खसोलहुँ तोचि भूषण अंग सँ ॥

हमहीं समेटि-बटोरि कऽ लऽ आनि देल कपीश के ।
से आनि कऽ देलनि जखन सुग्रीव श्री जगदीश के ॥

ओ वस्त्र-आभूषण उपस्थित भेल सम्मुख राम के ।
उर सँ लगा लगला, पुकारय अहा ! अहिक सुनाम के ॥

शोकान्नि गेलनि जागि मूर्च्छित भेल किछु छन ओ छला ।
ओ दशा हुँनकर तखन हमरा हृदय के देलक हिला ॥

हमहीं तुरत दय सान्त्वना प्रभु के अनेक प्रकार सँ ।
चेतन पुरुष के चेतना देलहुँ परम सत्कार सँ ॥

नहि पाबि मा ! सीते ! अहाँ के छनि बहुत दुख राम के ।
चिन्ता-अनिद्रा सँ बहुत दुबरेल तन सुखधाम के ॥

सुग्रीव कैलनि प्रण 'लगायब हम सिया के घ्रुव पता' ।
प्रण राम कैलनि 'वालि के मारब निबाहब मित्रता' ॥

तत्पर भेला तखने दुनू प्रण-पूर्ण करबा लेल ओ ।
पहिने अवधपति राम-शर सँ वालि मारल गेल ओ ॥

प्रभु राज्य-किष्किन्धाक सौंपल हाथ मे सुग्रीव के ।
भेलनि अतीव प्रसन्नता सम्पूर्ण विपिनक जीव के ॥

अति शीघ्र चूनल वीर वानर-वर्ग के दरवार में
कपिपति बजोलनि झट उपस्थित भेल सब दरवार में ॥
सब दिशि पठोलनि अहिक अन्वेषण करय कपि-भालु के ।
हमरो तखन भेटल परम आदेश राम कृपालु के ॥

सम्पूर्ण सेनापति अनेको सैन्य लऽ चारु दिशा ।
ताकय अहाँ के निकलि गेला भेल गत कत दिन-निशा ॥
भुतिया गेलहुँ हम सब विकट दक्षिण-दिशा-गिरि-प्रान्त में ।
सब थाकि कय हा! बैस रहलहुँ विवश भऽ कय अन्त में ॥

सभक्यो हंकासल आ पियासल छलहुँ व्याकुल भूख सँ ।
की ? हम कहूँ ओ दुर्दशा, नहि बोल निकलय मूँह सँ ॥
लगलहुँ दुखित भऽ ठाढ़ गोहराबय तखन भगवान के ।
छोड़ल विवश भऽ सभ कियो ई मोह निज-निज प्राण के ॥

प्राणान्त करबा लेल उद्यत भेल सभ उपरान्त में ।
हम राम-नामक जप करय लगलहुँ ओतय एकान्त में ॥
हे मा ! कृपा श्री राम के देखल अहा ! अद्भुत ओतऽ ।
प्रभु के कृपा सँ पहुँचि गेला प्राण-रक्षक-झट ततऽ ॥

पक्षी-प्रवर सम्पाति छथि अग्रज विहंग जटायु के ।
ओ आबि रखलनि रोकि कय निकलैत तन सँ वायु के ॥
ओ कहि सुनोलनि छी अहाँ दशमुखक लंका देश में ।
से सुनि नाचय सभ कियो लगलहुँ अधिक आवेश में ॥

सभ के अहा ! अति हर्ष सँ रोमाञ्च भेलनि गात में ।
अविलम्ब दर्शन हैत तँ अयलहुँ समुद्रक कात में ॥
सम्मुख अपार समुद्र के लखि सभ भेला चिन्तित महा ।
मा ! हम मुदा प्रभु नाम लय चिन्ता सभक देलहुँ दहा ॥

वारिधि विशाल अगाध के हम लाँघि कऽ अयलहुँ एतऽ ।
केलहुँ प्रवेश विदेश लंका-मध्य संध्या-छण ततऽ ॥

सब ठाम हम तकलहुँ अहाँ के रावणक प्रति गेह में ।
नहि देखि जीवित छी कि नहि, पड़ि हम गेलहुँ सन्देह में ॥

चिन्तित छलहुँ परिचित कियो भेटैत नहि छल नर ततऽ ।
पूछी तौं ककरा सँ अहाँ मा ? कोन तरहेँ छी कतऽ ?

की तुरत परिचय भेल हमरा श्री विभीषण भक्त सँ ।
जे सतत रामक नाम जपतहि रहथि प्रेमाश सक्त सँ ॥

मा ! छी कतय देलनि बता तखने एतय हम अँल छी ॥
अपनेक दर्शन भेल, कहबनि राम केँ अगुतँल छी ॥

हे जनान ! सभटा कहि सुनौलहुँ हाल अपना काम केँ ।
सुग्रीव केँ मंत्री थिकहुँ आ दूत हम श्री राम केँ ॥

आयब एतय सार्थक सकल श्रम भेल मा ! श्री जानकी !
पुनि आब जीवन मे एहन आनन्द होयत आन की ?
हमही प्रथम दर्शक कहायब सकल वानर-वगैँ मे ।
के ? भाग्यशाली भेल हमरा-सन अवनि आ स्वर्ग मे ॥

प्रभु केँ बतेबनि अहँक स्थिति कष्टप्रद विस्तार सँ ।
अति शीघ्र मारल दुष्ट रावण जैत जाहि प्रकार सँ ॥
से यत्न सत्त्वर करब हम जइतहि एतय सँ धूमि केँ ।
देखब भवन भऽ गेल सभटा भस्म लंका भूमि केँ ॥

हे मा ! अहाँ जे पूछलहुँ कहलहुँ हमहुँ सारांश मे ।
धीरज धरू बूझू हँटल पीड़ा अहँक अधिकांश मे ॥

ई मुद्रिका शोभित अहा ! अछि प्रभुक सुन्दर नाम सँ ।
विश्वास लै अनलहुँ एतय हम पाबि कय श्री राम सँ ॥

बन्दिनि बनलि छी लंकामे बूझल छलनि नहि राम केँ ।
कयो देखि दुख-दुर्गति अहँक नहि कहि सुनौलक राम केँ ॥

नहि हैत आब विलम्ब किछु माता ! अहँक उद्धार मे ।
पहुँचैक देरी मात्र केवल राम केँ दरवार मे ॥

ओ नहि रहथि थिर एक छन, बेचैन सदखन शोक सँ ।
पूछल करथि सीता कतय ? सीता कतय ? सभ लोक सँ ॥

डूबल रहथि रघुवर निरन्तर शोक-सागर कीच मे ।
ताकथि अहाँ केँ मालु-वानर-पंग विपिनक बीच मे ॥

विश्वास कपि पर पूर्ण भेलनि दूत रामक ई थिका ।
 भेली प्रसन्न विदेह-नन्दिनि देखि पुनि-पुनि मुद्रिका ॥
 सन्देह केँ ओ त्यागि कहलनि समुद कपि हनुमान केँ ।
 “हम पूर्णरूपे” बूझि गेलहुँ भक्त अहँ भगवान केँ ॥

जाकय अहाँ अति शीघ्र कहबनि प्रभु दयानिधि राम केँ ।
 दू मास केँ भीतर अवशि लऽ जाथि अपना वाम केँ ॥
 निश्चित अवधि कऽ देल अछि रावण निशाचर दुर्मती !
 जीवित रहब ताधरि कृपा जौँ करथि मा गिरिजा सती ॥

अबितहि रहै अछि गुप्तचर रावण-छली केँ नित एतऽ ।
 बचिकय निशाचर-वर्ग सँ हम रहब कवनो कहु कतऽ ॥

ओ आबि नाकोदम अधिक कैने रहै अछि सब घड़ी ।
 तेँ आब सोचै हम छलहुँ खाकऽ हलाहल झट मरी ॥

की आबि सम्मुख मद्रिका लेलक बचा मम प्राण केँ ।
 लगलहुँ करय हम ध्यान परमाराध्य दयानिधान केँ ॥

बाधा उपस्थित ह्यैछ हमरा प्राण-त्यागक काल मे ।
 प्रायः लगै अछि मरण नहि लीखल अखन अछि भाल मे ॥

विश्वास अछि करताह संकट-नाश हमर तमाम तौँ ।
 हमरा दुरस्थिति सँ दयामय होथि ज्ञाता राम जौँ ॥

प्रभु वीरवर छथि, देखि दंड सुरारि मूढ़ प्रचण्ड केँ ।
 ओ करथि चकनाचूर द्रुति दशग्रीव केर घमण्ड केँ ॥

रघुवर विशेष बिलम्ब अयबा मे एतय करताह जौँ ।
 कथमपि तखन जीवित सिया केँ नाथ नहि पौताह तौँ” ॥

ई बूझि वैदेही-व्यथा केँ वायु-सुत बजलाह जे ।
 से सून कपिवर केँ प्रशंसा मनुज नहि करताह के ?

कहलनि पवनसुत “मातु ! किछु दिन-मास धीरज केँ धरु ।
 अतिशय पराक्रम-शील रामक नाम केँ सुमिरण करु ॥

हे मा ! प्रभुक समीप जौँ अखने चलक चाहैत छी ।
 सामर्थवान सुजान रामक दूत जौँ मानैत छी ॥

तौं हे सती-साध्वी सिये ! आज्ञा दिअऽ हमरा अहाँ ।
निज शक्ति केँ करतूत आब देखैब हम कहिया कहाँ ॥

रामक कृपा सँ पाबि बल हम भेल बड़का ढीठ छी ।
चढ़ि कऽ चलू बाहन अहाँ केँ लेल हमरे पीठ छी ॥

आदेश दी तौं अल छी जहिना पयोनिधि लाँघि कऽ ।
तहिना अखन लंको नगर केँ लऽ चलब हम टाँगि कऽ ॥
कऽ देब दशमुख केँ उपस्थित राम केँ दरवार मे ।
देखब अहाँ करतूत तखने एहि पवन-कुमार केँ ॥

अपराध केँ स्वीकार कऽ माँगत छमा जौं राम सँ ।
तौं ओ कदाचित बाँचि जायत तखन दण्ड तमाम सँ ॥
सीता कपिक ई रंग-दंग-विचार सुन्दर पाबि कऽ ।
कहलनि “पवनसुत ! धैर्य देलहुँ अहँ समय पर आबि कऽ ॥

हम तौं अतीव कृतज्ञ छी बिसरब ने अइ उपकार केँ ।
स्वीकार अछि, मानैत छी हनुमान ! अहक विचार केँ ॥
गति अछि पवन-सन, तेज अग्निक तुल्य हम मानैत छी ।
लऽ जैब हमरा पार से सामर्थ अछि, बूझैत छी ॥

अद्भुत अहाँ मे बुद्धि-बल एवं विचार पवित्र ई ।
रामक पठावल दूत छी, पावन अहँक चरित्र ई ॥
देखैत छी लक्षण अहाँ मे पूर्ण श्री धीमान केँ ।
छी पूत पवनक मानि गेलहुँ दूत दयानिधान केँ ॥

प्रभु सँ विलग रहलहुँ बहुत दिन, थोड़ थीक विपत्ति की ?
कऽ देब दूर विपत्ति ई हमरा तखन आपत्ति की ?
तद्यपि विचारक बात ई जे जैब वानर-संग मे ।
भऽ जैत तन-स्पर्श हमरा पर-पुरुष केँ अंग मे ॥

ई की उचित छै नारि लय समुचित विचार अही कहू ।
किछु नहि करू संकोच मन मे, वीर छी निर्भय रहू ॥

सम्भव इहो नहि दूर एतबा पीठ पर जायब कोना ?
अहँ तीव्र गति सँ गगन मे ऊड़ब प्रभञ्जन-गति जेना ॥

नभ मे रहब आतंक सँ खसि पड़ब जौं आकाश सँ ।
 भऽ जैब मूर्च्छित सूखि जायत मुख हमर अति प्यास सँ ॥
 देखत असुरगण एक वानर जाइ अछि लऽ नारि केँ ।
 बूझत सिया केँ कपि कोनो लऽ जाइ छनि परतारि केँ ॥
 दौड़त-भिड़त लड़ि पड़त नभ मे जौं असुरगण आबि कऽ ।
 ओ लेत सब दिशि सँ तखन हा ! घेरि एकसर पाबि कऽ ॥
 प्रतिकार कऽ की सकब ? अछि नहिं अस्त्र कोनो हाथ मे ।
 सहयोग ककरा सँ भेटत नहिं छथि कियो कपि साथ मे ॥
 एहना परिस्थिति मे तखन की ? कऽ सकब उपाय तौं ।
 लऽ जैत पुनि लंका सिया केँ जैब भऽ असहाय तौं ॥
 निर्दय विचार-विहीन निश्चर मारिकऽ खा जैत जौं ।
 आयब अहाँ केँ अञ्जनी-सुत ! व्यर्थ ई भऽ जैत तौं ॥
 अथवा बली छी भऽ सकै अछि मारि सब केँ दी अहाँ ।
 रामक चरण मे शीघ्रतर पहुँचा सकै छी ध्रुव अहाँ ॥
 हे कपि ! मुदा होयत उचित नहिं काज हमर विचार सँ ।
 मारल कोना जायत असुरगण तखन कोन प्रकार सँ ॥
 अपनेक संग-चलबाक अछि नहिं तकर कारण एक छै ।
 पति-भक्तिनी जकरा हृदय मे बचल बुद्धि-विवेक छै ॥
 से करथि नहिं स्पर्श कथमपि आन पुरुष-शरीर सँ ॥
 वरु सहथि कष्ट अपार व्याकुल रहथि यद्यपि अधीर सँ ।
 छल भेल किछु स्पर्श तन केँ लंकपतिक शरीर सँ ।
 कहू की ? तखन करितहुँ अहीं सोचू कने गम्भीर सँ ॥
 कपिवर ! अहाँ ज्ञानी स्वयं प्रभु-भक्त बड़ बुधियार छी ।
 जायब अहाँ संग उचित नहि अछि तैं बुझू लाचार छी ॥
 शुभ कार्य सिद्धिक हेतु साधन शुद्ध हम चाहैत छी ।
 अछि हृदय अहाँक पवित्र हम सब भाँति सँ मानैत छी
 तैं आब अहीं विचारि कऽ बाजू करब हम कार्य से ।
 हमरा अहाँ केँ करक अछि ओ कार्य द्रुति अनिवायं जे ॥

ई बात प्रायः राम नहिं कहने हेताह जनैत छी ।
 केवल पता जाकऽ हमर दीअनि उचित बुझैत छी ॥
 आबथि एतय मारथि निशाचर वर्ग के संग्राम मे ।
 लऽ जाथि हमरा जीति कऽ छनि शक्ति प्रियतम राम मे ॥
 तत्पर रहै छथि सतत प्रभुवर दुष्ट के संहार मे ।
 तैं दुष्ट-दलनक नाम सँ प्रख्यात छथि संसार मे" ॥
 सीता-कथन सँ भेल अति आनन्द कपि हनुमान के ।
 लगला कहय माता सिया सँ नाम लऽ भगवान के ॥
 "हे देवि ! अपने के कथन अति युक्ति-संगत भेल ई ।
 संसार लय शिक्षा-जनक शुभ सीख हमरो लेल ई ॥
 रामक प्रिया सचमुच अहाँ विदुषी परम बुधियारि छी ।
 होयत कियै नहिं नीक मति मिथिलेश जनक-दुलारि छी ॥
 मा ! ज्ञान भेटल पैघ हमरा अहँक आशीर्वाद सँ ।
 सीखथु सकल नारी सुशिक्षा सुखद अइ सम्बाद सँ ॥
 हे मा ! जेना जे कहल हमरा सँ कृपा कय दास के ।
 से सब सुनेबनि चरण-लग मे बैसि प्रेम-निवास के ॥
 हम कैल आग्रह मा ! अहाँ सँ संग मे चलबाक ले ।
 से भक्ति-वश बजलहुँ तुरत प्रभु सँ मिलन करबाक ले ॥
 मा ! उचित बुझना गेल हमरा ऐह अपन विचार सँ ।
 अतिशीघ्र भऽ जायत मिलन हे मातु ! प्रणाधार सँ ॥
 हे मा ! कृपा कऽ आब सूनु एक दासक प्रार्थना ।
 दी चिन्ह किछु जे दऽ सकनि विरही प्रभू के सान्त्वना ॥
 ओ बस्तु होयत पूर्ण रूपेँ अटल ध्रुव विश्वास ले ।
 नभ-मार्ग सँ घूमब अहा ! ओ हैत रक्षक दास ले ॥
 एवं कोनो घटना कहूँ प्रभु आ अहाँ के ज्ञात हो ।
 कहि कऽ सुनेबनि नथ केँ ओ गुप्त बीतल बात हो ॥
 विश्वास प्रभु केँ होनि सिय जीबैत छथि तौ लंक मे ।
 कपि देखि आयल, बात कयलक, चिन्ह अनलक संग मे" ॥

ई कहब कपिक यथार्थ छनि से बूझि सकल प्रकार सँ ।
विश्वस्थ भऽ कहलनि जनकजा वचन पवन-कुमार सँ

“कपिवर ! सुनेबनि एक-दू घटना अहाँ श्री राम के ।
पद-कमल-लग मे बैसि सुन्दर सुनर शोभाधाम के ॥

अनुपम परम अछि चित्रकूट पहाड़ जम्बू द्वीप मे ।
मन्दाकिनी नामक नदी नित बहथि ताहि समीप मे ।

फल-पुष्प सँ परिपूर्ण तरुवर मधुप लुधकल फूल मे ।
जप मे निरत मुनिगण ततय तप करथि धारक कूल मे ॥

वातावरण सुरभित बहै छल पवन शीतल-मंद सँ ।
हम सभ निवास करैत आश्रम मे छलहुँ आनन्द सँ ॥

प्रभु एक दिन स्नान कऽ दौड़ैत अयला भोर मे ।
तीतल वसन-युत आबि कऽ प्रभु बैसि रहला गोद मे ॥

पुनि एक दिन के बात अछि बैसल छलहुँ प्रभु निकट मे ।
आयल कतहुँ सँ एक कौआ-रूपकारी विकट मे ॥

भय भेल हमरा बैसि गेलहुँ प्रभुक सुखकर कोढ़ मे ।
किछु काल लय हम सूति रहलहुँ तखन निद्रा घोर मे ॥

जगलहुँ जखन प्रभु राम हमरा अंक मे शिर राखि कै ।
निश्चिन्त सँ ओ सूति रहला मूँदि दूनु आँखि के ॥

ओ आबि वायस मारलक हमरा हृदय मे चोंच सँ ।
हम को करी सोचै छलहुँ बैसलि जखन संकोच सँ ॥

की तखन रक्तक बूँद उर सँ कपि ! अधिक लागल ढरै ।
दुख-ददर् सँ अति नोर दूनु नयन सँ लागल झरै ॥

पड़लनि प्रभुक तन पर गरम ओ बूँद जगला निन्द सँ ।
कारण कहै ले छलहुँ तत्पर भेल आनन्दकंद सँ ॥

की पूछि देलनि प्रभु “प्रिये ! शोणित कियंक बहैछ ई ।
कैलक कियो आघात तन मे बूझि संह पड़ेछ ई” ॥

पुछतहिँ छला की देखि लेलनि दुष्ट काग-विहंग के ।
ठपकैत तकरा लोल सँ शोणित छलै वदरंग के ॥

ओ तौ छलाह सुरेश-सुत नामी जयन्तक नाम सँ ।
 आयल छला ओ शत्रुता करबाक लय श्री राम सँ ॥
 देलनि चला रघुवीर सहजहि कुशक मंत्रित वाण केँ ।
 ओ ऊड़ि भागल तखन रक्षा लेल अपना प्राण केँ ॥
 भागल-फिरल निज प्राण-रक्षा हेतु तीनू लोक मे ।
 नहिं किन्तु क्यो देलक शरण पड़ि गेल बड़का शोक मे ॥
 असहाय भेल डेरैल-सन रामक शरण मे अँल ओ ।
 प्रभु-पैर पर पड़ि रहल, वायस छल बहुत घबड़ैल ओ ।
 प्रभु केँ प्रतिज्ञा छैन्ह क्यो जौ आबि जायत शरण मे ।
 रक्षा तकर हेतैक जौ लपटैत हमरा चरण मे ॥
 तौ कैल करुणानिधि छमा खल वायसक अपराध केँ ।
 दुग एक केवल मात्र फोड़ल देखि दोष अगाध केँ ॥
 देलक व्यथा किछु काल हमरा तकर कैलनि ई दशा ।
 तौ एहि दोषी पैघ केँ हेतै कियँ नहि दुर्दशा ॥
 ई तौ विकट अपराध अति कैलक कपट श्री राम सँ ।
 बाँचल अखन धरि अछि कोना ? जीबैत अछि आराम सँ ॥
 बेशी अहाँ सँ अखन कपिवर ! एहि ठाम सुनैब की ?
 बस, ऐह पूर्ण यथेष्ट अछि पुनि गुप्त बात बतैब की ?
 जाकय परिस्थिति हमर कहबनि अवश आनन्दकंद केँ ।
 अविलम्ब आबथि सैन्य लऽ नाशथि निशोचर-बृन्द केँ ॥
 सौभाग्य केँ ई चिन्ह चूड़ामणि लिअऽ निज संग मे ।
 ई देखि कऽ विश्वास हेतनि निज प्रियाक प्रसंग मे ॥
 ओ परम सुन्दर रत्न लऽ हनुमान अपना हाथ मे ।
 अति हर्षमय सत्कार सँ स्पर्श कैलनि माथ मे ॥
 प्रभु-प्रेमिका सीता-सती केँ पवन-पूत प्रणाम केँ ।
 चलबाक ले तत्पर भेला सुन्दर सियावर-नाम ले ॥
 की रोकि कऽ कहलनि सिया "अछि नहि एतय किछु देब की ?
 तद्यपि कहै छी हम अहाँ केँ झट कहू तौ लेब की" ?

माता सियाक सनेह लखि कपि कहल हर्ष अतीव सँ ।

‘मा ! देखि मधुर अनेक फल टपकैत अछि जल जीव सँ ॥

सीता तखन कहलनि “कोना तोड़ब बहुत रखवार छै ।

सदिखन सचेतल वाग मे घूमैत पहरुदार छै” ॥

कपि देल उत्तर “जननि ! भय नहि अहँक आशीर्वाद सँ ॥

चढ़ि विटप पर हम तोड़ि खायब फल प्रभुक प्रसाद सँ ॥

देखबाक अछि के ? के ? दशानन के हितैषी बूझिली ।

प्रभु राम-दूतक काम अद्भुत अहँ अखने देखिली ॥

प्रभु छथि सहायक तखन चाही शक्ति आब विशेष की ?

करुणामयी मा ! कऽ कृपा केवल अहाँ आदेश दी” ॥

फल खाइ ले आज्ञा सिया देलनि जखन हनुमान के ।

कैलनि विचार कनेक देखी घूमि कऽ उद्यान के ॥

किछु काज बाँकी रहल कऽ ली अखन निश्चय पूर्ण से ।

दशमुखक बल-अभिमान के किछु-अंश कऽ दी चूर्ण से ॥

छै सैन्य कतबा कोन अखरु शस्त्र कतवा शक्ति छै ।

रण मे टिकेवाला केहन रण-कुशल कतवा व्यक्ति छै ॥

□

अशोक वाटिका विध्वंश

ई सभ पता लागत जखन मुठभेड़ एकरा सँ करी ।

ललकारि किछु के मारि झगड़ा ठानि निश्चर सँ लड़ी ॥

छै चारि तरहक शत्रु-संग वर्तवि करक सुरीति जे ।

अछि साम एवं दाम, भेदरु दण्ड बूझल नीति से ॥

समझा बुझा कऽ शत्रु के वश करी सामक अर्थ छै ।

से किन्तु राक्षस प्रति प्रयोग लगैछ प्रायः व्यर्थ छै ॥

धन-लोभ दऽ वश मे करी ई दाम नीतिक काज छै ।

से तौ चलत उपाय नहि भेटल कुवेरक राज छै ॥

जौ भेद-नीति चलैब से तौ सफल होयत नहि मुदा ।

कारण, निशाचर मद-नशा मे अछि सुनत नहि किछु कथा ॥

एहना परिस्थिति मे प्रयोग लगैछ उत्तम दण्ड के ।
शक्तिक प्रदर्शन कऽ परीक्षा ली विमूढ़ प्रचण्ड के ॥

ई सोचि कपिवर ओहि सुन्दर सकल उपवन-वाग के ।
विध्वंश लगला करय लंका-वाटिकाक सुहाग के ॥

किछु खाथि फल किछु तोड़ि फेंकथि चीखि खट्टा-तीत के ।
जौ किछु कियो टोकनि कि लागथि तुरत गाबऽ गीत के ॥

पहुँचल जखन रखवार पकड़ि लेल कपि हनुमान के ।
की चट पकड़ि देलनि पटक लऽ लेल असुरक प्राण के ॥

आयल अनेको अस्त्र-आयुध लऽ असुरगण क्रोध मे ।
मारल पवनसुत असुर के तरु-डाढ़ि सँ प्रतिशोध मे ॥

सब गेल दौड़ल हाकरोस करैत रावण-शरण मे ।
कहलक 'कतहु' सँ आबि बन्दर एक अद्भुत वरण मे ॥

रुचिगर मधुर फल तोड़ि खेलक फेंकि देलक अधिक के ।
कैलक मर्ना तौ मारि बैसल वाग-रक्षक-श्रमिक के ॥

तैं हे असुर पति ! दण्ड दी बड़का एहन कपि मूढ़ के ।
कहुना पकड़ि मंगवाउ थूढ़ हाथ-पैर विमूढ़ के ॥

विध्वंश वागक सून कऽ अक्षय कुमारक अंग मे ।
लगलक आगि सशस्त्र दौड़ल सैन्य लै बहु संग मे ॥

घड़फड़ जकाँ अगुतैल दौड़ल गेल कपिक समीप मे ।
जहिना देखैछी जाइ अछि फनिगा मरइ लै दीप मे ॥

ई चाहलक कपि के तुरत हम मारि देबनि वाण सँ ।
हा ! किन्तु ओ लंकेश-सुत निज हाथ धोलक प्राण सँ ॥

ई दुखद घटना सूनि रावण क्रोध मे भरि गेल ओ ।
अपने स्वयं ऊठल चलइ लय तुरत तत्पर भेल ओ ॥

सोचल हतइ लय एक कपि के जाइ हम लंकेश की ?
नहि ई उचित, तैं एक कोनो वीर के आदेश दी ॥

देलक तखन आदेश दशमुख मेघनाद स्वपुत्र के ।
जो मारि कऽ की बान्हि कऽ तो जानि दे कपि हूढ़ के ॥

झट मेघनाद पिताक आज्ञा मानि तत्पर भेल ओ ।
 हनुमान केँ सम्मुख लड़ै लय आबि तखने गेल ओ ॥
 ठनिगेल दूनू मे परस्पर युद्ध अति विकराल सँ ।
 लगला लड़य लंगोटधर लऽ विटप-डाढ़ि विशाल सँ ॥
 लंकेश-सुत हत होइछल नहि, ब्रह्म केँ वरदान सँ ।
 भेटल छलै दिव्यास्त्र तँ लड़ि रहल छल हनुमान सँ ॥
 सोचल पवनसुत जाइ कहुना रावणक दरबार मे ।
 तँ बान्हि हमरा जैक चाही ब्रह्म केँ सत्कार मे ॥
 देखी कने लंकेश केँ कतबा विभव-सामर्थ्य छै ।
 वेदज्ञ अछि कहबैत किन्तु बिचार विलकुल व्यर्थ छै ॥
 ई सोचि कऽ हनुमान देलनि त्यागि करब प्रहार केँ ।
 चुपचाप भऽ ओ ठाढ़ रहला राखि निज हथियार केँ ॥
 ई पाबि अवसर इन्द्रजित झट बान्हि नागक पाश मे ।
 लऽ चलल वापक लग प्रशंसा हैत ताही आश मे ॥
 यद्यपि छलनि बान्हल दुनूटा हाथ अति मजबूत सँ ।
 तद्यपि बहुत मारल गेला निश्चर पवन-सुत-पूँछ सँ ॥
 लंकेश केँ सम्मुख अनिल-सुत ठाढ़ भऽ सोचै छला ।
 देखी कने वार्त्ता करै केँ केहन एकरा मे कला ॥

□

हनुमान केँ रावण सँ भेंट

कोपित बहुत भऽ गेल छल रावण विटप केँ नष्ट सँ ।
 क्लेशित रहय अक्षय कुमारक मृत्यु सुनि कऽ कष्ट सँ ॥
 तँ पूछि ऊऽल कटु वचन-युत वाक्य रावण रुष्ट सँ ।
 “तों के ? थिकेँ परिचय अपन दे बाजि कऽ स्पष्ट सँ ॥
 कयलेँ उपद्रव ढीठ भऽ तों आबि हमरा राज मे ।
 साहस कोना भेलौक तोरा एहि तरहक काज मे ॥
 अयलेँ कतय सँ ? को प्रयोजन छौक ? तोहर नाम की ?
 तों नहि जनै छै ? होइ छै दुष्कर्म केँ परिणाम की ?

हम के थिकहुं नहि चीन्हले हम वीर मे विख्यात छी ।

पुरुषार्थ हमरा मे परम तैं पुरुष मे प्रख्यात छी ॥

कयले महा अन्याय तों अक्षम्य छी अपराध ई ।

प्रिय पुत्र के हति दोष कयले तों कियैक अगाध ई ॥

हम बृश्चि गेलहुं विपिन-चर वानर महा अज्ञान छे ।

हमरा लगै अछि अधिक कैने मद्य प्रायः पान छे ॥

सत्कर्म की ? दुष्कर्म की ? नहिं तकर किछुओ ज्ञान छी ।

तैं आब बचि सकवे अखन नहिं, गेल तोहर प्राण छी ॥

चुप छे किये ? कहबाक जे छी कह खुलासा बात की ?

हम बृश्चि गेलहुं छे महा हिंसक निरुरतम पातकी ॥

बजबाक ढंग विचित्र तरहक देखि एवं सुनि कऽ ।

मुह तोड़ उत्तर देल कपि किछु शब्द मे झट चुनि कऽ ॥

कपि वीर छाती तानि कऽ लगला कहय लंकेश के ।

डटि कऽ तखन लगला सुनाबय किछु अपन उद्देश्य के ॥

‘सुग्रीव के मन्त्री थिकहुं आ रामचन्द्रक दूत छी ।

हनुमान नाम प्रसिद्ध अछि बलवान पवनक पूत छी ॥

जे काम सँ आयल छलहुं से कैल हम आराम सँ ।

ई आब जाकय कहब घटना एहि ठामक राम सँ ॥

भऽ गेल हमरा भेट तोरा सँ निशाचर-रूप मे ।

छे विभव-मद मे चूर्ण एवं धूर्त कपटी भूप मे ॥

हमरा सुनल छल लोक सँ तों पैघ बड़ वेदज्ञ छे ।

देखैत छी हम किन्तु तों सब भाँति सँ अल्पज्ञ छे ॥

ईहो बुझल अछि तों कि के ? छल दबल वालिक काँख मे ।

धनु नहिं उठा सकले लजे ले भीड़ लाखों-लाख मे ॥

लखि सुन्न कुटिया पर पहुँचले चोर बनि मुनि-भेष मे ।

सीता-हरण कऽ भागि अयले तुरत अपना देश मे ॥

कयले कपट जिनका तंगे छथि विश्व-बीच महान ओ ।

सब वीर मे बलवान ज्ञान-निधान बड़ विद्वान ओ ॥

छथि वैह स्वामी जानकी के कान सँ तों सुनि ले ।
तिनका सँगे जौं रारि ठनबे तौं तकर फल गूनि ले ॥

लंका-प्रजा-सँग-सँग स्वयं मरबे तखन छन मात्र मे ।
से सोचिले जौं बुद्धि बाँचल छौक तोरा गात्र मे ॥

सुन कथन हमरो लंकपति ! जौं हित अपन चाहैत छे ।
सुग्रीव-अग्रज वालि के निज सँ बली मानैत छे ॥

तौं वालि-वध केनिहार रामक नारि के झट छोड़ि दे ।
सीता समर्पण कऽ प्रभुक सँग मित्रता तौं जोड़ि ले ॥

प्रभु-शरण मे जा मानि लेवे जौं अपन अपराध के ।
करथुन छमा, करिहें विनय पद-छूबि सीतानाथ के ॥

कपि के कहब उत्तम छलनि यद्यपि अधिक हितकर महा ।
लगलै मुदा अप्रिय दशानन के हँसल कहि कऽ हहा ॥

देलक सपदि आज्ञा असुरपति तुरत अपना दास के ।
“दे मारि वानर के जलधि मे फेकदे कपि लाश के ॥

ई एक तुच्छ कुरूप कपि की ? ज्ञान हमरा देत ई ।
अछि बड़ लुटेरा राज्य भरि के लूटि प्रायः लेत ई ॥

केलक उपद्रव पैघ सुन्दर वाग के विध्वंस के ।
अछि अति उकाठी थीक ई सन्तान वानर-वंश के ॥

ई गुप्तचर शत्रुक लगै अछि तुरत एकरा मारि दे ।
आ बान्हि टाँगह हाथ जिविते माटि तर मे गाड़ि दे ॥

अछि चोर मे ई धूर्त आयल कोन तरहे लंक मे ।
हमरा सँगे वार्ता करै अछि ढोठ भऽ निःशंक मे ॥

नहि कर विलम्ब विशेष मटिया तेल तन पर ढारि दे ।
जड़ि जैत पावक सँ भसम कऽ भूमि तर मे पारि दे ॥

ई सुनि लंकापतिक अनुचित निठुरतम निर्देश के ।
मंत्री विभीषण नीतियुत कहलनि बचन लंकेश के ॥

“हे बन्धुवर विद्वान ! त्यागू एहि क्रोधावेश के ।
राखू बचा कऽ नीति अनुपम परम अपना देश के ॥

भूपति करथि नहि दूत के बध राजनीति कहैत छै ।
दी दण्ड जकरा योग्य जे हो शास्त्र-मध्य लिखैत छै ॥

नीतिज्ञ छी नीतिक विरुद्ध कदापि अपने नहि चली ।
पिटबाउ, सिर के मूढ़ि कऽ घुमबाउ लंका के गली ॥

अथवा घिपा कऽ लोह सँ दी दागि कपिक शरीर के ।
बध किन्तु करक विचार नहि चाही अहाँसन वीर के ॥

सुनि सुमति रावण कहल-“वेश, विचार जेह कहैत छी ।
दे दण्ड वानर के अखन जे बूझि उचित पड़ैत छी ॥

प्रिय अधिक लांगडि होइ छै कपि जाति के सूनैत छी ।
तै आगि लांगडि मे लगा दे उचित दण्ड बुझैत छी ॥

सब दिनक लेल अवश्य ई रहतैक दाग, जनैत छी ।
पुनि आब लंका ऐब नहि सोचत कदापि, बुझैत छी ॥

आदेश पबितहि दासगण जयकार कऽ लंकेश के ।
फाटल-पुरान-मलीन वस्त्र बटोरि-आनि विशेष के ॥

सब वस्त्र लांगडि मे लपेटल बोरि देलक तेल सँ ।
देलक लगा झट आगि के लऽ चलल घुमबै लेल तौ ॥

लंकाक पथ प्रत्येक पर लऽ चलल सब हनुमान के ।
ई गुप्तचर छी शत्रुके अपमान कर अज्ञान के ॥

मचबैत शोर चलैत सब घुमबैत प्रति बाजार मे ।
पोटैत-धक्का दैत गाड़ि पड़ैत विविध प्रकार मे ॥

दुर्गति करऽ सँ बाज नहि आयल कियो हनुमान के ।
हा ! किन्तु कपिवर करथि जय-जयकार श्री भगवान के ॥

निशिचरक दल सँ पकड़ि किछु के पटक पथ पर देथि ओ ।
झट नाक एवं कान ककरो नोचि नख सँ लेथि ओ ॥

ककरो बना कन्दुक जकाँ फेकथि पवनसुत पैर सँ ।
जे आवि लग मे बात सुनबनि पूर्ण रूपेँ वैर सँ ॥

झट कूदि पड़ला भवन पर लागल जड़य गृह स्वर्ण के ।
पशु सकल खुट्टा तोड़ि भागल छल अनेकों वर्ण के ॥

अउनी-पथारी लागि सभ के गेल लंका नगर मे ।
जड़ि गेल घर-भण्डार सभ के हाथ ! किछुए पहर मे ॥

देखल जड़ैत विशाल दशमुख केर शयनागार के ।
लगली बहावय नारिगण सिर पोटी अश्रुक धार के ॥

जड़लैक सब सम्पत्ति हा ! राखल छलै जे गेह मे ।
बच लैक केवल वस्त्र-भूषण छल पहिरने देह मे ॥

बचलनि विभीषण-भवन केवल मात्र लंका-नगर मे ।
सहराथि सदखन रहथि ओ प्रभु-प्रेम-सागर-लहर मे ॥

छल भेल रावण एकदिन अति मुदित सीता-हरण सँ ।
से बहु दुखी भऽ रहल अछि अक्षय कुमारक मरण सँ ॥

छल जे सुखी जहिना कुवेरक राज्य-सम्पत्ति पाबि कऽ ।
से अछि दुखी हा ! आइ लंका के जड़ैत विलोकि कऽ ॥

तँ छै कहल ई 'नहि रहल सब दिन जगत मे क्यो सुखी ।
नहि रहल सब दिन आइ धरि संसार मे क्यो जन दुखी' ॥

सिय के सुनौलक निश्चरी क्यो कपिक ई अति दुर्दशा ।
'सीते ! अहँक कपि आइ रामक पाग के देलक खसा ॥

दुर्गति दनुज-दल कऽ रहल छै अखन लंका-नगर मे ।
लाँगड़ि जड़ै छै देह जड़ैत आब किछुए पहर मे ॥

वेवश बहुत वानर अखन छथि, बन्द बाजब वीर के ।
बल-बुद्धि किछु नहि हा ! चलै छनि ओहि कपि रणधीर के ॥

ई कष्टप्रद संवाद सुनितहि सीय शोकित भऽ गेली ।
लगली करय सविनय निहोरा अनल सँ श्री मंथिली ॥

"हे अग्निदेव ! दयालु छी, करितहुँ दया किछु आइ जो ।
हनुमान लेल स्वभाव तजि शीतल अहाँ भऽ जाइ तो ॥

बिसरब ने कहियो हम अहँक हे अग्नि ! अइ उपकार के ।
बढ़का हितैषी हैब हमरा संग अवध कुमार के ॥

ई छथि पवनसुत पवन छथि अपनेक सहयोगी सही ।
तँ मित्र-सुत के कष्ट अपने दूर कऽ शीतल रही ॥

सीताक सविनय प्रार्थना पर अग्निदेव यथार्थ मे ।
 कपि लेल शीतल भऽ गेला ओ निश्चरक श्रम व्यर्थ मे ॥
 कूदैत नगरक महल पर लगबैत आगि पढ़ाथि ओ ।
 प्रभु-भक्त बड़ ज्ञानी विभीषण-भवन पर नहि जाथि ओ ॥
 कुदलाह सागर मे मिझोलनि आगि, अति हर्षित छला ।
 ई काज जे कैलनि कहै लय समुद सीता-लग गेला ॥
 कैलनि प्रणाम स्वकाज कहलनि हाथ दूनु जोड़ि कऽ ।
 “हे मा ! अहिक प्रसाद सँ खेलहुँ मधुर फल तोड़ि कऽ ॥
 जे अँल सम्मुख दनुज रोकक लेल तोड़क काल मे ।
 तकरा पठौलहुँ मारि-चूड़ि कराल कालक गाल मे ॥
 आज्ञा दिअऽ हम जाइ झट श्री राम-लक्ष्मण छथि जतऽ ।
 बैसल प्रतीक्षा मे सुनै लय सुधि अहँक होयता ततऽ ” ॥
 कैलनि विदा हनुमान केँ सीता समुद आशीष दऽ ।
 पद-कमल-रज कर सँ उठा सिर पर सहर्ष कपीश लऽ ॥
 चलला सुखद सम्बाद सीता-सुधिक लय आनन्द सँ ।
 कहिकय सुनौता पवनसुत सन्देश रघुकुल-चन्द सँ ॥
 बैसल प्रतीक्षा मे छला अइ पार सागर-तीर मे ।
 अंगद तथा सुग्रीव वानर-भालु-वनचर-भीड़ मे ॥
 घबड़ैल, चिन्ता सँ व्यथित भऽ राति-दिन बितबै छला ।
 बिनु अन्न-जल किछु पान कयने रहथि, नहि सूतै छला ॥
 अबितहि हेता हनुमान, सब अनुमान ई करितहि छला ।
 को पवनसुत अयलाह, लखितहि सब अहा ! हर्षित भेला ॥



लंका सँ वापस

सहजहि सकल मिलि लोकि लेलनि हाथ पर हनुमान केँ ।
 कहलनि “अहाँ ई काज कैलहुँ पैघ बड़ भगवान केँ” ॥
 रामक निकट अयलाह सब हनुमान केँ लय संग मे ।
 प्रभु-चरण पर सिर-टेकि देलनि कपि विशेष उमंग मे ॥

चुभकेत सब पहुँचै गेला आनन्द-जलधि-तरंग मे ।
 चाहै छथि सब हम कहौ सन्देश सियक प्रसंग मे ॥
 आनन्दयुत दृग युगल सँ प्रेमक विमल वर वारि के ।
 हनुमान देलनि ढारि पद पर समुद अवध-विहारि के ॥
 “माताक दर्शन भेल हमरा” कहल श्री भगवान सँ ।
 उर सँ लगा लेलनि अहा ! हनुमान के सम्मान सँ ॥
 पूछल सियावर—“हे हितैषी ! छथि सिया तौ कुशल सँ ।
 दुबरेल तौ नहिं छथि अधिक सुकुमारि अति दुख-विकल सँ ॥
 किछु खाइ छथि की नहिं ? वसन तौ मेल हेतनि अंग मे ।
 बतियाथि ककरा सँ सतत के ? रहनि सीता-संग मे ॥
 सादर रखै छनि की ? अनादर छनि करैत बताउ तौ ।
 की ? काज करबा लेल कहलनि अखन अहाँ सुनाउ तौ ॥
 गेलहुँ कोना ? रहलहुँ कतय निष्ठुर असुर के देश मे ।
 औपल कोना कऽ छलहुँ कपिवर ! कोन तरहक भेष मे ॥
 अनुमान किछुओ कैल, शत्रुक सैन्य कतबा छैक की ?
 सुग्रीव-अंगद-लखन-सम सामर्थ्य अरि के छैक की ?
 दशमुखक शासन सँ प्रजागण छै रहैत प्रसन्न सँ ?
 नित राज्य के मण्डार की ? भरले रहै छै अन्न सँ ?
 अपकीर्ति कैलो पर दशानन की रहै अछि चैन सँ ?
 की बूझि मे आयल कुलक्षण सून रावण वैन सँ ?
 कपिवर प्रभुक स्तुति-विनययुत कैल बहुत प्रकार सँ ।
 लगला करय वर्णन अपन यात्राक सब विस्तार सँ ॥
 “हे नाथ ! पतिव्रत पर अटल छथि तौ जननि सब भाँति सँ ।
 कहुना बिताबथि समय माता रहथि किन्तु अशान्ति सँ ॥
 घेरलि निशाचरि सँ रहथि सदखन बुभू बन्दिनि जकाँ ।
 ओ तौ लगै छथि दीन नर-कंगाल के नन्दिनि जकाँ” ॥
 पुनि बीच मे रघुवीर पूछल बात किछु हनुमान सँ ।
 सीताक सम्प्रति भावना बुझबाक छनि अनुमान सँ ॥

"हे कपि ! कहूँ हमरा बिना रखने कोना छथि प्राण के" ।
छथि कोन तरहेँ सिय बचौने निज सतीत्वक मान के" ॥

हनुमान देलनि केहन उत्तर तखन श्री भगवान के" ।
से बूझि मानय पड़त छथि हनुमान सागर ज्ञान के" ॥

"अति ऊँच बैदेही-सतीत्वक प्रवल छहर दिवाल के" ।
नहि शक्ति छनि फनबाक ओ यमराज-रूपी काल के" ॥

छनि प्राण रक्षित प्रभुक पावन नाम-पहरूदार सँ ।
सदिखन रहै छनि बन्द दृढ़तर अटल ध्यान-किवार सँ ॥

प्रभु के" चरण मे नयन लागल रहनि नित ताला जेना ।
कहु तखन सीता-प्राण तन सँ निकलि कऽ जेतनि कोना ॥

जीबैत छथि कहुना हृदय मे अधिक धीरज धारि कऽ ।
हमहूँ बहुत धीरज बन्हौलहुँ बाजि वचन विचारि कऽ ॥

जागलि रहथि सूतथि ने कखनो जपथि नाथक नाम के" ।
निशिचर-त्रियागण के" सुनाबथि प्रभुक सद्गुण ग्राम के" ॥

के ? कोन दिशि सँ आबि जायत असुर चौकलि रहथि ओ ।
दुष्टा-निशाचरि केर अप्रिय वचन सदिखन सहथि ओ ॥

सब निश्चरीण अहाँ दिशि सँ जानकी-मन-मोड़ि कऽ ।
लंकेश-दिशि करबाक ले अछि पड़ल आफनतोड़ि कऽ ॥

हम देखि हुँनकर दुर्दशा भेलहुँ दुखित हमहूँ महा ।
मन भेल लंका के" उलटि हम वारिनिधि मे दी बहा ॥

छल किन्तु आज्ञा प्रभुक नहि तँ दाबि देलहुँ क्रोध के" ।
मानय पड़ल अगुताइ नहि आत्माक अइ अनुरोध के" ॥

छिपि कऽ खसौलहुँ मुद्रिका पड़लनि जननि के" हाथ मे ।
रहलहुँ छिपल किछु छण अशोकक सघन सुन्दर पात मे ॥

ओ अकचकैली देखि अंगुठी राम नामांकित अहा !
लगलीह ताकय चारु दिशि सीता प्रसन्न छली महा ॥

हम पाबि अवसर प्रकट भेलहुँ बटुक ब्राह्मण-वेष मे
कर जोड़ि कऽ हम ठाढ़ रहलहुँ भक्ति के" आवेश मे ॥

पुछलनि - "अहाँ के ?" देल उत्तर हम "पवन के पत छी ।

अछि जन्म वानर-वंश मे हम अखन रामक दूत छी ॥

विश्वास भेलनि पूर्ण रूपे जखन हमरा पर अहा !

हम दास छी अपनेक सचमुच जानि लेलनि तखन हा !

भेली प्रसन्न विशेष पुछलनि कुशल-मंगल नाथ के ।

ध्यानस्थ भऽ किछु काल धरि रहली झुकौने माथ के ॥

हम बृझलहुँ मा डूबि गेली शोक-पीड़ा-कीच मे ।

सदिखन रहै छथि पड़ल अतिशय शोक-सागर-बीच मे ॥

सुकुमारि छथि नारी परम पीड़ा अधिक सहती कोना ?

सोचू अहूँ जीवैत कतबा काल धरि रहती एना ॥

हे नाथ ! आब विलम्ब नहिं लंका-विजय मे किछु करी ।

अछि पैघ अन्देशा जिवै छथि अम्ब किछु छन पल-घड़ी ॥

अछि आब केवलमात्र देरी श्री प्रभुक आदेश के ।

रण-हेतु सब तत्पर प्रतीक्षा मे रुकल निर्देश के ॥

अछि शत्रु दल के दलन करबा लेल अधिक जोशैल ई ।

अछि कच्छमच्छ करैत लंका जाइ लै अगुतैल ई ॥

बहुतो बरष सँ अछि दशानन पर बहुत खिसिएल ई ।

दर्शन करत श्री जानकी के तँ एतेक अगुतैल ई ॥

प्रभु छी समर्थ, विलम्ब की होयत कोनो टा काज मे ।

अगुता रहल अछि जाइलय रण-हेतु लंका-राज मे ॥

दानव-दलन मे देर होमक कोन कारण बात की ?

लंका-विजय के संग मारल जैत रावण पातकी ॥

हम देखि अयलहुँ वीर नहिं ओहन कियो अछि लंका मे ।

जे लड़ि सकत किछु काल अंगद श्री लखन के संग मे ॥

वश, नाथ ! हमरा अछि अन्देशा मात्र माता-प्राण के ।

दुख-शोक सँ पीड़ित कखन धरि राखि सकती प्राण के ॥

नहिं सान्त्वना देनिहार छनि मा के ओतय अप्पन कियो ।

नहिं पहुँच सकजा जननि-लग सुर नाग-पशु-मानव कियो ॥

ई छलनि रक्षक रूप में शुभ रत्न चूड़ामणि अहा !
सेहो पठा देलनि अहाँ के आब अछि चिन्ता महा” ॥

कपि के कथन सुनि राम किछु क्षण सोचि कहल कपीश के ।

“सुग्रीव ! सेना लऽ चलू लंका, सुमिरि शिव-ईश के” ॥

जौ आब अधिक बिलम्ब हम सभ करब घ्रुव पछतैब तौ ।

रण शीघ्र जीती तखन जीवित जानकी के पैब तौ” ॥

आदेश रामक पाबि बाजल दुन्दुभी रणक्षेत्र के ।

चलि पड़ल सेना पाबि कऽ सेनापतिक संकेत के” ॥

कहु तौ तखन आज्ञाक पालन मे विलम्बे हैत की ?

एचि देखि रामक भक्त सँ बैसल कनेकों जैत की ?

लगला विचारय जाइ सागर-पार लंका नगर मे ।

दी मारि सब निश्चर-असुर के पहुँचि किछुए पहर मे ॥

तँ एक दृढतर पुलक रचना हैब अति अनिवार्य छी ।

सम्प्रति तुरत मिलि संग सभ के करक ई शुभ कार्य छी ॥

भेलनि विचार समस्त शिल्पी के सभक पसंद सँ ।

लगि जाइ पुल-निर्माण मे आदेश आनन्दकंद सँ ॥

कोनो असंभव-कठिनतम नहि कार्य अछि संसार मे ।

जे हैत नहि सम्पन्न, मिलि कऽ करी जाँ सब प्यार मे ॥

नल-नील छल विज्ञान-विद लागल बनाबऽ सेतु के ।

जयकार कऽ लय पाणि मे सब राम-विजयक केतु के” ॥

□

लंका पर चढ़ाई

भऽ गेल निर्मित सेतु सागर-बीच अद्भुत एकटा ।

कपि-सैन्य सब उतरऽ तुरत लागल जेना नभ मे घटा ॥

लऽ केतु कर मे सेतु पर रण हेतु छथि चलि पड़ल ओ ।

जय राम जय-जय राम जय उद्धोष कऽ बढ़ि रहल ओ ॥

उत्साह सबहक देखि बजला प्रभु सुप्रिय सौमित्र सँ ।

“हे प्रिय अनुज ! जोतब कठिन नहि एहि असुर अमित्र सँ ॥

अच्छि किन्तु चिन्ता, युद्ध मे लगि जैत समय विशेष जी० ।
 की ? पाबि जीबित सकब सीता के अधिक संदेह तौ ॥
 लछुमन ! समुद्रक मध्य किछु छन रहक हम चाहैत छी ।
 विरहाग्नि सँ दगधल हृदय शीतल करऽ चाहैत छी ॥
 जीबित सिया छथि सुनि हमहूँ अखन धरि जीबैत छी ।
 सीता-वियोगक दुख अतीव सदैव सहैत रहैत छी ॥
 कहिया शरीर सजैब हम सुन्दरि सिया-सन सोन सँ ।
 सौन्दर्य-शालिनि-संग हम बतियैब कहिया मोन सँ ॥
 रोगी रसायन-पान कऽ नाशथि जेना निज रोग के० ।
 तहिना मनोहर छवि सियाक विलोकि नाशब शोक के० ॥
 सिय-वचन सूनब कवन ? देखब सुभग नयन विशाल के० ।
 दर्शन करब हम कवन सिन्दुर सँ सुशोभित भाल के० ॥
 मिथिलेश जिनकर बाप, दशरथ ससुर, पति हम राम छी ।
 तिनकर दशा ई हो, लगै अच्छि छथि विधाता वाम की ?
 देवर अहाँ-सन जिनक अरु पतिव्रत-महाव्रत-धारिनी ।
 से आइ भोगथि पति-वियोगक दुख जेना हत भामिनी ॥
 सीता-वियोगक कष्ट सँ रोगी महा बनि गेल छी ।
 लछुमन ! अहीं टा वैद्य बड़का अखन हमरा लेल छी ॥
 बहु भाँति सँ श्री राम विरही छथि करैत विलाप के० ।
 दै सान्त्वना लछुमन चलाबथि वीर-वार्त्तालाप के० ॥
 उतरैत पुल सँ ठानि देलनि रण बिना आदेश के० ।
 किछु नहिं सुनऽ लगला कियो सुग्रीव के० निर्देश के० ॥
 कपि-भालु-सेना के० हुमेला मे सुनै अच्छि बात के ?
 ओ ध्वनि विशेष कठोर छल जे भेल शस्त्राघात के० ॥
 कपि-असुर दूत दल परस्पर लड़ि रहल अच्छि मोन सँ ।
 क्यो बाण तथा कृपाण सँ क्यो तीक्ष्ण वर्छी त्रौण सँ ॥
 प्रति-दिन मरय लागल अनेकों सैन्य दूत पक्ष के० ।
 के ? गिन सकत कतबा मरल सेना सहस्रों लक्ष के० ॥

सब वीर क्रम-क्रम सँ मरल लंकेश के रण-खेत मे ।
 प्रभु-तीर सँ हत हैत रावण जैत तँ साकेत मे ॥
 प्रिय नारि मन्दोदरि मनी सदिखन करैत रहैत छै ।
 “नहि राम सँ झगड़ा बेसाहू” सुमति दैत रहैत छै ॥
 हा ! ओ मुदा रानी-कथन नहि नीक बूझि पड़ैत छै ।
 लंकेश भऽ रण सँ हटब अपमान-जनक लगैत छै ॥
 मारीच के सुन्दर कथन प्रिय मोन जखन पड़ैत छै ।
 दिन-दिन बढ़ैत स्वसैन्य के लखि जितब कठिन लगैत छै ॥
 बल मे स्वयं के राम सँ बहु थोड़ बूझि पड़ैत छै ।
 रण मे मरण के वरण करवा मे चरण कँपैत छै ॥
 तद्यपि करत की ? आब रिपु तौ माथ पर चढ़ि गेल छै ।
 अपने मारत की शत्रु के मारत कोनो तौ भेल छै ॥
 सुत मेघनादक मृत्यु सँ विचलित दशानन गेल भऽ ।
 पुनि कुम्भकरणक मरण सुनि निज अस्त्र कर मे लेल घऽ ॥



रावण-वध

ऊठल लड़ं लय राम-संग की अपशकुन उचरैत छै ।
 सब असुरगण के अशुभ लक्षण तखन देखि पड़ैत छै ॥
 सूर्यक प्रभा अति मंद भेल विहाड़ि ऊठल जोड़ सँ ।
 गज-बाजि-श्वान-विलाड़ि-गर्दभ-दृग भरल छल नोर सँ ॥
 पक्षी भयंकर बोल बाजल भू हिले लागल ओतऽ ।
 बहु रक्त बरिसल व्योम सँ आ मेघ अति गरजल ततऽ ॥
 छै गोघ्र गृह पर लंक मे गीदड़ भगै अलि दहिन सँ ।
 निश्चर-असुरपति रावणक पग बढ़नि रुकि-रुकि कठिन सँ ॥
 रथ-अश्व के देखल चलब लटपट जकाँ भऽ रहल छै ।
 लचबन अशुभ पहिने कुफल के होइ अहिना कहल छै ॥
 उचरैत छै अपशकुन तद्यपि चेत नहि लंकेश के ।
 नशलै विवेक विनाश-छन मे वेद-विद असुरेण के ॥

रावण करय लागल प्रदर्शन अपन सब युद्धक कला ।
से किन्तु लीला-धाम केँ केँ सकत मोहित कहूँ भला ?

असुरेश केँ आयुक अवधि अन्तिम छलै जइ काल मे ।
छोड़ल अवधपति नाभि शर एक दोसर भाल मे ॥
लगितहि प्रभुक ओ बाण रावण खसि पड़ल भू पर तेना ।
कारी भयंकर पंघ कोनो अछि पहाड़ खसै जेना ॥

प्रभुतीर लेलक सोखि अमृत नाभिरूपी कुंड केँ ।
धऽ ऐल मन्दोदरि निकट ओ तीर रावण-मुण्ड केँ ॥
हत भेल रावण देखि निशिवर दल पड़ायल भीति सँ ।
प्रभुपक्ष केँ सभ क्यो प्रसन्न छलाह अति ऐ जीति सँ ॥

अति हर्षमय वातावरण बनि गेल वानर-बृन्द मे ।
झट कैल तखने घोषणा "रामक विजय" आनन्द मे ॥
कहलनि सियापति "सोय केँ सम्बाद सुखद सुनाउ ई ।
बध कैल रावण केँ अहिक पति विजय-बात बताउ ई" ॥

हनुमान ज्ञान-निधान लऽ आदेश श्री भगवान सँ ।
चलला कुदैत सहर्ष सिय-लग तेज अपना यान सँ ॥
जय राम जय जय राम ध्वनि कऽ उच्चतम आलाप मे ।
सिय-लग पहुँचला जे छली श्री राम-नामक जाप मे ॥

कैलनि प्रणाम सनम्र माता-चरण मे कर-जोड़ि कऽ ।
सीता छली पति-ध्यान मे बैसलि दुनू पद-मोड़ि कऽ ॥
आशीष देल प्रसन्न मन सँ चीन्हि वानर वैह छी ।
जे जाड़ि लंका गेल छल किछु पूर्व दिन कपि सहै छी ॥

अनने अवश्ये हैत शुभ सन्देश शान्ति-निकेत सँ ।
अनुमानि बैसक लेल कहलनि हाथ केँ सकेत सँ ॥
कहलनि "अहा ! हे प्राण-रक्षक कपि ! अहीं सीताक छी ।
सतपुत्र अपने पतिव्रता श्री अंजनी वनिताक छी ॥

सन्देश नोक सुनाउ, स्वामी केँ कुशल-मंगल कहूँ ।
पुनि आबि गेलहुँ तौँ अहाँ ऐ बेर हमरा लऽ चलूँ ॥

कपि कह्य लगला रण-विजय कैलनि कोना ? विस्तार सैं ।
श्री राम हति लंकेश केँ कैलनि विदा संसार सैं ॥

“हे जग-जननि ! आनन्दायिनि ! राम केँ हृदयेश्वरी !
निज भक्तगण-कल्याण-कारिणि ! विश्व केँ मातेश्वरी ॥

सुन्दर सुखद सम्बाद मा ! सानन्द हम सुनवैत छी ।
बध कैल रावण केँ अपधपति राम सत्य कहैत छी ॥

ई सूनि शुभ सन्देश सीता कहल प्रिय हनुमान सैं ।
“हे कपि-प्रवर ! कृपया मिलादी शीघ्र श्री भगवान सैं ॥

सुन्दर एहन सन्देश पर हम देब कीं ? उपहार मे ।
नहि बस्तु कोनो हम देखैछी एहि भू-संसार मे ॥

नहि अछि जवाहर-रत्न-मणि-साम्राज्य एकरा तुल्य मे ।
जे दऽ पुरस्कृति कऽ सकी से बस्तु नहि ऐ मूल्य मे ॥

मा जानकीक प्रसन्नता पर कपि परम आनन्द सैं ।
गद्गद् बचन मे कहल रामक दृग-चकोरक चन्द सैं ॥

“ई भेल जय अपनेक पातिव्रत्य-धर्मक शक्ति सैं ।
रावण मरैत कदापि नहि पशु-भालु-वानर-व्यक्ति सैं ॥

ई कैल रचना छल अही केँ आततायी-नाश लै ।
निजदेह परलै कष्ट सहलहुँ निश्चरक घर-वास कै ॥

ई रण-विजय केँ श्रेय देलियनि राम केँ अहं जानि कऽ ।
हम मात्र कैलहुँ काज दूतक प्रभुक आज्ञा मानि कऽ ॥

प्रभु केर दुर्लभ दास-पद केँ पाबि जौँ हम गेल छी ।
कहु तखन बढ़िकेँ एहि सौँ की बस्तु हमरा लेल छी ॥

चाहैत जौँ छी देब किछु तौँ पुत्र हमरा मानि ली ।
सेवा सकल सानन्द हमरा सैं करायब, ठानिली ॥

मा ! आब हमरा कऽ कृपा ओ असुर केँ दीतहुँ बता ।
जे आइ धरि कटुवचन सैं छल रहल अपने केँ सता ॥

विकराल रूप कुरुष निश्चर-नारि सकल जमात केँ ।
हम मारि मुक्का-लात सैं सब तोड़ि देबे दाँत केँ ॥

देलक अहाँ केँ क्लेश वेश कुवेष-रूपी राक्षसी ।
तकरा उचित हम दण्ड देबा ले अखन तैयार छी ॥

आज्ञा दिअ, झोटा पकड़ि घिसिया पटक लथाड़ि दी ।
जिबिते कही तौ बान्हि कऽ हम माटि तर मे गाड़ि दी ॥

आदेश दी तौ अंग सबकेँ भंग कैकऽ छोड़ि दी ।
अथवा कही तौ अखन सबकेँ आँखि दून फोड़ि दी” ।

कषिबरक कथन पसंद नहि भेलनि दयामयि सोय केँ ।
देलनि बचा सभ दंड सँ सिय, मूढ़ अति दयनीय केँ ॥

कहलनि सिया “हे पवनसुत ! ई मूढ़ अति अज्ञान केँ ।
की दण्ड देब ? अबझ निश्चर-नारि निपट नदान केँ ॥

ई अपन पालनहार रावण केर आज्ञा मानि कऽ ।
वर्ताव कैलक अखनिघरि सामान्य महिला जानि कऽ ॥

नहि चीह्ल हमरा सकल ई, हम छी ककर अर्द्धाङ्गिनी ।
स्वामी हमर के छथि ? किनक हम थिकहुँ प्रिय वामाङ्गिनी ॥

ई शत्रु हमरा सभक अछि से तौ बूझू भ्रममात्र छी ।
दशग्रीव केँ तजि सभ कियो बूझू छमा केँ पात्र छी ॥

परतन्त्र अछि, नहि पढ़ल ई अनजान नारी-धर्म सँ ।
सत्संग नहि किछु ओ, प्रयोजन तखन की सत्कर्म सँ ॥

तै ई निशाचरि नहि जनै अछि नारि-शिष्टाचर केँ ।
ई तामसी अछि जीव, जानत को ? मनुज-व्यवहार केँ ॥

जकरा चरित मे कपि ! सकल सद्गुणक पूर्ण अभाव छै ।
अपराध सदिखन हैब तौ बनि जाइ तकर स्वभाव छै ॥

तै एहि तरहक जीव पर सज्जन दया करितहि एला ।
हमरो सभक कर्तव्य अछि, करिते रही जीवक भला ॥

जे भेल क्लेश अनेक हमरा से अपन दुर्भाग्य सँ ।
सुख-दुख भेटै छै जन्तुकेँ निज शुभ-अशुभ कर्तव्य सँ ॥

हमरो पहिल जन्मक करम-फल-भोग वाँकी छल कने ।
दुष्कर्म कौने हैब तै दुख काटि लेलहुँ हम भने ॥

ई दोष दोसर पर मढ़ब हम उचित नहि बूझत छी ।
 बुधियार छी, ई बात तौ अपनो अही जनैत छी ॥
 सब पर करी करुणा अहाँ हमरा सभक ई धर्म छी ।
 सन्मार्ग पर लायब कुपंथी के सुजन के कर्म छी ॥

सीताक सुन्दर नीतिपूर्ण सुवाक्य हनुमत सूनि कऽ ।
 कहलनि सिया के मृदु वचन कपिवर हृदय मे गूनि कऽ ॥

“हे देवि ! जनक-दुलारि ! रघुवर-प्यारि अनुपम नारि हे !
 सुर-रक्षिके ! वर-दायिके ! माता सुनयना-प्यारि हे !

जे किछु कहल अपने सुशिक्षा भेल जगतक लेल ई ।
 जीवन-सफलता-लेल मानव-मात्र के ध्रुव भेल ई ॥

आदर्श-नारि-प्रसंग मे सुखप्रद सुकथा सुनैत छी ।
 से सब अखन प्रप्यक्ष हम तौ मातु-मध्य पबैत छी ॥

मा ! आब अपने कऽ कृपा हमरा अखन आदेश दी ।
 अखने चली प्रभु निकट अथवा एक शुभ सन्देश दी ॥

हे अम्ब ! आकुल छथि अहाँ लै अवधपति बलवीर जे !
 बैसल सखा-संग छथि प्रतीक्षा कऽ रहल रणधीर से ॥

हे जननि ! जाधरि हम अहाँ के नहि मिलायब राम सँ ।
 ता धरि अहाँक ई दास बैसत छन्हुं नहि आराम सँ ॥

बुधियार वंदेही बुझल बड़ वायु-सुत हनुमान के ।
 कहलनि समुद सस्नेह निजमति परम ज्ञान-निधान के ॥

प्रभु-युगल पद-लग हे सुकवि ! हमरा अहाँ लऽ जाइ जौ ।
 कपिवीर ! हमरा प्रभुक शुभ दर्शन करा दी आइ जौ ॥

तौ हम कदापि ने विसरि कखनो सकब अइ उपकार के ।
 नहि हैब उच्छ्रम सुवस्तु देलो पर अपन भण्डार के ॥

ई जे सफलता प्राप्त भेलखि मात्र अहिक प्रयास सँ ।
 झट आबि अवसर पर बचौलहुं एहि तन के नाश सँ ॥

आशीष हम छी दैत हनुमत ! अमर भऽ जग मे रहू ।
 जे हो मनोरथ मोन मे निर्धोख भऽ हमरा कहू ॥

भेलहुँ अहाँ सेवक हमर आ अवधपति श्री राम के ।
ज्ञानी अहाँ सब दिन रहब भएडार सद्गुणग्राम के ॥

हनुमान पौलनि पैघ बड़ वरदान सीता-अम्ब सँ ।
सविनय अपन उद्गार कैलनि प्रकट श्री जगदम्ब सँ ॥

“हे मा ! हमर जीवन सफल भऽ गेल प्रभुक प्रसाद सँ ॥
सन्तुष्ट छी सीते ! सुखद अपनेक आशीर्वाद सँ ॥

जे छल मनोरथ पाबि गेलहुँ दास-पद दुर्लभ महा ।
हम पुत्रवत सेवक अहाँ के मा हमर थोकहुँ अहाँ ॥

अविलम्ब हम आदेश प्रभु सँ लऽ अवश्य अबैत छी ।
पहुँची अहाँ प्रभु-लग तुरत, हम सहै यत्न करैत छी ॥

कहलनि सिया “झट जाउ, प्रभु जहिना कहथि तहिना करी ।
कपि ! आइ हम आनन्दघन के चरण पर कहुना पड़ी” ॥

के ? भाग्यशाली अछि अहा ! हनुमान-सन संसार मे ।
जे शक्तिघर के शक्ति सँ मिलबैथ एहि प्रकार मे ॥

आनन्द के आनन्दघन सँ भक्त के भगवान सँ ।
मिलबैथ वरुणा-रूपिणी के परम कृपानिधान सँ ॥

हनुमान हर्षित भऽ पहुँचला राम के दरवार मे ।
प्रभु के सुनौलनि वचन, जननी जे कहल उद्गार मे ॥

“हे नाथ ! आज्ञा प्राप्त हो तौ जग-जननि के आनि दी ।
अपना प्रिया प्राणेश्वरी के प्रभु ! स्वयं पहिचानि ली” ॥

देलनि अहा ! आदेश रघुवर परम प्रेमोद्गार सँ ।
“लै आउ बिछुड़लि प्रेमिका के पवनसुत ! सत्कार सँ ॥

आबथि सिया स्नान कऽ सानन्द शोभित वसन सँ ।
कऽ देथि हर्षित परम सभके एहि सुन्दर मिलन सँ ॥

सत्वर सखागण समुद आज्ञा पाबि रघुकुल-चन्द सँ ।
अनबाक लै सादर सिया के सब चलल आनन्द सँ ॥

करजोड़ि सविनय कहल सब “हे जगत-जननी जानकी !
स्नान कं वस्त्रादि पावन पहिरि चलु चढ़ि पालकी ॥

हमरा सभक जीवन परम सार्थक अहा ! भऽ गेल ई ।
 अपनेक पद-दर्शन सुदुर्लभ आइ सभ के भेल ई ॥
 अपनेक दर्शन करक छनि बड़ लालसा श्री मान के ।
 अखनहुँ अहिक अनुपम सरूपक छथि लगौने ध्यान के ॥
 ओ अहंकर दर्शन करथि, दर्शन करू अहूँ भरतार के ।
 सुखप्रद युगल-जोड़ीक दर्शन दी करा संसार के ॥



राम-सीता-मिलन

आनन्दमय वातावरण बनि गेल छल ततकाल मे ।
 छड़पैत सभ चलला सिया-लग हेँड़ बान्हि विशाल मे ॥
 ई देखि हर्ष अपार, विपिनक भालु-वानर-वर्ग के ।
 छथि सभ सिहाति सुभाग्य-लखि पशु केर सुरगण स्वर्ग के ॥
 सीताक दर्शन सँ अहा ! नहि तृप्ति किनको नैन के ।
 चाहैत छथि सूनी कने सीताक सुन्दर वैन के ॥
 तन-क्लेश मे, रण मे, स्वयंवर-काल मे, दुख-दाह मे ।
 नारीक दिशि ताकी तौ नहि हो दोष यज्ञ-विवाह मे ॥
 कर जोड़ि विनय करैत छथि सभ एक पग पर ठाढ़ भऽ ।
 टपकै छलनि दृग-विन्दु सभ के स्नेह-पूर्ण प्रगाढ़ भऽ ॥
 जय मा ! जगत-जननी सिये ! स्वीकृति सभक प्रणाम हो ।
 अपनेक सेवक-वर्ग मे हमरो सभक ध्रुव नाम हो ॥
 सुग्रीव आगू आबि बजला बचन अति उत्साह सँ ।
 "सब सैन्य के बड़ि गेल मासिक चारिगुण गत माह सँ ॥
 उपहार बाँटल जैत जय के प्राप्ति मे आनन्द सँ ।
 जे बस्तु चाहथि जे कियो से माँगिलेथि पसन्द सँ ॥
 लंका-विजय सँ वीर-वर रघुवीर बड़ बनलाह तौ ।
 सीताक दर्शन पाबि रघुवर अति प्रसन्न छलाह तौ ॥
 तद्यपि तुरत स्पर्श तन सँ कैल नहि श्री सोय के ।
 नहि पाणि-गहि बैसौल अपना लग प्रिया रमणीय के ॥

आदर्श-नर पुछलनि सिया सँ हँसि अधिक सिनेह सँ ।

“ रहलहुँ बहुत दिन धरि अहाँ बिछुड़लि रवजन-पति-गेह सँ ॥

दिन-राति रहलहुँ मनुज रिपु कामी दनुज केँ गेह मे ।

सम्भव कहूँ लागल अहाँ केँ दाग हो शुचि देह मे ॥

तँ पैसि पावक मे प्रिये ! पावन स्वय केँ कऽ लिअऽ ।

अछि चरित विमल प्रमाण सम्प्रति सभक सम्मुख दऽ दिअऽ ॥

हम जीँ परीक्षा-बिनु स्वपत्नी मानि संग रखैत छी ।

अनुमान ह्वैछ समाज मे अपवाद हैत जनैत छी ॥

सभ लोक बाजल करत ‘रखलनि राम ओही नारि केँ ।

जइ नारि केँ रखलक निशाचर वरष भरि परतारि कै ॥

कहबैत छथि जे राम मर्यादा-पुरुष संसार मे ।

से तोड़ि देलनि आइ मर्यादा मनुज-अवतार मे ॥

स्थिति एहन मे कहु अहीं कर्तव्य चाहो हमर को ?

जग मे कलंकित हम अहाँ नहि हे सिये ! भऽ रहब की ?

रक्षा करक अछि रघुकुलक आदर्श शिष्टाचार केँ ।

क्यो दूसि नहि भव मे सकथि रामक कोनो व्यवहार केँ ॥

तँ हम अखन म्वीकार करबा सँ सिये ! लाचार छी ।

पत्नी हमर नहि अखन छी हम अहँक नहि भरतार छी ॥

कैलहुँ उलंघन जे छला रखवार तिनकर बात केँ ।

कटुवचन सँ लखनक हृदय केँ देल जे आघात कै ॥

फल तकर तौँ भोगहि पड़त दुख सहक हैत शरीर सँ ।

मिथिलाक कन्या छी अहँ-सोचू कने गम्भीर सँ ॥

हम तौँ अपन कर्तव्य कैलहुँ सिय-हरण-केनिहार केँ ।

मारल निशाचर-दुष्ट-कपटी-पातकी-भू-भार केँ ॥

रक्षा सदाचारक, निवारण करक छल अन्याय केँ ।

रघुकुलक कीर्ति सुकाव्य मे जोड़ल विमल अध्याय केँ ॥

हमरा यदपि सन्देह नहि किछु अछि अहँक चरित्र मे ।

तद्यपि पड़ल छी हम अवस्था अखन एक विचित्र मे ॥

मन है छ अतिशय स्नेह सँ ली कोड़ मे चाहैत छी ।
होयब बचौने निज सतीत्व अवश्य से मानैत छी ॥

हम किन्तु दुविधा मे पड़ल छी, की करी ! की नहि क
कुलशील-मर्यादा कोना राखी बचा कऽ ऐ घड़ी



सीताक अग्नि-परीक्षा संग राम के वार्त्ता

सीते ! अहाँ सन सकल सुन्दरि नारि सँ बतियैत जे ।
से पुरुष प्रेमी अहँक नहिं बनिजैत ? ई पतियैत के ?

हम नहिं अहाँ के अखन राखब संग सोचि बजैत छी ।
तँ हमर आशा त्यागि कऽ अन्यत्र जाउ, कहैत छी ॥

लछुमन-भरत-लग जा सकै छी राखि ओ सकताह जाँ ।
स्वामीक त्यागलि नारि के रक्षक अहा ! बनताह तौं ॥

इच्छा अहाँ के हो जतय सिय ! जा ततय सकैत छी ।
ली मानि अखनो बात ई आग्रह उचित करैत छी” ॥

दुखप्रद वचन रामक छलनि सीताक प्रति कहु केहन हा !
सीता अहा ! कैलनि सहन कहुना वचन ई कटु महा ॥

सुनलीह ककरो सँ ने कहियो दुर्वचन सुकुमारि जे ।
निज शील के रहलो बचौने आइधरि बुधियारि जे ॥

से आइ निज पति सँ सुनै छथि कष्ट-प्रद दुर्वचन के ।
देखू समय के फेर दैवक, खेल ई दुर्भाग्य के ॥

वरखा जकाँ जनकात्मजा के घाम वरिसल माथ सँ ।
आशा छलनि नहिं एहन सूनब बात कटु श्री नाथ सँ ॥

स्वामीक मुख सँ सुनि दुखप्रद बात स्वजन-समूह मे ।
लज्जावती गड़ि लाज सँ गेलीह शोकक व्यूह मे ॥

लगलनि बहय बहु नोर अविरल धार-सम सिय-नैन सँ ।
लगली कहय अति तर्कमय प्रभु के विनय-युत बैन सँ ॥

“हे वीरधीर ! महान पुरुषोत्तम थिकहुँ रघुवंश मे ।
सम्पूर्ण सद्गुण सँ प्रभो ! अवतरित विष्णुक-अंश मे ॥

अपने जखन सब जीव-जन्तुक हृदय-बीच बसैत छी ।
के अछि केहन स्वभाव के स्वामी ! अवश्य जनैत छी ॥

ज्ञानी-महान्यायी-दयानिधि विश्व मे कहबैत छी ।
कहु तौ तखन सन्देह हमरा पर कियैक करैत छी ॥

सज्ञान भऽ अज्ञान सन बजलहुँ कियै से तौ कहु ।
पति-शरणा मे अबितहुँ दुखद कटु वचन हम सुनिते रहू ॥

हे नाथ ! हमरा मे एहन कहु कोन चिन्ह पबैत छी ।
जे देखि निज अर्द्धांगिनी पर एहन दोष मढ़ैत छी ॥

अपना चरित्रक सत्प्रमाण बताउ प्रभु ! हम देब की ?
उर चीड़ दै छी, जौ कहो, प्रत्यक्ष देखिये लेब की ?

अपना सदाचारक शपथ खाकऽ कहै छी शुद्ध छी ।
संदेह के त्यागू, करू स्वीकार नाथ ! प्रबुद्ध छी ॥

ई अछि हृदय हृदयेश ! सब दिन सँ अहिक अधिकार मे ।
अधिकार दोसर कऽ सकत के ? सीय पर संसार मे ॥

हमरा अहाँ मे अचल अछि अनुराग टूटि सकैछ की ?
बिनु प्राण के तन छनहुँ जीवित कतहुँ बचल रहैछ की ?

हमरा बिना प्रभु, प्रभु बिना हम छनहुँ जीवित रहब की ?
आदर्शमय जीवन जगत मे राखि किन्नहुँ सकब की ?

सुनलहुँ कतहुँ बिनु व्योम के बाजु पवन बहतैक की ?
रवि सँ किरण आ किरण रवि सँ भिन्न भऽ सकतैक की ?

ई सृष्टि के शाश्वत नियम बदलैक भेल विचार जौ ।
अपना प्रिया-संग छल निठुर करबाक ई व्यवहार जौ ॥

तौ नाथ ! अपना हाथ के ई मुद्रिका त्यागल कियै ?
सादर अहाँ लग हाथ ! हमरा अखन लऽ आयल कियै ?

बन्हलहुँ कियै ओ सेतु आ रचलहुँ कियै रण-व्यूह के ।
रण मे कियै संहार कैलहुँ अकुत असुर-समूह के ॥

जौ ऐह छल करबाक तौ कैलहुँ बिलम्ब अहाँ कियै ?
हम नारि के रहलहुँ बनल अवलम्ब परम अहाँ कियै ?

रामक दरवार

शुभ प्रातःखन प्रभु राज-सिंहासन सुशोभित कैल जाँ ।

दरवार लागल छल, सभासद्-राज्य सेवक अँल तौँ ॥

दरवार मे पहुँचल छला सभ देवतागण स्वर्ग सँ ।

पूछल अवधपति सकल सेवक निज सखा जन वर्ग सँ ॥

“कहि कऽ सुनाउ बजैत अछि के ? की ? वचन समाज मे ।

सन्मति अहँ सभ दी सभासद ! सतत शासन-काज मे ॥

छनि प्रेम लछुमन-भरत आ शत्रुघ्न तीनू भाइ मे ?

आचरण उत्तम छनि कि नहि, आ भक्ति श्रद्धा माइ मे ?

सीता तथा हमरा विषय मे की ? बजैछ-कहैछ की ?

शासन-व्यवस्था सँ सकल सन्तुष्ट सतत रहैछ की ?

सच-सच कहू स्पष्ट रूपेँ नहि रहू संकोच मे ।

निर्धोख भऽ बाजू डरू नहि, नहि पडू किछु सोच मे ॥

जनता सुखी सदखन रहथि नृप केँ करक से कार्य छै ।

नरपतिक तौँ कत्तव्य नित जनहित करब अनिवार्य छै ॥

हमरा बतादी, कऽ कृपा जे उचित सबहक लेल हो ।

हमरा जनादी, अहित कर जाँ कार्य किछु ओ भेल हो ॥

हम हैब परम प्रसन्न सुनि जन-मनक निश्चल भाव केँ ।

निश्चय करब हम पूर्ण सभकेँ सब प्रकार अभाव केँ” ॥

छल भद्र नामक व्यक्ति बाजल अबधपति श्री राम सँ ।

स्पष्ट रूपेँ ओ कहय लागल परम सुखधाम सँ ॥

“हे परम पुरुषोत्तम ! प्रशंसा अहँक होइछ लोक मे ।

प्रभु ! राज्य भरि मे रहथि नहि कखनो कियो जन शोक मे ॥

सब वर्ण केँ नारी-पुरुष बैसथि सतत सत्संग मे ।

सोचथि-विचारथि नित्य, सब संसार-हितक प्रसंग मे ॥

नित करथि पूजा-पाठ एवं यज्ञ जप-तप नेम सँ ।

क्रोधित ने कखनो होथि तेँ सभ रहथि कुशल रु क्षेम सँ ॥

निश्चित समय पर मील कऽ प्रभु-भजन गावथि प्रेम सँ ।

नर-नारि प्रायः सभ करथि एकादशी-व्रत नेम सँ ॥

किछु भिन्नता नहि देखि रहलहुँ अवध एवं स्वर्ग मे ।

नव युवक सभ बलवान छथि स्फूर्ति बालक-वर्ग मे ॥

सभ बृद्ध व्यक्तिक बात मानथि चलथि गुरु-आदेश सँ ।

पितु-मातु केँ सेवा करथि तन-मन-लगन विशेष सँ ॥

नारी सकल पति-भक्तिनी-अनुगामिनी-साध्वी सती ।

सुमुखी-मधुर भाषिणि तथा सौभाग्य-शालिनि गुणवती ॥

सभ करथि निज कर्त्तव्य नित्य स्वधर्म केँ अनुसार सँ ।

ठानथि कोनोटा काज उत्तम बृद्ध-विप्र-विचार सँ ॥

रोगी ने लोभी-आलशी-ठग-चोर-व्यभिचारी कियो ।

नहि बनऽ चाहथि मनुज दोसर-धनक अधिकारी कियो ॥

क्यो अपढ़ नहि अछि, सतत भागल करथि अनुचित काज सँ ।

जौ भूल किछु भऽ जान्हि तौ गढ़ि जानि मूरी लाज सँ ॥

ऊभर ने खाभर कतहुँ अछि कादो ने कीचड़ वाट मे ।

नहि जाड़-गरम असह्य अछि मच्छर ने खटमल खाट मे ॥

आन्हर ने लाँगड़-बौक आ वकलेल नहि देखल कतौ ।

नहि भुट्ट-वधिर कुरूप-भिक्षुक नहि एकोटा अछि कतौ ॥

क्यो डूबि कऽ मरलाह जल मे सुनल नहि अइ राज्य मे ।

क्यो खसल नहि नर गाछ पर सँ राम केँ साम्राज्य मे ॥

दुष्कर्म-दुष्कर्मी-अधर्मी डरथि रामक नाम सँ ।

नहि चोर केँ आतंक अछि सूतथि मनुज आराम सँ ॥

नहि मूर्ख, पापी, कुटिल-कपटी, धूर्त, रोगी छथि कियो ।

नहि देखि रहलहुँ राज्य मे बेबूझ बालक आ धियो ॥

ऋषि-मुनिक तप-बाधक निशाचर-पति दशानन दुष्ट केँ ।

कैलहुँ दलन, हरलहुँ सुजन-मुनि-देव-भक्तक कष्ट केँ ॥

देलहुँ अहाँ लंकाक राजा-पद विभीषण मित्र केँ ।

लेलहुँ परीक्षा परम पावनि पुहुमिजाक चरित्र केँ ॥

तद्यपि सभक मन मे सतत खटकैत छनि किछु बात सँ ।

स्वीकार सिय केँ कैल जहिया राम ! तकरे प्रात सँ ॥

सभजन कहै अछि जाहि सीता केँ दशानन संग मे ।
लऽ गेल बलपूर्वक, कते दिन गुप्त रखलक लंक मे ॥

तकरा कोना रखलनि रमापति धर्मपत्नी मानि कऽ ।
परगेह-बासिनि नारि केँ स्वीकार केलनि जानि कऽ ॥

हमरो सभक गृहणी रहत अन्यत्र आनक गेह मे ।
हम राखि लेब अवश्य तकरा पढ़ब नहि संदेह मे ॥

आदर्श मानथि मनुज-गण महिपतिक कुल आचार केँ ।
जीवन अपन तहिना बनाबथि लखि नृपक व्यवहार केँ ॥

तँ आब पुनि ताकय पढ़त आदर्श नर केँ सृष्टि मे ।
रहताह जे प्रत्येक छन झलकैत सदिखन दृष्टि मे ॥

मूनल जखन दुर्वकिय अति अपवादपूर्ण प्रजाक ई ।
जे आइ धरि अवसर एहन नहि भेल छल सुनबाक ई ॥

पीड़ित परम भऽ पूछि उठला प्रभु सकल समवेत सँ ।
“रघुकुल-बधू पर लांछना लगबैत छी की ? हेतु सँ ॥

ई छनि कहब हिनकर उचित की ? सोचिसब मिलि कऽ कहू ।
भय त्यागि तजि संकोच जाउ बजैत क्यो चुप नहि रहू ॥

नहि रहथि एको बृद्धजन तकरा सभा क्यो नहि कही ।
ओ बृद्ध की ? जे धर्मयुत बाजथि वचन नहि किछु सही ॥

पुनि धर्मयुत ओ वाक्य की ? नहि सत्यता अछि कथन मे ।
ओ सत्य की ? जन-अहितकर एवं निष्ठुरता वचन मे ॥

रामक कथन केँ सुनि भुकलनि माथ रामक चरण मे ।
प्रभु सँ कहल स्पष्ट रुपेँ नम्रपूर्वक वचन मे ॥

“हे नाथ ! सत्ये छनि कहब भल पुरुष भद्रक बात ई ।
सदिखन सुनैत रहैत छी सबतरि दुखद अपवाद ई ॥

हमसभ प्रभुक सेवक कतहुँ पहुँचैत छी किछु काज सँ ।
सुनितहि अनर्गल बात मूढ़ी गाड़ि लै छी लाज सँ ॥

तँ कहक हमरा पढ़ल अछि सरकार केँ दरवार मे ।
जे उचित जानी से करी अइ कथन केँ प्रतिकार मे ॥

ई सुनि दुखप्रद बचन रघुवर झाँपि लेलनि कान केँ ।
 'आबधि अखन सब अनुजगण' आदेश दय दरवान केँ ॥

लगलाह सोचय 'की करो' चिन्तित उदाश छलाह ओ ।
 तखने प्रभुक सम्मुख अनुज तीनू तुरत अयलाह ओ ॥

कैलनि सप्रेम प्रगाम प्रभु-पद मे सभय कर जोड़ि कऽ
 आदेश-पालन हेतु तत्पर भेल छथि छल-छोड़ि कऽ ॥

देखल उदाश विशेष प्रभु आनन्द-घन श्री राम केँ ।
 बैसल निराश छलाह देखल पूर्णमय सुखधाम केँ ॥

सोचल अखन हमरा एतय प्रभुवर बजौलनि अछि किये ?
 आनन्द-दाता भऽ स्वयं छथि अइ अवस्था मे किये ?

संसार केँ उपकार ले अवतार ई सरकार केँ ।
 करबाक छनि आदर्शमय सभ काज विविध प्रकार केँ ॥

कहु तखन वातावरण एहन विपरीत भेलछि ई किये ?
 की ? हेतु सँ दरवार मे क्यो नहि बजै अछि किछु किये ?

प्रायः लगै अछि घटत की ? घटना कोनो दुखप्रद महा ॥
 भय-शोक सँ व्याकुल छला तँ सुमुख सँ गेलनि कहा ॥

तखने सियापति बाजि उठला स्नेह-पूर्वक भ्रात सँ ।
 "घबड़ैब नहि हे भ्रातृगण ! सुनि हमर दुखप्रद बात सँ ॥

जाता धरम केँ थिकहुँ सभ कर्तव्य-पालनहार छी ।
 परिपक्व अछिए बुद्धि जनिते छी मनुज-व्यवहार की ?

हम कऽ रहल छी सभक सम्मुख ई उपस्थित कार्य जे ।
 अखने करक अछि राज-आज्ञा मानि कऽ अनिवार्य से ॥

हम सभ घृणित नर नहि बनी कथमपि जगत केँ दृष्टि मे ।
 आदर्श मानवताक अछि रखबाक हमरा सृष्टि मे ॥

सभ क्यो जनंछी जानकी केँ शुद्धताक प्रमाण मे ।
 अग्निक परीक्षा लेल गेलनि लंक-रण-स्थान मे ॥

भेली परीक्षोत्तीर्ण सीता सभ कहल निर्दोष ई ।
 से सुनि हमरो भेल छल उर मे परम सन्तोष ई ॥

हा ! किन्तु अखन सुनैत छी अपवाद अबितहि नगर मे ।
निन्दा-जनक चर्चा चले अछि सभक घर-घर डगर मे ॥

सब आछे बजैत चरित्र सुन्दर सुनल छल छनि राम केँ ।
कहु तोँ मुदा कैलनि कहाँ चरितार्थ पावन नाम केँ ॥

तैं अछि विचार, अहाँक सम्मुख सैह सोचि बजैत छी ।
अनुचित हमर ई कथन अछि ? हम जे अखन कहैत छी ॥

दिनकरक कुल मे ई कलंक कदापि लागऽ देब की ?
मिथिलाक मर्यादा मलिन महि मध्य होमय देब की ?

होमय न देब विधांस कथमपि शशि-कुलक संसार मे ।
नहि देब लागय दाग रघुकुल केँ विमल व्यवहार मे ॥

अपकीर्ति-सन पातक ने दोसर छैक कोनो लोक मे ।
भल पुरुष तोँ मरि जाथि जिविते एहि बातक शोक मे ॥

हम लोक-निन्दा सँ बचैलय प्राण त्यागि सकैत छी ।
सुन्दर समाजक रीति सँ कथमपि ने भागि सकैत छी ॥

सद्धर्म-रक्षा लेल हम आजन्म जागि सकैत छी ।
निज बन्धु-वान्धव-राज्य-सुख पर्यन्त त्यागि सकैत छी ॥

कहु, तखन नारी-त्याग-विषयक कोन बड़का बात ई ।
शिक्षित-सुसभ्य समाज सँ भऽ जाइ हम सभ कात की ?

हम नहि बजैछी मात्र केवल अखन पड़िकय क्लेश मे ।
ई नहि बुझू हम कहि रहल छी आबिकय आवेश मे ॥

सब सोचि लेलहुँ धर्म-पथ पर चलक अछि हम राम केँ ।
रखबाक अछि आदर्श हमरा मनुजता-गुण-ग्राम केँ ॥

अतएव काल्हि अवश्य वन मे जाउ सीता-संग कै ।
दऽ आउ गंगा-पार वन मे हमर आधा अंग केँ ॥

लगतनि-बहलतनि मोन हिनकर देखि शोभा विपिन केँ ।
मन मुदित हेतनि बूझि शुद्ध विचार तपसिनि-बहिन केँ ॥

‘हम त्यागि सिय केँ रहल छी’ नहि कहब हिनका बाट मे ।
सीता-संगे रहबाक नहि अछि लिखल हमर ललाट मे ॥

छथि गर्भिणी वीआति होयतनि मन अवश्य जनैत छी ।
 चाहैत छथि जे जखन इच्छा-पूर्ण हमहुं करैत छी ॥
 तैं जाउ वन, दैं आउ हिनका मुनि-कुटीक समीप मे ।
 पावन तपोवन होइ सुखप्रद जतय जम्बूद्वीप मे ॥
 वन-वासिनी ऋषि-नारि-संग किछु दिन रहक चाहैथ ई ।
 गंगाक तट पर मुनि सभक कुटिया देखय चाहैथ ई ॥
 तैं हिनक इच्छो पूर्ण भऽ जेतनि अखन अइ कार्य सैं ।
 ई कऽ रहल छी कार्य हम आदेश लऽ आचार्य सैं ॥
 अपवाद सूनि समाज सैं पढ़िगेल छी हम लाज मे ।
 लाचार भऽ लगबैत छी हे लखन ! लघुतर काज मे ॥
 लखि राम के स्थिति लखन किछु कहय चाहथि राम सैं ।
 छनि किन्तु भय-संकोच कहि सकताह की ? सुख धाम सैं ॥
 सोचथि देखै छी आइ धरि सभ काज अद्भुत राम के ।
 अति दुखद प्रथम लगैछ सुखप्रद किन्तु लखि परिणाम के ॥
 तैं भऽ सकै छनि होनि प्रभु के नीक किछु उद्देश्य ई ।
 वन-बीच दऽ आबी सिया के मानि कऽ आदेश ई ॥
 देलनि तुरत आज्ञा सुरथ लाबथि सुप्रातः काल मे ।
 सीताक संग सुमंत-हम वन चलब काल्ह सुकाल मे ॥

□

सीता-वनवास

सुखप्रद सुआसन सजि सुमंत सुनारि सीता माइ लै ।
 अनलनि तुरग संग रथ, भेला तत्पर विपिन मे जाइ लै ॥
 पहुँचल छला एमहर लखन सीताक सुन्दर गेह मे ।
 कैलनि प्रणाम कहैत छण रोमांच भेलनि देह मे ॥
 "हे देवि ! अभिलाषा अहाँ कहने छलहुं प्रभु राम सैं ।
 वन जाइ देखी मुनि-कुटी संगति करी मुनि-वाम सैं ॥
 तैं भेल अछि आज्ञा अखन हम सह आब कहैत छी ।
 वन चली रथ चढ़ि अखन सारथि-संग हमहुं चलैत छी" ॥

लखनक कथन के श्रवण कऽ सीता परम आनन्द सँ ।

मधुमय वचन कहलनि जनकजा उर्मिला-मुख-चन्द सँ ॥

“हे प्रिय लखन ! तपसिनि सभक हित वस्तु किछु लऽ लैत छी ।

संदेश लऽ अविलम्ब हमहूँ अहीं संग चलैत छी ॥

स्वामी मनोरथ पूर्ण कऽ रहलाह अछि हम धन्य छी ।

तैं विश्व मे सौभाग्यशालिनि नारि मे हम गएय छी ॥

लेमय दिअऽ संदेश अर्पण करब तपसी-चरण मे ।

किछु वस्त्र लऽ ली जाइ छी जे विपिन-वातावरण मे’ ॥

सीताक क्रम लखि नोर बहु खसलनि लखन के नयन सँ ।

से देखि सीता लखन के पूछलनि मधुरयुत वयन सँ ॥

“सुखमय समय यात्राक अछि तौ लखन ! कियैक कनैत छी ।

शुभकाल मे लछुमन ! उदाश-निराश किये ? लगैत छी ॥

क्यो छीक देलक अछि अखन तइ लेल की ? घबराइ छी ।

गोदर दहिन सँ बाम भागल तैं अहाँ भय खाइ छी ॥

भोरक समय छै ठंड लगने छीक देलक अछि कियो ।

ऐ स्यार के किछु ठेप मारि-खिहारि देलक अछि कियो ॥

की ? एहि तरहक दृश्य के अशकुन अहाँ बुझैत छी ।

को ? अन्य किछु कारण कोनो छै से ने किये कहैत छी ॥

जौं होनि तप मे विघ्न मुनि के पुनि निशाचर वर्ग सँ ।

तौं हम स्वयं अइ बेर मारब दुष्ट-दल के खड्ग सँ’ ॥

पति त्यागि देलनि, अछि सिया के नहि कनेकों ज्ञात ई ।

अपशकुन ह्वैछ कियैक ? से नहिं बूझि पड़लनि बात ई ॥

पूछलि लखन सँ “ई कुलक्षण हम किये देखैत छी ।

हंसमुख अहाँ छी तखन कियेक एना उदाश लगैत छी ॥

तन अछि हमर कपैत फरकन ह्वैछ दहिना अंग मे ।

हहरैत अछि छाती कहू की हेतु एहि प्रसंग मे ॥

सभटा कुलक्षण देखि रहलहुँ हम अखुनका दृश्य मे ।

हैबाक छै घटना दुखद की ? लखन ! निकट भविष्य मे ॥

प्रभुवर विपिन में जाइ लै कहलनि जखन आवेश सैं ।
कहु तखन भय-चिन्ता कथी कोनो प्रकारक क्लेश सैं ॥

ऋषि-मुनि-तपस्विनि-चरण-लग में बैसि सूनब प्रभु-कथा ।
सब दूर भऽ जायत हृदय में शेष जे होयत व्यथा ॥
हे मा उमे ! कैलहुँ मनोरथ पूर्ण सीता के अहीं ।
अखनो अवश्ये करब इच्छा पूर्ण आशान्वित रही ॥
हम जा रहल छी ज्ञान सीखक हेतु ज्ञान-प्रवीण सैं ।
लैबाक अछि हमरा शुभाशीर्वाद धर्म-धुरीण सैं ॥
तैं कऽ रहल छी प्रार्थना हम देव-देवी सकल सैं ।
भऽ जाय वन-यात्रा सफल सभ धूमि आबी कुशल सैं" ।

गंगाक तट पर पहुँचि धारा देखि लछुमन व्यथित भऽ ।
लंगला बहाबऽ धार दृग सैं अति व्यथाकुल-दुखित भऽ ॥

लखि लखन के पुछलनि सिया "आकुल कियै छी शोक सैं ।
की हेतु शोकित छी अहाँ कारण कहू निर्धोख सैं ॥

आनन्द-अवसर अछि अखन अयलहुँ पवित्र सुठाम में ।
किछु काल में पहुँचैक अछि तप-भूमि सुन्दर-धाम में ॥

ऋषि-मुनि सभक दर्शन करब मर्मज्ञ छथि जे धर्म के ।
ऋषि-नारि-लग में बैसि सोखब नारि-धर्मक मर्म के ॥

रहि कऽ एतय भरि राति, धूमब काल्ह अपना धाम के ।
अनुभव सुनेबनि वन-प्रवासक समुद स्वामी राम के ॥

विश्वास छनि अपनेक ऊपर नाथ के प्रिय दास छी ।
आनन्द-कन्दक भाइ छी कहु तखन कियै उदास छी ॥

आदेश-पालन करब सेवा पैघ ह्वैछ जनैत छी ।
से कऽ रहल छी अखन तखनहुँ लखन ! कियै झूखैत छी ॥

दुइ दिनुक विछुड़न भाइ सैं भऽ जैत तैं घबड़ाइ छी ।
अछि जे हृदय में भावना से कहू कियै ? लजाइ छी ॥

ओ छथि हमर सर्वस्व-स्वामी अत्यधिक प्रिय प्राण सैं ।
हमहुँ रहक चाहैत नहिं छी भिन्न भऽ भगवान सैं ॥

तद्यपि अधिक चिन्तित अहाँ-सन हम अखन नहिं भेल छी ।
कहु किये ! लछुमन ! धैर्य त्यागि अधोर अति भऽ गेल छी ॥

निश्छल अहाँ-हम छी दुनू सच-सच कहू की बात छै ।
हमरा किये नहिं कहि रहल छी, दुखद की ? संवाद छै ॥

जहिना हमर दुख दूर केलहुँ आइ धरि लछुमन अहाँ ।
तहिना अहूँ केँ दूर दुख हम करब कहू हमरा अहाँ ॥

सीताक आतुरता निरखि सौमित्र सोचल हृदय मे ।
कहि कऽ सुना दीअनि अवश्ये आइ कोनो समय मे ॥

सोचैत छथि-वन मे जननि केँ छोड़ि जायब हम कोना ।
हम दास भऽ दुखप्रद वचन "वन मे रहू" कहबनि कोना ॥

आदेश केँ अनुसार अछि करबाक हमरा कार्य ई ।
हमरा अवश्ये करक चाही मानि कऽ अनिवार्य ई ॥

तँ विवश भऽ सौमित्र निज साहस सकल समेटि कऽ ।
बजलाह दुखप्रद वचन अति प्रिय मधुर वचन लपेटि कऽ ॥

"हे मा ! कहक नहिं अछि कथन से अखन हारि कहैत छी ।
स्वामीक आज्ञा मानि कऽ कर्तव्य मात्र करैत छी ॥

धिक्कार तकरा छैक देलक राम केँ ई मंत्रणा !
सुनबैत हमरा ह्वैछ जतबा मृत्यु कालक यंत्रणा ॥

नहिं दोष हमरा दी अहाँ मा ! पूर्ण हम निर्दोष छी ।
हम कोन तरहें मा ! अहाँ केँ वचन सँ सन्तोष दी" ॥

लगलाह बाजऽ तौ मुदा किछु बाजि नहिं सकलाह ओ ।
सीता-चरण-लग भूमि पर कर-जोड़ि कऽ खसलाह ओ ॥

क्षोभित सिया भेलीह ई लखनक दशा निहारि के ।
की बात ? नहिं अनुमानि सकली देखि अवध-विहारि के ॥

पुछलनि लखन सँ "हे लखन ! किछु नहिं बुझै छी बात की ?
सच-सच कहू भय नहिं करू किछु जानकी सँ लाथ की ?

की शोकप्रद किछु बात अछि ? तँ नहिं अहाँ सुनबैत छी ।
ओ बात बाजक योग्य नहिं की ? तँ अहाँ ने बजैत छी ॥

बाण अहाँ निर्दोष भऽ हम कहि रहल छी नहिं डरू ।
जे काज छथि कहने करक हित से अखन निर्भय करू" ॥

आदेश जे भेटल छलनि अवधेश रघुकुल-चन्द सँ ।
से कहि सुनौलान विनययुत दृग-नोर भरि स्वर मंद सँ ॥

"हे स्वामिनी ! सीते ? अहाँ निर्दोष सकल प्रकार सँ ।
सन्तुष्ट छथि प्रभु अहंक शील-स्वभाव-शिष्टाचार सँ ॥

तद्यपि प्रजा केँ कहल पर श्रीनाथ छथि कऽ रहल ई ।
तजि कऽ महल-सुख सकल हा ! वन-बीच आबऽ पड़ल ई ॥

प्रभु त्यागि देलनि लोक केँ अपवाद सँ बचबाक ले ।
तैं हम अहूँ केँ एतय अनलहुँ विपिन मे रहबाक ले ॥

इच्छा अहूँ केँ भेल छल वन जाइ तैं अनलहुँ एतऽ ।
हम दऽ अबै छी छनि सुआश्रम मुनिगणक पावन जतऽ ॥

छथि अवधपतिक घनिष्ठ अति प्रिय मित्र मुनि वाल्मीकि जे ।
घमिष्ठ छथि तिनके शरण मे रहब होयत नीक से ।

प्रभु राम-नामक जप करब जनकात्मजे ! एकान्त मे ।
पति-पद-कमल केँ ध्यान घर, सुख पैब जीवन-अंत मे" ॥

हा ! वचन लखनक उर-विदारक सुनि माता जानकी ।
धरि धीर कहलनि "लोक केँ नहिं छेक ककरो ज्ञान की ?

हमरा विषय मे लोक केँ बाजल कोना गेलैक ई ।
मिथिलाक कन्या-प्रति कियै दुर्भाविना भेलैक ई ॥

हम तौ परीक्षोत्तीर्ण पूर्वहिं अग्नि मे भऽ गेल छी ।
सुरगणक सम्मुख हम जनकजा निष्कलंकित भेल छी" ॥

लगलनि बहय दृग-नोर केर अजस्र धारा नैन सँ ।
बजली व्यथित भऽ बात बैदेही व्यथाकुल वैन सँ ॥

"देवर ! हमर नारी जनम दुख केँ सहै लै भेल की ?
सिरजल विधाता विपति केवल सकल हमरे लेल की ?

हम कोन केने पाप कतबा छलहुँ पूरब जन्म मे ।
जनमल छलहुँ हम कोन दुर्दिन राशि मध्य कुलग्न मे ॥

ककरा दियोने दुख छलहुँ स्वामी-वियोगक कष्ट ई ।

तकरे कुफल थिक, आब मानव-देह होयत नष्ट ई ॥

हे लखन ! चौदह वर्ष धरि रहलहुँ पहिल वनबास मे ।

नहिं भेल दुख-अनुभव कनेको पति छलाहे पास मे ॥

किछु भूल सँ अपहरण गेलहुँ कैल हम लंकेश सँ ।

छल भेल किछु दिन धरि वियोग विशाल निज प्राणेश सँ ॥

तखनहुँ मुदा विश्वास छल लगतनि पता असुरारि केँ ।

तौ ओ हमर उद्धार करता शीघ्र निशिचर मारि केँ ॥

छी किन्तु अखन निराश त्यागलि थिकहुँ श्री अवधेश सँ ।

कहलनि अहाँ केँ विपिन मे दऽ आउ दूढ़ आदेश सँ ॥

हे राम केँ प्रिय अनुज ! के अछि एतय अपन बता दिअऽ ।

के देत हमरा सान्त्वना ? ककरा स्वजन बना लिअऽ ?

अनजान ठाम कोना अपरिचित व्यक्ति-बीच रहब कतऽ ।

अहँ सोचि कऽ हमरा बता दी जैब हम निश्चय ततऽ ॥

ककरा अपन पीड़ा कहब अवलाक गाथा सुनत केँ ?

जे देत दुख हमरा एतै तकरा हतै ले लइत केँ ?

पुछताह मुनिगण पति अहाँ केँ त्यागि देलनि अछि कियै ?

अपराध की अछि अहाँक ? कारण कहु विपिन एलहुँ कियै ?

हे लखन ! तखन बताउ उत्तर देब की ? ऋषिदेव केँ ।

की धारणा बनतनि सिया-प्रति ओहि छन मुनिदेव केँ ॥

मन ह्वैछ तन कऽ दी विसर्जन जाह्नवी केँ धार मे ।

कथमपि ने राखी आब नर-तन एहि भू-संसार मे ॥

छी किन्तु हम बेवशि कहब को ? बूझि अपने जैब जाँ ।

सीताक दिशि दी ताकि तखने लखन ! लक्षण पैब तौ ॥

तैं भेल बेवशि छी पतिक कुल रहनि आगू जाहि सँ ।

नहि कऽ रहल छी त्याग प्राणक, रुकलि छी हम ताहि सँ ॥

अछि धर्म प्रथम अहाँक प्रभु-आदेश केँ पालन करी ।

अछि शपथ, हमरा लेल देवर ! कथुक चिन्ता नहिं करी ॥

करबनि प्रणाम सियाक दिशि सँ पैर पर प्राणेश केँ ।
सन्देश दू शब्दक हमर कहबनि कने अवधेश केँ ॥

नहिं बिसरि कखनो जाथि एहि अबोधिनी निज नारि केँ ।
उर मे बसौने रहथि सदखन एहि अपन पियारि केँ ॥

वन-गमन-अवसर पर प्रभुक संग कैल बहुत विवाद जे ।
सेवा-टहल मे त्रुटि अनेकों भेल हो अपराध से ॥

कृपया छमा कऽ देथि कहबनि कौशलेश-कुमार सँ ।
तन-सँ पृथक भेलहुँ मुदा नहिं होथि हृदयागार सँ ॥

अपवाद सूनऽ आइ पड़लनि हाय ! हमरे लेल ई ।
अपराधिनी हमहीं थिकहुँ तैं दुर्दशा अछि भेल ई ॥

तद्यपि प्रवल आशा बनल अछि, छथि दया केँ सिन्धु ओ ।
अशरण-शरण, असहाय-रक्षक, दीन जन केँ बन्धु ओ ॥

छथि भक्त-भक्तिनि केँ सहायक सृष्टि केँ आधार ओ ।
आचार आ व्यवहार मे छथि कुशल सकल प्रकार ओ ॥

राखथि विपति मे धैर्य, समरथ छथि, छमाशाली अहा !
बजबाक पटुता छनि सभा मे आचरण उत्तम महा ॥

रणधीर छथि, मति विमल, अभिरुचि छनि सतत सद्ग्रन्थ मे ।
हिनकर सुयश-चर्चा निरन्तर चलनि संत-महंथ मे ॥

करताह निश्चय ओ छमा सभटा हमर अपराध केँ ।
जौं देथि दंड सहर्ष भोगब हमहुँ कष्ट अगाध केँ ॥

भऽ जानि निन्दा-दूर प्रभु केँ जाहि समुचित रीति सँ ।
से करथि, किन्तु ने तजथि-वंचित करथि पावन प्रीति सँ ॥

कहने छलहुँ देवर ! अहूँके कटुवचन वनबास मे ।
पति पर विपति पड़लनि पड़ल से बूझि किछु आभास मे ॥

अज्ञानि हम छोड़े कहल चिन्तित मनक स्वभाव सँ ।
पश्चात हम बूझू छलहुँ मरि गेल पश्चात्ताप सँ ॥

फल तकर भोगक पड़ल हम रहलहुँ खलक आवास मे ।
बन्दिनि जकाँ रहलहुँ बहुत दिन-राति घरि अति त्रास मे ॥

जे कैल अछि, फल तकर भोगक पड़त आब अवश्य के ।
देखऽ पड़त दुर्दिन दशा दुखपूर्ण दारुण दृश्य के ॥

फल भोगि चुकलहुँ, छलहुँ कैने आइ धरि उत्कर्म जे ।
प्रायः कुफल भोगऽ पड़त की ? कैल अछि दुष्कर्म जे ॥

सब दिन सुखी नहि रहथि क्यो दुख होनि सुख उपरान्त मे ।
जहिना प्रकृति के नियम छै निशि हैब ध्रुव दिवसान्त मे ॥

हमरा तकर चिन्ता मुदा नहि निज शरीरक कष्ट ले ।
सम्पूर्ण संकट-सहब स्वामी-स्वपति के सन्तुष्ट ले ॥

स्वामी रहथि सानन्द सुनितहि रही तीनू काल मे ।
ई होथि सब सँ पूज्य पूजल जाथि सब नरपाल मे ॥

हम शेष आयु बितैब जपि शुभ नाम पति भगवान के ।
वस, एक पद पर ठाढ़ि भऽ विनती करब दिनमान के ॥

जौ जन्म हो पुनि जानकी के जाहि जीवक योनि मे ।
श्री राम स्वामी बनथि ध्रुव अछि ऐह हमरा मोन मे ॥

वेशी करब लछुमन ! अहाँ लग अधिक अखन प्रलाप की ?
कहि कऽ सुनायब कोन रूपेँ अछि हृदय मे ताप की ?
नहि जा सकै छथि-धूमि कऽ कौशलपुरी ई जानकी ।
लऽ जा सकै छी नहि अहाँ तँ अधिक बजने लाभ की ?

वेशी कहब-बाजब, बनब पागलि, शरण मे लेत के ?
बिनु पुरुष के लखि नारि, आश्रय नोक नर कहु देत के ?

वस, अधिक नहि किछु कहब हम तौ बनल पशुक समान छी ।
जे किछु फुरय कहबनि अहाँ अपने स्वयं सज्जन छी ॥

रक्षा करथि ताधरि अवश्ये अवधपति निज नारि के ।
सन्तान छनि जा धरि उदर मे एहि जनक-कुमारि के ॥

हे लखन ! अपनहुँ देखिली प्रत्यक्ष अपना नयन सँ ।
जग मे विदित कऽ देब द्रुति वेशी कहब की ? वचन सँ ॥

सीताक दुखमय वचन लछुमन सूनि शोकित भऽ गेला ।
वजताह की ? किछु नहि फुरै छनि जोड़ि कर ठाढ़ि छला ॥

पुनि-पुनि प्रणाम करैत कैलनि जानकीक परिक्रमा ।

बजलाह अपने छमाशालिनि छी, करब निश्चय छमा ॥

हम आइ घरि नहि देखि सकलहुँ अंग अहँक स्वनैन सैं ।

माता अहाँ केँ मानि कैलहुँ टहल तन-मन-बैन सैं ॥

अपनेक चरणक भेल दर्शन-मात्र विनती-काल मे ।

पद-रज लगौलहुँ हम सहर्ष सदैव अपना भाल मे ॥

केवल चरण केँ ध्यान धेने हम रहै छी सब घड़ी ।

नहि ह्वैछ साहस तन अहँक निहारि कऽ देखल करी ॥

विश्वास अछि हमरा, अहाँ जे किछु कथन कहैत छी ।

की अछि अवस्था अहँक से हमहूँ अवश्य जनैत छी ।

आज्ञा दिअऽ हमरा अयोध्या जाइ अपना नगर मे ।

मुनि सँ अहाँ रक्षित रहब मन बहलि जायत सुघर मे ॥

क्यो आनि जायल करत मा ! सन्देश ले अवधेश केँ ।

जे करत सतत अहाँक माता ! दूर हृदयक क्लेश केँ ॥

अखरत ने कहियो मा ! अहाँ केँ दूर छी प्राणेश सैं ।

अहँ धैर्य-धारिणि नारि छी घबड़ैब नहि किछु क्लेश सैं ॥

हा ! ओहि कालक दृश्य केँ लखि, के ने विचलित भऽ जेता ।

जिनका ने आँखिक नोर बहतनि के ओहन मानब हेता ॥

चुपचाप दूनु ठ'ढ़ छथि भू-दिशि तकैत विछोह सैं ।

छथि छुब्ध दूनु दिअर-भाउज स्वजन केँ निर्मोह सैं ॥

सीताक स्थिति देखि लछुमन पीठ-पाछू डेग केँ ।

लगला बड़ाबऽ तेज कैलनि अत्यधिक ओ वेग केँ ॥

मन-मलिन कैने छथि लखन कहु तीँ अवध कुमार भऽ ।

अवधक पकड़लनि पथ तखन रथ पर तुरत सवार भऽ ॥

सोचैत छथि विधि की ? करौलनि काज हमरा हाथ सैं ।

सीता सती केँ भिन्न कऽ हम देल हा ! श्री नाथ सैं ॥

देखू एतय एकसरि सिया सुरसरिक धारक कात मे ।

सोचैत छथि "की अछि लिखल दुख-भोग हमरा गात मे ॥

के ! करत हित पति-त्यागिनी के" अइ बिपत्तिक वेर मे ।

बस, राम-नामक अछि सहारा एहि कष्टक वेर मे" ॥

रहली कनैत घड़ी पहर जनहीन वन सुनसान मे ।

मुनि-वालवर्गक मधुरतम ध्वनि सुनि पड़लनि कान मे ॥

ओ सब अबैत छलाह मज्जन-हेतु गंगा धार मे ।

एकसरि सिया के" देखि वन मे पड़ि गेलाह विचार मे ॥

अनुमान कैलनि 'ई थिकी प्रायः सुकन्या स्वर्ग के"

मोहित करक हित अल छथि तपभूमि पर मुनि-वर्ग के" ॥

ई किन्तु साकेतक परी-सन नहि लगथि अनुमान मे ।

चुपचाप बैसलि जप करै छथि राखि किनको ध्यान मे ॥

ई ! उच्चकुल के" नारि छथि पति सँ विछुड़ि छथि गेल की ?

आश्रय तकै छथि नर कियो भेटनि सुरक्षा लेल की ॥

तैं हेतु चाही सूचना अविलम्ब दी गुरुदेव के" ।

असहाय के" रक्षा करक अछि हम सकल भूदेव के" ॥

दौड़ल गेला मुनि वाल्मीकि-समीप जे जप-रत छला ।

कहलनि "मुनीश्वर ! नारि एकसरि एक अतिशय निर्मला ॥

गंगाक तट पर ठाढ़ि छथि बिछुड़लि जकाँ निज लोक सँ ।

लक्ष्मी-समान सुरूप-सुन्दरि किन्तु शोकित शोक सँ ॥

हमसभ एहन सुमुखी अखनिधरि नारि नहि देखल अहा !

से छथि कनैत, बूझैत छी दुख पड़ल छनि हिनका महा ॥

तैं हे मुनीश्वर ! बूझिली की बात ? के छथि नारि ई ।

की छनि विपत्ति, कहाँक नृपतिक नारि अति सुकुमारि ई ॥

हमरे सभक आश्रम-निकट छथि आबि कियैक कनैत ई ।

दीअनि अवश्ये सान्त्वना, की छथि अखन चाहैत ई ॥

रक्षा करक चाही एहन असहाय अवला नारि के" ।

माता-बहिन-समान हम बूझैत छी परनारि के" ॥

गुरुदेव ! दी आदेश तौ हम जाइ, जा कऽ पूछिली ।

की कष्ट छनि ? चाहैत की छथि ? पूछि कऽ सब बूझिली" ॥

सर्वज्ञ मुनि सीताक स्थिति सूनि सब सुकुमार सैं ।
ओ बूझि गेला ई थिकी सीता अपन विचार सैं ॥

जनकात्मजा वन मे कनैत-झखैत वैसलि छथि जतऽ ।
सब शिष्य केँ लऽ संग चलला झटक कऽ तखने ततऽ ॥

देखल महाभूनि जनक-नृन्दिनि केँ कनैत विलाप केँ ।
नहि धैर्य रहलनि मुनिक थिर लखि जानकी-संताप केँ ॥

देलनि प्रथम आशीष एवं देल धीरज स्नेह सैं ।
“घबड़ाउ नहि अयलहुँ पिता-गृह अखन स्वशुरक गेह सैं ॥

दुख-शोक-भय भागत एतऽ सीते ! अहाँ केँ देह सैं ।
सम्मान किछु नहि थोढ़ भेटल करत जनक विदेह सैं ॥

हे पतिव्रते ! दशरथ नृपति केँ सुतवधू थोकहुँ अहाँ ।
मिथिलेश-पुत्री मैथिली श्री राम-पत्नी छी अहाँ ॥

स्वागत अहाँ केँ हम करै छी हृदय केँ उद्गार सैं ।
सन्तुष्ट भऽ जायब अहाँ वनवासिनी-व्यवहार सैं ॥

अछि ज्ञात हमरा कोन कारण सैं एतै अयलहुँ अहाँ ।
पति त्यागि तों देलनि मुदा अपराधिनी नहिं छी अहाँ ॥

हमरा तपक बल सैं सिये ! अछि ज्ञात अहँ निर्दोष छी ।
कहु कोन तरहेँ कोन विधि सैं हम अखन सन्तोष दी ॥

मजीं प्रभू केँ होइ छनि जे, सह भेल करैत छै ।
तकरा कियो नहिं टारि जग मे सकथि, वेद कहैत छै ॥

जे भऽ रहल अछि भेल अछि आगू पुनः किछु हैत जे ।
निश्चित व्यवस्था सृष्टि केँ कथमपि ने बदलल जैत से ॥

तैं बात बीतल पर सिये ! नहि शोक किछु मन मे करू ।
सम्मुख उपस्थित जे परिस्थिति अछि तकर चर्चा करू ॥

सुस्थान पर पहुँचलि अहाँ छी दिन बितत सत्संग मे ।
सूनब-सुनायब चरित सुन्दर पतिव्रताक प्रसंग मे ॥

ओ सभ करै छथि तप महा हमरे कुटीक समीप मे ।
करुणामयी हिनका सदृश नहिं पैब सातो द्वीप मे ॥

पालन अहाँक सहर्ष निज सन्तान-सन करतीह ओ ॥
एकसरि रहक अखरत ने कखनो सतत संग रहतीह ओ ॥

मानब अहाँ बृद्धा तपस्विनि केँ अपन माता-जकाँ ।
मुनि केँ पिता-सम शिष्य केँ मानब अहाँ भ्राता-जकाँ ॥

सभ सम-वयस्का नारि केँ बूझब सखी-सङ्गिनि-जकाँ ।
वन-वासिनीगण केँ पढ़ोसिनि-तुल्य सुखदायिनि-जकाँ ॥

हमहूँ अहाँ केँ सब तरह सँ करब रक्षा सर्वदा ।
होमय ने देब स्वस्वामि सँ त्यागक व्यथा ई दुखप्रदा ॥

सब भाँति सँ मुनि जानकी केँ दैत मन सँ सान्त्वना ।
अनलनि जतय ऋषि-नारिगण बैसलि छली कऽ साधना ॥

मुनि-संग मे लखि नारि केँ पूछलि प्रथम कऽ वन्दना ।
“हे पूज्य मुनिवर ! के थिकी अनुपम सुभग ई अंगना ॥

कृपया बताउ अहाँ दुनू केँ की ? अखन सेवा करी ।
आदेश दी तौँ आनि सम्मुख मधुर फल मेवा धरी ॥

परिचय हिनक कृपया दिअऽ किनकर सुभामिनि नारि ई ।
एकसरि विपिन मे पुरुष-बिनु अयली कोना सुकुमारि ई” ॥

मुसकैत मुनि परिचय बतौलनि “हे ऋषीश्वर-भामिनी !
ई धर्मपत्नी रामचन्द्रक जानकी मृदुभाषिनी ॥

अवधेश दशरथ केँ पुतोहु विदेह-कन्या ई थिकी ।
पति-सेविका मे अग्रणी आदर्श नारी जानकी ॥

निष्पाप भेलो पर सिया केँ देल पति परित्याग के ।
तैं आब चाही हिनक रक्षा करक अति अगुराग के ॥

अतएव हिनका पर विशेष रखैत जैअनि ध्यान केँ ।
जहिना सदैव स्वदेह मे बूझैत छी निज प्राण केँ” ॥

आज्ञा मुनिक पालन करब कर्तव्य बूझि तपस्विनी ।
सादर सिया केँ पाणि गहि बैसौल ओ वनवासिनी ॥

सीता परम प्रसन्न भऽ गेलीह सद्व्यवहार सँ ।
हुनका सभक वर्त्तव सुन्दर भरल शिष्टाचार सँ ॥

कैलनि विचार विदेह-नन्दिनि भेल संग सुलोक सँ ।
 सुन्दर सुअवसर प्राप्त हमरा भेल ई संयोग सँ ॥
 माता-पिता-पति सँ सुनल जे नारि-धर्म जनैत छी ।
 से सब एतय ऋषि-नारि मे प्रत्यक्ष अखन पबैत छी ॥
 तै हमर अछि कर्ताव्य जे नहिं ज्ञात अछि से सीखि ली ।
 हिनका सभक आचार-दिनचर्या स्वदृग सँ देखि ली ॥
 ई सोचि मन मे योगिनी-संग रहय लगली जानकी ।
 ऋषि-आश्रमक सब कार्य लगली करय नित श्री जानकी ॥
 चर्चा परस्पर करथि उत्तम नीति शास्त्र-पुराण केँ ।
 सद्गुण सुनाबथि-सुनथि सदिखन परम श्री भगवान केँ ॥

□

लव-कुशक जन्म

मुनि सँ कथा-पुराण सीता नित सुनैत रहै छली ।
 उद्देश्य मन मे, होथि ई गर्भस्थ शिशु ज्ञानी-बली ॥
 उदरस्थ शिशु पर ध्रुव प्रभाव पड़ैछ कर वर्त्ताव जे ।
 जननीक सब आचार-सम बनि जाइ शिशुक स्वभाव से ॥
 देखथि-लगाबथि ध्यान गर्भिणि जाहि तरहक चित्र केँ ।
 नवजात शिशु पर छाप निश्चय पढ़नि जननि-चरित्र केँ ॥
 ई बात बूझल छलनि तै नित रहथि चेतलि जानकी ।
 मन मे मनोरथ रहनि प्रिय सुत सद्गुणी जनमा सकी ॥
 हँटले रहथि सीता सतत दुर्गुण तथा दुष्कार्य सँ ।
 सदिखन सुशिक्षा-पूर्ण सुनथि कथा श्री आचार्य सँ ॥
 ओ आदि कवि वाल्मीकि मुनि सद्काव्य केँ ज्ञाता छला ।
 आदर्श रामक चरित रामायण अहा ! लीखै छला ॥
 नित रचित मधुर प्रसंग सब केँ प्रेम सँ सुनबै छला ।
 मुनि सकल श्रोता मुग्ध भऽ आनन्द सँ भूमै छला ॥
 ताही सुअवसर पर जनम भेलनि सुपुत्र अनूप केँ ।
 नवजात शिशुक सुरूप छल श्री रामहिक अनुरूप केँ ॥

ई कर्ण-सुखकर बात सुनबा लय सबहु आतुर छला ।
 सुनितहि सकल समाज अति हर्षित-प्रफुल्लित भऽ गेला ॥

वर्णन करत के कवि ! कवीश्वर वाल्मीकिक हर्ष के ।
 अपनहुँ मुनीश्वर कहि सकथि नहि हर्ष के उत्कर्ष के ॥

सत्त्वर कृपालु महर्षि तखनहि बाल-ग्रह-निवृत्ति ले ।
 शुभ मंत्र पढ़ि देलनि शुभाशीर्वाद भाव-प्रवृत्ति भै ॥

शिशु-बाँहि मे बँधलनि सुरक्षा-हेतु रक्षा-यंत्र के ।
 सभ मिलि करऽ लगलाह उच्चारण सुवेदक मंत्र के ॥

मुनि आश्रमक शोभा अधिक बढ़ि गेल बालक-जन्म सँ ।
 सीता विशेष प्रसन्न भऽ गेलीह अनुपम रत्न सँ ॥

छठिहार भरि उत्सव मनावल गेल अति उत्साह सँ ।
 बहुदान पौलनि विप्रगण पर्याप्त निज-निज चाह सँ ॥

कुश-मूठ सँ मार्जन करौलनि नाम तै 'कुश' जेठ के ।
 लव सँ करावल गेल मार्जन नाम तै लव छोट के ॥

क्रम-क्रम बढ़ै लगलाह दूहु मधुर वातावरण मे ।
 शिक्षा-ग्रहण लगला करय रहि कऽ तपस्वी-शरण मे ॥

सद्ग्रन्थ रामायण महाकवि काव्य जे रचने छला ।
 लव-कुश युगल कुमार के सस्नेह नित सिखबै छला ॥

कंठस्थ कऽ लेलनि दुनु सुकुमार किछुए काल मे ।
 लगला सुनाबऽ गाबि हर्षित भऽ मधुर स्वर-ताल मे ॥

श्रोता गणक उर द्रवित भऽ ध्रुव जानि अति मात्सर्य सँ ।
 शिशु मे विलक्षण गुण निरखि-सुनि कहथि सभ आश्चर्य सँ ॥

"बालक परम होनहार प्रायः देव के अवतार ई ।
 आनन्द के सरिता बहौता सीय केर कुमार ई ॥

नहि आइ धरि देखल-सुनल सुन्दर एहन गुणवान के ?
 हिनकर पिता-माता-सदृश नर हैत वैभववान के ?

हमरा सभक सन भाग्यशाली के ? अखन संसार मे
 सानन्द समय बितैब लव-कुश केर प्यार-दुलार मे ॥

ई रहथि सदखन दृष्टि-पथ मे ऐह हम चाहैत छी ।
हिनका अपन हम प्राण सँ बढ़िकऽ बुझू मानैत छी ॥

हमरे सभक सौभाग्य सँ अयलहुँ अहाँ वनवास मे ;
जप-तप-व्रतक फल पाबि रहलहुँ अछि अहिक सहवास मे ॥

आनन्द कतवा भऽ रहल अछि अहँक शुचि सत्संग मे ।
कत ह्वैछ परम प्रसन्नता पूछू न एहि प्रसंग मे ॥

सीते ! अहाँ पतियैब की नहि, हम कहब की ? बात सँ ।
रवि-किरण लखि की हर्ष हो पूछू कने जलजात सँ ॥

जे होनि हर्ष अपार भगवत-भक्त केँ प्रभु-मिलन सँ ।
नहि ताहि सँ कम हर्ष होइछ अहँक सुखकर वचन सँ ॥

ताही दिने श्री राम लऽ आदेश गुरुवर विज्ञ केँ ।
करबाक लै तत्पर भेला ओ अश्वमेध-सुयज्ञ केँ ॥

ऋषि, मुनि, नृपति, भूदेव, सज्जन, संतगण विद्वान केँ ।
कैलनि निमंत्रण-पत्र प्रेषित सकल व्यक्ति महान केँ ॥

मुनि वाल्मीकि समान ऋषि केँ विनय-युत सत्कार सँ ।
आग्रह छलनि मुनिगण पधारथि यज्ञ मे स्वविचार सँ ॥

पौलनि कवीश्वर पत्र एक विशेष व्यक्तिक हाथ सँ ।
देखल निमंत्रण-पत्र लोखल अवधपति रघुनाथ सँ ॥

मुनि वाल्मीकि प्रसन्न भऽ गेला निमंत्रण पाबि कै ।
कहलनि समुद सम्बाद शुभ सीताक लग मे आबि कै ॥

“हे जानकी ! अपनेक पति श्री राम ठनलनि यज्ञ केँ ।
कैलनि निमंत्रित विश्व महि नृप-मुनि गुणी नर विज्ञ केँ ॥

हमहूँ निमंत्रित भेल छी सँग सकल शिष्य कुमार केँ ।
जैबाक चाही संग कऽ लव-कुश दुनू सुकुमार केँ ॥

संयोग उत्तम भेल अछि दर्शन करब सुखधाम केँ ।
सीते ! प्रयोजन आब पड़तनि अहँक ध्रुव श्री राम केँ ॥

हम जैब तौँ करबनि विनय साग्रह दयानिधान सँ ।
लऽ जाथि श्री स्वामी अहाँ केँ प्रेम-युत सम्मान सँ ॥

हम जा रहल छी, सोचि मन मे ऐह प्रमुख विचार के ।

परिचित हेता निज पुत्र सँ मुनि गान युगल कुमार के ॥

सुविचार सीता सूनि कऽ हर्षित भेलो अति हृदय सँ !

कैलनि प्रणाम सनम्र मुनि के कहल अतिशय विनय सँ ॥

“हे मुनि प्रवर ! ई भऽ रहल अछि अहिक प्रबल प्रयत्न सँ ।

आशा प्रबल अछि हैत हित अपने सदृश मुनि-रत्न सँ ॥

जे किछु करब अपने अवश्ये हैत हितकर काज से ।

जे रीति-नीति चलैब उत्तम मानि करत समाज से ॥

छथि पुत्र सीता के मुदा अपनेक सेवक-शिष्य ई ।

सेवा अहाँ के कऽ बनाबथि अपन नीक भविष्य ई ॥

विश्वास अछि ई यज्ञ होयत पूर्ण अहिक प्रसाद सँ ।

हमरो अवश्ये शीघ्र दर्शन हैत स्वामी-पाद सँ ॥

विश्वास अछि लव-कुशक लेल हितार्थ होयत कार्य ई ।

तँ हेतु जायब यज्ञ मे अपनेक अछि अनिवार्य ई ॥

जौ पछि बैसथि नाथ अपना नारि के सम्बन्ध मे ।

तौ कहि सुनेबनि सिय-तपस्विनि संग छथि आनन्द मे ।

मुनि सँ सुरक्षित रहथि सीता सतत सकल प्रकार सँ ॥

सन्तुष्ट छथि प्रभु के प्रिया एतय मुनि-नारिगण-व्यवहार सँ ।

चाहैत छी हमहूँ विधांश ने होनि प्रिय-प्राणेश के ।

सभ जन प्रशंसा करनि मन सँ नित्य श्री अवधेश के ॥

स्वामी हृदय मे बसथि सदिकन सैह हम चाहैत छी ।

सुखमय समय बीतनि प्रभुक हम इष्ट सँ मनबैत छी ।

स्वामी-विछोहक दुख असह्य शरीर सँ सहिलैत छी ।

पुनि हैत दर्शन पतिक मन के कहि बुझा तौ दैत छी ॥

मुनिवर ! मुदा आत्मा हठी मानैत नहि अछि बात के ।

ओ नहिं सह्य चाहैत अछि स्वामी-विरह-आघात के ॥

ई देह-रूपी रथ चलै अछि पंथ बिनु किछुए घड़ी ।

चलबैत रथ के सारथी ई बुद्धि अछि जे सहचरो ॥

ई टूटि जायत आब मन अछि जे लगामक रूप मे ।
 अति शीघ्र खसिये पड़त ई इन्द्रिय-तुरगदल कूप मे ॥
 तैं एक केवल मात्र रक्षक राम-नाम जपैत छी ।
 स्वामीक सद्गुण सतत श्रद्धा सँ गबैत रहैत छी ॥
 बेशी कहब की हम अहाँ सँ मनक बात जनैत छी ।
 कहबनि अवधपति सँ एतय हम कोन भाँति रहैत छी ॥
 देलनि शुभाशीर्वाद मुनि सीता-कथन केँ सुनि कै ।
 चलला अवध केँ शिष्यगण लै सुभग यात्रा गूनि कै ॥
 पहुँचैत सभ गेलाह सुन्दर परम अनुपम नगर मे ।
 आनन्द केँ वर्षा जतय छल ह्वैत आठो पहर मे ॥
 छल सकल जन तन-मन-हृदय सँ व्यस्त यज्ञक काज मे ।
 बैसल रहथि नहिं काज यज्ञक त्यागि कियो समाज मे ॥



लव-कुशक रामायण-गायन

देलनि सुआज्ञा मुनि सुअवसर पाबि सिय-सुकुमार केँ ।
 “सभ केँ दिखा दीअनु अपन आदर्श शिष्टाचार केँ ॥
 ई गाबि रामायण सुनाउ सप्रेम सुन्दर राग मे ।
 बहिजाथि-सभनर-नारिगण अनुराग केर तढ़ाग मे ॥
 नवरस-रसिकवर राम केँ सुन्दर निवास-समीप मे ।
 जाकय सुनाउ चरित्र सिय केँ गाबि राग-प्रदीप मे ॥
 सुनताह जखने राम श्री सीताक पावन चरित केँ ।
 सम्भव बजाबधि, जैब लग मे नमन करबनि स्वपितु केँ ॥
 पूछताह ओ जाँ, के थिकहुँ ? किनकर अहाँ सन्तान छी ।
 के छथि सिखौने ? लघु वयस मे गाबि लैत सुगान छी ॥
 तौ देब परिचय अपन जे किछु थोड़ बहुत जनैत छी ।
 जाँ कहथि रामायण गवै लै गैब जेना गबैत छी ॥
 अति प्रिय मनोहर गान पर ओ मुग्ध भऽ किछु दैथ जाँ ।
 कथमपि ग्रहण नहिं करब किछुओ वस्तु भेंट करैथ तौ ॥

बेशी सिखै-पढ़ै की ? जे उचित बूझ करब से ।
समयानुकूल विचारि सुन्दर वचन बाजल करब से ॥
तौ हम प्रसन्न विशेष होयब एहि सुन्दर कार्य सँ ।
आशीष दै छी हैब सम्मानित सकल आचार्य सँ ॥

गुरुवरक आज्ञा मानिकऽ चललाह अति उत्साह सँ ।
मन छलनि अधिक प्रसन्न हम बतियैब तौ नरनाह सँ ॥

सुनताह जौ सीताक पावन चरित सुन्दर ध्यान सँ ।
कहबैत छथि जौ ज्ञान के भण्डार सब विद्वान सँ ॥

तौ हृदय हेतनि द्रवित ध्रुव केहनो ने होथि कठोर ओ ।
आदर्श नर कहबैत छथि जग मे अवध-किशोर ओ ॥

अछि सुनल, छथि साहित्य-संग संगीत-प्रेमी राम ओ ।
सम्पन्न सद्गुण सँ सकल आनन्दधन सुखधाम ओ ॥

तै जाइ प्रथम सप्रेम सस्वर गाबि गुरुवर-काव्य के ।
सुनबैत ताघरि रही जाघरि सुनथि मन सँ काव्य के ॥

लगला सुनाबऽ गाबि कऽ अवधक सकल नर-नारि के ।
की बहय लगलनि धार सबहक गाल पर दूग-वारि के ॥

सुनलनि अवधपति मधुर स्वर-युत गीत अपना कान सँ ।
“लै आउ एहि कुमार के” कहलनि अपन दरवान सँ ॥

गेलाह दूत भाइ सीतापतिक शुभ दरवार मे ।
सन्मान सँ स्थान दऽ पुछलनि रमापति प्यार मे ॥

“किनकर थिकहुँ सुपुत्र एवं कोन ऋषि के” शिष्य छी ।
किनकर रचल ई काव्य श्रेष्ठ गबैत अपने नित्य छी ॥

सस्वर सुनाउ सुराग मे सूनऽ हमहुँ चाहैत छी ।
संगीत मे अतिविज्ञ शिशु होनहार अहाँ लगैत छी ॥

देलनि अपन परिचय मधुर श्रुति-सुखद वचन अनूप मे ।
सब प्रश्न के उत्तर यथाक्रम देल समुचित रूप मे ॥

“माता हमर सीता थिकी रघुनाथ-कथा गबैत छी ।
होयता पिता माताक पति नहिं नाम तिनक जनैत छी ॥

गुरु वाल्मीकिक शिष्य छी सदृशास्र सतत पढ़ैत छी ।
 फल-मूल अछि आहार वन मे जननि-संग रहैत छी ॥
 अवधेश यज्ञ करैत छथि से सून अयलहुँ अछि एतऽ ।
 आदेश गुरु सँ पाबि रामायण गबैछी हम ततऽ ॥
 गुरुवाल्मीकिक रचित रामायण सुनू आरम्भ सँ ।
 ई काव्य सुनितहि मुग्ध होयब हम कहै छी दम्भ सँ ॥
 लगलाह गाबय मोन सँ वीणा बजा शुभ ताल मे ।
 आनन्दमय वातावरण भऽ गेल छल तत्काल मे ॥
 जे क्यो उपस्थित रसिकगण बैसल छला दरवार मे ।
 सभ ध्यान सँ लगला सुनय भऽ मग्न हर्ष अपार मे ।
 कतबा समय बीतल रहल नहिं तखन किनको ध्यान मे ।
 जे जतय बैसल रहथि तहना छथि डटल स्वस्थान मे ॥
 संतुष्ट कऽ संगीत सँ श्रोता सकल सज्जन केँ ।
 यज्ञक समय लागि चैल छल तँ बन्द कैलनि गान केँ ॥
 लगला करय सभक्यो प्रशंसा स्नेहमय उद्गार सँ ।
 कैलनि पुरस्कृत बन्धु द्वय केँ तखन विविध प्रकार सँ ॥
 चाहैत छथि उपहार दीअनि वस्तु बहु सत्कार सँ ।
 तन केँ सजा दी वसन-भूषण-युत सकल शृंगार सँ ॥
 बाजल करथि सभ "एहन बालक हम ने देखलसृष्टि मे ।
 सुकुमार गीताकार सुन्दर नहि अबं अछि दृष्टि मे ॥
 आकृति-मधुर स्वर राम-सन समटा मिलैत देखैत छी ।
 तन-रूप रंग-स्वभाव-बाजब राम सदृश पबैत छी ॥
 बल्कल पहिरने छथि, अहा ! बालक, जटा छनि माथ मे ।
 धनु-तीर नहि छनि संग मे वस मात्र वीणा हाथ मे ।
 बभू बनल छथि राम अद्भुत ब्रह्मचारी रूप मे ॥
 करताह लीला विश्व मे नव रीति-नीति अनूप मे ॥
 कहलनि भरत केँ राम "मुद्रा स्वर्ण केँ भण्डार सँ ।
 लै आनि कऽ करियनु पुरस्कृत स्नेह-युत सत्कार सँ ॥

अतिरिक्त एकरा और किछु चाहथि अमूल्यो वस्तु जो ।
ले आनि दीयनु दैत रहिअनु कहथि जाघरि अस्तु तो ॥

मिष्ठान्न दीअनु आनि कऽ जे करथि ग्रहण पसंद सैं ।
पहिराउ पुष्पक हार सुरभित भरत ! पूर्ण सुगंध सैं ॥

भऽ गेल ढेर कुवेर के निघि-तुल्य प्रभु-आदेश सैं ।
लव-कुशक सम्मुख भेल अपित सकल स्नेह विशेष सैं ॥

देलनि नगर के नारि सकल उतारि भूषण देह सैं ।
गुरुजन शुभाशीर्वाद देलनि पितृ-तुल्य-स्नेह सैं ॥

कैलनि मुदा नहि ग्रहण किछु, देलनि अपन इच्छा बता ।
“चाहैत छी वस मात्र हम अपने सभक वात्सल्यता ॥

हम लेब नहि किछु वस्तु” कहलनि पाणि दूनु जोड़ि कै ।
“अछि नहि प्रयोजन धनक हमरा ई लंगोटी छोड़ि कै ॥

वन मे रहै छी, खाइ छी फल, छाल के पहिरेत छी ।
गुरुवर कवीश्वर के सिखावल राम-कथा गबैत छी ॥

नृप ! मात्र अपने सभक शुभ आशीष हम चाहैत छी ।
श्री जानकी माता-कृपा सैं सतत प्रसन्न रहैत छी ॥

आश्चर्य सैं सभ चकित भऽ गेलाह उत्तर सुनि कै ।
“निर्लोभ बालक एहन नहि देखल” कहल सब गूनि कै ॥

रामक हृदय मे भेल उत्सुकता सुनी सद् ग्रन्थ के ।
दर्शन करी हम काव्य-रचनाकार अद्भुत संत के ॥

कहलनि “कुमार ! सुकाव्य ई नित गाबि अवश्य सुनाउ तौ ।
सत्त्वर महा कवि केर दर्शन अखन अहाँ कराउ तौ ॥

ई काव्य हम सम्पूर्ण सुनबा लेल आतुर भेल छी ।
श्रोता प्रमुख हम, व्यास अपने अखन हमरा लेल छी ॥

लगला सुनावऽ गाबि लव-कुश नित्य यज्ञक अन्त मे ।
चर्चा चलय लगलनि प्रशंसात्मक हिनक श्रीमन्त मे ॥

सानन्द प्रभु सुनलनि जखन सम्पूर्ण निज जीवन-कथा ।
हटलनि हृदय सैं जे छलनि सिय-त्याग के दुखमय व्यथा ॥

सीताक सुत छथि बूझि हर्षित भेल मन रघुवीर केँ ।
सत्त्वर पठौलनि मुनिक लग चुनि एक दूत सुधीर केँ ॥

जाकय सुनाबथि हमर ई सन्देश मुनि वाल्मीकि केँ ।
सीताक संग आबथि एतय झट देखि उलझन ठीक केँ ॥

सीताक शुद्ध चरित्र छनि तौ आवि सभक समक्ष मे ।
अपने प्रमाणित करथि निज पावन चरित्रक पक्ष मे ॥
भल मनुख मुनिगण दृष्टि मे निर्दोष सावित होथि जौ ।
'सीता परम पवित्र छथि' ई सकल जनता कहथि तौ ॥

हम तखन सीता केँ करब स्वीकार निश्चल हृदय सँ ।
हमरा छमा कऽ देखि कहबनि हम सिया केँ विनय सँ ॥
सन्देश ई रामक जखन सुनलनि कवीश्वर दूत सँ ।
सन्तुष्ट भऽ गेलाह मुनि लव-कुशक अइ करतूत सँ ॥

अथलाह सिय केँ संग कै सीतापतिक दरवार मे ।
बैसल जतय छलाह ऋषि-मुनिगण अनेक कतार मे ॥

शिव, वरुण, ब्रह्मा, गर्ग, काश्यप, च्यवन अरु धर्मज्ञ जे ।
गौतम, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद अरु वशिष्ठ सुयज्ञ जे ॥

वामन, महातपसी रु विश्वामित्र, कात्यायन तथा ।
सौदगल्य, दुर्वासा सभक अति पुण्यमय जीवन-कथा ॥

कपि, असुर, सुर, नरश्रेष्ठ, परिडत, कवि, सुअधिकारी प्रजा ।
आयल छलाह सहर्ष फहराबैत रामक यश-ध्वजा ॥

जावालि, भार्गव-संग देखथु जगत केँ सभ भूप ई ।
शिव केँ उपस्थिति मे घटत घटना अखन अनूप ई ॥

सीता शपथ करती ग्रहण सुनताह सभ निज कान सँ ।
'स्वीकार सीता केँ करू' कहताह सभ श्री राम सँ ॥

पहुँचल छली वाल्मीकि-संग सीता भरल दरवार मे ।
चुप भेल पाछू मुनिक छथि ओ ठाढ़ि पड़ल विचार मे ॥

पति-चरण पर शिर धरि प्रणाम सप्रेम कैलनि जानकी ।
सोचैथ, अखनो नहिँ ग्रहण करताह दयानिधान की ?

मुनिवर तखन सम्मुख-सभक लगला कह्य रघुवीर सँ ।
 "हे राम ! हमरा कथन पर दी ध्यान अति गम्भीर सँ ॥

लव-कुश दुनू के जन्म भेलनि जानकी के देह सँ ।
 ई पुत्र छथि अपनेक रखिअनु आब अधिक स्नेह सँ ॥

हम वरुण के छो पृत्र बाजब भूठ नहिं कथमपि प्रभो !
 हम जे कहै छी सत्य मानू हे सिया-स्वामी विभो !!
 कैलहु तपस्या जे सहस्रो वर्ष धरि संसार मे ।
 हम खाइ छो तकरे शपथ सीताक शिष्टाचार मे ।

जौ दोष किछुओ होनि तौ तप फलक भागी नहिं रही ।
 सत्कर्म कैलहुं तकर हमरा फलक भोगी नहिं कही ॥

हे राम ! हम मन बुद्धि-उर सँ ई विचारि कहैत छी ।
 सीता-चरित मे दोष नहिं ई वाक्य सत्य बजैत छी ॥

आचरण हिनकर शुद्ध छनि मानय पढ़त सब रीति सँ ।
 अर्द्धाङ्गिनी अपनेक छथि गुण अहिक गाबति प्रीति सँ ॥
 ई भेल छथि अपने शरण मे आब रखिअनु प्रेम सँ ।
 सुनिअनु कहै छथि की ? मिया मन-वचन-कर्म सुनेम सँ ॥

करतीह सीता सिद्धि शुद्ध चरित्र अटल प्रमाण सँ ।
 सुनिलेथि ऋषि-मुनि-देव-नर-पशुवर्ग निज-निज कान सँ ॥

मुनि वाल्मीकि कथन सुनि सियपति समुद सत्प्रेम सँ ।
 श्री जानकी दिशि ताकि मुनि सँ कहल श्रीपतिनेम सँ ॥

"हे मुनि ! कथन अपनेक अछि सब सत्य सिय-सम्बन्ध मे ।
 हम तौ छलहुं बान्हल समाजक अति कठिन प्रतिबन्ध मे ॥

सीताक पावन चरित के पुनि हम परीक्षा लेब की ?
 सीता परम पवित्र छथि, ई नहिं जनै छथि देव की ?

वन मे पठौलहुं जानि कऽ बचबाक ले अभियोग सँ ।
 कऽ देल वञ्चित जानकी के राज्य-सुख-उपभोग सँ ॥

लाचार भऽ कैलहुं निठुरतम कार्य दोष अगाध के ।
 कृपया क्षमा करु हे कवीश्वर ! हमर अइ अपराध के ॥

सीखथु जगत के नारिगण शिक्षा सियाक चरित्र सैं ।
 स्वामी-प्रसन्नक लेल सब किछु करथि हृदय पवित्र सैं ॥
 ई कहि धरित्री भूमिजा के अंक मे लऽ स्नेह सैं ।
 बैसोल सिंहासनक ऊपर पुष्प बरिसल मेह सैं ॥
 कैलनि प्रवेश दुनू पुहुमि मे सभक सम्मुख हर्ष सैं ।
 गम्भीर मुद्रा मे छलाह विचार के उत्कर्ष सैं ।
 छथि छब्ध सुर-नर जे उपस्थित यज्ञ के स्थान मे ।
 क्यो हर्ष ध्वनि लगला करय क्यो लोन छथि प्रभु ध्यान मे ॥
 किछु काल धरि रहला पड़ल प्रभु प्रेमिकाक वियोग मे ।
 सोचै छला की करक बाँकी रहल अछि नर-लोक मे ॥
 होयत कोना कऽ पूर्ण नर-लीला हमर सीता-बिना ।
 हम एक पत्नी-व्रत निबाहब आब कहूँ तौ ई कोना ?
 हम अखन बूझू भेल छी विनु पाँखि के पक्षी जेना ।
 करबाक अछि किछु और लीला आब से होयत कोना ?
 शुभ कार्य मनुजक सफल होयब कठिन छै पत्नी बिना ।
 अर्द्धाङ्गिनी विनु काज ठानब तौ अवश जायत घिना ॥
 स्थिति हमर अछि शोचनीय विशेष हे बपुधा प्रिये !
 जीयब असम्भव अछि हमर सीता-बिना हे भू प्रिये !!
 तैं एहि विरही व्यक्ति पर करितहुँ कृपा जाँ वसुमती ।
 तौ देर हमहूँ नहि करब दुख-काल मे एकोरती ॥
 जाँ नहिं सिया के देब तौ हमरो संगे-संग लऽ चली ।
 रहतीह संग मे जाहि तरहेँ विपिन बीच रहै छली ॥
 रहलहुँ अखन धरि एक संग साकेत मे संसार मे ।
 तहिना रहब सानन्द नित पाताल के आगार मे ॥
 ई जाँ विनय स्वीकार नहिं करतीह महि तौ बूझि ली ।
 हम आब नहिं धारण करब नर देह सभ क्यो सूनि ली ॥
 नहिं मढ़थि क्यो जन दोष हमरा पर अखन कहि दैत छी ।
 लाचार भऽ ई काज हमरा करक हैत कहैत छी ॥

ई टूटि जायत आब मन अछि जे लगामक रूप मे ।
 अति शीघ्र खसिये पड़त ई इन्द्रिय-तुरगदल कूप मे ॥
 तैं एक केवल मात्र रक्षक राम-नाम जपैत छी ।
 स्वामीक सद्गुण सतत श्रद्धा सँ गबैत रहैत छी ॥
 बेशी कहब की हम अहाँ सँ मनक बात जनैत छी ।
 कहबनि अवधपति सँ एतय हम कोन भाँति रहैत छी ॥
 देलनि शुभाशीर्वाद मुनि सीता-कथन केँ सुनि कै ।
 चलला अवध केँ शिष्यगण लै सुभग यात्रा गूनि कै ॥
 पहुँचैत सभ गेलाह सुन्दर परम अनुपम नगर मे ।
 आनन्द केँ वर्षा जतय छल ह्वैत आठो पहर मे ॥
 छल सकल जन तन-मन-हृदय सँ व्यस्त यज्ञक काज मे ।
 बैसल रहथि नहिं काज यज्ञक त्यागि कियो समाज मे ॥



लव-कुशक रामायण-गायन

देलनि सुआज्ञा मुनि सुअवसर पाबि सिय-सुकुमार केँ ।
 “सभ केँ दिखा दीअनु अपन आदर्श शिष्टाचार केँ ॥
 ई गाबि रामायण सुनाउ सप्रेम सुन्दर राग मे ।
 बहिजाथि-सभनर-नारिगण अनुराग केर तढ़ाग मे ॥
 नवरस-रसिकवर राम केँ सुन्दर निवास-समीप मे ।
 जाकय सुनाउ चरित्र सिय केँ गाबि राग-प्रदीप मे ॥
 सुनताह जखने राम श्री सीताक पावन चरित केँ ।
 सम्भव बजाबधि, जैब लग मे नमन करबनि स्वपितु केँ ॥
 पूछताह ओ जाँ, के थिकहुँ ? किनकर अहाँ सन्तान छी ।
 के छथि सिखौने ? लघु वयस मे गाबि लैत सुगान छी ॥
 तौ देब परिचय अपन जे किछु थोड़ बहुत जनैत छी ।
 जाँ कहथि रामायण गवै लै गैब जेना गबैत छी ॥
 अति प्रिय मनोहर गान पर ओ मुग्ध भऽ किछु दैथ जाँ ।
 कथमपि ग्रहण नहिं करब किछुओ वस्तु भेंट करैथ तौ ॥

बेशी सिखै-पदैब की ? जे उचित बूझब करब से ।
 समयानुकूल विचारि सुन्दर वचन बाजल करब से ॥
 तौ हम प्रसन्न विशेष होयब एहि सुन्दर कार्य सँ ।
 आशीष दै छी हैब सम्मानित सकल आचार्य सँ ॥
 गुरुवरक आज्ञा मानिकऽ चललाह अति उत्साह सँ ।
 मन छलनि अधिक प्रसन्न हम बतियैब तौ नरनाह सँ ॥
 सुनताह जौ सीताक पावन चरित सुन्दर ध्यान सँ ।
 कहबैत छथि जौ ज्ञान के भण्डार सब विद्वान सँ ॥
 तौ हृदय हेतनि द्रवित ध्रुव केहनो ने होथि कठोर ओ ।
 आदर्श नर कहबैत छथि जग मे अवध-किशोर ओ ॥
 अछि सुनल, छथि साहित्य-संग संगीत-प्रेमी राम ओ ।
 सम्पन्न सद्गुण सँ सकल आनन्दधन सुखधाम ओ ॥
 तै जाइ प्रथम सप्रेम सस्वर गाबि गुरुवर-काव्य के ।
 सुनबैत ताघरि रही जाघरि सुनथि मन सँ काव्य के ॥
 लगला सुनाबऽ गाबि कऽ अवधक सकल नर-नारि के ।
 की बहय लगलनि धार सबहक गाल पर दूग-वारि के ॥
 सुनलनि अवधपति मधुर स्वर-युत गीत अपना कान सँ ।
 "लै आउ एहि कुमार के" कहलनि अपन दरवान सँ ॥
 गेलाह दूनु भाइ सीतापतिक शुभ दरवार मे ।
 सन्मान सँ स्थान दऽ पुछलनि रमापति प्यार मे ॥
 "किनकर थिकहुँ सुपुत्र एवं कोन ऋषि के" शिष्य छी ।
 किनकर रचल ई काव्य श्रेष्ठ गबैत अपने नित्य छी ॥
 सस्वर सुनाउ सुराग मे सूनऽ हमहुँ चाहैत छी ।
 संगीत मे अतिविज्ञ शिशु होनहार अहाँ लगैत छी ॥
 देलनि अपन परिचय मधुर श्रुति-सुखद वचन अनूप मे ।
 सब प्रश्न के उत्तर यथाक्रम देल समुचित रूप मे ॥
 "माता हमर सीता थिकी रघुनाथ-कथा गबैत छी ।
 होयता पिता माताक पति नहिं नाम तिनक जनैत छी ॥

गुरु वाल्मीकिक शिष्य छी सद्शास्त्र सतत पढ़ैत छी ।
 फल-मूल अछि आहार वन मे जननि-संग रहैत छी ॥
 अवधेश यज्ञ करैत छथि से सून अयलहुँ अछि एतऽ ।
 आदेश गुरु सँ पाबि रामायण गबैछी हम ततऽ ॥
 गुरुवाल्मीकिक रचित रामायण सुनू आरम्भ सँ ।
 ई काव्य सुनितहि मुग्ध होयब हम कहै छी दम्भ सँ ॥
 लगलाह गावय मोन सँ वीणा बजा शुभ ताल मे ।
 आनन्दमय वातावरण भऽ गेल छल तत्काल मे ॥
 जे क्यो उपस्थित रसिकगण बैसल छला दरवार मे ।
 सभ ध्यान सँ लगला सुनय भऽ मग्न हर्ष अपार मे ।
 कतबा समय बीतल रहल नहिं तखन किनको ध्यान मे ।
 जे जतय बैसल रहथि तहना छथि डटल स्वस्थान मे ॥
 संतुष्ट कऽ संगीत सँ श्रोता सकल सज्जन केँ ।
 यज्ञक समय लागि चैल छल तँ बन्द कैलनि गान केँ ॥
 लगला करय सभक्यो प्रशंसा स्नेहमय उद्गार सँ ।
 कैलनि पुरस्कृत बन्धु दय केँ तखन विविध प्रकार सँ ॥
 चाहैत छथि उपहार दीअनि वस्तु बहु सत्कार सँ ।
 तन केँ सजा दी वसन-भूषण-युत सकल शृंगार सँ ॥
 बाजल करथि सभ "एहन बालक हम ने देखलसृष्टि मे ।
 सुकुमार गीताकार सुन्दर नहि अबं अछि दृष्टि मे ॥
 आकृति-मधुर स्वर राम-सन समटा मिलैत देखैत छी ।
 तन-रूप रंग-स्वभाव-बाजब राम सद्दश पबैत छी ॥
 बल्कल पहिरने छथि, अहा ! बालक, जटा छनि माथ मे ।
 धनु-तीर नहि छनि संग मे वस मात्र वीणा हाथ मे ।
 बभू बनल छथि राम अद्भुत ब्रह्मचारी रूप मे ॥
 करताह लीला विश्व मे नव रीति-नीति अनूप मे ॥
 कहलनि भरत केँ राम "मुद्रा स्वर्ण केँ भण्डार सँ ।
 लै आनि कऽ करियनु पुरस्कृत स्नेह-युत सत्कार सँ ॥

अतिरिक्त एकरा और किछु चाहथि अमूल्यो वस्तु जो ।
ले आनि दीयनु दैत रहिअनु कहथि जाघरि अस्तु तो ॥

मिष्ठान्न दीअनु आनि कऽ जे करथि ग्रहण पसंद सैं ।
पहिराउ पुष्पक हार सुरभित भरत ! पूर्ण सुगंध सैं ॥

भऽ गेल ढेर कुवेर के निघि-तुल्य प्रभु-आदेश सैं ।
लव-कुशक सम्मुख भेल अपित सकल स्नेह विशेष सैं ॥

देलनि नगर के नारि सकल उतारि भूषण देह सैं ।
गुरुजन शुभाशीर्वाद देलनि पितृ-तुल्य-स्नेह सैं ॥

कैलनि मुदा नहि ग्रहण किछु, देलनि अपन इच्छा बता ।
“चाहैत छी वस मात्र हम अपने सभक वात्सल्यता ॥

हम लेब नहि किछु वस्तु” कहलनि पाणि दूनु जोड़ि कै ।
“अछि नहि प्रयोजन धनक हमरा ई लंगोटी छोड़ि कै ॥

वन मे रहै छी, खाइ छी फल, छाल के पहिरेत छी ।
गुरुवर कवीश्वर के सिखावल राम-कथा गबैत छी ॥

नृप ! मात्र अपने सभक शुभ आशीष हम चाहैत छी ।
श्री जानकी माता-कृपा सैं सतत प्रसन्न रहैत छी ॥

आश्चर्य सैं सभ चकित भऽ गेलाह उत्तर सुनि कै ।
“निर्लोभ बालक एहन नहि देखल” कहल सब गूनि कै ॥

रामक हृदय मे भेल उत्सुकता सुनी सद् ग्रन्थ के ।
दर्शन करी हम काव्य-रचनाकार अद्भुत संत के ॥

कहलनि “कुमार ! सुकाव्य ई नित गाबि अवश्य सुनाउ तौ ।
सत्त्वर महा कवि केर दर्शन अखन अहाँ कराउ तौ ॥

ई काव्य हम सम्पूर्ण सुनबा लेल आतुर भेल छी ।
श्रोता प्रमुख हम, व्यास अपने अखन हमरा लेल छी ॥

लगला सुनावऽ गाबि लव-कुश नित्य यज्ञक अन्त मे ।
चर्चा चलय लगलनि प्रशंसात्मक हिनक श्रीमन्त मे ॥

सानन्द प्रभु सुनलनि जखन सम्पूर्ण निज जीवन-कथा ।
हटलनि हृदय सैं जे छलनि सिय-त्याग के दुखमय व्यथा ॥

सीताक सुत छथि बूझि हर्षित भेल मन रघुवीर केँ ।
सत्त्वर पठौलनि मुनिक लग चुनि एक दूत सुधीर केँ ॥

जाकय सुनाबथि हमर ई सन्देश मुनि वाल्मीकि केँ ।
सीताक संग आबथि एतय झट देथि उलझन ठीक केँ ॥

सीताक शुद्ध चरित्र छनि तौ आवि सभक समक्ष मे ।
अपने प्रमाणित करथि निज पावन चरित्रक पक्ष मे ॥
भल मनुख मुनिगण दृष्टि मे निर्दोष सावित होथि जौ ।
'सीता परम पवित्र छथि' ई सकल जनता कहथि तौ ॥

हम तखन सीता केँ करब स्वीकार निश्चल हृदय सँ ।
हमरा छमा कऽ देथि कहबनि हम सिया केँ विनय सँ ॥
सन्देश ई रामक जखन सुनलनि कवीश्वर दूत सँ ।
सन्तुष्ट भऽ गेलाह मुनि लव-कुशक अइ करतूत सँ ॥

अयलाह सिय केँ संग कै सीतापतिक दरवार मे ।
बैसल जतय छलाह ऋषि-मुनिगण अनेक कतार मे ॥

शिव, वरुण, ब्रह्मा, गर्ग, काश्यप, च्यवन अरु धर्मज्ञ जे ।
गौतम, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद अरु वशिष्ठ सुयज्ञ जे ॥

वामन, महातपसी रु विश्वामित्र, कात्यायन तथा ।
सौदगल्य, दुर्वासा सभक अति पुण्यमय जीवन-कथा ॥

कपि, असुर, सुर, नरश्रेष्ठ, परिडत, कवि, सुअधिकारी प्रजा ।
आयल छलाह सहर्ष फहराबैत रामक यश-ध्वजा ॥

जावालि, भार्गव-संग देखथु जगत केँ सभ भूप ई ।
शिव केँ उपस्थिति मे घटत घटना अखन अनूप ई ॥

सीता शपथ करती ग्रहण सुनताह सभ निज कान सँ ।
'स्वीकार सीता केँ करू' कहताह सभ श्री राम सँ ॥

पहुँचल छली वाल्मीकि-संग सीता भरल दरवार मे ।
चुप भेल पाछू मुनिक छथि ओ ठाढ़ि पड़ल विचार मे ॥

पति-चरण पर शिर धरि प्रणाम सप्रेम कैलनि जानकी ।
सोचैथ, अखनो नहिँ ग्रहण करताह दयानिधान की ?

मुनिवर तखन सम्मुख-सभक लगला कह्य रघुवीर सँ ।
 "हे राम ! हमरा कथन पर दी ध्यान अति गम्भीर सँ ॥

लव-कुश दुनू के जन्म भेलनि जानकी के देह सँ ।
 ई पुत्र छथि अपनेक रखिअनु आब अधिक स्नेह सँ ॥

हम वरुण के छो पृत्र बाजब भूठ नहिं कथमपि प्रभो !
 हम जे कहै छी सत्य मानू हे सिया-स्वामी विभो !!
 कैलहु तपस्या जे सहस्रौ वर्ष धरि संसार मे ।
 हम खाइ छो तकरे शपथ सीताक शिष्टाचार मे ।

जौ दोष किछुओ होनि तौ तप फलक भागी नहिं रही ।
 सत्कर्म कैलहुं तकर हमरा फलक भोगी नहिं कही ॥

हे राम ! हम मन बुद्धि-उर सँ ई विचारि कहैत छी ।
 सीता-चरित मे दोष नहिं ई वाक्य सत्य बजैत छी ॥

आचरण हिनकर शुद्ध छनि मानय पढ़त सब रीति सँ ।
 अर्द्धाङ्गिनी अपनेक छथि गुण अहिक गाबति प्रीति सँ ॥
 ई भेल छथि अपने शरण मे आब रखिअनु प्रेम सँ ।
 सुनिअनु कहै छथि की ? मिया मन-वचन-कर्म सुनेम सँ ॥

करतीह सीता सिद्धि शुद्ध चरित्र अटल प्रमाण सँ ।
 सुनिलेथि ऋषि-मुनि-देव-नर-पशुवर्ग निज-निज कान सँ ॥

मुनि वाल्मीकि कथन सुनि सियपति समुद सत्प्रेम सँ ।
 श्री जानकी दिशि ताकि मुनि सँ कहल श्रीपतिनेम सँ ॥

"हे मुनि ! कथन अपनेक अछि सब सत्य सिय-सम्बन्ध मे ।
 हम तौ छलहुं बान्हल समाजक अति कठिन प्रतिबन्ध मे ॥

सीताक पावन चरित के पुनि हम परीक्षा लेब की ?
 सीता परम पवित्र छथि, ई नहिं जनै छथि देव की ?

वन मे पठौलहुं जानि कऽ बचबाक ले अभियोग सँ ।
 कऽ देल वञ्चित जानकी के राज्य-सुख-उपभोग सँ ॥

लाचार भऽ कैलहुं निठुरतम कार्य दोष अगाध के ।
 कृपया क्षमा कर हे कवीश्वर ! हमर अइ अपराध के ॥

सीखथु जगत के नारिगण शिक्षा सियाक चरित्र सैं ।
 स्वामी-प्रसन्नक लेल सब किछु करथि हृदय पवित्र सैं ॥
 ई कहि धरित्री भूमिजा के अंक मे लऽ स्नेह सैं ।
 बैसौल सिंहासनक ऊपर पुष्प बरिसल मेह सैं ॥
 कैलनि प्रवेश दुनू पुहुमि मे सभक सम्मुख हर्ष सैं ।
 गम्भीर मुद्रा मे छलाह विचार के उत्कर्ष सैं ।
 छथि छब्ध सुर-नर जे उपस्थित यज्ञ के स्थान मे ।
 क्यो हर्ष ध्वनि लगला करय क्यो लीन छथि प्रभु ध्यान मे ॥
 किछु काल धरि रहला पड़ल प्रभु प्रेमिकाक वियोग मे ।
 सोचै छला की करक बाँकी रहल अछि नर-लोक मे ॥
 होयत कोना कऽ पूर्ण नर-लीला हमर सीता-बिना ।
 हम एक पत्नी-व्रत निबाहब आब कहूँ तौ ई कोना ?
 हम अखन बूझू भेल छी विनु पाँखि के पक्षी जेना ।
 करबाक अछि किछु और लीला आब से होयत कोना ?
 शुभ कार्य मनुजक सफल होयब कठिन छै पत्नी बिना ।
 अर्द्धाङ्गिनी विनु काज ठानब तौ अवश जायत घिना ॥
 स्थिति हमर अछि शोचनीय विशेष हे बपुधा प्रिये !
 जीयब असम्भव अछि हमर सीता-बिना हे भू प्रिये !!
 तैं एहि विरही व्यक्ति पर करितहुँ कृपा जौ वसुमती ।
 तौ देर हमहूँ नहि करब दुख-काल मे एकोरती ॥
 जौ नहिं सिया के देब तौ हमरो संगे-संग लऽ चली ।
 रहतीह संग मे जाहि तरहे विपिन बीच रहै छली ॥
 रहलहुँ अखन धरि एक संग साकेत मे संसार मे ।
 तहिना रहब सानन्द नित पाताल के आगार मे ॥
 ई जौ विनय स्वीकार नहिं करतीह महि तौ बूझि ली ।
 हम आब नहिं धारण करब नर देह सभ क्यो सूनि ली ॥
 नहिं मढ़थि क्यो जन दोष हमरा पर अखन कहि दैत छी ।
 लाचार भऽ ई काज हमरा करक हैत कहैत छी ॥

ई सूनि वचन विरञ्चि-शिव-सुर राम-शोकावेश के ।

कहलनि विनय युत वचन सभ मिलि नर-प्रवर अवधेश के ॥

“हे शत्रुसूदन राम ! मन सँ त्यागि दी संताप के ।

अपने थिकहु के ? जानि ली कृपया अपन प्रताप के ॥

प्रभु के मनक प्रतिकूल ककरा किछु करक सामथं छै ।

विपरीत कोनो काज सोचब सभक बूझ व्यर्थ छै ॥

सब काज सृष्टिक भऽ रहल अछि रचल दयानिधान सँ ।

सब नीक आ अधलाह ह्वै छ विचारि बनल विधान सँ ॥

अपनहि अनेकों पात्र बनि अभिनय करी संसार मे ।

दर्शक स्वयं बनि बस्तु दी सत्पात्र के उपहार मे ॥

तँ एहि नर-लीलाक अछि करवाक अभिनय शेष जे ।

चलु स्वर्ग शीघ्र समाप्त कै कऽ आब हे अवधेश ! से ॥

सीता पहुँचली पूर्व लीला पूर्ण कऽ साकेत मे ।

बिनु जानकी के नीक लागत की अवध-निकेत मे” ॥

सब देव-नर प्रस्थान कैलनि राम के आदेश सँ ।

पहुँचैत सभ गेलाह निज-निज धाम हर्षावेश सँ ।

सीताक संग समाप्त लीला भेल सुन्दर रूप मे ।

आदर्श नारी मे सिया आदर्श रघुपति भूप मे ॥

सीताक अनुपम चरित वर्णन भेल “सीता-शील” मे ।

सद् कीर्ति-केतु सियाकनित फहराति अछि नभ-नील मे ॥

ई चरित पढ़ि आदर्श जीवन के बनौती नारि जे ।

बनौतीह जग मे परम पूज्या पतिक परम पियारि से ॥

जे छथि पढ़लि से पढ़थि सुनबथि सुनऽ चाहथि नारि जे ।

स्वामीक सेवा करथि बाजथि वचन मधुर बिचारि जे ॥

झगड़ा करथि नहि दैथ नहि कखनो कि ककरो गारि जे ।

आदर्श नारी विश्व मे बनती परम बुधियारि से ॥

ई पूर्ण पोथी-पुष्प अर्पित चरण पर श्री नाथ के ।

जे पूर्ण भेलछि पाबि कऽ अतिशय कृपा गणनाथ के ॥

मंथिलानिक कथन

किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ।

अब मिथिला मे कहिया ? दिअऽ से वचन ॥

किछु सुनल गाढ़ि तैं रोख बड़ भेल की ?

वंश उकटल बहुत गेल तइ लेल की ?

हैत संकोच मिथिला मे अयबाक छण ।

किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

जानकी-रंग-सन नहि अहँक रंग अछि ।

नाम लघु राम बड़ तैं सिया चंग अछि ॥

तैं एतेक जानकी कऽ रहलि अछि रुदन ।

किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

बड़ परिश्रम धनुष-भंग मे कैल अछि ।

बतकही बड़ परशुराम सँग भेल अछि ॥

से सिया-योग्य दुलहाक छल जाँच-सन ।

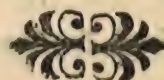
किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥

एहि सब बात केँ मोन मे लंब नहि ।

जौ बिचारब तौ ई सुख कतहुँ पब नहि ॥

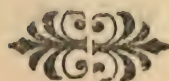
अछि शपथ लाख राखब "स्वजन"-स्मरण ।

किछु सुनू औ सियावर ! ई हमरो कथन ॥



समदाउन

सिया-सन धिया आनि पिया देल जहिया
 कि हिया भेल मुदित अपार ।
 सब सुख-साधन सँ सदन दयानिधि
 भरि देल सकल प्रकार ॥
 मुख देखि सिया केँ प्रसन्न चित सदिखन
 छल मन परम उदार ।
 जीवम सफल भेल हमर मनुज-तन
 कैल नित सिया केँ दुलार ॥
 एहन धिया केँ हम जननी कहौलहुँ
 घर भेल स्वर्गक जोड़ ।
 ई जनितहुँ हम राखि नहि सकलहुँ
 के ? भेल एहन कठोर ॥
 उर तजि दुग्ध निठुर कहु इहो भेल
 बनि गेल आँखिक नोर ।
 तदपि मुदित मन पाहुन पौलहुँ
 दशरथ राज किशोर ॥
 अनुनय हमर सुनथु हे विधाता !
 जनम जौ नारिक देखु ।
 तौ हम जननी सिया केर बनितहुँ
 "स्वजन" विनय सुनि लेथु ॥



ईश्वर-नाम मे चमत्कार

(१०८ के महत्त्व)

ब्रह्म = ब + र, ह + म

ब = २३ (क सँ ब धरि तैस)

र = २७ (क सँ र धरि सत्ताइस)

ह = ३३ (क सँ ह धरि तैंतिश)

म = २५ (क सँ म धरि पच्चीश)

१०८

सीता राम = स + ी, त + १, र + १, म

स = ३२ (क सँ स धरि बत्तीश)

ी = ४ (अ सँ ई (१) चारि)

त = १६ (क सँ त धरि सोलह)

१ = २ (अ सँ आ (१) दू)

र = २७ (क सँ र धरि सत्ताइस)

१ = २ (अ सँ आ (१) दू)

म = २५ (क सँ म धरि पचीश)

१०८

राधिका कृष्ण = र + १, ि + ध, क + १, क + १, ष + ण

र = २७ (क सँ र धरि सत्ताइस)

१ = २ (अ सँ आ (१) दू)

ि = ३ (अ सँ इ (१) तीन)

ध = १९ (क सँ ध धरि उन्नैश)

क = १ (क मात्र एक)

१ = २ (अ सँ आ (१) दू)

क = १ (क मात्र एक)

१ = ७ (अ सँ ऋ (१) सात)

ष = ३१ (क सँ ष एकतीश)

ण = १५ (क सँ ण धरि पन्द्रह)

१०८

बिनु माता के शिव-प्रति श्रद्धा-समर्पण

गगन - पवन - जल - अनल - जगत - कण

जकर धवल यश पसरल ।

नवल कमल-सन वदन, जकर तन

सगरल फणधर - जकड़ल ॥

जकर नयन-शर पल-मह तत क्षण

भसम कयल तन मदनक ।

दशरथ-तनयक पद-रज-कण लय

बनल तनय वर पवनक ॥

जकर वरद-कर पड़त भगत पर

हर क्षण अशरण-शरणक ॥

तकर चरण पर जकर सतत मन

रहत, कहब हम नरवर ।

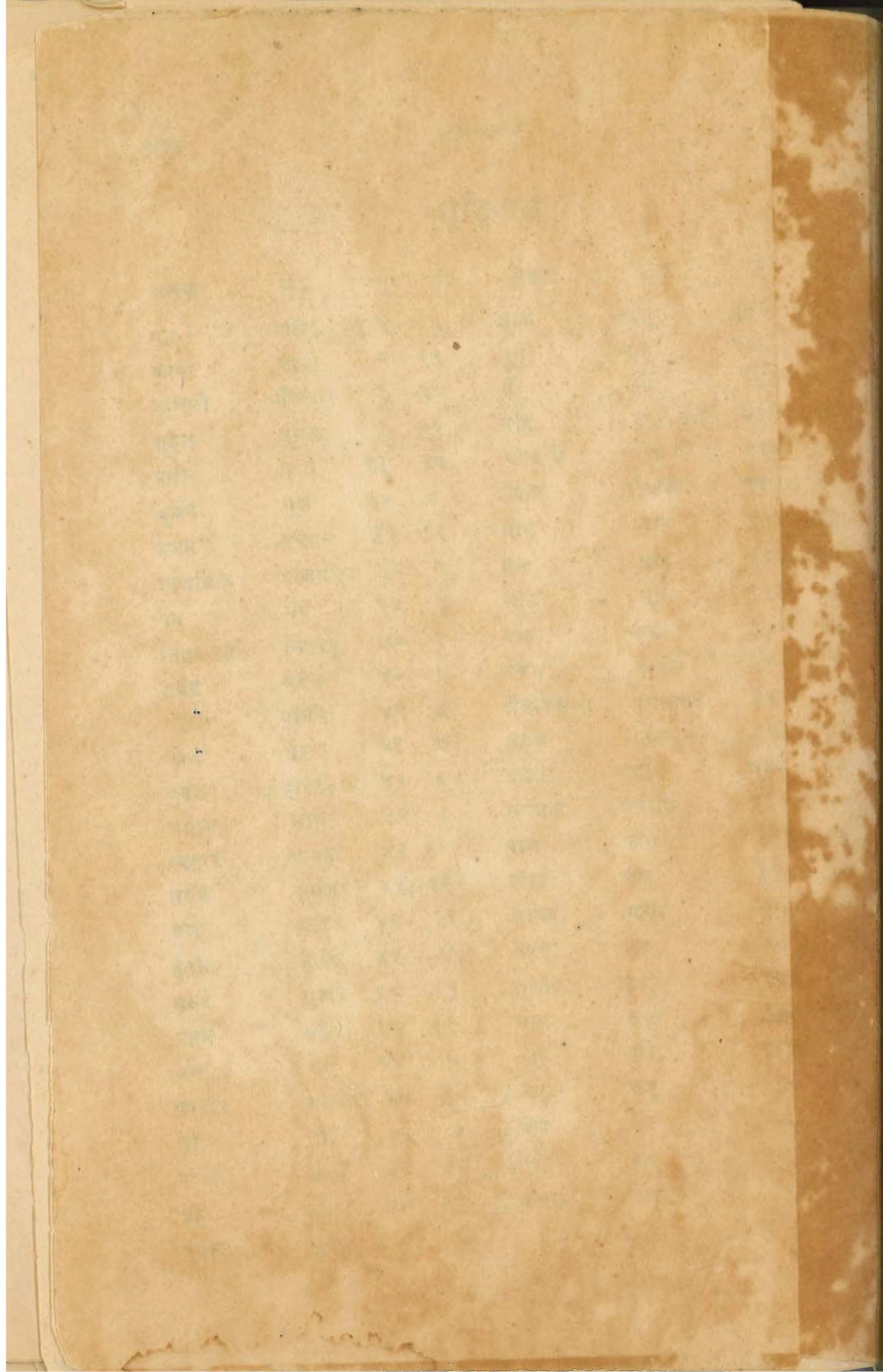
हर-जन-भल पर अरपन तन-धन

तकर "स्वजन" हम सहचर ॥



शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
पड़	पड़ू	२	६	ताक	ताकू	१०३	२४
काना	कोना	२	१९	दुनु	दूनू	१०९	२१
मथिली	मैथिली	३	१८	तँ	तै	११२	२२
सुयल	सुधल	३	२५	नहि	हा ! नहि	११३	१८
प्रमी	पक्षी	११	२८	थीक के	नीक कै	११४	६
बुझैत	बुझै	२०	८	रोकक	रोकैक	११४	२५
सनन	सन्तान	२६	११	योग	योग्य	११६	२१
प्राणधिक	प्राणाधिक	३२	३	छन	छीन	१२१	१
पब	पैब	३४	६	सनि	सूनि	१२६	
नितऽ रहूँ	नितरहूँ	४०	१	चन्द्र	चन्द्रक	१४६	१
सदैव	सदैव	४०	२६	वभन	वैभन	१४९	
पछलि	पूछलि	४१	५	प्रेमाशसवत	प्रेमासक्त	१५२	
'लेल'	लेल	४१	७	अहक	अहंक	१५४	१
दुबंट	दुर्बंट	४१	६	यद्यपि	यदपि	१५५	
लगाल	लागल	४२	१	लगलक	लगलैक	१६०	
व्यहार	व्यवहार	४२	१४	पाश	फाँस	१६१	
सर्वज्ञ	सर्वज्ञ	४३	२१	लंका	लंक	१६९	
माइ	भाइ	४९	२६	मारत	मरत	१७२	
हेतीक	हेतैक	५५	४	अपध	अवध	१७४	
सदर	सुन्दर	५८	२१	सुकवि	सुकपि	१७६	
सहष	सहर्ष	६२	११	शोल	शील	१८०	
भन	धन	६४	८	ओहूँ	ओ	१८५	
व्यहार	व्यवहार	६७	१४	कहु	कह	७६	
ताँ	तौँ	८२	२	डेण	डेग	८२	
शोचै	सोचै	८४	१२	वश	बस	८६	
ताँ	तैँ	९७	११	कलक	कैलक	९९	
हमार	हमर	१०३	५				



प्राप्ति स्थान :—

१.

"कुमार-कुञ्ज"

महल्ला—सिन्धुआ टोली

गुलजारबाग, पटना-७

२. **श्री अनिरुद्ध नारायण चौधरी**

साइंस-टीचर

श्री मुकुन्दी चौधरी-हाई स्कूल,

कैदरावाद, दरभंगा ।

३.

श्री विनय कुमार दास

इलाहाबाद-बैंक

समस्तीपुर ।

आवरण मुद्रक - कलर आर्ट प्रिन्टर्स, तारनी प्रसाद लेन पटना-८